1. श्रम विभाजन और जाति प्रथा

- श्रम विभाजन और जाति प्रथा लेखक परिचय
- बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 ई० में महु, मध्यप्रदेश में एक दलित परिवार में हुआ था । मानव मुक्ति के पुरोधा बाबा साहेब अपने समय के सबसे पढे लिखे लोगों में से एक थे । प्राथमिक शिक्षा के बाद बड़ौदा नरेश के प्रोत्साहन पर उच्चतर शिक्षा के लिए न्यूयार्क (अमेरिका), फिर वहाँ से लंदन (इंग्लैंड) गए । उन्होंने संस्कृत का धार्मिक, पौराणिक और पूरा वैदिक वाङ्मय अनुवाद के जरिये पढ़ा और ऐतिहासिक-सामाजिक क्षेत्र में अनेक मौलिक स्थापनाएँ प्रस्तुत की। सब मिलाकर वे इतिहास मीमांसक, विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, शिक्षाविद् तथा धर्म-दर्शन के व्याख्याता बनकर उभरे । स्वदेश में कुछ समय उन्होंने वकालत भी की। समाज और राजनीति में बेहद सक्रिय भूमिका निभाते हुए उन्होंने अछूतों, स्त्रियों और मजदूरों को मानवीय अधिकार व सम्मान दिलाने के लिए अथक संघर्ष किया। उनके चिंतन व रचनात्मकता के मुख्यत: तीन प्रेरक व्यक्ति रहे – बुद्ध, कबीर और ज्योतिबा फुले। भारत के संविधान निर्माण में उनकी महती भूमिका और एकनिष्ठ समर्पण के कारण ही हम आज उन्हें भारतीय संविधान का निर्माता कह कर श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं । दिसंबर, 1956 ई० में दिल्ली में बाबा साहेब का निधन हो गया ।
- बाबा साहेब ने अनेक पुस्तकें लिखीं । उनकी प्रमुख रचनाएँ एवं भाषण हैं – 'द कास्ट्स' इन इंडिया : देयर मैकेनिज्म', जेनेसिस एंड डेवलपमेंट', 'द अनटचेबल्स, हू आर दे', 'हू आर शूद्राज', बुद्धिज्म एंड कम्युनिज्म', बुद्धा एण्ड हिज धम्मा', 'थाट्स ऑन लिंग्युस्टिक स्टेट्स', 'द राइज एंड फॉल ऑफ द हिन्दू वीमेन', 'एनीहिलेशन ऑफ कास्टआदि । हिंदी में उनका संपूर्ण वाङ्मय भारत सरकार के कल्याण मंत्रालय से 'बाबा साहब अंबेदकर संपूर्ण वाङ्मय' नाम से 21 खंडों में प्रकाशित हो चुका है।

- यहाँ प्रस्तुत पाठ बाबा साहेब के विख्यात भाषण 'एनीहिलेशन ऑफ कास्ट' के ललई सिंह यादव द्वारा किए गए हिंदी रूपांतर 'जाति-भेद का उच्छेद' से किंचित संपादन के साथ लिया गया है । यह भाषण 'जाति-पाति तोड़क मंडल' (लाहौर) के वार्षिक सम्मेलन (सन् 1936) के अध्यक्षीय भाषण के रूप में तैयार किया गया था, परंतु इसकी क्रांतिकारी दृष्टि से आयोजकों की पूर्णत: सहमति न बन सकने के कारण सम्मेलन स्थगित हो गया और यह पढ़ा न जा सका । बाद में बाबा साहेब ने इसे स्वतंत्र पुस्तिका का रूप दिया। प्रस्तुत आलेख में वे भारतीय समाज में श्रम विभाजन के नाम पर मध्ययुगीन अवशिष्ट संस्कारों के रूप में

PDF SARTHI.COM

बरकरार जाति प्रथा पर मानवीयता, नैसर्गिक न्याय एवं सामाजिक सद्भाव की दृष्टि से विचार करते हैं । जाति प्रथा के विषमतापूर्वक सामाजिक आधारों, रूढ़ पूर्वग्रहों और लोकतंत्र के लिए उसकी अस्वास्थ्यकर प्रकृति पर भी यहाँ एक संभ्रांत विधिवेत्ता का दृष्टिकोण उभर सका है । भारतीय लोकतंत्र के भावी नागरिकों के लिए. यह आलेख अत्यंत शिक्षाप्रद है।

- पाठ का सारांश :
- प्रस्तुत पाठ में लेखक महोदय ने जाति प्रथा के कारण समाज उत्पन्न रूढ़िवादिता एवं लोकतंत्र पर खतरा को चित्रित किया है।

- आज के वैज्ञानिक युग में भी "जातिवाद" के पोषकों की कमी नहीं है। उनका तर्क है कि आधुनिक समाज 'कार्य-कुशलता' के लिए श्रम विभाजन को आवश्यक मानता है। चूंकि जाति-प्रथा भी श्रम-विभाजन का दूसरा रूप है। परन्तु जाति-प्रथा के कारण श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन, विभाजित वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच भी करार देती है, जो विश्व के किसी भी समाज में नहीं पाया जाता।
- अस्वाभाविक श्रमविभाजन के कारण मनुष्य स्वतंत्र रूप से अपनी पेशा का चुनाव नहीं कर सकता। माता-पिता के सामाजिक स्तर के अनुसार पेशा निर्धारित कर दिया जाता है। मनुष्य को जीवन भर के लिए एक पेशे में बाँध भी देती है। भले ही पेशा अनुपयुक्त और अपर्याप्त होने के कारण वह. भूखों मर जाए। पैतृक पेशा में वह पारंगत नहीं हो इसके बाद भी चुनाव करना पड़ता है। जाति-प्रथा भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख व प्रत्यक्ष कारण बनी हुई है।

- इस प्रकार हम देखते हैं कि श्रम विभाजन की दृष्टि से भी जाति प्रथा गंभीर दोषों से युक्त है। आज के उद्योगों में गरीबी और उत्पीड़न इतनी बड़ी समस्या नहीं जितनी यह कि बहुत से लोग 'निर्धारित कार्य को 'अरूचि' के साथ विवशतावश करते हैं। ऐसी परिस्थिति में स्वभावतः मनुष्य को दुर्भावना से ग्रस्त रहकर टालू काम करने और कम काम करने के लिए प्रेरित करती है। आर्थिक पहलू से भी जाति प्रथा हानिकारक प्रथा है।

PDF SARTHI.COM

- लेखक की दृष्टि में आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता, भ्रातृत्व पर आधारित होगा। भ्रातृत्व अर्थात् भाईचारे में किसी को क्या आपत्ति हो सकती है। आदर्श समाज में गतिशीलता होनी चाहिए कि वांछित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे छोर तक संचारित हो सके। दूध-पानी के मिश्रण की तरह भाईचारे का यही वास्तविक रूप है। और इसी का दूसरा नाम लोकतंत्र मूलतः सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति तथा समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। इसमें यह आवश्यक है कि अपने साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव हो।

1. श्रम विभाजन और जाति प्रथा

लेखक → डॉ० भीम राव अम्बेदकर

जन्म → 14 अप्रैल 1891 महु मध्यप्रदेश (दलित परिवार)

शिक्षा → अमेरिका एवं इंग्लैंड

माता → भीमाबाई

पिता → रामजी सकपाल

वकालत → इन्होंनें कुछ दिन तक'स्वदेश' में वकालत किए।

प्रमुख व्यक्ति → बुद्ध, कबीर और ज्योतिबा फुले इन्हें प्रभावित किया

अन्य नाम → बाबा साहब, संविधान निर्माता, संविधान जनक

प्रमुख रचना → द कास्ट इन इंडिया, देयर मेकेनिज्म, बुद्धा और धम्मा, ऐनिहिलेशन ऑफ कास्ट

* ऐनिहिलेशन ऑफ कास्ट का हिंदू रूपांतर कब और किसने किया था ?

Ans - ललई सिंह यादव 1936 में।

* मृत्यु → दिसंबर1956 में (दिल्ली)

* संपूर्ण वाडमय को 21 खंडों में विभाजित किया गया है।

PDFSARTHI.COM

- Objective -

1. श्रम विभाजन ओर जाति प्रथा के लेखक कौन है ?

Ans – भीम राव अंबेडकर

2. अम्बेदकर का जन्म कहा और कब हुआ ?

Ans - 14 Apr 1891 में महू मध्यप्रदेश

3. श्रम - विभाजन और जाती प्रथा पाठ की विधा क्या है ?

Ans - निबंध

4. ऐनिहिलेशन ऑफ कास्ट का हिन्दी रूपांतर किसने किया ?

Ans - ललाई सिंह यादव

5. श्रम विभाजन और जाति प्रथा पाठ बाबा साहब के किस भाषण का अंश है ?

Ans - एनीहिलेशन ऑफ कास्ट

6. भीमराव अम्बेदकर के प्रमुख प्रेरक व्यक्ति थे ?

Ans - बुद्ध, कबीर, ज्योतिबा फुले

7.आदर्श समाज स्वतंत्रता समानता, मातृत्व पर आधारित है कहाँ?

Ans - भारत मे

8.आधुनिक सभ्य समाज श्रम विभाजन को क्यों आवश्यक मानते हैं ?

Ans - कार्य कुशलता के लिए

9.भारत में बेरोजगाड़ी का प्रमुख कारण है ?

PDFSARTHI.COM

Ans - जातिप्रभा

10. संविधान निर्माण अम्बेदकर के अनुसार आदर्श समाज किस पर आधारित होगा ?

Ans- स्वतंत्रता, समता, भ्रातृत्वा

11. भीमराव आम्बेदकर किस विडंबना की बात करते हैं ?

Ans - आज के समाज में भी जातिवाद के पोषक की कमी नही है।

12.अबेदकर के अनुसार भाईचारा का वास्तविक रूप है ?

Ans- दूध और पानी का मिश्रण

13.जाति प्रथा पेशे का दोषपूर्ण पूर्व निर्धारण ही नही करती है बल्कि मनुष्य को जीवनभर के लिए एक पेशे में बाँध देती है, प्रस्तुत गद्यांश का लेखक है ?

Ans – डॉ भीम राव अम्बेदकर

14. बुद्धा एवं हिज धम्मा का लेखक कौन है ?

Ans -भीम राव अम्बेदकर

15. हू आर सुद्राज किसकी रचना है ?

Ans - भीम राव अम्बेदकर

16. भास्चारे का दूसरा नाम क्या है ?

Ans – लोकतंत्र

17. अंबेदकर ने किसको मानवीय अधिकार व समय दिलाने के लिए अधिक संघर्ष किया था ?

Ans - अछूतों को

18. किनके प्रोत्साहन पर अम्बेडकर उच्चतर शिक्षा के लिए न्यूयार्क गये ?

PDFSARTHI.COM

Ans - बड़ौदा नरेश

- Subjective -

1. लेखक किस विडंबना की बात करते है। विडंबना का स्वरूप है?

Ans - लेखक के लिए विडंबना की बात यह है कि, आधुनिक युग में जातिवाद की पोषक की कमी नहीं है।

2. जातीवाद के पोषक उसके पक्ष में क्या तर्क देता है ?

Ans - जातीवाद के पोषक इस आधुनिक समाज में 'कार्य कुशलता' के लिए श्रम विभाजन की आवश्यक मानता है और कहते है, कि- जातिप्रथा भी श्रम विभाजन का ही दूसरा रूप है। इसलिए इसमें कोई बुराई नही है |

3. जातिवाद के पक्ष में दिए गए तर्कों पर लेखक की प्रमुख आपत्तियाँ क्या है ?

Ans - जातिवाद के पक्ष में दिए गए तर्कों पर लेखक की पहली अपत्ति यह है, कि जाति प्रथा श्रम विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन का रूप लिया है श्रम विभाजन निश्चय ही सभ्य समाज की आवश्यकता है, परंतु किसी भी सभ्य - समाज में कार्य के साथ- साथ लोगों का विभाजन सही नही है|

4. जातिप्रथा भारतीय समाज में श्रम -विभाजन का स्वाभाविक रूप क्यों नही कही जा सकती है ?

Ans - भारत का जाति प्रथा की एक और विशेषता यह है, कि "यह श्रमिकों का अस्वभाविक विभाजन ही नही करती बल्कि श्रमिकों को एक दूसरे से ऊँचे – नीचे को दर्शाता है। जो विश्व के किसी भी समाज में नही पाये जाते है |

5. जाति प्रथा भारत में बेरोजगारी का प्रमुख और प्रत्यक्ष कारण कैसे बनी हुई है ?

Ans - भारत में जाति प्रथा लोगों को कोई भी ऐसा कार्य नही चुनने देती है जो उनके पुर्वजों ने नही किया हो लोग अपने पूर्वजों का ही कार्य चुनते हैं। जिसके कारण जाति प्रथा भारत में बेरोजगारी का प्रमुख और प्रत्यक्ष कारण बनी हुई है|

6. लेखक आज के उद्योगों में गरीबी और उत्पीड़न से भी बड़ी समस्या किसे मानती है और क्यों ?

Ans - लेखक गरीबी और उत्पीड़न से भी बड़ी समस्या जाति प्रथा को मानते हैं क्योंकि जाति प्रथा लोगों को उनको स्वभाव के अनुसार कार्य चुनने की अनुमति नही देती है |

7. लेखक ने पाठ में किन प्रमुख पहलुओं से जाति प्रथा को एक हानिकारक प्रथा के रूप में दिखाया है ?

Ans - इस पाठ में लेखक ने कई पहलुओं से जाति प्रथा को एक हानिकारक प्रथा बताया है। जिसमें आर्थिक और रचनात्मक पहलू प्रमुख है |

8. सच्चे लोकतंत्र की स्थापना के लिए लेखक ने किन विशेषताओं को आवश्यक माना है?

Ans- लोकतंत्र की स्थापना के लिए लेखक ने लोगों के बीच दूध और पानी के मिश्रण जैसा भाइचारे को आवश्यक माना है |

1. श्रम विभाजन और जाति प्रथा

1. श्रम विभाजन और जाति प्रथा के लेखक कौन हैं ?

(A) भीमराव अंबडकर

(B) राम विलास शर्मा

(C) गुणाकर मुले

(D) हजारी प्रसाद द्विवेदी

Ans – (A)

2. बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर का जन्म कब हुआ था ?

(A) 14 अप्रैल 1891 ई० में

PDF SARTHI.COM

(B) 20 अप्रैल 1892 ई० में

(C) 24 अप्रैल 1893 ई० में

(D) 28 अप्रैल 1894 ई० में

Ans – (A)

3. बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर का जन्म किस राज्य में हुआ ?

(A) बिहार

(B) मध्यप्रदेश

(C) गुजरात

(D) महाराष्ट्र

Ans – (B)

4. श्रम विभाजन और जाति प्रथा' गद्य की कौन-सी विधा है ?

(A) कहानी

(B) नाटक

(C) निबंध

(D) आत्मकथा

Ans – (C)

5. भीमराव अंबेडकर के विख्यात भाषण 'एनीहिलेशन ऑफ कास्ट' का हिन्दी रूपांतरण किसने किया ?

(A) ददई सिंह यादव

(B) ललई सिंह यादव

PDF SARTHI.COM

(C) रूपक सिंह यादव

(D) ललन सिंह यादव

Ans – (B)

6. भारतीय संविधान के निर्माता किन्हें कहा जाता है ?

(A) महात्मा गाँधी

(B) राजेन्द्र प्रसाद

(C) भीमराव अंबेडकर

(D) जवाहर लाल नेहरू

Ans – (C)

7. श्रम विभाजन और जाति प्रथा' पाठ बाबा साहेब के किस भाषण का संपादित अंश है ?

(A) द कास्ट्स इन इंडिया देयर मैकेनिज्म

(B) जेनेसिस एंड डेवलपमेंट

(C) एनीहिलेशन ऑफ कास्ट

(D) हू आर शूद्राज

Ans – (C)

8. भीमराव अंबेडकर के मुख्यतः प्रेरक व्यक्ति रहे हैं ?

(A) बुद्ध

(B) कबीर

(C) ज्योतिवा फुले

PDF SARTHI.COM

(D) उपर्युक्त सभी

Ans – (D)

9. आदर्श समाज स्वतंत्रता, समानता, भ्रातृत्व पर आधारित होगा किसने कहा?

(A) मैक्समूलर

(B) भीमराव अंबेडकर

(C) बिरजू महाराज

(D) अज्ञेय

Ans – (B)

10. आधुनिक सभ्य समाज श्रम विभाजन को आवश्यक क्यों मानता है ?

(A) कार्य-कुशलता के लिए

(B) भाईचारे के लिए

(C) रूढ़िवादि के लिए

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (A)

11. भारत में बेरोजगारी का मुख्य कारण है -

(A) जाति प्रथा

(B) दहेज प्रथा

(C) अशिक्षा

(D) भ्रष्टाचार

PDF SARTHI.COM

Ans – (A)

12. समाज और राजनीति में बेहद सक्रिय भूमिका निभाते हुए अंबेडकर ने किनको मानवीय एवं अधिकार दिलाने के लिए अनेक प्रयास किये ?

(A) अछूतों

(B) स्त्रियों

(C) मजदूरों

(D) उपर्युक्त सभी

Ans – (D)

13. संविधान निर्माता अंबेडकर के अनुसार आदर्श समाज किस पर आधारित होना चाहिए ?

(A) स्वतंत्रता

(B) समता

(C) भ्रातृत्व

(D) उपर्युक्त सभी पर

Ans – (D)

14. भीमराव अंबेडकर किस विडंबना की बात करते हैं ?

(A) इस युग में भी जातिवाद के पोषकों की कमी नहीं है

(B) जातिप्रथा श्रम विभाजन का स्वभाविक रूप है

(C) जातिप्रथा बेरोजगारी का एक प्रमुख कारण हैं

(D) इनमें से कोई नहीं

PDF SARTHI.COM

Ans – (A)

15. अंबेडकर के अनुसार भाईचारे का वास्तविक रूप क्या है ?

(A) शहद की तरह

(B) दूध-पानी के मिश्रण की तरह

(C) शक्कर और पानी के मिश्रण की तरह

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (B)

16. लेखक भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख व प्रत्यक्ष कारण किसे मानते हैं ?

(A) कार्य अकुशलता

(B) जातिप्रथा

(C) उद्योग धंधों की कमी

(D) प्रतिकूल परिस्थितियाँ

Ans – (B)

17. जाति प्रथा को श्रम विभाजन मान लिया जाए तो यह स्वाभाविक विभाजन नहीं है, क्योंकि यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। यह कथन किस पाठ का है ?

(A) शिक्षा और संस्कृति

(B) श्रम विभाजन और जातिप्रथा

(C) मछली

(D) नौबतखाने में इबादत

PDF SARTHI.COM

Ans – (B)

18. जाति प्रथा पेशे का दोषपूर्ण पूर्व निर्धारण ही नहीं करती बल्कि मनुष्य को जीवनभर के लिए एक पेशे में बाँध भी देती है ? प्रस्तुत गद्यांश के रचनाकार हैं —

(A) राजेन्द्र प्रसाद

(B) नलिन विलोचन शर्मा

(C) अमरकांत

(D) भीमराव अंबेडकर

Ans – (D)

19. यह विडंबना की बात है कि इस युग में भी 'जातिवाद' के पोषकों की कमी नहीं है। यह कथन किस पाठ का है ?

(A) विष के दाँत

(B) श्रम विभाजन और जाति प्रथा

(C) भारत से हमने क्या सीखा

(D) नाखून क्यों बढ़ते हैं

Ans – (B)

20. जाति प्रथा का श्रम विभाजन मनुष्य की स्वेच्छा पर निर्भर नहीं रहता। मनुष्य की व्यक्तिगत भावना तथा व्यक्तिगत रुचि का इसमें कोई स्थान अथवा महत्त्व नहीं रहता। प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से उद्धृत है ?

(A) जित, जित मैं निरखत हूँ

(B) आविन्यों

(C) श्रम विभाजन और जातिप्रथा

PDF SARTHI.COM

(D) मछली

Ans – (C)

21. बुद्धा एण्ड हिज धम्मा' के लेखक कौन हैं ?

(A) नलिन विलोचन शर्मा

(B) गुणाकार मुले

(C) भीमराव अंबेडकर

(D) बिरजू महाराज

Ans – (C)

22. 'हू आर शूद्राज' किसकी रचना है ?

(A) महात्मा गांधी

(B) यतीन्द्र मिश्र

(C) भीमराव अंबेडकर

(D) मैक्समूलर

Ans – (C)

23. भाई चारे का दूसरा नाम है ?

(A) राजतंत्र

(B)लोकतंत्र

(C) श्रम

(D) सहयोग

PDF SARTHI.COM

Ans – (B)

24. अंबेडकर ने किनको मानवीय अधिकार व सम्मान दिलाने के लिए अधिक संघर्ष किया ?

(A) अछूतों

(B) स्त्रियों

(C) मजदूरों

(D) उपर्युक्त सभी को

Ans – (D)

25. किनके प्रोत्साहन पर अंबेडकर उच्चतर शिक्षा के लिए न्यूयार्क गए ?

(A) बड़ौदा नरेश

(B) ग्वालियर नरेश

(C) जयपुर नरेश

(D) महात्मा गांधी

Ans – (A)

26. 'द कास्ट इन इण्डिया' किसके द्वारा लिखा गया है ?

(A) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(B) भीमराव अम्बेडकर

(C) अमरकांत

(D) मैक्समूलर

Ans – (B)

PDF SARTHI.COM

27. भारत सरकार के कल्याण मंत्रालय से 'बाबा साहब अंबेडकर संपूर्ण वाङ्मय' कितने खंडों में प्रकाशित हो चुका है ?

(A) 15

(B) 20

(C) 21

(D) 25 Ans – (C)

28. श्रम विभाजन और जाति प्रथा' भाषण लाहौर के किस वार्षिक सम्मेलन के लिए तैयार किया गया था ?

(A) 1936

(B) 1937

(C) 1938

(D) 1940

Ans – (A)

29. इस युग में भी 'जातिवाद' के पोषकों की कमी नहीं है। लेखक के अनुसार यह कैसी बात है ?

(A) सम्मान की बात है

(B) विडंबना की बात है

(C) आदर्श बात है

(D) गौरव की बात है Ans – (B)

30. बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर का निधन हुआ -

(A) 1950

PDF SARTHI.COM

(B) 1952

(C) 1956

(D) 1960

Ans – (C)

31. महू, मध्यप्रदेश किनका जन्म स्थान है ?

(A) भीमराव अंबेडकर

(B) महात्मा गांधी

(C) मैक्समूलर

(D) बिस्मिल्ला खाँ

Ans – (A)

32.'देयर मैकेनिज्म' किनकी कृति है ?

(A) यतीन्द्र मिश्र

(B) रामविलास शर्मा

(C) महात्मा गांधी

(D) भीमराव अम्बेडकर

Ans – (D)

33. 'विडंबना' का अर्थ है -

(A) समर्थक

(B) पालक

(C) उपहास

PDF SARTHI.COM

(D) अचानक

Ans – (C)

34. भारत में जाति-प्रथा का मुख्य कारण क्या है ?

(A) बेरोजगारी

(B) गरीबी

(C) उद्योग धंधों की कमी

(D) अमीरी

Ans – (A)

35.'मानव मुक्ति के पुरोधा' किसे कहा या है ?

(A) नलिन विलोचन शर्मा

(B) यतीन्द्र मिश्र

(C) भीमराव अंबेडकर

(D) अमरकांत

Ans – (C)

PDF SARTHI.COM

2. विष के दाँत

लेखक परिचय

लेखक → नलिन विलोचन शर्मा

जन्म → 18 फरवरी 1916 (पटना के बदरघाट में)

पिता → महमहोपाद्य पंडित रामावतार शर्मा

माता → रत्नावली शर्मा

प्रमुख रचनाएँ → दृष्टिकोण साहित्य का इतिहास दर्शन, मानदंड, प्रेमचंद्र और संत परम्परा एवं साहित्य

Q. विष के दाँत क्या है?

Ans - कहानी

विष के दाँत तथा अन्य कहानियों से विष का दाँत कहानी लिया गया है :-

'विष के दाँत' पाठ का सारांश

- विष के दाँत शीर्षक कहानी के लेखक श्री नलिन विलोचन शर्मा हैं। उन्होंने अपने लेख में, सामंती मिजाज के धनवान परिवार और उसी पर आश्रित एक गरीब परिवार का चरित्र-चित्रण किया है। कहानी में सेन साहब और उनकी पत्नी को कड़े अनुशासन को पालन करने वाला दिखाया गया है। उनके परिवार में पाँच लड़की के बाद एक लड़का का जन्म होता है। लड़कियों के ऊपर अनुशासन की छड़ी बहुत कड़ी है जिससे लड़कियाँ मानो मिट्टी की मूर्ति बन चुकी है। उसी परिवार में लड़का सबसे छोटा है। सारा अनुशासन घर का नियम-व्यवस्था सब कुछ उसके लिए फेल है। लाड़-प्यार में शरारती हो चुका है। अभी उम्र पाँच वर्ष का है लेकिन नौकर, बहन आदि पर हाथ चला देता है।
- एक दिन सेन साहब अपने दोस्तों के साथ ड्राइंग रूम में गपशप कर रहे थे। उनके एक पत्रकार मित्र भी थे। उसके साथ छोटा लड़का भी था जो काशू के उम्र का ही था। बात-चीत के क्रम में किसी ने उस लड़के के

PDFSARTHI.COM

बारे में जानकारी चाही, बस सेन साहब अपने पुत्र खोखा के बारे में बोलने लगे। इसे इंजीनियर बनाना है। और बोलते ही चले गये। सेन साहब व्यवहार में परिवर्तन हो चुका था अपने पुत्र खोखा के लिए।

- उन्हीं के अहाते में गिरधर लाल रहता था। उसका छोटा लड़का मदन था जो खोखा के उम्र का था। एक दिन गाड़ी को गन्दा कर रहा था। रात में सेन साहब ने गिरधरलाल को बुलाकर काफी डाँटा। परिणामतः गिरधरलाल ने अपने बेटे मदन को खूब पीटा। रात में सोने वक्त सेनसाहब मदन की रोने की आवाज सुनकर काफी खुश हुए।
- अगले ही दिन काशू बाबू खेलने के लिए बगल के गली में चले गये। जहाँ मदन और अन्य लड़के लट्टू नचा रहे थे। खोखा ने मदन से रौब में लट्टू माँगा। नहीं मिलने पर मदन पर घूंसा चला दिया। बदले में मदन ने भी घूंसा चला दिया। और काशू बाबू के दो दाँत टूट गये। यानी विष के दाँत टूट गये।

2. विष के दाँत

लेखक परिचय

लेखक → नलिन विलोचन शर्मा

जन्म → 18 फरवरी 1916 (पटना के बदरघाट में)

पिता → महमहोपाद्य पंडित रामावतार शर्मा

माता → रत्नावली शर्मा

प्रमुख रचनाएँ → दृष्टिकोण साहित्य का इतिहास दर्शन, मानदंड, प्रेमचंद्र और संत परम्परा एवं साहित्य

Q. विष के दाँत क्या है?

Ans - कहानी

विष के दाँत तथा अन्य कहानियों से विष का दाँत कहानी लिया गया है :-

PDFSARTHI.COM

PDF Sarthi.Com

- Objective -

1. नलिन विलोचन शर्मा का जन्म कब हुआ था ?

Ans - 1916 में

2. गिरधर लाल का बेटा है ?

Ans - मदन

3. खोया किस कहानी का पात्र है ?

Ans - विष के दाँत

4. सीमा, रजनी, आलो, सेफाली, आरती किसकी बेटी थी ?

Ans – सेन साहब का

5. किसके अनुसार शेनों ने अपने सिद्धांतो को बदल लिया ?

Ans - खोखा के अनुसार

6. सेन साहब की कार की कीमत कितनी थी ?

Ans -साढ़े सात हजार

7. मोटर को कोई खतरा हो सकता था ?

Ans - खोखा से

8. सेन साहब की नई कार किस रंग की थी ?

Ans - काली

PDFSARTHI.COM

Pdf, Notes OR Test Series लेने के लिए हमें WhatsApp करे - 7488296191

9. विष के दाँत कहानी किस वर्ग के अनेक अंतर विरोधियों को उजागर करती है ?

Ans - निम्न वर्ग का

10. सेन साहब अपने बेटे को क्या बनाना चाहते थे?

Ans – इंजीनियर

11. सेन साहब के मोटर कार की पिछली बत्ती का लाल सिसा किसने चकनाचूर किया था ?

Ans - काशु (खोखा)

12. किसके लिए घर में अलग नियम थे ?

Ans - बेटियों के लिए

13. गिरधरलाल, सेन साहब की फैक्ट्री में क्या करता था ?

Ans - किरानी

14. हिन्दी कविता में प्रगवाद के प्रर्वतक कौन है ?

Ans - नलिन विलोशन शर्मा

15. किसकी लड़कियां तहजीज और तमीज की जिती-जागति मूरत है ?

Ans - सेन साहब की

16. महल और झोपरी वालों की लड़ाई में कौन जितते हैं?

Ans - महल वाले

17. विष के दाँत कहानी का प्रमुख पात्र है ?

Ans - खोखा

18. काशु और मदन की लड़ाई के संबंध में लेखक क्या कहते हैं?

PDFSARTHI.COM

Ans – बंगले के पिल्ले और गली के कुत्ते की लड़ाई

19. खोखा के दाँत तोड़ने के बाद गिरधर लाल मदन को क्या करता है?

Ans - लपककर मदन को हाथों से उठा लेता है |

20. सेन साहब के दूर के रिश्तेदार कौन थे ?

Ans - अखबारबिश

21. नलिन विलोचन शर्मा की स्कूल की पढ़ाई कहाँ से हुई थी ?

Ans - पटना कोलेजिएट स्कूल में

22. नलिन विलोचन शर्मा प्रधानाध्यक रहे ?

Ans - हर प्रसाद दास जैन कॉलेज आरा के, राँची विश्वविद्यालय के पटना विश्वविद्यालय के |

1. सेन साहब के परिवार में बच्चों के पालन पोषण में किए जा रहे लिंग आधारित भेदगाव को अपने शब्द में वर्णन करें !

Ans - सेन साहब के घर में बच्चों के पालन-पोषण में लिंग के अनुसार भेदभाव किया जा रहा था उनकी लड़कियों को पढ़ने खेलने एवं हँसने के लिए अलग नियम बनाए गये थे जबकि उसके बेटे काशु के लिए अलग नियम थे।

2. खोखा किन मामलों में अपवाद था –

Ans - सेन साहब का बेटा, खोखा घर में बनाए गए नियम के मामलों में अपवाद था | पढ़ाई, खेलकुद

3. मदन और ड्राइवर के बिच विवाद में कहानीकार क्या बताना चाहते है ?

Ans - मदन और ड्राईवर के बीच विवाद में कहानीकार यह बताना चाहते है कि महल वाले कभी यह नही चाहते हैं कि झोपड़ी वालों के बच्चें उनकी कीमती समानों के आसपास भी भटके|

4. काशु और मदन के बीच झगड़े का कारण क्या था इस प्रसंग के द्वारा लेखक क्या दिखाना चाहते है ?

PDFSARTHI.COM

Ans - काशु और मदन के बीच झगड़े का कारण लट्टू घुमाने का खेल था | इस प्रयोग द्वारा लेखक यह बताना चाहते है कि झोपड़ी वाले लोग भी अपने अपमान का बदला ले सकते है|

5. आपकी दृष्टि में कहानी का नायक कौन है, तकपूर्ण उत्तर दें ?

Ans - हमारी दृष्टि में कहानी का नायक मदन है क्योंकि वह शेनसाहब से बिना डरे ड्राइवर से लड़ जाते है और उसके बेटे के दो दाँत भी तोड़ देते है |

6. काशु का चरित्र-चित्रण करें।

Ans – काशु सेन साहब का बुढ़ापे का आँख का तारा था सेन साहब उसे इंजीनियर या बिजनेसमैन बनाना चाहते थे। काशु अपने पिता द्वारा बनाये गए। सभी मामलों में अपवाद था। घर के लाड - प्यार ने उसे बिगाड़ दिया था वह बिना डरे किसी के ऊपर हाथ चला देता था।

7. सेन साहब का चरित्र-चित्रण करें।

Ans - सेन साहब विष के दाँत कहानी का मुख्य पात्र है सेन साहब की पाँच पुत्रियाँ और एक पुत्र थे। वे अपने बच्चों के लिए घर पर अलग-अलग नियम बनाए है | वह अपने बेटे में बुढ़ापे का सहारा देखते थे।

8. मदन का चरित्र - चित्रण करें |

Ans - मदन विष के दाँत कहानी का सबसे प्रमुख पात्र है " यह बिना डरे सेन साहब के ड्राइवर का विरोध करता है। एवं जब काशु इसके साथ गली में खेलने आता है तो मदन उससे लड़ाई कर उसके दो दाँत तोड़ देता है |

9. गिरधरलाल का चरित्र - चित्रण करें |

Ans - गिरधर लाल का चरित्र सेनसाहब का किरानी और मदन का पिता ही मदन के द्वारा सेन साहब के बेटे से लड़ाई करने पर गिरधर लाल को काम से निकाल दिया जाता है |

PDF SARTHI.COM

2. विष के दाँत

Short answer question

1. (i) 'गिरधर निस्सहाय निष्ठुरता के साथ आगे बढ़ा।' इसका आशय स्पष्ट करें।

उत्तर - गिरधरलाल अपने पुत्र मदन की धृष्टता से परेशान हो गया था। उसने सोचा कि यदि सेन साहब उसे मदन के चलते नौकरी से निकाल देंगे, तो उसके परिवार की स्थिति अत्यंत दयनीय हो जाएगी। गिरधरलाल को अपनी निस्सहायता का अनुभव हुआ और वह मदन के प्रति क्रूरता से पेश आने के लिए विवश हो उठा। वह मदन को पीटने के लिए आगे बढ़ा।

(ii) मदन के प्रसंग में गिरधरलाल में कैसा परिवर्तन आया ?

उत्तर - गिरधरलाल मदन को पीटने के लिए आगे बढ़ा, पर उसके (मदन के) करीब आकर ठिठक गया। पिता से बराबर पिटे जाने के कारण उसने अभ्यासवश मार को बरदाश्त करने के लिए अपने दाँत भींच लिए। पर, पिता ने मदन को मारने के बदले उसे लपककर हाथों से उठा लिया और उसे धन्यवाद देते हुए कहा— "शाबाश बेटे, तुमने खोखा के दो-दो दाँत तोड़ डाले। बड़ा अच्छा किया।"

(iii) मदन हक्का-बक्का क्यों रह गया?

उत्तर - मदन अपने पिता के क्रोध का भुक्तभोगी था। वह बराबर अपने पिता से पिटता रहता था। वह अपने पिता के प्यार से वंचित था। पर, उस दिन पिता ने पीटने की जगह प्यार से उसे लपककर हाथों से उठा लिया। पिता के इस अप्रत्याशित व्यवहार से मदन हक्का-बक्का रह गया।

(iv) सेन साहब खोखा में कैसी संभावनाएँ देखते थे? और उन संभावनाओं के लिए उन्होंने कैसी शिक्षा तय की थी ?

उत्तर - सेन साहब खोखा में 'बिजनेसमैन' और 'इंजीनियर' होने की संभावना देखते थे, इसलिए उसे ट्रेनिंग भी वैसी ही दी जा रही थी।

2. (i) मिस्टर सेन और मिसेज सेन को किस बात का गर्व है ?

PDF SARTHI.COM

उत्तर - मिस्टर और मिसेज सेन को इस बात का गर्व है कि उनकी पाँचों लड़कियाँ कठपुतलियाँ हैं, उनके द्वारा बनाए गए नियमों का पालन करती हैं, वे अपने मन का नहीं करतीं।

(ii) कहानीकार ने क्यों लिखा है कि मिस्टर और मिसेज सेन की पाँचों लड़कियाँ कठपुतलियाँ हैं ?

उत्तर - जिस प्रकार कठपुतलियाँ 'सूत्रधार' के इशारों पर नाचती हैं, उसी प्रकार मिस्टर और मिसेज सेन की लड़कियाँ उनके द्वारा निर्धारित नियमों का अक्षरशः पालन करती हैं। वे अपने मन का नहीं करतीं। इसीलिए, कहानीकार ने लिखा है कि मिस्टर और मिसेज सेन की पाँचों लड़कियाँ कठपुतलियाँ हैं।

(iii) मिस्टर और मिसेज सेन की लड़कियाँ किस बात में निपुण थीं?

उत्तर - मिस्टर और मिसेज सेन की पाँचों लड़कियाँ अपने-अपने होठों पर मुस्कराहट सँवारने में निपुण थीं। वे इस कला में इतनी निपुण थीं कि सोसाइटी की तारिकाएँ भी उनसे उस कला को सीखने की इच्छा कर सकती थीं।

(iv) पाँचों लड़कियों को किसी ने किलकारी मारकर हँसते हुए नहीं देखा, आखिर क्यों ?

उत्तर - मिस्टर और मिसेज सेन ने उन्हें मुस्कराने की छूट दी थी, खिलखिलाकर किलकारी मारने की नहीं, क्योंकि उससे सभ्यता की मर्यादा के खंडित होने की आशंका थी। चूँकि वे पाँचों लड़कियाँ अपने माता-पिता के आदेशों का अक्षरशः पालन करती थीं, इसलिए वे केवल मुस्कराती थीं, खिलखिलाकर हँसना उनके अधिकार क्षेत्र में नहीं आता था।

3. (i) **महल और झोपड़ी वालों की लड़ाई में अकसर महल वाले ही जीतते हैं, पर उसी हालत में, जब दूसरे झोपड़ी वाले उनकी मदद अपने ही खिलाफ करते हैं। इसका भाव स्पष्ट करें।**

उत्तर - धनी और निर्धन के बीच की लड़ाई में प्रायः धनी की ही जीत होती है। धनी यह जीत अपने बल पर नहीं, गरीबों के बल पर प्राप्त करता है। गरीब- यदि धनियों की मदद नहीं करें, तो धनियों में इतना बल नहीं है कि वे गरीबों को हरा सकें।

(ii) सेन साहब के कितनी लड़कियाँ थीं? उनके नाम क्या थे?

उत्तर - सेन साहब के पाँच लड़कियाँ (बेटियाँ) थीं। उनका नाम था - सीमा, रजनी, - आलो, शेफाली और आरती
।

PDFSARTHI.COM

Long answer question

1. सेन साहब के परिवार में बच्चों के पालन-पोषण में किए जा रहे लिंग- आधारित भेदभाव का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

उत्तर - सेन साहब के परिवार में लड़कियों एवं लड़के के पालन-पोषण में भेदभाव किया जाता है। लड़कियों को यह शिक्षा दी जाती है कि उन्हें क्या-क्या नहीं करना है। यानी, उनकी स्वच्छंदता प्रतिबंधित है। इसके विपरीत, लड़के काशू को पूरी स्वतंत्रता है, वह चाहे जो करे, उसे कोई डाँटनेवाला नहीं है। बच्चों के पालन-पोषण में लिंगभेद के चलते सेन साहब की लड़कियाँ कुंठित सी हो गई हैं और लड़का काशू बिगड़ैल हो गया है।

2. रोज-रोज अपने बेटे की पिटाई करनेवाला गिरधरलाल मदन द्वारा काशू की पिटाई करने पर उसे दंडित करने के बजाय प्रसन्नता से अपनी छाती से क्यों लगा लेता है ?

उत्तर - मदन की हरकतों के कारण गिरधरलाल को प्रतिदिन सेन साहब की झिड़की खानी पड़ती थी। वह अपनी लाचारी, कायरता और भीतर की खीझ को अपने बेटे, मदन पर उतारता और उसे पीटने के बाद भीतर-ही-भीतर खूब रोता। धनी वर्ग की अकड़ के प्रति गिरधरलाल के भीतर दबा हुआ आक्रोश था। उसकी आर्थिक विपन्नता और कायरता उसे उस आक्रोश को व्यक्त करने का मौका नहीं देती थी। मदन ने जब काशू की पिटाई कर दी तब उसको (गिरधरलाल को) ऐसा लगा जैसे मदन ने उसके मन की बात सुन ली हो, उसे भीतर के आक्रोश को मूर्त रूप दे दिया हो। यही कारण है कि वह (गिरधरलाल) मदन द्वारा काशू की पिटाई करने पर उसे दंडित करने के बजाय प्रसन्नतापूर्वक अपनी छाती से लगा लेता है।

3. काशू और मदन के बीच झगड़े का क्या कारण था? इस प्रसंग द्वारा लेखक क्या दिखाना चाहता है ?

उत्तर- काशू ने मदन और उसके मित्रों को लट्टू नचाते देखा, तो उसकी तबीयत मचल गई। वह भी लट्टू नचाना चाहता था। पर, काशू से अपमानित प्रताड़ित मदन नहीं चाहता था कि काशू लट्टू नचाए। इसपर काशू ने तैश में आकर मदन को एक घूँसा रसीद कर दिया। मदन भी काशू पर टूट पड़ा। इस प्रसंग के द्वारा लेखक आहत बाल मन की प्रतिक्रियाओं को प्रस्तुत करना चाहता है।

4. (i) खोखा किन मामलों में अपवाद था ? सेन दंपति खोखा में कैसी संभावनाएँ देखते थे और उन संभावनाओं के लिए उन्होंने उसकी कैसी शिक्षा तय की थी ?

PDFSARTHI.COM

उत्तर- (i) खोखा का जन्म तब हुआ था जब उसकी कोई उम्मीद मिसेज सेन और सेन साहब को बाकी नहीं रह गई थी। इस तरह खोखा जन्म के संदर्भ में 'जीवन के नियम' का अपवाद था। इसके साथ ही वह घर के नियमों का भी अपवाद था, क्योंकि उसका जन्म पाँच बहनों के बाद हुआ था। नियम केवल पाँचों लड़कियों के लिए थे, खोखा घर के नियमों के ऊपर था।

सेन दंपत्ति खोखा में इंजीनियर होने की संभावना देखते थे, इसलिए ट्रेनिंग भी उसे वैसी ही दी जा रही थी। खोखा पाँच साल का हो रहा था, पर उसे किसी किंडरगार्टन स्कूल में भेजने के बजाय उसे घर पर ही किसी बढ़ई मिस्त्री के साथ दो-एक घंटे के लिए रहना अनिवार्य कर दिया गया था ताकि बढ़ई मिस्त्री के साथ वह भी कुछ ठोक-पीट किया करे। सेन साहब को विश्वास था कि इस तरह पाँच वर्षीय खोखा की उँगलियाँ औजारों से परिचित हो जाएँगी। इससे उसे इंजीनियर बनने में मदद मिलेगी।

(ii) 'विष के दाँत' शीर्षक कहानी की प्रमुख घटना का वर्णन करें।

उत्तर - सेन साहब (फैक्टरी के मालिक) के बिगड़ैल लड़के काशू ने गिरधरलाल (सेन साहब की फैक्टरी में किरानी) के लड़के मदन से जबरन लट्टू लेना चाहा। इसपर दोनों में कहा-सुनी हो गई। काशू ने मदन पर घूँसा चला दिया। मैदन काशू पर टूट पड़ा। काशू जान बचाकर भागा। मदन के पिता, गिरधरलाल

ने अपने बेटे को बहुत सराहा, क्योंकि उसने काशू के धन के धन-मदरूपी विष के दाँत उखाड़ दिए थे।

(iii) 'विष के दाँत' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालें।

उत्तर - 'विष के दाँत' कहानी का शीर्षक अत्यंत सार्थक है। इस कहानी में किरानी गिरधरलाल के पुत्र मदन ने धनी वर्ग के प्रतिनिधि सेन साहब के पुत्र काशू को पीटकर धनी वर्ग के अहंकाररूपी विष के दाँत को तोड़ने का काम किया।

5. (i) सेन साहब और उनके मित्रों के बीच क्या बातचीत हुई और पत्रकार मित्र ने उन्हें किस तरह उत्तर दिया ?

उत्तर - सेन साहब और उनके मित्रों के बीच यही बातचीत हुई कि उनके लड़के भविष्य में क्या करेंगे। किसी मित्र ने जब पत्रकार से पूछा कि उनका लड़का स्कूल तो अवश्य जाता होगा, तब उन्होंने अपने मित्र को जवाब देते हुए कहा कि मैं चाहता हूँ कि मेरा लड़का जेंटिलमैन जरूर बने, और जो कुछ बने, उसका काम है, उसे पूरी स्वतंत्रता है।

PDFSARTHI.COM

(ii) "हंस कौओं की जमात में शामिल होने के लिए ललक गया।" इसकी सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

उत्तर - प्रस्तुत वाक्य कहानीकार नलिन विलोचन शर्मा की कहानी 'विष के दाँत' पाठ से लिया गया है। यहाँ 'हंस' शब्द सेन साहब के खोखा के लिए तथा 'कौआ' शब्द मदन जैसे 'आवारागर्द' लड़कों के लिए प्रयुक्त हुआ है।

मदन पड़ोसियों के आवारागर्द छोकरों के साथ लट्टू नचा रहा था। खोखा ने देखा तो उसका जी लट्टू नचाने के लिए मचल उठा। वह भी उन आवारागर्द बच्चों में शामिल होने के लिए ललक उठा। अर्थात 'हंस' (धनी लड़का) 'कौओं' (गरीब बच्चों) के बीच जाने के लिए मचल उठा।

(iii) "लड़कियाँ क्या हैं, कठपुतलियाँ हैं और उनके माता-पिता को इस बात का गर्व है।" इस कथन की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

उत्तर - प्रस्तुत वाक्य कहानीकार नलिन विलोचन शर्मा की कहानी 'विष के दाँत' पाठ से उद्धृत है। मिस्टर और मिसेज सेन को पाँच लड़कियाँ हैं। ये सेनों द्वारा निर्धारित नियमों का अक्षरशः पालन करती हैं। उनका अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। ये लड़कियाँ नहीं, कठपुतलियाँ हैं, दूसरों के इशारों पर चलनेवाली। इन लड़कियों (कठपुतलियों) के माता-पिता को गर्व है कि उनकी लड़कियाँ आज्ञाकारिणी हैं।

2. विष के दाँत

1. "विष के दाँत' कहानी के रचयिता कौन है ?

(A) अमरकांत

(B) नलिन विलोचन शर्मा

(C) यतीन्द्र

(D) मैक्समूलर

Ans – (B)

PDF SARTHI.COM

2. नलिन विलोचन शर्मा का जन्म ई० में हुआ ?

(A) 1914

(B) 1915

(C) 1916

(D) 1917

Ans – (C)

3. नलिन विलोचन शर्मा का जन्म कहाँ हुआ था ?

(A) सिमरिया

(B) बलिया

(C) उन्नाव

(D) पटना

Ans – (B)

4. 'विष के दाँत' पाठ की विधा है -

(A) निबंध

(B) व्यक्तिचित्र

(C) कविता

(D) कहानी

Ans – (B)

5. गिरधरलाल का बेटा है -

PDF SARTHI.COM

(A) खोखा

(B) काशू

(C) मदन

(D) आलो

Ans – (C)

6. खोखा किस कहानी का पात्र है ?

(A) विष के दाँत

(B) बहादुर

(C) मछली

(D) नाखून क्यों बढ़ते हैं

Ans – (A)

7.'मदन' किसका बेटा है ?

(A) सेन साहब का

(B) गिरधर लाल का

(C) शोफर का

(D) अखबारनवीस का

Ans – (B)

8. सेन साहब की कितनी लड़कियाँ थीं ?

(A) दो

PDF SARTHI.COM

(B) तीन

(C) चार

(D) पाँच

Ans – (D)

9. सीमा, रजनी, आलो, शेफाली, आरती पाँचों किनकी बेटियाँ है ?

(A) गिरधरलाल की

(B) शोफर की

(C) सेन साहब की

(D) पत्रकार महोदय की

Ans – (C)

10. नाउम्मीद बुढ़ापे की आँखों का तारा है -

(A) मदन

(B) खोखा

(C) रजनी

(D) शेफाली

Ans – (B)

11. किसके अनुसार सेनों ने सिद्धांतों को भी बदल लिया था ?

(A) बेटियों के अनुसार

(B) खोखा के अनुसार

PDF SARTHI.COM

(C) मदन के अनुसार

(D) गिरधर के अनुसार

Ans – (B)

12. खोखा के दाँत किसने तोड़े ?

(A) मदन ने

(B) मदन के दोस्त ने

(C) सेन साहब ने

(D) गिरधर ने

Ans – (A)

13. सेन साहब की कार की कीमत है -

(A) साढ़े सात हजार

(B) साढ़े आठ हजार

(C) साढ़े नौ हजार

(D) साढ़े सात लाख

Ans – (A)

14. सेन साहब की आँखों का तारा है -

(A) कार

(B) खोखा

(C) खोखी

PDF SARTHI.COM

(D) उपर्युक्त सभी

Ans – (B)

15. मोटर को कोई खतरा हो सकता था तो …….. से।

(A) खोखा

(B) मदन

(C) सीमा

(D) काशु

Ans – (A)

16. लड़कियाँ तो पाँचों बड़ी सुशील हैं, पाँच-पाँच ठहरी और सो भी लड़कियाँ, तहजीब और तमीज की तो जीती-जागती मूरत ही हैं उपर्युक्त गद्यांश किस पाठ का है ?

(A) नाखून क्यों बढ़ते हैं

(B) नौबतखाने में इबादत

(C) विष के दाँत

(D) परंपरा का मूल्यांकन

Ans – (C)

17. सेन साहब की नई मोटरकार किस रंग की थी ?

(A) सफेद

(B) काली

(C) नीली

PDF SARTHI.COM

(D) लाल

Ans – (B)

18.महल और झोपड़ीवालों की लड़ाई में अक्सर महलवाले ही जीतते हैं।इस गद्यांश के लेखक कौन हैं?

(A) महात्मा गाँधी

(B) अमरकांत

(C) नलिन विलोचन शर्मा

(D) अशोक वाजपेयी

Ans – (C)

19.विष के दाँत' कहानी किस वर्ग के अनेक अंतर्विरोधों को उजागर करती है ?

(A) उच्च वर्ग

(B) मध्य वर्ग

(C) निम्न वर्ग

(D) शोषित वर्ग

Ans – (C)

20. सेन साहब अपने बेटे खोखा को क्या बनाना चाहते थे ?

(A) डॉक्टर

(B) खिलाड़ी

(C) बिजनेस मैन, इंजीनियर

PDF SARTHI.COM

(D) पत्रकार

Ans – (C)

21. सेन साहब की नई मोटरकार की पिछली बत्ती का लाल शीशा किसने चकनाचूर किया था ?

(A) मदन

(B) काशू

(C) शोफर

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (B)

22. खोखा जीवन के नियम का अपवाद था और यह अस्वाभाविक नहीं था कि वह घर के नियमों का भी अपवाद हो। यह गद्यांश किस पाठ का है ?

(A) विष के दाँत

(B) शिक्षा और संस्कृति

(C) बहादुर

(D) मछली

Ans – (A)

23. खोखा के पिता हैं -

(A) गिरधरलाल

(B) सेन साहब

(C) पत्रकार

PDF SARTHI.COM

(D) अखवारनवीस

Ans – (B)

24. किसके लिए घर में अलग नियम थे, दूसरी तरह की शिक्षा थी ?

(A) खोखा के लिए

(B) मदन के लिए

(C) बेटियों के लिए

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (C)

25. मैं चाहता हूँ कि वह जेंटिल मैन जरूर बने और जो कुछ बने, उसका काम है उसे पूरे आजादी रहेगी। अपने बच्चे के विषय में ऐसा ख्याल किनका है ?

(A) सेन साहब का

(B) पत्रकार महोदय का

(C) गिरधर लाल का

(D) अखबार नवीस का

Ans – (A)

26. ऐसे ही लड़के आगे चलकर गुण्डे, चोर, डाकू बनते हैं।" यह पंक्ति कहानी के किस पात्र ने कही है ?

(A) सेन साहब की धर्मपत्नी

(B) गिरधर

(C) सेन साहब

PDF SARTHI.COM

(D) शोफर

Ans – (C)

27. गिरधरलाल, सेन साहब की फैक्टरी में क्या था ?

(A) किरानी

(B) ड्राइवर

(C) एकाउन्टेन्ट

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (A)

28. हिन्दी कविता में प्रपद्यवाद के प्रवर्तक कौन हैं ?

(A) मैक्समूलर

(B) नलिन विलोचन शर्मा

(C) अशोक वाजपेयी

(D) अमरकांत

Ans – (B)

29. किनकी लड़कियाँ तहजीब और तमीज की जीती-जागती मूरत है ?

(A) गिरधरलाल की

(B) डॉक्टर साहब की

(C) सेन साहब की

(D) इंजीनियर साहब की

PDF SARTHI.COM

Ans – (C)

30. सीमा, रजनी, आलो, शेफाली, आरती-पाँचों किनकी बहने थीं ?

(A) मदन की

(B) खोखा की

(C) लेखक की

(D) सेन साहब का

Ans – (B)

31. झोपड़ी और महल की लड़ाई में अक्सर कौन जीतते हैं ? नहीं

(A) महल वाले

(B) झोपड़ी वाले

(C) दोनों

(D) कोई

Ans – (A)

32. कौन-सी कहानी मध्यवर्ग के अंतर्विरोधों को उजागर करती है ?

(A) श्रम विभाजन और जाति प्रथा

(B) नाखून क्यों बढ़ते हैं

(C) विष के दांत

(D) नागरी लिपि

Ans – (C)

PDFSARTHI.COM

33. दर्शन और संस्कृत के प्रख्यात विद्वान महामहोपाध्याय पं०रामावतार शर्मा के ज्येष्ठ पुत्र थे -

(A) भीमराव अंबेदकर

(B) नलिन विलोचन शर्मा

(C) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(D) यतीन्द्र मिश्र

Ans – (B)

34. मध्यवर्ग के अनेक अंतर्विरोधों को उजागर करने वाली कहानी है...

(A) श्रम विभाजन और जाति प्रथा

(B) भारत से हम क्या सीखे

(C) नागरी लिपि

(D) विष के दांत

Ans – (D)

35. विष के दांत कहानी का प्रमुख पात्र है -

(A) गिरधर

(B) सेन साहब

(C) खोखा

(D) सेन साहब की पत्नी

Ans – (C)

36. काशू और मदन की लड़ाई के संबंध में लेखक क्या कहता है ?

PDF SARTHI.COM

(A) हड्डी और मांस की लड़ाई

(B) बँगले के पिल्ले और गली के कुत्ते की लड़ाई

(C) उपर्युक्त दोनों

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (C)

37. खोखा के दाँत तोड़ने के बाद गिरधर लाल मदन को क्या करता है ?

(A) गुस्सा करता है

(B) पिटाई करता है

(C) लपककर मदन को हाथों से उठा लेता है।

(D) घर से भगा देता है

Ans – (C)

38. सेन साहब के दूर के रिश्तेदार थे -

(A) गिरधर लाल

(B) मुकर्जी साहब

(C) शोफर

(D) अखबारनवीस

Ans – (B)

39. नलिन विलोचन शर्मा की स्कूल की पढ़ाई कहाँ से हुई थी ?

(A) पटना कॉलेजिएट स्कूल

PDF SARTHI.COM

(B) पटना हाइस्कूल

(C) बी० एन० कॉलेजिएट स्कूल

(D) टी० के० घोष हाई स्कूल

Ans – (A)

40. नलिन विलोचन शर्मा प्राध्यापक रहे -

(A) हर प्रसाद दास जैन कॉलेज आरा के

(B) राँची विश्वविद्यालय के

(C) पटना विश्वविद्यालय के

(D) उपर्युक्त सभी के

Ans – (B)

41. काली चमकती हुई स्ट्रीमल इंड नई मोटर कार थी -

(A) इंजीनियर साहब की

(B) अखबार नवीस की

(C) पत्रकार महोदय की

(D) सेन साहब की

Ans – (D)

42. मदन खोखा के कितने दाँत तोड़ डाले ?

(A) एक

(B) दो

PDF SARTHI.COM

(C) तीन

(D) चार

Ans – (B)

43.'विष के दाँत' कहानी में मोटरकार किसकी थी ?

(A) गिरधर की

(B) सेन साहब की

(C) मदन की

(D) शोफर की

Ans – (B)

44. मदन के लिए क्या खाना मामूली बात थी ?

(A) दुत्कार

(B) प्यार

(C) मार

(D) फटकार

Ans – (C)

PDF SARTHI.COM

3. भारत से हम क्या सीखे

लेखक परिचय

लेखक → फ्रेड्रिक मैक्समूलर

जन्म → 6 दिसम्बर 1823 ई० को (जर्मनी)

पिता → विल्हेम मैक्समूलर

भाषा अंतरित → हितोपदेश, कठ और केन, तथा उपनिषद का अनुवाद जर्मन भाषा में किया।

→ जब मैक्समूलर 4 वर्ष के थे तब उसके पिता का निधन हो गया था।

→ **मृत्यु** - 28 अक्टूबर सन् 1900 ई०

→ इस भाषन का अनुवादक भवानी शंकर त्रिवेदी है |

पाठ का सारांश

प्रस्तुत शीर्षक "भारत से हम क्या सीखें।" वस्तुतः भारतीय सविल सेवा के चयनित युवा अंग्रेज अधिकारी लोगों को प्रशिक्षण के लिए मैक्समूलर साहब द्वारा दिया गया भाषण का अंश है।

पश्चिम जगत् में भारत के संबंध में सही-सही ज्ञान एवं दृष्टि के प्रणेता विश्वविख्यात विद्वान फ्रेड्रिक मैक्समूलर पहला व्यक्ति थे। उन्होंने भारतीय सभ्यता-संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान, संस्कृत भाषा कला-कौशल आदि का गहराई से अध्ययन किया और दुनियाँ के सामने स्पष्ट किया। स्वामी विवेकानंद ने उन्हें 'वेदांतियों का भी वेदांती' कहा।

सर्वविध संपदा और प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण कौन-सा देश है, यदि आप मुझे इस भूमण्डल का अवलोकन करने के लिए कहें तो बताऊँगा कि वह देश है—भारत। भारत, जहाँ भूतल पर ही स्वर्ग की छटा निखर रही है। यदि यूनानी, रोमन और सेमेटिक जाति के यहूदियों की विचारधारा में ही सदा अवगाहन करते रहनेवाले हम यूरोपियनों को ऐसा कौन-सा साहित्य पढ़ना चाहिए जिससे हमारे जीवन अंतरतम परिपूर्ण अधिक सर्वांगीण, अधिक विश्वव्यापी,

PDFSARTHI.COM

यूँ कहें कि संपूर्णतया मानवीय बन जाये, और यह जीवन ही क्यों, अगला जन्म तथा शाश्वत जीवन भी सुधर जाये, तो मैं एक बार फिर भारत ही का नाम लूँगा।

यदि आपकी अभिरूचि की पैठ किसी विशेष क्षेत्र में है, तो उसके विकास और पोषण के लिए आपको भारत में पर्याप्त अवसर मिलेगा।

यदि आप भू-विज्ञान में रूचि रखते हैं तो हिमालय से श्रीलंका तक का विशाल भू-प्रदेश आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। यदि आप वनस्पति जगत में विचरना चाहते हैं तो भारत एक ऐसी. फुलवारी है जो हकर्स जैसे अनेक वनस्पति वैज्ञानिकों को अनायास ही अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है। यदि आपकी रूचि जीव-जन्तुओं के अध्ययन में है तो आपका ध्यान श्री हेकल की ओर अवश्य होगा, जो इन दिनों भारत के कान्तारों की छानबीन के साथ ही भारतीय समुद्रतट से मोती भी बीन रहे हैं।

यदि आप नृवंश विद्या में अभिरूचि रखते हैं तो भारत आपको एक जीता-जागता संग्रहालय ही लगेगा। यदि आप पुरातत्व प्रेमी हैं, और यदि आपने यहाँ रहते हुए पुरातत्व के द्वारा एक प्राचीन चाकू या चकमक या किसी प्राणी का कोई भाग ढूंढ़ निकालने के आनन्द का अनुभव किया हो तो आपको जनरल कर्मिघम की भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ लेनी चाहिए और तब भारत के बौद्ध सम्राटों के द्वारा निर्मित (नालन्दा जैसे) विश्वविद्यालयों अथवा विहारों के ध्वंसावशेषों को खोद निकालने के लिए आपका फावड़ा आतुर हो उठेगा।

यदि आपके मन में पुराने सिक्कों के लिए लगाव है, तो भारतभूमि में ईरानी, केरियन, थेसियन, पार्थियन, यूनानी, मेकेडिनियन, शकों, रोमन और मुस्लिम शासकों के सिक्के प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होंगे। दैवत विज्ञान पर भारत के प्राचीन वैदिक दैवत विज्ञान के कारण जो नया प्रकाश पड़ा है, उसके फलस्वरूप संपूर्ण दैवत विज्ञान को नया स्वरूप प्राप्त हो गया है। ”

नीति कथाओं के अध्ययन क्षेत्र में भी भारत के कारण नवजीवन का संचार हो चुका है, क्योंकि भारत के कारण ही समय-समय पर नानाविध साधनों और मार्गों के द्वारा अनेक नीति कथाएँ पूर्व से पश्चिम की ओर आती रही हैं।

आपमें से कइयो ने भाषाओं को हीन नहीं, भाषा विज्ञान का भी अध्ययन किया होगा। तो आपको क्या भारत से बढ़कर दूसरा कोई देश दिखाई देता है जहाँ केवल शब्दों का ही नहीं, बल्कि व्याकरणात्मक तत्त्वों के विकास और लय से संबद्ध भाषावैज्ञानिक समस्याओं के अध्ययन का । महत्त्वपूर्ण अवसर प्राप्त हो सके यदि आप विधिशास्त्र या कानून के विद्यार्थी हैं तो आपको विधि-संहिताओं के एक ऐसे इतिहास की जाँच-पड़ताल का अवसर मिलेगा जो

PDF SARTHI.COM

यूनान, रोम या जर्मनी के ज्ञात विधिशास्त्रों के इतिहास से सर्वथा भिन्न होते हुए भी इनके साथ समानताओं और विभिन्नताओं के कारण विधिशास्त्र के किसी भी विद्यार्थी के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

यदि आप लोगों को अत्यंत सरल राजनैतिक इकाइयों के निर्माण और विकास से संम्बद्ध प्राचीन युग के कानून के पुरातन रूपों के बारे में इधर जो अनुसंधान हुए हैं, उनके महत्त्व और वैशिष्ट्य को परख सकने की क्षमता प्राप्त करनी है, तो आपको इसके लिए आज भारत की ग्राम पंचायतों के रूप में इसके प्रत्यक्ष दर्शन का सुयोग अनायास ही मिल जाएगा। भारत में प्राचीन स्थानीय शासन प्रणाली या पंचायत प्रथा को समझने-समझाने का बहुत बड़ा क्षेत्र विद्यमान है। भारत ब्राह्मण या वैदिक धर्म की भूमि है, बौद्धधर्म जन्मस्थली है। पारसियों के धर्म जरथुस्ट्र की यह शरणस्थली है। आज भी यहाँ नित्य नये मत-मतान्तर प्रकट व विकसित होते रहते हैं।

संस्कृत की सबसे पहली विशेषता है इसकी प्राचीनता क्योंकि हम जानते हैं कि ग्रीक भाषा से भी संस्कृत का काल पुराना है। संस्कृत में चूहा को मूषः कहते हैं। ग्रीक में मूस, लैटिन में मुस, पुरानी स्लावोनिक में माइस और पुरानी उच्च जर्मन में मुस कहते हैं।

'मैं हूँ' जैसे भाव को व्यक्त करने के लिए भला किन्हीं दूसरी भाषाओं में 'अस्मि' जैसा । शुद्ध और उपयुक्त शब्द कहाँ मिल पाएगा।

मैं इसे ही वास्तविक अर्थों में इतिहास मानता हूँ और यह एक ऐसा इतिहास है जो राज्यों के दुराचारों और अनेक जातियों की क्रूरताओं की अपेक्षा कहीं अधिक ज्ञातव्य और पठनीय है। हम सब पूर्व से आये हैं। हमारे जीवन में जो भी कुछ अत्यधिक मूल्यवान है, वह हमें पूर्व से मिला है और पूर्व को पहचान लेने से ऐसे प्रत्येक व्यक्ति को जिसने इतिहास की वास्तविक शिक्षा कुछ लाभ उठाया है, भले ही वह प्राच्य-विद्या-विशारद न भी हो तो भी यह अनुभव अवश्य होगा कि वह नानाविध स्मृतियों से भरे अपने पुराने घर की ओर जा रहा है। यदि आप लोग चाहें तो भारत के बारे में वैसे ही सुनहरे सपने देख सकते हैं और भारत पहुँचने के बाद एक से बढ़कर एक शानदार काम भी कर सकते हैं।

3. भारत से हम क्या सीखे

Short answer question

PDFSARTHI.COM

1. (i) **समस्त भूमंडल में सर्वाधिक संपदा और प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण देश भारत है। लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ?**

उत्तर - लेखक मैक्समूलर ने भारत को सर्वाधिक संपन्न और सौंदर्य से परिपूर्ण देश का दर्जा दिया है। उनकी दृष्टि में भारत प्रत्येक दृष्टि से संपन्न है। भारत ज्ञान- विज्ञान, साहित्य, कला, दर्शन, अध्यात्म, संस्कृति और प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण देश है। यहाँ की प्रकृति ऐसी है मानो भूतल पर ही स्वर्ग की छटा निखर गई हो।

(ii) **मैक्समूलर ने भारतीय साहित्य को पढ़ने की सलाह क्यों दी है ?**

उत्तर - भारतीय साहित्य में अंतरतम को परिपूर्ण, अधिक सर्वांगीण, अधिक विश्वव्यापी और मानवीय बनाने तथा अलग जीवन एवं शाश्वत जीवन में सुधार लाने की अद्भुत क्षमता है। अतः, मैक्समूलर ने भारतीय साहित्य को पढ़ने की सलाह दी है।

(iii) **मैक्समूलर की दृष्टि में मनन करने योग्य क्या है ?**

उत्तर - भारतीय मनीषियों ने ज्ञान का सर्वप्रथम साक्षात्कार किया था और जीवन की सबसे बड़ी समस्याओं पर विचार कर उनके समाधान ढूँढ़ निकाले थे। मैक्समूलर की दृष्टि में उपर्युक्त भारतीय दार्शनिक उपलब्धियाँ मनन करने योग्य हैं।

(iv) **प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से उद्धृत है तथा इसके लेखक कौन हैं ?**

उत्तर - प्रस्तुत गद्यांश 'भारत से हम क्या सीखें' पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक मैक्समूलर हैं।

(v) **लेखक ने भारत की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है ?**

उत्तर - लेखक मैक्समूलर ने भारत की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए लिखा है कि यहाँ सर्वत्र स्वर्ग का सौंदर्य बिखरा हुआ है। यह महान दार्शनिकों और विचारकों का देश है। यहाँ का उत्कृष्ट साहित्य मानव को सच्चे अर्थों में मानव बनाता है और उसके अंगले जन्म और शाश्वत जीवन को सुधारता है।

(vi) **प्लेटो और कांट जैसे दार्शनिकों का भी अध्ययन करनेवालों को क्या मनन करने योग्य है और क्यों?**

PDFSARTHI.COM

उत्तर - प्लेटो और कांट जैसे दार्शनिकों का अध्ययन करनेवालों को यह मनन करने योग्य है कि भारत में जीवन की जटिलतम समस्याओं पर गंभीर चिंतन कर उनके हल किस प्रकार प्रस्तुत किए गए हैं। ऐसा इसलिए, क्योंकि प्लेटो और कांट ने जीवन की जटिल समस्याओं पर भारतीय मनीषियों की तरह व्यापक एवं गंभीर चिंतन नहीं किया है।

2. (i) भारतभूमि में किन शासकों के सिक्के प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं?

उत्तर - भारतभूमि में ईरानी, कोरियन, थ्रेसियन, पार्थियन, यूनानी, मेकेडिनियन, शकों, रोमन और मुसलिम शासकों के सिक्के प्रचुर परिमाण में उपलब्ध हैं।

(ii) वारेन हेस्टिंग्स कौन था ? उसे सोने के सिक्कों से भरा घड़ा कहाँ मिला था? उसने सोने के सिक्कों को किसकी सेवा में प्रस्तुत कर दिया ? उसने ऐसा क्यों किया ?

उत्तर - वारेन हेस्टिंग्स भारत का गवर्नर-जनरल था। उसे वाराणसी के पास सोने के सिक्कों से भरा एक घड़ा मिला था। उसने सोने के सिक्कों से भरे घड़े को ईस्ट इंडिया कंपनी के निदेशक मंडल की सेवा में प्रस्तुत कर दिया। अपने मालिकों की दृष्टि में महान ईमानदार व्यक्ति होने के लोभ में उसने ऐसा किया।

3. (i) भाषाविज्ञान के अब तक के निष्कर्ष किस भाषा की सहायता के बिना संभव नहीं थे?

उत्तर - भाषाविज्ञान के अब तक के निष्कर्ष संस्कृत भाषा की सहायता के बिना संभव नहीं थे।

(ii) इतिहास का अध्ययन हमें किस योग्य बनाता है?

उत्तर - इतिहास का अध्ययन हमें प्रत्न मानव (पुरातन मानव) तथा वास्तविक पूर्व को पहचानने के योग्य बनाता है।

(iii) इतिहास के अध्ययन से मनुष्य किस रूप में लाभान्वित होता है?

उत्तर - इतिहास के अध्ययन से मनुष्य विश्व में अपना वास्तविक स्थान निश्चित कर पाता है। उसे इसके माध्यम से यह पता चलता है कि उसने अपनी जीवन यात्रा की शुरुआत कहाँ से की थी और उसे कहाँ पहुँचना है।

4. (i) भारत किस प्रकार अतीत और सुदूर भविष्य को जोड़ता है? स्पष्ट करें।

उत्तर - भारत की संस्कृति विश्व की प्राचीन संस्कृतियों में एक है। यहाँ के चिंतन और आचरण में आज भी प्राचीन संस्कृति के रंग वर्तमान हैं। भारत की संस्कृति ठहरी हुई संस्कृति नहीं है, यह सतत विकासशील है। भारतीय

PDF SARTHI.COM

संस्कृति के इसी विकासशील स्वरूप में भविष्य की अनेक संभावनाएँ वर्तमान हैं। भारत से परिचित होने का अर्थ है इसकी संस्कृति की प्राचीन सुवास से परिचित होना तथा इसके सतत विकासशील स्वरूप के कारण भविष्य की संभावनाओं से परिचित होना। इसी अर्थ में मैक्समूलर ने कहा है कि भारत अतीत और सुदूर भविष्य को जोड़ता है।

(ii) मैक्समूलर ने भारत को किस रूप में देखा है?

उत्तर - मैक्समूलर ने भारत को एक प्रयोगशाला के रूप में देखा है, क्योंकि यहाँ सीखने या सिखाने योग्य सारी बातें उपलब्ध हैं। कोई समस्या जो लोकप्रिय शिक्षा, उच्च शिक्षा, संसार में प्रतिनिधित्व, विधि-निर्माण आदि से संबद्ध हैं, भारतरूपी प्रयोगशाला में उसकी जानकारी प्राप्त की जा सकती है, उसका विश्लेषण किया जा सकता है और उसे दूसरों को बताया जा सकता है। जिस तरह प्रयोगशाला में वैज्ञानिक प्रक्रिया के माध्यम से विश्लेषण के आधार पर एक सत्य की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार भारत भी इस प्रयोगशाला के समान है जिसमें जीवन के विविध क्षेत्रों की जानकारी ली जा सकती है और जीवन में अपेक्षित सुधारात्मक परिवर्तन लाने के लिए उस जानकारी को दूसरों तक पहुँचाया जा सकता है।

(iii) मैक्समूलर ने संस्कृत भाषा की महत्ता को किस रूप में प्रतिपादित किया है?

उत्तर - संस्कृत भाषा चिंतन की गंभीर धारा में अवगाहन का अवसर प्रदान करती है। संस्कृत-जैसी गंभीर चिंतन परंपरा संभवतः यूरोप की किसी भी भाषा में उपलब्ध नहीं है। संस्कृत भाषा में मानवीय संवेदनाओं और मानवीय संस्कारों को जागरित करने की अद्भुत क्षमता है।

(iv) "वहाँ आपको ऐसे सुअवसर भी मिलेंगे जो किसी पुरातन विश्व में ही सुलभ हो सकते हैं। इस कथन का आशय स्पष्ट करें।

उत्तर - भारत प्राचीन संस्कृति की धरोहरों का देश है। यहाँ प्राचीनकालीन मानवीय मूल्य और आदर्श आज भी सुरक्षित हैं। यहाँ की सोच और प्रवृत्ति में नैतिकता का आग्रह आज भी वर्तमान है। प्रेम, श्रद्धा, सहानुभूति, सदाशयता आदि भारतीय संस्कृति के गुण हैं, जिनके दर्शन आज भी भारत में होते हैं। पुरातन विश्व का निश्छल और निष्कपट व्यवहार और संवेदनापूर्ण आचरण आज भारत में सर्वत्र देखने को मिल जाएँगे। इसी तथ्य को मैक्समूलर ने अभिव्यक्त किया है।

5. सच्चा दैवत विज्ञान क्या है? इसकी व्यापक रूपरेखा सही ढंग से कहाँ निर्मित हो सकती है ?

PDF SARTHI.COM

उत्तर - 'दैवत विज्ञान' देव विज्ञान को कहते हैं। सच्चा दैवत विज्ञान पुरातन और अधुनातन संदृष्टियों का समन्वय है। भारत में ही इसकी व्यापक रूपरेखा सही ढंग से निर्मित हो सकती है।

6. लेखक ने 'नया सिकंदर' किसे कहा और क्यों?

उत्तर - लेखक मैक्समूलर ने भारतीय सिविल सेवा हेतु चयनित युवा अँगरेज अधिकारियों को 'नया सिकंदर' कहा है। सिकंदर राजनैतिक विजय के लिए भारत आया था। पर इन 'नए सिकंदर' को सांस्कृतिक जीत के लिए प्रयास करना होगा, क्योंकि भारत में इतिहास और साहित्य के क्षेत्र में शोध और अनुसंधान का अनगिनत अवसर हैं।

Long Answer Type

1. (i) समस्त भूमंडल में सर्वाधिक संपदा और प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण देश भारत है। लेखक ने ऐसा क्यों कहा है? लेखक (मैक्समूलर) ने भारतीय साहित्य पढ़ने की सलाह क्यों दी है?

उत्तर - लेखक ने भारत को सर्वाधिक संपन्न और सौंदर्य से परिपूर्ण देश का दर्जा दिया है। मैक्समूलर की दृष्टि में भारत प्रत्येक दृष्टि से संपन्न है। भारत ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, कला, दर्शन, अध्यात्म, संस्कृति और प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण देश है। यहाँ की प्रकृति ऐसी है मानो भूतल पर ही स्वर्ग की छटा निखर गई हो।

भारतीय साहित्य में अंतरतम को परिपूर्ण, अधिक सर्वांगीण, अधिक विश्वव्यापी और मानवीय बनाने, अगला जीवन एवं शाश्वत जीवन में सुधार लाने की अद्भुत क्षमता है। अतः, मैक्समूलर ने भारतीय साहित्य को पढ़ने की सलाह दी है।

(ii) भारत के साथ यूरोप के व्यापारिक संबंध के प्राचीन प्रमाण लेखक ने क्या दिखाए हैं ?

उत्तर - भारत के साथ यूरोप के व्यापारिक संबंध थे, इनके प्रमाण के रूप में लेखक ने भारत एवं यूरोप के देशों में प्रचलित नीतिकथाओं, दंतकथाओं और 'शाहनामा' को आधार बनाया है।

2. (i) 'भारत से हम क्या सीखें' शीर्षक आलेख का प्रतिपाद्य क्या है? स्पष्ट करें।

उत्तर - 'भारत से हम क्या सीखें' शीर्षक आलेख का प्रतिपाद्य है नई पीढ़ी को देश की सांस्कृतिक समृद्धि से परिचित कराकर उन्हें देश के उत्थान के लिए प्रेरित करना और अपने देश के प्रति कर्तव्यबोध से परिपूर्ण करना।

PDFSARTHI.COM

(ii) चूहा के लिए आर्य भाषाओं में कौन-से शब्द प्रचलित हैं? इससे आलेखकार किस निष्कर्ष पर पहुँचता है?

उत्तर - 'चूहा' के लिए संस्कृत में 'मूषः', ग्रीक में 'मूस', लैटिन में 'मुस', पुरानी स्लावोनिक में 'माइस' तथा पुरानी उच्च जर्मन में 'मुस' जैसे शब्द मिलते हैं। इस भाषिक साम्य के आधार पर आलेखकार (फ्रेड्रिक मैक्समूलर) इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि प्राचीन युग में चूहा ज्ञात था और उसका 'मूस' नाम भी रख दिया गया था।

(iii) धर्म की दृष्टि से भारत का क्या महत्त्व है ? 'भारत से हम क्या सीखें' पाठ के आधार पर बताएँ।

उत्तर - धर्म की दृष्टि से भारत का विशिष्ट महत्त्व है। यहाँ धर्म का वास्तविक उद्भव और स्वाभाविक विकास हुआ। अनेक धर्मों के बीच निर्द्वंद्व भाव का होना भारत की धार्मिक दृष्टि की विशेषता है।

(iv) भारत किस अतीत और सुदूर भविष्य को जोड़ता है? स्पष्ट करें।

उत्तर - भारतीय संस्कृति के विकासशील स्वरूप में भविष्य की अनेक संभावनाएँ वर्तमान हैं। भारत अपने समृद्ध अतीत को सुदूर भविष्य की समृद्धतर संभावनाओं के साथ जोड़ता है।

3. (i) मैक्समूलर ने संस्कृत की कौन-सी विशेषताएँ और महत्त्व बतलाए हैं ?

उत्तर - संस्कृत भाषा में मानवीय संवेदनाओं और मानवीय संस्कारों को जागरित करने की अद्भुत क्षमता है। यह भाषा चिंतन की गंभीर धारा में अवगाहन का अवसर प्रदान करती है। यह सारी आर्य भाषाओं की अग्रजा है।

(ii) संस्कृत और दूसरी भारतीय भाषाओं के अध्ययन से पाश्चात्य जगत को क्या-क्या प्रमुख लाभ हुए?

उत्तर - संस्कृत और दूसरी भारतीय भाषाओं के अध्ययन से पाश्चात्य जगत की ऐतिहासिक चेतना में एक नया अध्याय जुड़ गया तथा मानवजाति के संबंध में उसके विचारों में व्यापकता और उदारता का समावेश हुआ। वह मानवजाति के संपूर्ण इतिहास के वास्तविक रूप से परिचित हुआ तथा उसमें आत्मिक संस्कारों के प्रति आकर्षण बढ़ा।

(iii) लेखक मैक्समूलर ने भारत के लिए नवागंतुक अधिकारियों को किसकी तरह सपने देखने के लिए प्रेरित किया, और क्यों ?

उत्तर - लेखक मैक्समूलर ने नवागंतुक अधिकारियों को सर विलियम जोन्स जैसे सपने देखने के लिए प्रेरित किया है। सर विलियम जोन्स ने मानव मस्तिष्क की उत्कृष्टतम उपलब्धियों का साक्षात्कार करानेवाले भारत की प्रतिभा को

PDFSARTHI.COM

उद्घाटित कर उससे संपूर्ण मानवजाति को लाभान्वित करने का सपना देखा है। नवागंतुक अधिकारी भी जोन्स के अनुगामी बनकर मानवता का उपकार कर सकते हैं।

(iv) भारत को पहचान सकनेवाली दृष्टि की आवश्यकता किसके लिए वांछनीय है, और क्यों ?

उत्तर - भारत को पहचान सकनेवाली दृष्टि की आवश्यकता भारतीय सिविल सेवा न हेतु चयनित युवा अँगरेज अधिकारियों को है, क्योंकि ज्ञान-विज्ञान, दर्शन, साहित्य- कला तथा सांस्कृतिक वैभव से परिपूर्ण भारत को समझकर ही ये भारत में एक – से - बढ़कर एक शानदार और अविस्मरणीय काम कर सकते हैं।

(v) लेखक ने किन विशेष क्षेत्रों में अभिरुचि रखनेवालों के लिए भारत का प्रत्यक्ष ज्ञान आवश्यक बताया है?

उत्तर - लेखक ने भू-विज्ञान, वनस्पतिविज्ञान, जीवविज्ञान, पुरातत्त्वविज्ञान, नृवंश विज्ञान, दैवत विज्ञान, भाषाविज्ञान, मानवशास्त्र, धर्मशास्त्र, साहित्यशास्त्र, कला- शिल्प, कथा साहित्य, अर्थशास्त्र, इतिहास आदि के विशेष क्षेत्रों में अभिरुचि रखनेवालों के लिए भारत का प्रत्यक्ष ज्ञान आवश्यक बताया है।

(vi) निबंधकार मनुष्य के नाखून की ओर देखकर कभी-कभी निराश क्यों हो जाता है ?

उत्तर - निबंधकार (आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी) मनुष्य के नाखून की ओर देखकर कभी-कभी निराश इसलिए हो जाते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि ये नाखून उसकी भयंकर पाशविक वृत्ति के जीवंत प्रतीक हैं। न जाने कब उसकी पाशविक वृत्ति भड़क जाए और सर्वत्र विनाश का रौद्र नृत्य होने लगे।

3. भारत से हम क्या सीखे

1. भारत से हम क्या सीखे' के रचनाकार हैं-

(A) मैक्समूलर

(B) गुणाकर मुले

(C) हजारी प्रसाद द्विवेदी

PDF SARTHI.COM

(D) पं० बिरजू महाराज

Ans – A

2. 'भारत से हम क्या सीखें' क्या है?

(A) निबंध

(B) कहानी

(C) भाषण

(D) व्यक्ति चित्र

Ans – C

3. मैक्समूलर थे-

(A) भारतभक्त

(B) संस्कृतानुरागी

(C) वेदों के प्रति अगाध आस्था रखने वाले

(D) उपर्युक्त सभी

Ans – D

4. मैक्समूलर के पिता का क्या नाम था?

(A) विरहमूलर

(B) विल्हेय मूलर

(C) विल्हेल्म मूलर

(D) विदेनमूलर

PDF SARTHI.COM

Ans – C

5. विश्वविख्यात विद्वान फ्रेड्रिक मैक्समूलर का जन्म कहाँ हुआ था?

(A) भारत

(B) जर्मनी

(C) इंगलैंड

(D) रूस

Ans – B

6. स्वामी विवेकानंद ने 'वेदान्तियों का वेदान्ती' किसे कहा है?

(A) टी॰ एस॰ इलियट को

(B) दयानंद सरस्वती को

(C) मैक्समूलर को

(D) राजा राममोहन राय को

Ans – C

7. मैक्समूलर ने ……… वर्ष की अवस्था में लिपजिंग विश्वविद्यालय में संस्कृत का अध्ययन प्रारंभ किया।

(A) पन्द्रह

(B) सोलह

(C) सत्रह

(D) अठारह

PDF SARTHI.COM

Ans – D

8. मैक्समूलर का जन्म कब हुआ था?

(A) 6 दिसम्बर, 1813 ई०

(B) 6 दिसम्बर, 1823 ई०

(C) 6 दिसम्बर, 1833 ई०

(D) 6 दिसम्बर, 1843 ई०

Ans – B

9. मैक्समूलर ने नया सिकन्दर किसे कहा है?

(A) विलियम जोन्स को

(B) वारेन हेस्टिंग्स को

(C) हकर्स को

(D) युवा अंग्रेज अधिकारियों को

Ans – D

10. मैक्समूलर के अनुसार भारत की सबसे प्राचीन भाषा कौन है?

(A) हिन्दी

(B) बंगला

(C) मैथिली

(D) संस्कृत

Ans – D

PDF SARTHI.COM

11. सर विलियम जोन्स समुद्र यात्रा करते हुए भारत कब पहुंचे थे?

(A) 1823 ई०

(B) 1783 ई०

(C) 1900 ई०

(D) 1794 ई०

Ans – B

12. वारेन हेस्टिंग्स कहाँ का गवर्नर जनरल था?

(A) भारत

(B) श्रीलंका

(C) जर्मनी

(D) यूनान

Ans – A

13. मैक्समूलर की दृष्टि में सर्वविध संपदा और प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण कौन-सा देश है?

(A) जर्मनी

(B) यूनान

(C) भारत

(D) श्रीलंका

Ans – C

14. दारिस क्या है?

PDF SARTHI.COM

(A) सोने के सिक्के

(B) चाँदी के सिक्के

(C) ताँबे के सिक्के

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – A

15. दारिस नामक सोने के सिक्कों से भरा घड़ा किसे मिला था?

(A) हेकल

(B) हकर्स

(C) वारेन हेस्टिंग्स

(D) विलियम जोन्स

Ans – C

16. किसके अध्ययन क्षेत्र में भारत के कारण नवजीवन 'का संचार हो चुका है?

(A) विधिशास्त्र

(B) नीति कथा

(C) भाषा विज्ञान

(D) दैवत विज्ञान

Ans – B

17. सर्वविध संपदा और प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण कौन-सा देश है, यदि आप मुझे इस भूमण्डल का अवलोकन करने के लिए कहें तो बताऊंगा कि वह देश है - भारत। यह गद्यांश किस पाठ का है?

PDF SARTHI.COM

(A) विष के दाँत

(B) भारत से हम क्या सीखें

(C) नाखून क्यों बढ़ते हैं

(D) शिक्षा और संस्कृति

Ans – B

18. मैक्समूलर ने 'कठ' और 'केन' आदि उपनिषदों का किस भाषा में अनुवाद किया?

(A) लैटिन भाषा

(B) संस्कृत भाषा

(C) जर्मन भाषा

(D) हिन्दी भाषा

Ans – C

19. 'हितोपदेश' का जर्मन भाषा में अनुवाद किसने प्रकाशित करवाया?

(A) मैक्समूलर

(B) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(C) भारतेन्दु हरिशचन्द्र

(D) यतीन्द्र मिश्र

Ans – A

20. यदि आप भू - विज्ञान में रुचि रखते हैं तो हिमालय से श्रीलंका तक का विशाल भू-प्रदेश आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। यह गद्यांश किस पाठ से लिया गया है ?

PDF SARTHI.COM

(A) शिक्षा और संस्कृति

(B) भारत से हम क्या सीखें

(C) आविन्यों

(D) नौबतखाने में इबादत

Ans – B

21. मैक्समूलर के अनुसार वह कौन-सा देश है जो हकर्स जैसे अनेक वनस्पति को अनायास ही अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है

(A) जर्मनी

(B) श्रीलंका

(C) भारत

(D) नेपाल

Ans – C

22. किस गवर्नर जनरल के समय 172 दारिस नामक सोने से भरा घड़ा मिला था?

(A) लार्ड कॉर्नवालिस

(B) लॉर्ड विलियम वेंटिक

(C) लॉर्ड डलहौजी

(D) वारेन हेस्टिंग्स

Ans – D

23. वारेन हेस्टिंग्स के समय वाराणसी में कितने दारिस नामक सोने के सिक्के मिले थे?

PDF SARTHI.COM

(A) 162

(B) 165

(C) 172

(D) 125

Ans – C

24. कौन-सी भाषा और उसका साहित्य यूनान और रोम के संपूर्ण साहित्य से भी कहीं अधिक विशाल रहा है?

(A) संस्कृत

(B) हिन्दी

(C) अंग्रेजी

(D) ग्रीक

Ans – A

25. प्लेटो और काण्ट का अध्ययन करने वाले यूरोपियन लोगों के मनन योग्य देश है-

(A) जर्मनी

(B) भारत

(C) ग्रीक देश

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – B

25. प्लेटो और काण्ट का अध्ययन करने वाले यूरोपियन लोगों के मनन योग्य देश है—

(A) जर्मनी

PDF SARTHI.COM

(B) भारत

(C) ग्रीक देश

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – B

26. हकर्स थे-

(A) भू-वैज्ञानिक

(B) वनस्पति वैज्ञानिक

(C) रैवत वैज्ञानिक

(D) विधि शास्त्री

Ans – B

27. महारानी विक्टोरिया के द्वारा किसे 'नाइट' की उपाधि प्रदान की गयी थी?

(A) यतीन्द्र मिश्र को

(B) मैक्समूलर को

(C) महात्मा गाँधी को

(D) भवानी शंकर त्रिवेदी को

Ans – B

28. मैक्समूलर के अनुसार सच्चे भारत के दर्शन कहाँ हो सकते हैं?

(A) मुंबई में

(B) दिल्ली में

PDF SARTHI.COM

(C) ग्रामीण भारत में

(D) कोलकाता में

Ans – C

29. 'मेघदूत' का जर्मन में अनुवाद किसने किया?

(A) ईश्वर पेटलीकर

(B) रूसो ने

(C) मैक्समूलर ने

(D) सातकोड़ी होता ने

Ans – C

30. मैक्समूलर को वेदांतियों का भी वेदांती किसने कहा है?

(A) रामकृष्ण परमहंस ने

(B) स्वामी विवेकानंद ने

(C) महात्मा गाँधी ने

(D) राजा राम मोहन राय ने

Ans – B

31. प्लेटो और कान्ट थे—

(A) वीर

(B) महान दार्शनिक

(C) नाविक

PDF SARTHI.COM

(D) सैनिक

Ans – B

32. सच्चा भारत कहाँ बसता है?

(A) गाँवों में

(B) खलिहानों में

(C) बगीचे में

(D) गलियों में

Ans – A

33. 'कठ और केन' का जर्मन भाषा में किसने अनुवाद किया?

(A) हजारी प्रसाद द्विवेदी ने

(B) अशोक वाजपेयी ने

(C) अमरकांत ने

(D) मैक्समूलर ने

Ans – D

34. भारत का सर्वाधिक आबादी कहाँ बसती है?

(A) नगरों में

(B) महानगरों में

(C) गाँवों में

(D) मंदिरों में

PDF SARTHI.COM

Ans – C

35. संस्कृत की पहली विशेषता है इसकी-

(A) प्राचीनता

(B) नवीनता

(C) सरलता

(D) वैज्ञानिकता

Ans – A

36. 'शाहनामा' का रचनाकाल है-

(A) दसवीं-ग्यारहवीं सदी

(B) ग्यारहवीं-बारहवीं सदी

(C) बारहवीं-तेरहवीं सदी

(D) नवमी-दसवीं सदी

Ans – A

37. 'नृवंश विद्या' का संबंध किससे है?

(A) खगोल विज्ञान से

(B) मानव विज्ञान से

(C) वनस्पति विज्ञान से

(D) भूगर्भ विज्ञान से

Ans – B

PDFSARTHI.COM

38. मैक्समूलर ने कालिदास की किस पुस्तक का जर्मन भाषा में अनुवाद किया?

(A) मालविकाग्निमित्रम् का

(B) अभिज्ञानशाकुंतलम् का

(C) मेघदूत का

(D) रघुवंशम् का

Ans – C

PDF SARTHI.COM

4. नाखून क्यों बढ़ते हैं

लेखक परिचय

लेखक → हजारी प्रसाद द्विवेदी

जन्म → 1907 ई0 में बलिया (उप्र प्रदेश) में हुआ था |

→ इसे भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण पुरस्कार दिया गया |

→ द्विवेदी जी को अलोक पर्व पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला |

प्रमुख स्थान → अशोक के फूल पृथ्वीराज रासौ विचार और विर्तक, आलोक पर्व ,बाण भट्ट की आत्मकथा, विश्वभारती (शांति निकेतन) हिंदी साहित्य की , आदि काल, हिंदी साहित्य की भूमिका

* मृत्यु → 1979 ई० में दिल्ली

पाठ का सारांश

- बच्चे कभी-कभी चक्कर में डाल देने वाले प्रश्न कर बैठते हैं। मेरी छोटी लड़की ने जब उस दिन पूछ दिया कि आदमी के नाखून क्यों बढ़ते हैं, तो मैं सोच में पड़ गया। हर तीसरे दिन नाखून बढ़ जाते हैं। बच्चे कुछ दिन तक अगर उन्हें बढ़ने दें, तो माँ-बाप अकसर उन्हें डाँटा करते हैं। पर कोई नहीं जानता कि ये अभागे नाखून क्यों इस प्रकार बढ़ा करते हैं। काट दीजिए वे चुपचाप दंड स्वीकार कर लेंगे पर निर्लज्ज अपराधी की भांति फिर छूटते ही सेंध पर हाजिर।
- कुछ लाख ही वर्षों की बात है, जब मनुष्य जंगली था, वनमानुष जैसा। उसे नाखून की जरूरत थी। उसकी जीवन-रक्षा के लिए नाखून बहुत जरूरी थे। असल में वही उसके अस्त्र थे। दाँत भी थे पर नाखून के बाद ही उनका स्थान था। उन दिनों उसे जूझना पड़ता था, प्रतिद्वंदियों को पछाड़ना पड़ता था, नाखून उसके लिए आवश्यक अंग था। फिर धीरे-धीरे वह अपने अंग से बाहर की वस्तुओं का सहारा लेने लगा। पत्थर के ढेले और पेंड की डालें काम में लाने लगा। उसने हड्डियों के भी हथियार बनाये। मनुष्य और आगे बढ़ा। उसने धातु के हथियार बनाए। पलीतेवाली बंदूकों ने, कारतूसों ने, तोपों ने, बमों ने, बमवर्षक वायुयानों ने

PDFSARTHI.COM

इतिहास को किस कीचड़ भरे घाट पर घसीटा है, यह सबको मालूम है। नखधर मनुष्य अब एटम बम पर भरोसा करके आगे की ओर चल पड़ा है। पर उसके नाखून अब भी बढ़ रहे थे।

- कुछ हजार साल पहले मनुष्य ने नाखून को सुकुमार विनोदों के लिए उपयोग में लाना शुरू किया था। वात्स्यायन के कामसूत्र से पता चलता है कि आज से दो हजार वर्ष पहले का भारतवासी नाखूनों को जम के संवारता था। उनके काटने की कला काफी मनोरंजक बताई गई है। त्रिकोण, वर्तुलाकार, चंद्राकार दंतुल आदि विविध आकृतियों के नाखून उन दिनों विलासी नागरिकों के न जाने किस काम आया करते थे। उनको सिक्थक (मोम) और अलंक्तक (आलता) से यत्नपूर्वक रगड़कर लाल और चिकना बनाया जाता था। गौड़ देश के लोग उन दिनों बड़े-बड़े नखों को पसंद करते थे और दक्षिणात्य लोग छोटे नखों को। लेकिन समस्त अधोगामिनी वृत्तियों को और नीचे खींचनेवाली वस्तुओं को भारतवर्ष ने मनुष्योचित बनाया है, यह बात चाहूँ भी तो भूल नहीं सकता।
- 15 अगस्त को जब अंगरेजी भाषा के पत्र 'इण्डिपेण्डेन्स की घोषणा कर रहे थे, देशी भाषा के पत्र 'स्वाधीनता दिवस की चर्चा कर रहे थे। इण्डिपेण्डेन्स का अर्थ है स्वाधीनता 'शब्द का अर्थ है अपने ही अधीन' रहना। उसने अपने आजादी के जितने भी नामकरण किए, स्वतंत्रता, स्वराज्य, स्वाधीनता-उन सबमें 'स्व' का बंधन अवश्य रखा। अपने-आप पर अपने-आप के द्वारा लगाया हुआ बंधन हमारी संस्कृति की बड़ी भारी विशेषता है।
- मनुष्य झगड़े-डंटे को अपना आदर्श नहीं मानता। गुस्से में आकर चढ़-दौड़ने वाले अविवेकी को बुरा समझता है और वचन, मन और शरीर से किए गए असत्याचरण को गलत आचरण मानता है। यह किसी भी जाति या वर्ण या समुदाय का धर्म नहीं है। यह मनुष्यमात्र का धर्म है। महाभारत में इसीलिए निर्वैर भाव, सत्य और अक्रोध को सब वर्गों का सामान्य धर्म कहा है –

  एतद्धि विततं श्रेष्ठं सर्वभूतेषु भारत!
  निर्वैरता महाराज सत्यमक्रोध एव च।
- अन्यत्र इसमें निरंतर दानशीलता को भी गिनाया गया है। गौतम ने ठीक ही कहा था कि मनुष्य की मनुष्यता यही है कि वह सबके दुःख-सुख को सहानुभूति के साथ देखता है।
- ऐसा कोई दिन आ सकता है, जबकि मनुष्य के नाखूनों का बढ़ना बंद हो जाएगा। प्राणिशास्त्रियों का ऐसा अनुमान है कि मनुष्य का अनावश्यक अंग उसी प्रकार झड़ जाएगा, जिस प्रकार उसकी पूँछ झड़ गई है। उस दिन मनुष्य की पशुता भी लुप्त हो जाएगी। शायद उस दिन वह मारणास्त्रों का प्रयोग भी बंद कर देगा।

.

PDF SARTHI.COM

- नाखूनों का बढ़ना मनुष्य की उस अंध सहजात वृत्ति का परिणाम है, जो उसके जीवन में सफलता ले आना चाहती है, उसको काट देना उस 'स्व'-निर्धारित आत्म-बंधन का पुल है, जो उसे चरितार्थता की ओर ले जाती है। कमबख्त नाखून बढ़ते हैं तो बढ़े, मनुष्य उन्हें बढ़ने नहीं देगा।

4. नाखून क्यों बढ़ते

Short answer question

1. (i) आर्य क्यों विजयी हुए? अनेक जातियों के हारने का मूल कारण क्या था ?

उत्तर - आर्यों के पास लोहे के अस्त्र और घोड़े थे। असुरों के पास लोहे के अस्त्र और घोड़े नहीं थे, अतः आर्य विजयी हुए (और असुर परास्त हुए)। नाग, सुपर्ण, यक्ष, गंधर्व, असुर और राक्षस जातियाँ इसलिए हारी, क्योंकि उनके पास लोहे के अस्त्र नहीं थे।

(ii) इतिहास को कीचड़ भरे घाट तक घसीटने का काम किसने किया ?

उत्तर - इतिहास को कीचड़भरे घाट तक घसीटने का काम पलीतेवाली बंदूकों, कारतूसों, तोपों, बमों और बमवर्षक वायुयानों ने किया है।

(iii) आज भी प्रकृति मनुष्य के साथ कैसा व्यवहार कर रही है ?

उत्तर - मनुष्य बार-बार नाखून काटता है और हर बार उसके नाखून बढ़ जाते हैं। इसका सीधा-सा अर्थ हुआ कि प्रकृति मनुष्य को उसके भीतर वाले अस्त्र से उसे वंचित करना नहीं चाहती। वह अब भी मनुष्य को उसकी हिंसक वृत्ति की याद दिला देती है और मनुष्य से कहती है कि नाखून को कभी भुलाया नहीं जा सकता। वह मनुष्य से कहती है कि सभ्यता के इस दौर में भी वह लाख वर्ष पहले वाला ही अपने नखों और दाँतों पर अवलंबित पशु है, अर्थात उसकी हिंसक वृत्ति में थोड़ी भी कमी नहीं आई है।

(iv) देवताओं के राजा को मनुष्यों के राजा से किस चीज की सहायता लेनी पड़ती थी ?

PDFSARTHI.COM

उत्तर - देवताओं के राजा को मनुष्यों के राजा से अपनी विजय के लिए लोहे के अस्त्रों की माँग करनी पड़ती थी।

2. (i) निबंधकार हजारीप्रसाद द्विवेदी हैरान होकर क्या सोचते हैं ?

उत्तर - निबंधकार हजारीप्रसाद द्विवेदी इस बात पर हैरान हैं कि यदि आज कोई बच्चा अपने नाखून नहीं काटता, तो उसे अपने अभिभावक या माता-पिता से डाँट खानी पड़ती है। पर, ठीक इसके विपरीत, आदिम युग में यदि कोई बच्चा अपने नाखून काट डालता था, तो उसे अपने अभिभावकों से डाँट खानी पड़ती थी। ऐसा मानवीय प्रवृत्ति में आए हुए बदलाव से ही संभव जान पड़ता है।

(ii) निबंधकार ने नाखून के प्रति आज मनुष्यों की किस प्रवृत्ति का जिक्र किया है ?

उत्तर - संभवतः आज मनुष्य नाखून को नहीं चाहता। वह नहीं चाहता कि बर्बर युग का कोई चिह्न उसके भीतर रह जाए।

(iii) नाखून और मनुष्य के संबंध को लेकर निबंधकार किस वैचारिक द्वंद्व में उलझा हुआ है ?

उत्तर - नाखून और मनुष्य के संबंध को लेकर निबंधकार एक वैचारिक द्वंद्व में उलझा हुआ है। कभी उसे ऐसा प्रतीत होता है कि मनुष्य अब नाखून को नहीं चाहता। वह नहीं चाहता कि बर्बर युग के अवशेष के रूप में नाखून उसके अस्तित्व के साथ जुड़े रहें। नाखून उसे अब असह्य हैं। पर, कभी निबंधकार को लगता है कि मनुष्य बर्बरता के प्रतीक, नाखूनों से अपने लगाव को कम करना नहीं चाहता। उसकी बर्बरता तो दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। हिरोशिमा का नरसंहार इसका उदाहरण है।

(iv) निबंधकार मनुष्य के नाखून की ओर देखकर निराश क्यों हो जाता है ?

उत्तर - निबंधकार मनुष्य के नाखून की ओर देखकर निराश इसलिए हो जाता है, क्योंकि उसे लगता है कि ये (नाखून) उसकी भयंकर पाशविक वृत्ति के जीवंत प्रतीक हैं।

(v) लेखक द्वारा नाखूनों को अस्त्र के रूप में देखना कहाँ तक संगत है ?

उत्तर - जब मनुष्य जंगली था, तब उसे अपनी रक्षा के लिए नाखूनों की जरूरत थी। नाखून ही उसके लिए अस्त्र थे। अतः लेखक द्वारा नाखूनों को अस्त्र के रूप में देखना सर्वथा संगत है।

3. (i) हमारे दीर्घकालीन संस्कारों का फल क्या है? हमारी संस्कृति की बड़ी भारी विशेषता क्या है ?

PDFSARTHI.COM

उत्तर - भारतीय चित्त 'अनधीनता' के रूप में न सोचकर 'स्वाधीनता' के रूप में सोचता है, यह हमारे दीर्घकालीन संस्कारों का फल है। अँगरेजी शब्द 'इनडिपेंडेंस' का अर्थ है 'अनधीनता' या 'किसी की अधीनता का अभाव । अँगरेजी शब्द 'इनडिपेंडेंस' के लिए हिंदी में 'स्वाधीनता' शब्द का प्रयोग होता है, 'अनधीनता' का नहीं। 'स्वाधीनता' में अपनी अधीनता है। यह शब्द हमारे सांस्कृतिक चिंतन की विराटता और उदात्तता को प्रस्तुत करता है। हमारी संस्कृति की विशेषता है- अपने-आप पर अपने-आप द्वारा लगाया हुआ बंधन। यही 'स्वाधीनता' है।

(ii) "मैं ऐसा भी नहीं सोच सकता कि हम नई अनुसंधित्सा के नशे में चूर अपना सर्वस्व खो दें।" लेखक के इस कथन का अभिप्राय स्पष्ट करें।

उत्तर - निबंधकार हजारीप्रसाद द्विवेदी कहते हैं कि यह बात भी सही नहीं है कि हम अनुसंधान करने की प्रबल इच्छा के दबाव में अपने प्राचीन की महत्ता को अस्वीकार कर दें। हमें अपने प्राचीन की महत्ता को अवश्य स्वीकार करना चाहिए तथा प्राचीन और नवीन में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए।

(iii) कालिदास ने नए-पुराने के संबंध में क्या कहा है ? लेखक ने इसपर कैसी टिप्पणी की है ?

उत्तर - कालिदास ने कहा है कि सब पुराने अच्छे नहीं होते और सब नए खराब ही नहीं होते। विवेकशील लोग दोनों की जाँच कर लेते हैं। जो हितकर हैं, वे उसे स्वीकार कर लेते है और अहितकर का त्याग कर देते है| मूढ़ लोग दुसरें के इशारे पर भटकते रहते है |

कालिदास के उक्त कथन पर टिप्पणी करते हुए हजारीप्रसाद द्विवेदी कहते हैं कि हमें प्राचीन और नवीन की परीक्षा करनी चाहिए और इन दोनों में जो हितकर हो, उसे अपनाना चाहिए। वे इसके साथ यह भी कहते हैं कि "यदि हमारे पूर्वसंचित भंडार में वह हितकर वस्तु निकल आवे, तो इससे बढ़कर और क्या हो सकता है?"

4. (i) निबंध में लेखक ने किस बूढ़े का जिक्र किया है? लेखक की दृष्टि में बूढ़े के कथनों की सार्थकता क्या है?

उत्तर - लेखक ने निबंध में महात्मा गाँधी को 'बूढ़े' के रूप में उल्लिखित किया है। लेखक की दृष्टि में 'बूढ़े' (महात्मा गाँधी) के कथनों में मनुष्य की सफलता का नहीं, उसकी सार्थकता (चरितार्थता) का जिक्र हुआ है। भौतिक संपदा मानवजीवन को सफल बनाती है और आत्मिक संपदा मानवजीवन को सार्थक बनाती है। 'सफलता' का संबंध अधिक-से-अधिक मशीन बैठाने, अधिक-से-अधिक उत्पादन बढ़ाने, धन की वृद्धि करने और बाह्य उपकरणों की ताकत बढ़ाने से है। पर, बूढ़े (गाँधीजी) ने भौतिक समृद्धि के स्थान पर मानवीय संवेदनाओं के

PDFSARTHI.COM

विकास पर ध्यान दिया; सात्त्विक वृत्तियों के विकास को मानवहित में उचित ठहराया। उन्होंने प्रेम, आत्मतोष और भीतर के विकास पर बल दिया। लेखक की दृष्टि में 'बूढ़े' के कथनों की यही सार्थकता है. कि सात्त्विक वृत्तियों के विकास से ही मानवजीवन सार्थक हो सकता है। मानवजीवन की चरितार्थता से ही विश्व में शाश्वत शांति की स्थापना हो सकती है। 'सफलता' पाशविक वृत्तियों को उकसाती है और 'चरितार्थता' विश्व में अमन-चैन की स्थापना करती है।

(ii) बड़े-बड़े नेताओं और 'बूढ़े' के कथन में क्या अंतर है?

उत्तर - बड़े-बड़े नेता भौतिक समृद्धि को मानवजीवन का लक्ष्य मानते हैं जबकि गाँधीजी (बूढ़ा) आंतरिक समृद्धि को। बड़े-बड़े नेता कहते हैं- "सुख ही मानवजीवन का उद्देश्य है। इसके लिए अधिक-से-अधिक मशीन बैठाने, उत्पादन बढ़ाने, धन की वृद्धि करने तथा बाह्य उपकरणों की ताकत बढ़ाने की आवश्यकता है।" लेकिन, ठीक इसके विपरीत, गाँधीजी (बूढ़ा) कहते हैं कि "मानवजीवन के लिए बाहरी विकास की नहीं, आंतरिक विकास की जरूरत है।" उन्होंने क्रोध, द्वेष आदि को त्यागने की बात की और प्रेम करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि आंतरिक गुणों से मानवजीवन सार्थक होता है।

(iii) 'बूढ़े' को क्यों गोली मार दी गई? इस हत्याकांड में मनुष्य की कौन-सी प्रवृत्ति हावी हुई ?

उत्तर - 'बूढ़े' (गाँधीजी) ने भीतर को महत्त्व दिया; मानवीय संवेदनाओं की महत्ता का प्रतिपादन किया और जीवन में प्रेम की महत्ता का निरूपण किया। उन्होंने उच्छृंखलता को पाशविक वृत्ति माना तथा 'स्व' के बंधन पर जोर दिया। उनकी बात वैसे लोग नहीं समझ सके जिनके लिए बाह्य प्रगति ही सब कुछ थी। गाँधीजी की हत्या कर दी गई। इस हत्याकांड में आदमी के नाखून बढ़ने की प्रवृत्ति हावी हुई।

(iv) 'बूढ़े' ने क्या पता लगाया था ?

उत्तर - 'बूढ़े' (महात्मा गाँधी) ने मनुष्य की वास्तविक चरितार्थता का पता था। मनुष्य की चरितार्थता इस बात में है कि वह अपने आंतरिक गुणों का विकास करे, भौतिक सुख-सुविधाओं को अपने जीवन का लक्ष्य न बनाए। वह बाहर की ओर नहीं, भीतर की ओर देखे; हिंसा, क्रोध, द्वेष और मिथ्या को दूर करे, लोक के लिए कष्ट सहन करे, प्रेम की बात सोचे और आराम की बात मन में न लाए; स्वार्थ का त्याग कर 'स्व' के बंधन से मुक्त होने की बात सोचे, संतोष को जीवन में महत्त्वपूर्ण माने तथा उच्छृंखलता को पशुवृत्ति मानकर उसका त्याग करे।

PDF SARTHI.COM

(v) बढ़ते नाखून द्वारा प्रकृति मनुष्य को क्या याद दिलाती है?

उत्तर - बढ़ते नाखून द्वारा प्रकृति मनुष्य को याद दिलाती है कि वह अब भी लाख वर्ष पहले वाला नख-दंतावलंबी जीव है। वह (मनुष्य) सभ्य तो हुआ है, पर पशुता से सर्वथा मुक्त नहीं हो सका है।

Long answer question

1. (i) 'सफलता' और 'चरितार्थता' शब्दों में लेखक अर्थ की भिन्नता किस प्रकार प्रतिपादित करता है ?

उत्तर - 'सफलता' और 'चरितार्थता' शब्द भिन्नार्थक हैं। इन दोनों शब्दों में अंतर है। 'सफलता' का संबंध मनुष्य के भौतिक विकास से है और 'चरितार्थता' का संबंध उसके आत्मिक विकास से है। धन-दौलत तथा अनेक बाह्य साधनों से हम अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं, पर जीवन को चरितार्थ करने के लिए धन-दौलत तथा नानाविध भौतिक सुख-सुविधाओं की सामग्रियों को जुटाने की आवश्यकता नहीं होती, उसके लिए केवल अपनी मानवीय संवेदनाओं को विकसित करना पड़ता है।

(ii) लेखक द्वारा नाखूनों को अस्त्र के रूप में देखना कहाँ तक संगत है ?

उत्तर - जब मनुष्य जंगली था, वनमानुष जैसा, तब उसे अपनी रक्षा के लिए नाखूनों की जरूरत थी । वास्तव में, नाखून ही उसके लिए अस्त्र (हथियार) थे। वह अपने प्रतिद्वंद्वियों से जूझने और उन्हें परास्त करने में अपने नाखूनों की मदद लिया करता था। अतः, लेखक द्वारा नाखूनों को अस्त्र रूप में देखना सर्वथा संगत है।

2. (i) नाखून क्यों बढ़ते हैं? यह प्रश्न लेखक के सामने कैसे उपस्थित हुआ ?

उत्तर - एक दिन लेखक (हजारीप्रसाद द्विवेदी) की छोटी लड़की ने उनसे - अचानक पूछ दिया कि आदमी के नाखून क्यों बढ़ते हैं। इस प्रश्न के उत्तर के लिए लेखक पहले से तैयार नहीं था, अतः वह थोड़ा असहज हो गया। लेखक जब सहज हुआ तब उसने अपनी लड़की के प्रश्न पर चिंतन शुरू किया। परिणामस्वरूप, 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबंध अस्तित्व में आया।

(ii) बढ़ते नाखूनों द्वारा प्रकृति मनुष्य को क्या याद दिलाती है ?

PDF SARTHI.COM

(ii) बढ़ते नाखूनों द्वारा प्रकृति मनुष्य को याद दिला देती है कि उसके नाखून को विस्मृत नहीं किया जा सकता। प्रकृति मनुष्य को याद दिलाती हुई कहती है कि तुम लाख वर्ष पहले के अपने नखों और दाँतों पर अवलंबित जीव हो- - वास्तव में तुम अब भी पशु ही हो, उन्हीं की तरह आचरण करनेवाले। तुम इतने सभ्य हो गए फिर भी तुम पशु की तरह हिंसक, जड़, क्रोधी, ईर्ष्यालु और विवेकहीन हो।

(iii) मनुष्य बार-बार नाखूनों को क्यों काटता है ?

(iii) नाखून पशुता के प्रतीक हैं। मनुष्य की पशुता को जितनी बार काटा जाता है, वह उतनी ही बार जन्म ले लेती है और मनुष्य है कि वह अपने से पशुता को निकालकर सच्चे अर्थों में मनुष्य बना रहना चाहता है। अतः, पशुता के प्रतीक नाखून जब भी बढ़ते हैं, तब ही मनुष्य उन्हें काट डालता है।

3. (i) नाखून बढ़ाना और उन्हें काटना कैसे मनुष्य की सहजात वृत्तियाँ हैं ? इनका क्या अभिप्राय है?

उत्तर - नाखून बढ़ाने की सहजात वृत्ति मनुष्य के जीवन में इच्छाओं की प्रबलता की द्योतक है। जब तक मनुष्य 'मनुष्य' नहीं बनता तब तक वह नाखून बढ़ाने की ओर (हिंसक वृत्ति की ओर) प्रवृत्त रहता है। मनुष्य 'मनुष्य' बनकर नाखून काटने हिंसक वृत्ति को मारने) की सहजात वृत्ति से पूर्ण हो जाता है। नाखून बढ़ाना पशु- स्तर पर घटित होता है तथा नाखून काटना मनुष्य स्तर पर।

(ii) मनुष्य की पूँछ की तरह उसके नाखून भी एक दिन झड़ जाएँगे। प्राणि- शास्त्रियों के इस अनुमान से लेखक के मन में कैसी आशा जगती है ?

उत्तर - प्राणिशास्त्रियों ने यह अनुमान लगाया है कि जिस तरह मनुष्य के लिए अनावश्यक अंग होने के कारण उसकी पूँछ झड़ गई, उसी तरह एक दिन उसके (मनुष्य के) सारे अनावश्यक और अनुपयोगी अंग झड़ जाएँगे। इस अनुमान से लेखक के मन में आशा जगती है कि एक दिन मानव की पशुता भी समाप्त हो जाएगी।

(iii) लेखक की दृष्टि में हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता क्या है ?

उत्तर - लेखक की दृष्टि में हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसने भारत में आई अनेक जातियों के लिए एक सामान्य धर्म खोज निकाला है। यह धर्म है – अपने ही बंधनों से अपने को बाँधना। 'स्व' का बंधन भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता है।

PDFSARTHI.COM

4. नाखून क्यों बढ़ते

1. हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित पाठ है -

(A) नाखून क्यों बढ़ते हैं

(B) बहादुर

(C) आविन्यों

(D) मछली

Ans – (A)

2. कौन-सा निबंध नई पीढ़ी में सौन्दर्य बोध, इतिहास चेतना और सांस्कृतिक आत्मगौरव का भाव जगाता है ?

(A) श्रम विभाजन और जाति प्रथा

(B) नागरी लिपि

(C) बहादुर

(D) नाखून क्यों बढ़ते हैं

Ans – (D)

3. 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' हिन्दी की कौन विद्या है ?

(A) ललित निबंध

(B) कहानी

(C) कविता

PDF SARTHI.COM

(D) उपन्यास

Ans – (A)

4. ललित निबंध है -

(A) मछली

(B) नाखून क्यों बढ़ते हैं

(C) बहादुर

(D) नौबत खाने में इबादत

Ans – (B)

5.'नाखून क्यों बढ़ते हैं' के रचनाकार कौन है ?

(A) नलिन विलोचन शर्मा

(B) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(C) गुणाकर मुले

(D) अमरकांत

Ans – (B)

6. हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म कब और कहाँ हुआ ?

(A) 1907 – दुबे छपरा, बलिया

(B) 1916 - बदरघाट, पटना

(C) 1935 - अमरावती, महाराष्ट्र

(D) 1925 - नागरा बलिया

PDF SARTHI.COM

Ans – (A)

7. नाखून किसका प्रतीक है -

(A) पाशवी वृत्ति का

(B) मानवता का

(C) प्रेम का

(D) पौरुष का

Ans – (A)

8. हम बार-बार नाखून क्यों काटते हैं ?

(A) स्वच्छ रहने के लिए

(B) बर्वरता समापन हेतु

(C) सुंदरता के लिए

(D) मजबूरी से

Ans – (A)

9. द्विवेदी जी से किसने पूछा था- नाखून क्यों बढ़ते हैं ?

(A) लड़के ने

(B) छोटी लड़की ने

(C) पत्नी के

(D) नौकर ने

PDF SARTHI.COM

Ans – (B)

10. काट दीजिए वे चुपचाप दंड स्वीकार कर लेंगे पर निर्लज्ज अपराधी की भाँति फिर छूटते ही सेंध पर हाजिर। प्रस्तुत पंक्तियाँ किस पाठ से ली गई है ?

(A) नागरी लिपि

(B) परंपरा का मूल्यांकन

(C) आविन्यों

(D) नाखून क्यों बढ़ते हैं

Ans – (D)

11. काट दीजिए वे चुपचाप दंड स्वीकार कर लेंगे पर निर्लज्ज अपराधी की भाँति फिर छूटते ही सेंध हाजिर। उपर्युक्त कथन में निर्लज्ज अपराधी किसे पर कहा गया ?

(A) चोरों को

(B) वनमानुष को

(C) जंगली जानवरों को

(D) नाखून को

Ans – (D)

12. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने किसके बहाने अत्यंत सहज शैली में सभ्यता और संस्कृति की विकास गाथा उद्घाटित कर दिखायी है ?

(A) आँखों

(B) सुंदरता

PDF SARTHI.COM

Pdf, Notes OR Test Series लेने के लिए हमें WhatsApp करे - 7488296191

(C) नाखूनों

(D) कानों

Ans – (C)

13. हजारी प्रसाद द्विवेदी किस विश्वविद्यालय में प्रोफेसर एवं प्रशासनिक पद पर रहे ?

(A) काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

(B) शांति निकेतन विश्वविद्यालय

(C) चंडीगढ़ विश्वविद्यालय

(D) सभी

Ans – (D)

14. द्विवेदी जी को किस रचना के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला ?

(A) आलोकपर्व

(B) नाखून क्यों बढ़ते हैं

(C) कुटुज

(D) अशोक के फूल

Ans – (A)

15. लेखक के अनुसार मनुष्य के नाखून किसके जीवंत प्रतीक है ?

(A) मनुष्यता के

(B) सभ्यता के

(C) पाशवी वृत्ति के

(D) सौन्दर्य के

PDF SARTHI.COM

Ans – (C)

16. सहजात वृत्तियाँ किसे कहते हैं ?

(A) अस्त्रों के संचयन को

(B) अनजान स्मृतियों को

(C) 'स्व' के बंधन को

(D) उपर्युक्त सभी

Ans – (B)

17. हजारी प्रसाद द्विवेदी के कौन-सा निबंध नई पीढ़ी में सौन्दर्यबोध, इतिहास चेतना और सांस्कृतिक आत्मगौरव का भाव जगाता है ?

(A) अशोक के फूल

(B) कुटज

(C) नाखून क्यों बढ़ते हैं

(D) आलोक पर्व

Ans – (C)

18. लेखक के अनुसार नाखुन की विविध आकृतियाँ कौन-सी हैं ?

(A) त्रिकोण

(B) वर्तुलाकार

(C) चंद्राकार

(D) उपर्युक्त सभी

PDF SARTHI.COM

Ans – (D)

19.'विचार और वितर्क किस लेखक की रचना है ?

(A) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(B) महात्मा गांधी

(C) गुणाकार मुले

(D) यतीन्द्र मिश्र

Ans – (A)

20. 'नाखून बार-बार काटते रहना और अलंकृत करते रहना निरुपित करता है -

(A) सौन्दर्यबोध और सांस्कृतिक चेतना का

(B) सुन्दरता बढ़ाने का

(C) अच्छे व्यवहार का

(D) सुन्दरता और स्वास्थ्य पर ध्यान देने का

Ans – (A)

21.'मनुष्य की पशुता को जितनी बार भी काट दो, वह मरना नहीं जानती...... पर पंक्ति किस शीर्षक पाठ की है ?

(A) विष के दांत

(B) बहादुर

(C) नाखून क्यों बढ़ते हैं

(D) मछली

Ans – (C)

PDF SARTHI.COM

22. किसने कहा था कि सब पुराने अच्छे नहीं होते, सब नए खराब ही नहीं होते हैं ?

(A) मैक्समूलर

(B) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(C) स्वामी विवेकानंद

(D) कालिदास

Ans – (D)

23. दधीचि की हड्डी से क्या बना था ?

(A) इंद्र का बज्र

(B) धनुष

(C) त्रिशुल

(D) तलवार

Ans – (A)

24. 'कुटज' के रचनाकार हैं -

(A) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(B) नलिन विलोचन शर्मा

(C) अमरकांत

(D) गुणाकर मुले

Ans – (A)

25.'आलोक पर्व' किनकी कृति है ?

PDF SARTHI.COM

(A) नलिन विलोचन शर्मा

(B) अमरकांत

(C) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(D) विनोद कुमार शुक्ल

Ans – (C)

26. मनुष्य किस ओर बढ़ रहा है? पशुता की ओर या मनुष्यता की ओर? अस्त्र बढ़ाने की ओर या अस्त्र घटाने की ओर? प्रस्तुत पंक्ति किस रचना के हैं ?

(A) मैक्समूलर

(B) गुणाकार मुले

(C) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(D) विनोद कुमार शुक्ल

Ans – (C)

27.'विचार-प्रवाह' किस लेखक की रचना है ?

(A) भीमराव अंबेडकर

(B) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(C) यतीन्द्र मिश्र

(D) अमरकांत

Ans – (B)

28.'पुराने का मोह सब समय वांछनीय ही नहीं। होता'-यह पंक्ति किस शीर्षक पाठ की है ?

PDF SARTHI.COM

(A) नाखून क्यों बढ़ते हैं

(B) बहादुर

(C) मछली

(D) नागरी लिपि

Ans – (A)

29. किस देश के लोग बड़े-बड़े नख पसंद करते थे ?

(A) अंगदेश के

(B) गांधार के

(C) कैकय देश के

(D) गौड़ देश के

Ans – (D)

30. 'अनामदास का पोथा उपन्यास किस लेखक की कृति है ?

(A) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(B) यतीन्द्र मिश्र

(C) अमरकांत

(D) महात्मा गाँधी

Ans – (A)

31. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'निर्लज्ज अपराधी' किसे कहा है ?

(A) डकैत को

PDF SARTHI.COM

(B) चोर को

(C) हत्यारे को

(D) नाखून को

Ans – (D)

PDF SARTHI.COM

5. नागरी लिपी

पाठ का सारांश

- जिस लिपि में यह लेख छपा है, उसे नागरी या देवनागरी लिपि कहते हैं। करीब दो सदी पहले पहली बार इस लिपि के टाइप बने और इसमें पुस्तकें छपने लगीं इसलिए इसके अक्षरों में स्थिरता आ गई है।
- हिन्दी तथा इसकी विविध बोलियाँ देवनागरी लिपि में लिखी जाती हैं। हमारे, पड़ोसी देश नेपाल की नेपाली व नेवारी भाषाएँ भी इसी लिपि में लिखी जाती हैं। मराठी भाषा की लिपि देवनागरी है। देवनागरी लिपि के बारे में एक और महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि संसार में जहाँ भी संस्कृत-प्राकृत की पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे प्रायः देवनागरी लिपि में ही छपती हैं।
- गुजराती लिपि देवनागरी से अधिक भिन्न नहीं है। बंगला लिपि प्राचीन नागरी लिपि की पुत्री नहीं, तो बहन अवश्य है। हाँ, दक्षिण भारत की लिपियाँ वर्तमान नागरी से काफी भिन्न दिखाई देती हैं। लेकिन यह तथ्य हमें सदैव स्मरण रखना चाहिए कि आज कुछ भिन्न-सी दिखाई देनेवाली – दक्षिण भारत की ये लिपियाँ (तमिल-मलयालम और तेलुगु-कन्नड़) भी नागरी की तरह प्राचीन ब्राह्मी से ही विकसित हुई हैं।
- दक्षिण भारत में पोथियाँ लिखने के लिए नागरी लिपि का व्यवहार होता था। दक्षिण भारत की यह नागरी लिपि नंदिनागरी कहलाती थी। कोंकण के शिलाहार, मान्यखेट के राष्ट्रकूट, देवगिरि : के यादव तथा विजयनगर के शासकों के लेख नंदिनागरी लिपि में हैं।
- बारहवीं सदी में केरल के शासकों ने सिक्कों पर 'वीरकेरलस्य जैसे शब्द नागरी लिपि में अंकित हैं। श्रीलंका के पराक्रमबाहु, विजयबाहु (बारहवीं सदी) आदि शासकों के सिक्कों पर भी नागरी अक्षर देखने को मिलते हैं।
- उत्तर भारत के महमूद गजनवी, मुहम्मद गोरी, अलाउद्दीन खिलजी, शेरशाह, अकबर आदि शासकों ने सिक्कों पर नागरी शब्द खुदवाए थे। उत्तर भारत में मेवाड़ के गुहिल, सांभर-अजमेर के चौहान, कन्नौज के गाहड़वाल, काठियावाड़-गुजरात के सोलंकी, आबू के परमार, जेजाकभुक्ति (बुंदेलखण्ड) के चंदेल तथा त्रिपुरा के कलचूरि शासकों के लेख नागरी लिपि में ही हैं। उत्तर भारत की इस नागरी लिपि को हम देवनागरी के नाम से जानते हैं।
- नागरी नाम की उत्पत्ति तथा इसके अर्थ के बारे में विद्वानों में बड़ा मतभेद है। एक मत के अनुसार गुजरात के नागर ब्राह्मणों ने पहले-पहल इस लिपि का इस्तेमाल किया, इसलिए इसका नाम नागरी पड़ा।
- 'पादताडितंकम्' नामक एक नाटक से जानकारी मिलती है कि पाटलिपुत्र (पटना) को नगर कहते थे। हम यह भी जानते हैं कि स्थापत्य की उत्तर भारत की एक विशेष शैली को 'नागर शैली' कहते हैं। अतः 'नागर

PDFSARTHI.COM

या नागरी' शब्द उत्तर भारत के किसी बड़े नगर से संबंध रखता है। असंभव नहीं कि यह बड़ा नगर प्राचीन पटना हो। चंद्रगुप्त (द्वितीय) "विक्रमादित्य' का व्यक्तिगत नाम 'देव' था। इसलिए गुप्तों की राजधानी पटना को 'देवनगर' भी कहा जाता होगा। देवनगर की लिपि होने से उत्तर भारत की प्रमुख लिपि को बाद में देवनागरी नाम दिया गया होगा। लेकिन यह सिर्फ एक मत हुआ।

- कर्णाटक प्रदेश का श्रवणबेलगोल स्थान जैनों का एक प्रसिद्ध तीर्थस्थल है। इस स्थान से विविध भाषाओं और लिपियों के अनेक लेख मिले हैं। एक अन्य नागरी लेख में लिखा है चावुण्डराजे करविय ले। ये लेख दक्षिणी शैली की नागरी लिपि में हैं।
- देवगिरि के यादव राजाओं के नागरी लिपि में बहुत सारे लेख मिलते हैं। कल्याण के पश्चिमी चालुक्य नरेशों के लेख भी नागरी लिपि में हैं। उड़ीसा (कलिंग प्रदेश) में ब्राह्मी को एक विशेष शैली, कलिंग लिपि का आस्तित्व था, परंतु गंगवंश के कुछ शासकों के लेख नागरी लिपि में भी मिलते हैं।
- उत्तर भारत में पहले-पहल गुर्जर-प्रतीहार राजाओं के लेखों में नागरी लिपि देखने को मिलती है। मिहिर भोज, महेन्द्रपाल आदि प्रख्यात प्रतीहार शासक हुए। मिहिर भोज 1840-81 ई की ग्वालियर प्रशस्ति नागरी लिपि (संस्कृत भाषा) में है।

5. नागरी लिपी

लेखक परिचय

लेखक :- गुणाकर मुले

जन्म - 1935 में महाराष्ट्र ग्रामीण परिवेश के अमरावति जिला में

प्रारंभिक शिक्षा : - ग्रामीण परिवेश (मराठी)

→ मैट्रिक से MA तक मुख्य विषय गणित था।

→ पिछले 25 वर्ष में 2400 से अधिक लेख तथा 30 से अधिक पुस्तक छापी है।

PDF SARTHI.COM

प्रमुख रचना : - अक्षरों की कहानी, भारत इतिहास और सांस्कृति प्राचीन भारत के महान दर्शिनक, सौरमंडल', सूर्य, नक्षत्र, लोक, भारतीय लिपियों की कहानी आंतरिक्ष यात्रा, ब्राहमण्ड परिचय, अक्षर कथा

→ नागरीलिपी निबंध भारतीय लिपीयों की कहानी नामक पुस्तक से लिया।

5. नागरी लिपि

Short answer question

1. (i) मराठी भाषा में वह कौन-सा विशेष अक्षर है जो हिंदी में नहीं पाया जाता ? यह विशेष अक्षर किन भाषाओं में मिलता है ?

उत्तर - मराठी भाषा में 'ळ' एक विशेष ध्वनि (अक्षर) है जो हिंदी में नहीं पाई जाती। यह विशेष अक्षर (ध्वनि) संस्कृत और प्राकृत भाषाओं में पाया जाता है।

(ii) देवनागरी लिपि के संबंध में कौन-सा तथ्य महत्त्वपूर्ण है ?

उत्तर - संसार में जहाँ भी संस्कृत प्राकृत की पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे प्रायः देवनागरी लिपि में ही प्रकाशित होती हैं।

(iii) संस्कृत-प्राकृत की ध्वनियाँ रोमन लिपि में कैसे लिखी जाती हैं ?

उत्तर - संस्कृत-प्राकृत की ध्वनियाँ रोमन लिपि में ऊपर-नीचे कुछ चिह्न जोड़ते हुए लिखी जाती है।

2. (i) 'नागरी' शब्द के संबंध में लेखक की क्या धारणा है?

उत्तर - लेखक की धारणा है कि 'नागरी' शब्द किसी नगर अथवा बड़े शहर से संबंधित है।

(ii) देवनगरी कौन-सा नगर है? इस नगर में प्रयुक्त लिपि का नाम क्या पड़ा ?

उत्तर - काशी देवनगरी है। इस नगर में प्रयुक्त लिपि का नाम 'देवनागरी' पड़ा।

(iii) अल्बेरूनी के अनुसार, 'नागर' लिपि का इस्तेमाल कहाँ होता था ?

PDFSARTHI.COM

उत्तर - अल्बेरुनी के अनुसार, 'नागर' लिपि का इस्तेमाल मालवा में होता था।

3. नागरी को 'देवनागरी' क्यों कहते हैं ? लेखक इस संबंध में क्या बतलाते हैं? 'नागरी लिपि' शीर्षक पाठ के अनुसार उत्तर दें।

उत्तर - लेखक (गुणाकर मुले) 'नागरी लिपि' शीर्षक पाठ में अनुमान के आधार पर प्रस्तुत प्रश्न का उत्तर देते हुए कहते हैं कि चंद्रगुप्त (द्वितीय) 'विक्रमादित्य' का व्यक्तिगत नाम देव' था, इसलिए गुप्तों की राजधानी पटना को 'देवनगर' भी कहा जाता होगा। देवनगर की लिपि होने से उत्तर भारत की प्रमुख लिपि को बाद में 'देवनागरी' नाम दिया गया होगा।

4. (i) लेखक क्यों ईर्ष्या से जल गया ?

उत्तर - लेखक जब अपनी बहन की शादी में घर गया तब उसने अपनी दोनों भाभियों को रानी की तरह बैठकर चारपाइयाँ तोड़ते देखा। वह ईर्ष्या से जल गया। उसकी पत्नी, निर्मला तो सुबह से देर रात तक खटती रहती है और उसकी भाभियाँ नौकर के चलते बड़े आराम में हैं। लेखक इसी ईर्ष्या से जल गया।

(ii) लेखक को ऐसा क्यों लगता है कि इस दुनिया में उसकी पत्नी के समान अभागिन और दुखिया स्त्री कोई नहीं है ?

उत्तर - लेखक को ऐसा इसलिए लगता है, क्योंकि जहाँ दूसरी स्त्रियों को (भाई और रिश्तेदारों की पत्नियों को) नौकरों के चलते आराम-ही-आराम हैं, वहाँ उसकी पत्नी को सुबह से रात तक खटना पड़ता है।

Long answer question

1. नागरी लिपि के साथ किसका जन्म होता है? इसके संबंध में लेखक क्या जानकारी देता है ?

उत्तर - नागरी लिपि के साथ अनेक प्रादेशिक भाषाओं का जन्म होता है। इस संबंध में लेखक अन्य जानकारी देता हुआ लिखता है कि हिंदी के आदिकवि सरहपाद (सरहपा) की तिब्बत से प्राप्त 'दोहाकोश' की हस्तलिपि दसवीं-ग्यारहवीं सदी की लिपि में (नागरी में) लिखी गई है। नेपाल और भारत के जैन-भंडारों से इस काल की बहुत-सी हस्तलिपियाँ मिली हैं जो नागरी लिपि में ही लिखित हैं। इस काल में गुजराती, मराठी, बँगला, असमी, उड़िया (ओड़िया) आदि आधुनिक आर्य भाषाएँ भी जन्म ले रही थीं। इस समय से इन भाषाओं के लेख मिलने लगते हैं। इन भाषाओं की लिपियाँ भी नागरी लिपि से बहुत प्रभावित हैं। बँगला तथा ओड़िया लिपियाँ पुरानी नागरी की पूर्वी

PDF SARTHI.COM

शैली से विकसित हैं। असमी लिपि बँगला लिपि की बहन है, गुजराती लिपि पुरानी नागरी लिपि से ही निकली है और हिंदी के लिए प्रयुक्त नागरी की बहन है।

2. लेखक ने किन भारतीय लिपियों से देवनागरी का संबंध बताया है ?

उत्तर - गुजराती लिपि देवनागरी लिपि से बहुत कुछ मिलती है। यह लिपि देवनागरी से अधिक भिन्न नहीं है। बँगला लिपि भी प्राचीन नागरी लिपि से बहुत समता रखती है। लेखक का कहना है कि बँगला लिपि प्राचीन नागरी लिपि की पुत्री नहीं, तो बहन अवश्य है। दक्षिण भारत की तमिल, तेलुगु, कन्नड़ तथा मलयालम लिपियाँ भी 'नागरी' की तरह प्राचीन ब्राह्मी से विकसित हुई हैं। कुछ समय पूर्व तक दक्षिण भारत में पोथियाँ लिखने के लिए नागरी लिपि का व्यवहार होता था। दक्षिण भारत की नागरी लिपि ही 'नंदिनागरी' के रूप में प्रसिद्ध है।

3. गुर्जर-प्रतिहार कौन थे? बाद में इन्होंने कहाँ अधिकार कर लिया था ?

उत्तर - इतिहासकारों की ऐसी मान्यता है कि गुर्जर-प्रतिहार ईसा की आठवीं सदी - के पूर्वार्द्ध में बाहर से भारत आए थे और अवंती प्रदेश (उज्जैन, मालव प्रदेश) में अपना शासन स्थापित किया था। उसके बाद कन्नौज पर भी अधिकार कर लिया था। मिहिरभोज, महेंद्रपाल आदि प्रसिद्ध प्रतिहार शासक हुए।

4. 'नंदिनागरी' किसे कहते हैं? किस प्रसंग में लेखक ने इसका उल्लेख किया है ?

उत्तर - दक्षिण भारत की नागरी लिपि को 'नंदिनागरी' कहते हैं। कोंकण के शिलाहार, मान्यखेत के राष्ट्रकूट देवगिरी के यादव तथा विजयनगर के शासकों के लेख 'नंदिनागरी' लिपि में प्राप्त होते हैं। लेखक ने नागरी लिपि के विकास के प्रसंग में उसका उल्लेख किया है। प्राचीन नागरी लिपि मूलतः उत्तरी लिपि है, पर दक्षिण भारत में भी कुछ स्थानों पर यह 8वीं सदी से मिलती है। दक्षिण भारत में इसका नाम 'नागरी' न होकर 'नंदिनागरी' ('नंदनागरी) है।

5. (i) ब्राह्मी' और 'सिद्धम' लिपि की तुलना में नागरी लिपि की मुख्य पहचान क्या है ?

उत्तर - 'ब्राह्मी' तथा बाद की 'सिद्धम' लिपि में अक्षरों के सिरों पर छोटी आड़ी लकीरें या छोटे ठोस तिकोने होते हैं। लेकिन, नागरी लिपि के अक्षरों के सिरों पर पूरी लकीरें होती हैं और शिरोरेखाएँ उतनी ही लंबी होती हैं जितनी की अक्षरों की चौड़ाई होती है। नागरी लिपि में कुछ ऐसे लेख भी प्राप्त हुए हैं जिनके अक्षरों के सिरों पर 'ब्राह्मी' तथा 'सिद्धम' लिपि के समान तिकोन विराजमान हैं। नागरी लिपि की

PDFSARTHI.COM

दूसरी पहचान है कि इस प्राचीन नागरी के अक्षर आधुनिक नागरी से मिलते-जुलते है। इस समता के कारण हम थोड़े अभ्यास के बल पर इसे आसानी से पढ़ सकते हैं।

(ii) नागरी लिपि कब तक सार्वदेशिक लिपि थी ?

उत्तर - देशभर से नागरी लिपि में बहुत सारे लेख मिले हैं, जिनके आधार पर यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि ईसा की 8वीं- 11वीं सदियों में नागरी लिपि पूरे देश में व्याप्त थी। इस काल में मेवाड़, साँभर, अजमेर, कन्नौज, काठियावाड़, आबू (राजस्थान), बुंदेलखंड, त्रिपुरा आदि के शासकों के लेख नागरी लिपि में प्राप्त होते हैं। इस तरह, हम देखते हैं कि 8वीं-11वीं सदियों में नागरी लिपि सार्वजनिक लिपि हो गई थी।

(iii) नागरी को देवनागरी क्यों कहते हैं?

उत्तर - नागरी को देवनागरी कहे जाने के संबंध में लेखक (गुणाकर मुले) कहते हैं कि यह धारणा गलत है कि गुजरात के नागर ब्राह्मणों ने पहले-पहल इस लिपि का प्रयोग किया, इसलिए इसका नाम 'नागरी' पड़ा तथा देवनगरी काशी में प्रयुक्त किए जाने के कारण इसे 'देवनागरी' कहा गया । लेखक के अनुसार, चंद्रगुप्त (द्वितीय) 'विक्रमादित्य' का व्यक्तिगत नाम 'देव' था, इसलिए गुप्तों की राजधानी पटना को 'देवनगर' भी कहा गया और 'देवनगर' की लिपि होने के कारण उत्तर भारत की इस प्रमुख लिपि को 'देवनागरी' नाम दे दिया गया।

(iv) नागरी की उत्पत्ति के संबंध में लेखक क्या कहता है ? पटना से नागरी का क्या संबंध लेखक ने बताया है?

उत्तर - नागरी लिपि की उत्पत्ति के संबंध में लेखक का कहना है कि चंद्रगुप्त (द्वितीय) विक्रमादित्य का व्यक्तिगत नाम 'देव' था। इनके नाम के आधार पर ही गुप्त साम्राज्य की राजधानी 'पटना' 'देवनगर' के रूप में विख्यात हुई। इसी 'देवनगर' के नाम पर यहाँ प्रचलित लिपि को 'देवनागरी' कहा गया।

5. नागरी लिपि

1. नागरी लिपि निबंध के लेखक हैं -

(A) गुणाकर मुले

PDFSARTHI.COM

(B) अज्ञेय

(C) पंत

(D) प्रसाद

Ans – (A)

2. नागरी लिपि शीर्षक पाठ साहित्य की कौन सी विद्या है ?

(A) साक्षात्कार

(B) निबंध

(C) भाषण

(D) कहानी

Ans – (B)

3. गुणाकर मुले द्वारा रचित निबंध कौन सी है ?

(A) नाखून क्यों बढ़ते हैं

(B) परंपरा का मूल्यांकन

(C) नागरी लिपी

(D) श्रम विभाजन और जाति प्रथा

Ans – (C)

4. गुणाकर मुले का जन्म कब हुआ था ?

(A) 1935

(B) 1925

PDF SARTHI.COM

(C) 1916

(D) 1908

Ans – (A)

5. नागरी लिपि का प्राचीनतम लेख किस प्रदेश से मिलते हैं ?

(A) दक्खन प्रदेश

(B) कलिंग प्रदेश

(C) पांड्य प्रदेश

(D) कोंकण प्रदेश

Ans – (A)

6. नागरीलिपि में प्राचीन मराठी भाषा के लेख मिलने लग जाते हैं ?

(A) आठवीं सदी

(B) नौवीं सदी

(C) दसवीं सदी

(D) ग्यारहवीं सदी

Ans – (D)

7. देवनागरी लिपि में कौन-सी भाषा लिखी जाती है ?

(A) हिन्दी

(B) नेपाली (खसकुरा) व नेवारी

(C) मराठी

PDF SARTHI.COM

(D) उपर्युक्त सभी

Ans – (D)

8. उत्तर भारत से नागरी लिपि के लेख कब से मिलने लगते हैं ?

(A) आठवीं सदी

(B) छठी सदी

(C) नौवीं सदी

(D) चौथी सदी

Ans – (C)

9. हिन्दी के आदि कवि हैं -

(A) चंदबरदाई

(B) अमीर खुसरो

(C) बिहारीलाल

(D) सरहपा

Ans – (D)

10. 'सरहपा' की कृति है —

(A) दोहाकोश

(B) पृथ्वीराज रासो

(C) मृच्छकटिकम

(D) मेघदूतम्

PDF SARTHI.COM

Ans – (A)

11. 'नागरी लिपि' के लेखक हैं ?

(A) महात्मा गाँधी

(B) विनोद कुमार शुक्ल

(C) गुणाकर मुले

(D) यतीन्द्र मिश्र

Ans – (C)

12. बारहवीं सदी के केरल के शासकों के सिक्कों पर 'वीरकेरलस्य' जैसे शब्द ..... लिपि में अंकित है ?

(A) ब्राह्मी

(B) खरोष्ठी

(C) गुजराती

(D) देवनागरी

Ans – (D)

13. ईसा की चौदहवीं-पंद्रहवीं सदी के विजयनगर के शासकों ने अपने लेखों की लिपि को कहा है -

(A) नंदिनागरी

(B) देवनागरी

(C) गुजराती

(D) ब्राह्मी

PDF SARTHI.COM

Ans – (A)

14. बेतमा दानपत्र किस समय का है ?

(A) 1020 ई०

(B) 1021 ई०

(C) 1022 ई०

(D) 1023 ई०

Ans – (A)

15. गुणाकर मुले ने अपनी किस पुस्तक में संसार की प्रायः सभी प्रमुख पुरालिपियों की विस्तृत जानकारी दी है?

(A) अक्षर कथा

(B) अक्षरा की कहानी

(C) भारत: इतिहास और संस्कृति

(D) नक्षत्र-लोक

Ans – (A)

16. महमूद गजनवी के बाद के किस शासक ने अपने सिक्कों पर नागरी शब्द खुदवाए हैं ?

(A) मुहम्मद गौरी

(B) अलाउद्दीन खिलजी

(c) शेरशाह

(D) उपर्युक्त सभी

Ans – (D)

PDFSARTHI.COM

17. उत्तर भारत में पहले-पहल किस राजाओं के लेखों में नागरी लिपि देखने को मिलती है ?

(A) राष्ट्रकूट राजा

(B) गुर्जर-प्रतीहार राजाओं

(C) चोल राजाओं

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (B)

18. नागरी लिपि के आरंभिक लेख हमें कहाँ से मिले हैं ?

(A) पूर्वी भारत

(B) पश्चिमी भारत

(C) दक्षिणी भारत

(D) उत्तरी भारत

Ans – (C)

19. 'नक्षत्र लोक' किस लेखक की कृति है ?

(A) विनोद कुमार शुक्ल

(B) गुणाकर मुले

(C) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(D) मैक्समूलर

Ans – (B)

20. मराठी भाषा की लिपि क्या है ?

PDFSARTHI.COM

(A) खरोष्ठी लिपि

(B) प्राकृत लिपि

(C) नागरी लिपि

(D) देवनागरी लिपि

Ans – (D)

21.'धारा नगरी' के कौन परमार शासक विद्यानुरागी थे ?

(A) महेन्द्रपाल

(B) भोज

(C) मिहिर भोज

(D) अमोघवर्ष

Ans – (B)

22. चन्द्रगुप्त (द्वितीय) का व्यक्तिगत नाम क्या था ?

(A) देव

(B) महादेव

(C) शैलदेव

(D) रामदेव

Ans – (A)

23. हिन्दी भाषा की लिपि क्या है ?

PDF SARTHI.COM

(A) ब्राह्मी लिपि

(B) देवनागरी लिपि

(C) चित्रलिपि

(D) गुरुमुखी लिपि

Ans – (B)

24.'दोहा-कोश' किसकी रचना है ?

(A) सरहपा की

(B) रसखान की

(C) जीवनानंद दास की

(D) गुरुनानक की

Ans – (A)

25.'रामायण' की रचना किस भाषा में है ?

(A) संस्कृत

(B) हिन्दी

(C) उर्दू

(D) अंग्रेजी

Ans – (A)

26. तमिल, मलयालम, तेलगू, कन्नड़ भाषाएँ हैं -

(A) उत्तर भारत की

PDF SARTHI.COM

(B) पश्चिम भारत की

(C) पूर्वी भारत की

(D) दक्षिण भारत की

Ans – (D)

27. पहली बार देवनागरी लिपि के टाइप कब बने ?

(A) करीब दो सदी पहले

(B) करीब तीन सदी पहले

(C) करीब पाँच सदी पहले

(D) करीब चौथी सदी के पहले

Ans – (A)

28.'अक्षरों की कहानी' किसकी रचना है ?

(A) मैक्समूलर

(B) गुणाकर मुले

(C) बिरजू महाराज

(D) रामविलास शर्मा

Ans – (B)

29.'नागरी लिपि' निबंध गुणाकर मुले की किस पुस्तक से लिया गया है ?

(A) अक्षरों की कहानी

PDF SARTHI.COM

(B) नक्षत्र-लोक

(C) भारतीय लिपियों की कहानी

(D) अंतरिक्ष यात्रा

Ans – (B)

30. 9 वीं सदी में सुदूर दक्षिण से प्राप्त वरगुण का पलियम ताम्रपत्र किस लिपि में है ?

(A) नागरी लिपि

(B) रोमन लिपि

(C) ब्राह्मी लिपि

(D) खरोष्ठी लिपि

Ans – (A)

31.'सूर्य' नामक पुस्तक किनकी रचना है ?

(A) मैक्स मूलर

(B) बिरजू महाराज

(C) गुणाकर मुले

(D) महात्मा गाँधी

Ans – (C)

32. नेवारी भाषाएँ किस लिपि में लिखी जाती है ?

(A) देवनागरी

(B) खरोष्ठी

PDF SARTHI.COM

(C) शौरसेनी

(D) ब्राह्मी

Ans – (A)

33.'भारतीय लिपियों की कहानी' पुस्तक के रचयिता कौन हैं ?

(A) भीमराव अंबेडकर

(B) मैक्समूलर

(C) यतीन्द्र मिश्र

(D) गुणाकर मूले

Ans – (D)

34.'हिंदी तथा इसकी विविध बोलियाँ' किस लिपि में लिखी जाती हैं ?

(A) देवनागरी

(B) खरोष्ठी

(C) तेलगु

(D) ब्राह्मी

Ans – (A)

PDF SARTHI.COM

6. बहादुर

पाठ का सारांश

- सहसा मैं काफी गंभीर हो गया था, जैसा कि उस व्यक्ति की हो जाना चाहिए, जिस पर एक भारी दायित्व आ गया हो। वह सामने खड़ा था और आँखों को बुरी तरह मलका रहा था। बारह-तेरह वर्ष की उम्र ठिगना चकइठ शरीर, गोरा रंग और चपटा मुँह। वह सफेद नेकर, आधी बांह की ही सफेद कमीज और भूरे रंग का पुराना जूता पहने था। उसके गले स्काउटों की तरह एक रूमाल बंधा था। उसको घेरकर परिवार के अन्य लोग खड़े थे। निर्मला चमकती दृष्टि से कभी लड़के को देखती और कभी मुझको और अपने भाई को। निश्चय ही वह पंच-बराबर हो गई थी।
- निर्मला को अपने भाभियों के पास नौकर को देखकर नौकर रखने की इच्छा बहुत प्रबल हो गई थी। उसका भाई एक नौकर लाकर बहन के यहाँ रख देता है। पहले उसके बारे में पूरी कहानी असाधारण विस्तार से बताता है। दिलबहादुर नाम का यह नेपाली गँवइ गोरखा है। उसका पिता युद्ध में मारा गया था। माता जी घर चलाती थी। एक दिन माता जी ने शरारत करने पर दिलबहादुर को बहुत मार मारा। वह वहाँ से भाग गया और लेखक. महोदय के यहाँ नौकरी करने के लिए आ गया। वह मेहनती और भोला-भाला लड़का था। उसके आने पर घर के सभी लोग बहुत स्वागत किया।
- निर्मला प्रेम से बहादुर कहने लगी। घर के कामों में वह सहयोग देने लगा। वह घर की सफाई करता, कमरों में पोंछा लगाता, अंगीठी जलाता, चाय बनाता और पिलाता। दोपहर में कपड़े धोता और बर्तन मलता। वह रसोई बनाने की भी जिद करता, पर निर्मला स्वयं सब्जी और रोटी बनाती। निर्मला को उसकी बहुत फिक्र रहती। दिन मजे से बीतने लगे। निस्संदेह बहादुर की वजह से सबको खूब आराम मिल रहा था।
- घर खूब साफ और चिकना रहता। कपड़े चमाचम सफेदा निर्मला की तबीयत भी काफी सुधर गई। अब कोई एक खेर भी न टसकाता था। किसी को मामूली से मामूली काम करना होता, तो वह बहादुर को आवाज देता। 'बहादुर एक गिलास पानी।"बहादुर, पेन्सिल नीचे गिरी है, उठाना।' इसी तरह की फरमाइशें। बहादुर घर में फिरकी की तरह नाचता रहता। सभी रात में पहले ही सो जाते थे और सबेरे, आठ बजे के पहले न उठते थे।
- किशोर अपना सारा काम बहादुर से करवाता। जूते में पॉलिश, साइकिल की सफाई, कपड़ो की धुलाई और इस्त्री भी। इतने सारी फरमाइशों में कोई गड़बड़ी हो गई तो बुरी-बुरी गाली देना, मार-पीट, गर्जन-तर्जन

PDFSARTHI.COM

आदि चालू हो गया। धीरे-धीरे निर्मला का हाथ भी खुल गया। अब बहादुर को मारनेवाला दो लोग हो गये। कभी-कभी एक गलती पर दोनों लोग मारते थे।

- एक दिन रविवार को निर्मला के रिश्तेदार घर पर मिलने के लिए आये। घर में बड़ी चहल-पहल मच गई। नाश्ता पानी के बाद बातों की जलेबी छनने लगी। इसी समय एक घटना हो गई। अचानक रिश्तेदार की पत्नी ने चोरी इलजाम नौकर पर लगा दिया। सबलोगों ने बारी-बारी से पूछा। लेकिन बहादुर नही-नहीं कहता रहा। पहले लेखक महोदय ने बहादुर को मारा। फिर बाद में निर्मला ने भी बहादुर को मारा। इस घटना के बाद बहादुर काफी डांट-मार खाने लगा। वह उदास रहने लगा और काम में लापरवाही करने लगा।
- एक दिन मैं दफ्तर से विलम्ब से आया। निर्मला आँगन में चुपचाप सिर पर हाथ रखकर बैठी थी। अन्यं लड़कों का पता नहीं था, केवल लड़की अपनी माँ के पास खड़ी थी। अंगीठी अभी नहीं जली थी। आँगन गंदा पड़ा था, बर्तन बिना मले हुए रखे थे। सारा घर जैसे काट रहा था।
- क्या बात है ?- मैंने पूछा – बहादुर भाग गया। भाग गया! क्यों ? पता नहीं।
  निर्मला आँखों पर आँचल रखकर रोने लगी। मुझे क्रोध आया। मैं चिल्लाना चाहता था, पर भीतर-ही-भीतर कलेजा जैसे बैठ रहा हो। मैं वहीं चारपाई पर सिर झुकाकर बैठ गया। मुझे एक अजीब-सी लघुता का अनुभव हो रहा था। यदि मैं न मारता, तो शायद वह न जाता।

6. बहादुर

* लेखक परिचय *

लेखक :- अमरकांत

जन्म :- जुलाई 1925 नागर बलिया (उत्तर प्रदेश)

→ 1946 ई0 में इन्होंनें इंटर मेरिस्ट किया था।

→ 1912 में इलाहबाद विश्विद्यालय से B.E.D किया था।

अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता में उनकी कहानी डिप्टी कलेकटेर को पुरस्कृत किया था।

PDF SARTHI.COM

प्रमुख स्थानं :- जिंदगी और जोख देश के लोग, मौत का नगर, मित्रमिलन पुहासा, 'सुखा पत्रा', आकाश पक्षी, काले- उजले दिन सुखजीवी, ग्राम सेविका

6. बहादुर

Short Answer

1. (i) लेखक ने बहादुर को क्या हिदायतें दीं? लेखक ने उसे क्या समझाया ?

उत्तर - लेखक ने बहादुर (दिल बहादुर) को निम्नलिखित हिदायतें दीं।

(क) सारी शरारतें छोड़कर उसे ढंग से काम करना चाहिए।

(ख) वह इस घर (लेखक के घर) को अपना घर समझे।

लेखक ने उसे (बहादुर को समझाया कि यदि वह यहाँ रह गया तो जीने का तौर-तरीका सीख जाएगा, घर के और लड़कों की तरह पढ़-लिख जाएगा और उसकी जिंदगी और अच्छी हो जाएगी।

(ii) लेखक की पत्नी, निर्मला ने बहादुर को कौन-से व्यावहारिक उपदेश दे डाले ?

उत्तर - लेखक की पत्नी निर्मला ने बहादुर को व्यावहारिक उपदेश देते हुए कहा - "तुम इस मुहल्ले में किसी के यहाँ न जाओगे और न किसी का काम करोगे। इस मुहल्ले में छोटी मानसिकता वाले लोग रहते हैं। कोई बाजार से कुछ लाने को कहे तो बड़ी होशियारी से कन्नी कटा लोगे। तुम घर के सभी लोगों के साथ सम्मान और शिष्टाचार का व्यवहार करोगे।"

(iii) बहादुर के नाम से 'दिल' शब्द क्यों उड़ा दिया गया ? विचार करें।

उत्तर - लेखक के घर में दिलबहादुर को नौकर के रूप में रख लिया गया। लेखक की पत्नी ने दिलबहादुर का नाम संक्षिप्त कर दिया। 'दिल' शब्द हटाकर उसने उसका नाम केवल 'बहादुर' कर दिया। पुकारने के लिए छोटा नाम ही उपयुक्त होता है। अतः, लेखक की पत्नी, निर्मला ने 'दिलबहादुर' नाम की जगह पुकारने के लिए 'बहादुर' शब्द का

PDFSARTHI.COM

ही प्रयोग करना उचित और अच्छा समझा। ऐसा कर लेखक ने यह जताने का प्रयास किया है कि मध्यम वर्ग संवेदनाहीन हो गया है। यदि उनमें प्रेम आदि संवेदनाएँ हैं, तो केवल दिखावेभर के लिए।

(iv) बहादुर का स्वर कैसा था ?

उत्तर - बहादुर का स्वर मीठी झनझनाहट से पूर्ण था।

2. (i) रात में बहादुर कहाँ सोता था ?

उत्तर - रात में सारा काम-धाम करने के बाद बहादुर भीतर के बरामदे में एक टूटी हुई बँसखट पर सोता था।

(ii) बहादुर के बिस्तर पर कौन-कौन-सी चीजें सज जाती थीं?

उत्तर - बहादुर के बिस्तर पर कुछ गोलियाँ, पुराने ताश की गड्डी, कुछ खूबसूरत पत्थर के टुकड़े, ब्लेड एवं कागज की नावें सज जाती थीं।

(iii) काम-धाम के बाद रात को अपने बिस्तर पर गए बहादुर का लेखक किन शब्दों में चित्रण करता है?

उत्तर - सारा काम-धाम निपटाने के बाद बहादुर भीतर के बरामदे में बँसखट पर सोता था। सोने से पहले वह नेपाली टोपी पहनकर आईने में बंदर की तरह अपना मुँह देखता था। इसमें उसे बड़ा आनंद आता था। इसके बाद वह अपनी जेब से कुछ गोलियाँ, पुराने ताश की एक गड्डी, कुछ खूबसूरत पत्थर के टुकड़े, ब्लेड तथा कागज की नावें निकालता और उन्हें अपने बिस्तर पर सजा देता और उनसे कुछ देर तक खेलता रहता। खेल पूरा होने पर वह अपनी पहाड़ी भाषा (नेपाली भाषा) में कुछ गुनगुनाने लगता। उसके स्वर में एक मीठी उदासी होती जो सारे घर में फैल जाती थी।

3. (i) किशोर कौन था? वह किस बात का कायल था ?

उत्तर - किशोर लेखक और उसकी पत्नी निर्मला का पुत्र था। वह काफी शान - शौकत और 'रोब-दाब' से रहने का कायल था।

(ii) किशोर ने अपने सभी काम बहादुर को क्यों सौंप दिए ? वह बहादुर से कौन से काम कराता था ?

PDFSARTHI.COM

उत्तर - किशोर को ऐसा लगा कि बहादुर को कड़े अनुशासन में रखना चाहिए। अतः, उसने अपने सभी काम बहादुर को सौंप दिए। वह बहादुर से जूते में पॉलिश लगवाता, अपनी साइकिल की सफाई करवाता, अपने कपड़े धुलवाता और उनकी इस्तिरी (आयरन) करवाता और रात में सोते समय अपने शरीर की मालिश कराता तथा मुक्की भी लगवाता था।

(iii) बहादुर से थोड़ी-सी भी चूक होने पर किशोर की कैसी प्रतिक्रिया होती थी?

उत्तर - किशोर के काम में बहादुर से थोड़ी भी चूक होती थी तो किशोर गर्जन- तर्जन करने लगता था, बहादुर को बुरी-बुरी गालियाँ देता था और कभी-कभी उसपर हाथ भी चला देता था।

(iv) किशोर बहादुर को कैसी चेतावनी देता था ?

उत्तर - किशोर बहादुर को चेतावनी देते हुए कहता था- मेरा काम सबसे पहले होना चाहिए। मेरा कोई काम पूरा नहीं हुआ तो मैं मारते-मारते तुम्हारी हालत बिगाड़ दूँगा (हुलिया टाइट कर दूँगा) ।

4. (i) "मेरे कलेजे में जैसे कुछ हौंड़ रहा है।" इसका आशय स्पष्ट करें।

उत्तर - कहानीकार की पत्नी (निर्मला) को इस बात का अत्यधिक दुःख है कि निर्दोष बहादुर को निर्ममता के साथ पीटा गया। वह (निर्मला) अपने दुःख को व्यक्त करने के लिए 'हौंड़ना' शब्द का प्रयोग करती है। 'हौंड़ना' भोजपुरी का समर्थ शब्द है जिससे पश्चातापपूर्ण दुःख का व्यंजन होता है।

(ii) किशोर ने अपना पश्चाताप किन शब्दों में व्यक्त किया ?

उत्तर - किशोर ने अपना पश्चाताप व्यक्त करते हुए कहा, माँ, यदि एक बार भी बहादुर आ जाता, तो मैं उसे पकड़ लेता और उसे कभी जाने नहीं देता। मैं उससे अपने किए की माफी माँगता और शपथपूर्वक विश्वास दिलाता कि मैं उसे कभी मारूँगा नहीं, उसकी सेवा के लिए उसे सम्मान दूँगा। वह कुछ चुराकर नहीं ले गया, अगर ले गया होता, तो मुझे दुःख नहीं, एक प्रकार का संतोष होता।

Long answer question

1. 'बहादुर' कहानी के लेखक को क्यों लगता है कि जैसे उसपर एक भारी दायित्व आ गया हो।

PDF SARTHI.COM

उत्तर - लेखक के परिवार में एक नौकर की नितांत आवश्यकता थी। लेखक की पत्नी को सबेरे से रात तक खटना पड़ता था । लेखक को लगता था कि उसकी पत्नी के समान अभागिन और दुखिया स्त्री इस दुनिया में दूसरी नहीं है। नेपाल से भागा हुआ बारह-तेरह वर्ष का लड़का जब अचानक उसके घर के सामने आकर खड़ा हो गया तब लेखक के भीतर एक नौकर रखने का सपना तैर गया। पर, उसे अपनी आर्थिक स्थिति का पता था। नौकर रखें या न रखें, लेखक इस द्वंद्व में उलझ गया। उसे यह अहसास होने लगा कि उसपर परिवार का मुखिया होने के नाते एक भारी दायित्व आ गया है। उसका निर्णय ही परिवार के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

2. बहादुर अपने घर से क्यों भाग गया था ?

उत्तर - युद्ध में बाप के मरने के बाद उसकी माँ सारे परिवार का पालन-पोषण करती थी। उसकी माँ बड़ी गुस्सैल थी। वह बात-बेबात बहादुर को पीटती रहती थी। वह चाहती थी कि बहादुर घर के काम-धाम में उसका हाथ बँटाए, पर वह तो पहाड़ या जंगलों में निकल जाता और घोंसलों से चिड़ियों के बच्चे निकालता तथा फल तोड़कर खाता। कभी-कभार पशुओं को चराने ले जाता तो उस भैंस को खूब पीटता, जिसे उसकी माँ उससे भी ज्यादा प्यार करती थी। एक दिन उसने अपनी माँ की प्यारी भैंस को खूब पीटा। मार खाकर भैंस भागी भागी उसकी माँ के पास चली गई। उसकी माँ समझ गई कि बहादुर ने उसे खूब पीटा है। बहादुर जब घर लौटा तब उसने उसकी डंडे से खूब पिटाई की। बहादुर का मन माँ से फट गया। वह घर से भाग खड़ा हुआ।

3. बहादुर के आने से लेखक के घर और परिवार के सदस्यों पर कैसा प्रभाव पड़ा ?

उत्तर - बहादुर के आने से परिवार के सारे सदस्यों को खूब आराम मिल रहा था। घर भी खूब साफ-सुथरा रहता था। प्रतिदिन पोंछा लगाने के कारण कमरे खूब साफ और चिकने रहते थे। नियम से बहादुर सबके कपड़े धोता। सभी चमाचम सफेद कपड़े पहनते। सारे काम बहादुर करता था। कोई एक खर भी न टसकाता था। किसी को मामूली से मामूली काम करना होता, बहादुर को ही याद करता। बहादुर भी ऐसा बहादुर था कि सबकी फरमाइश पूरी करता था। सभी रात में पहले ही सो जाते और सुबह आठ बजे के पहले नहीं उठते थे। बहादुर के आने से परिवार के सारे सदस्यों को गर्व की अनुभूति होती थी।

4. निर्मला को बहादुर के चले जाने पर किस बात का अफसोस हुआ ?

उत्तर - बहादुर के चले जाने पर निर्मला को इस बात का अफसोस है कि वह कोई सामान नहीं ले गया

PDFSARTHI.COM

है। वह अपने कपड़े, बिस्तर, जूते सब कुछ छोड़ गया है। यदि वह इन्हें अपने साथ ले गया होता तो

शायद निर्मला को एक प्रकार का संतोष हो गया होता। उसे अफसोस है कि उसने बहादुर को कुछ नहीं दिया। यदि वह कहकर अपने घर लौटता तो वह उसे खूब अच्छी तरह पहना-ओढ़ाकर भेजती, उसकी तनख्वाह के रुपये दे देती, दो-चार रुपये और अधिक दे देती, पर वह तो कुछ ले ही नहीं गया!

5. साले साहब से लेखक को कौन-सा किस्सा असाधारण विस्तार से सुनना पड़ा ?

उत्तर - लेखक के साले साहब बहादुर को लेकर लेखक के घर आए थे। उनके भीतर इस बात की खुशी थी कि उन्होंने अपनी बहन और जीजा के लिए बहुत बड़ा काम किया है। उन्होंने उस उमंग और खुशी में बहादुर का किस्सा असाधारण विस्तार के साथ सुनाया। बहादुर कहाँ का रहनेवाला था, वह अपने घर से क्यों भागा, उससे उनकी मुलाकात कहाँ हुई और उसके यहाँ लाने के लिए उन्होंने उसे किस प्रकार राजी किया- -इस किस्सा को उन्होंने असाधारण विस्तार के साथ (खूब बढ़ा-चढ़ाकर) अपने जीजाजी को सुनाया।

6. बहादुर का चरित्र - चित्रण करें।

उत्तर - बहादुर बारह-तेरह वर्ष का नेपाली बालक है। उसका पूरा नाम दिलबहादुर - है। उसका शरीर ठिगना और रंग गोरा है। उसमें बचपन का सहज चापल्य है। वह माँ से प्रताड़ित होकर घर से भाग जाता है और कहानीकार के यहाँ नौकर के रूप में काम करने लगता है। बहादुर सरल, ईमानदार, निश्छल, निर्दोष और कर्तव्यनिष्ठ है। वह निर्लोभ और मनमौजी है। दुनियादारी उसे छू भी नहीं पाई है। वह अपनी निश्छलता के कारण ही पीड़ित होने को अभिशप्त है।

6. बहादुर

1. बहादुर शीर्षक कहानी के लेखक कौन हैं?

(A) अमरकांत

(B) गुणाकर मुले

PDF SARTHI.COM

(C) विनोद कुमार शुक्ल

(D) यतीन्द्र मिश्र

Ans – (A)

2. हिन्दी के सशक्त कथाकार अमरकांत का जन्म कहाँ हुआ है?

(A) अमरावती महाराष्ट्र

(B) बदरघाट पटना

(C) नागरा बलिया उत्तरप्रदेश

(D) उन्नाव उत्तरप्रदेश

Ans – (C)

3. लेखक अमरकांत का जन्म हुआ था?

(A) जुलाई 1925 ई० में

(B) अगस्त 1928 ई० में

(C) मार्च 1924 ई० में

(D) जून 1927 ई० में

Ans – (A)

4. अमरकांत लिखित कहानी का नाम है ?

(A) ईदगाह

(B) ठेस

(C) मछली

PDF SARTHI.COM

(D) बहादुर

Ans – (D)

5. 'बहादुर' कहानी का पात्र बहादुर क्या है?

(A) ड्राइवर

(B) घरेलू नौकर

(C) लेखक का मित्र है।

(D) लेखक का साला है।

Ans – (B)

6. बहादुर लेखक के घर से क्या लेकर भागा था?

(A) कपड़े

(B) विस्तरा

(C) जूते

(D) कोई भी सामान नहीं ले गया

Ans – (D)

7. बहादुर का पूरा नाम है-

(A) दिलबहादुर

(B) शेख बहादुर

(C) बहादुर प्रसाद

(D) बहादुर पंडित

PDF SARTHI.COM

Ans – (A)

8. बहादुर कहाँ का रहने वाला था?

(A) बिहार

(B) उत्तरप्रदेश

(C) नेपाल

(D) भूटान

Ans – (C)

9. बहादुर की उम्र कितनी थी?

(A) दस ग्यारह वर्ष

(B) ग्यारह बारह वर्ष

(C) बारह-तेरह वर्ष

(D) तेरह चौदह वर्ष

Ans – (C)

10. बहादुर के नाम से 'दिल' शब्द किसने उड़ा दिया?

(A) लेखक ने

(B) लेखक के साले साहब ने

(C) निर्मला ने

(D) किशोर ने

Ans – (C)

PDF SARTHI.COM

11. बहादुर अपने घर से क्यों भागा था?

(A) नौकरी के लिए

(B) पिता के फटकार के कारण

(C) माँ की मार के कारण

(D) घूमने के लिए

Ans – (C)

12. बहादुर की माँ गुस्से से पागल क्यों हो गयी थी?

(A) बहादुर ने भैंस को मारा था

(B) बहादुर ने कुत्ते को मारा था

(C) बहादुर ने बिल्ली को मारा था

(D) बहादुर माँ का काम नहीं करता था

Ans – (A)

13.'बहादुर कैसी कहानी है?

(A) धार्मिक

(B) तार्किक

(C) सामाजिक

(D) ऐतिहासिक

Ans – (C)

14. बहादुर पर कितने रुपये की चोरी का इल्जाम लगा था?

PDFSARTHI.COM

(A) 10 रुपये

(B) 11 रुपये

(C) 12 रुपये

(D) 13 रुपये

Ans – (B)

15. लेखक के रिश्तेदार ने बहादुर पर क्या आरोप लगाए?

(A) पैसे चुराने का

(B) गहने चुराने का

(C) अंगूठी चुराने का

(D) मोती चुराने का

Ans – (A)

16. कहानी है-

(A) नाखून क्यों बढ़ते हैं

(B) बहादुर

(C) नौबतखाने में इबादत

(D) परंपरा का मूल्याकन

Ans – (B)

17. बहादुर लेखक के घर से अचानक क्यों चला गया ?

(A) दूसरी नौकरी मिल जाने के कारण

PDF SARTHI.COM

(B) माँ की याद आने के कारण

(C) स्वयं के प्रति लेखक तथा उसके के व्यवहार में आए परिवर्तन के कारण

(D) उपर्युक्त सभी

Ans – (C)

18. बहादुर के भाग जाने के बाद किसे एक अजीब-सी लघुता का अनुभव हो रहा था?

(A) निर्मला को

(B) किशोर को

(C) लेखक को

(D) उपर्युक्त में कोई नहीं

Ans – (C)

19. बहादुर को लेखक के घर कौन लेकर आया था?

(A) लेखक के मित्र

(B) लेखक के बड़े भाई

(C) लेखक के साले साहब

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (C)

20. लेखक के बड़े लड़के का क्या नाम था ?

(A) बहादुर

(B) किशोर

PDF SARTHI.COM

(C) सन्तु

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (B)

21. बहादुर पर चोरी का आरोप कौन लगाता है?

(A) लेखक

(B) निर्मला

(C) किशोर

(D) निर्मला के रिश्तेदार

Ans – (D)

22. बहादुर की शारीरिक बनावट कैसी थी ?

(A) ठिगना चकइठ शरीर

(B) गोरा रंग

(C) चपटा मुँह

(D) उपर्युक्त सभी

Ans – (D)

23. लेखक के घर जब पहली बार आया था तो बहादुर क्या पहने हुए था?

(A) सफेद नेकर

(B) आधी बाँह की सफेद कमीज-

(C) भूरे रंग का पुराना जूता

PDF SARTHI.COM

(D) उपर्युक्त सभी

Ans – (D)

24.'वानर सेना' नामक एक बाल उपन्यास किसने लिखा है?

(A) गुणाकर मुले

(B) यतीन्द्र मिश्र

(C) विनोद कुमार शुक्ल

(D) अमरकांत

Ans – (D)

25. मैं वहीं चारपाई पर सिर झुकाकर बैठ गया। मुझे एक अजीब-सी लघुता का अनुभव हो रहा था। यदि मैं नहीं मारता तो शायद वह न जाता । यह गद्यांश किस पाठ का है?

(A) मछली

(B) परंपरा का मूल्यांकन

(C) बहादुर

(D) विष के दाँत

Ans – (C)

26. उसकी हँसी बड़ी कोमल और मीठी थी जैसे फूल की पंखुड़ियाँ बिखर गई हों। उपर्युक्त कथन किसके संबंध में कही गई है? |

(A) निर्मला

(B) किशोर

PDF SARTHI.COM

(C) बहादुर

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (C)

27. बहादुर का बाप कहाँ मारा गया था?

(A) युद्ध में

(B) डकैती में

(C) चोरी में

(D) चरवाही में

Ans – (A)

28. बहादुर से मार खाकर भैंस भागी - भागी किसके पास चली आई

(A) बहन के

(B) माँ के

(C) नानी के

(D) चाची के

Ans – (B)

29. किशोर से मार खाने के बाद वहादुर

(A) प्रतिरोध करता

(B) हंगामा खड़ा करता

(C) चुपचाप कोने में हो जाता

(D) ग्रेने लगता

PDF SARTHI.COM

Ans – (C)

30. बहादुर के संबंध में क्या सही नहीं है ?

(A) एक नेपाली लड़का

(B) बहुत ही हँसमुख और मेहनती था

(C) माँ से पिटाई के कारण पर छोड़कर भाग गया था

(D) वह लेखक के रिश्तेदार का पैसा चुरा लिया था

Ans – (D)

31. दिल बहादुर है -

(A) लेखक का मित्र

(B) लेखक का पड़ोसी

(C) लेखक का नौकर

(D) लेखक का ड्राइवर

Ans – (C)

32. बहादर को सुअर का बच्चा किसने कहा?

(A) लेखक ने

(B) निर्मला ने

(C) किशोर ने

(D) लेखक के रिश्तेदार में

Ans – (C)

PDFSARTHI.COM

33. किनकी कहानियों में मध्य वर्ग, विशेषकर निम्न मध्य वर्ग के जीवनानुभवों और जिजीविषा का बेहद प्रभावशाली और अंतरंग चित्रण मिलता है?

(A) गुणाकर मुले

(B) अमरकांत

(C) रामविलास शर्मा

(D) हजारी प्रसाद द्विवेदी

Ans – (B)

34. "जिंदगी और जॉक किनकी रचना है?

(A) अमरकांत

(B) विनोद कुमार शुक्ल

(C) गुणाकार मुले

(D) यतीन्द्र मिश्र

Ans – (A)

35. अमरकांत की कौन-सी कहानी अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता में पुरस्कृत हुई थी ?

(A) बहादुर

(B) डिप्टी कलक्टरी

(C) जिंदगी और जोंक

(D) कुहासा

Ans – (B)

PDFSARTHI.COM

36. बहादुर के चले जाने के बाद किसे अजीव सौ लघुता का अनुभव हो रहा था?

(A) लेखक को

(B) निर्मला को

(C) किशोर को

(D) रिश्तदार को

Ans – (A)

37. 'बहादुर' शीर्षक कहानी की निर्मला कौन थी?

(A) लेखक की बहन

(B) लेखक की पत्नी

(C) लेखक के रिश्तेदार

(D) लेखक की माँ

Ans – (B)

38. बहादुर कहाँ से भागकर आया था ?

(A) भोपाल से

(B) नेपाल से

(C) बंगाल से

(D) तिब्बत से

Ans – (B)

39. 'बहादुर' शीर्षक कहानी में किशोर कौन था?

PDF SARTHI.COM

(A) लेखक का पुत्र

(B) लेखक के साले का पुत्र

(C) लेखक के भाई का पुत्र

(D) लेखक का चचेरा भाई

Ans – (A)

PDF SARTHI.COM

7. परंपरा का मूल्यांकन

पाठ का सारांश

- जो लोग साहित्य में युग-परिवर्तन करना चाहते हैं, जो लकीर के फकीर नहीं है, जो रूढ़ियाँ तोड़कर क्रांतिकारी साहित्य रचना चाहते हैं, उनके लिए साहित्य परम्परा का ज्ञान सबसे ज्यादा आवश्यक है। जो लोग समाज में बुनियादी परिवर्तन करके वर्गहीन शोषणमुक्त समाज की रचना करना चाहते हैं; वे अपने सिद्धान्तों को ऐतिहासिक भौतिकवाद के नाम से पुकारते हैं।
- प्रगतिशील आलोचना किन्हीं अमूर्त सिद्धान्तों का संकलन, नहीं है, वह साहित्य की परम्परा का मूर्त ज्ञान है। और यह ज्ञान उतना ही विकासमान है जितना साहित्य की परम्परा।
- साहित्य की परंपरा का मूल्यांकन करते हुए सबसे पहले हम उस साहित्य का मूल्य निर्धारित करते हैं जो शोषक वर्गों के विरुद्ध श्रमिक जनता के हितों को प्रतिबिम्बित करता है।
साहित्य में मनुष्य की बहुत-सी आदिम भावनाएँ प्रतिफलित होती हैं जो उसे प्रतिमात्र से जोड़ती हैं। उसमें मनुष्य का इन्द्रिय-बोध, उसकी भावनाएँ भी व्यंजित होती है। साहित्य का यह पक्ष अपेक्षाकृत स्थायी होता है।
- साहित्य के निर्माण में प्रतिभाशाली मनुष्यों की भूमिका निर्णायक है। इसका यह अर्थ नहीं कि ये मनुष्य जो करते हैं, वह सब अच्छा ही अच्छा होता है, या उनके श्रेष्ठ कृतित्व में दोष नहीं होते। कला का पूर्णतः निर्दोष होना भी एक दोष है। साहित्य के मूल्य, राजनीतिक मूल्यों की अपेक्षा अधिक स्थायी है। अंग्रेज कवि टेनीसन ने लैटिन कवि वर्जिल पर एक बड़ी अच्छी कविता लिखी थी। इसमें उन्होंने कहा कि रोमन साम्राज्य का वैभव समाप्त हो गया पर वर्जिल के काव्य सागर की ध्वनि-तरंगें हमें आज भी सुनाई देती हैं और हृदय को आनन्द-विह्वल कर देती है। कह सकते हैं कि जब ब्रिटिश साम्राज्य का कोई नामलेवा और पानी देने वाला न रह जाएगा, तब शेक्सपियर, मिल्टन और शैली विश्व संस्कृति के आकाश में वैसे ही जगमगाते नजर आएँगे जैसे पहले, और उनके प्रकाश पहले की अपेक्षा करोड़ों नई आँखें देखेंगी।
- संसार का कोई भी देश, बहु जातीय राष्ट्र की हैसियत से, इतिहास को ध्यान में रखें तो भारत का मुकाबला नहीं कर सकता। यहाँ राष्ट्रीयता एक जाति द्वारा दूसरी जातियों पर राजनीतिक प्रभुत्व कायम करके स्थापित नहीं हुई। वह मुख्यतः संस्कृति और इतिहास की देन है। इस संस्कृति के निर्माण में इस देश के कवियों का सर्वोच्च स्थान है। इस देश की संस्कृति से रामायण और महाभारत को अलग कर दें, तो भारतीय साहित्य

PDFSARTHI.COM

की आन्तरिक एकता टूट जाएगी। किसी भी बहुजातीय राष्ट्र की सामाजिक विकास में कवियों की ऐसी निर्णायक भूमिका नहीं रही, जैसी इस देश में व्यास और वाल्मीकि की है।

- समाजवाद हमारी राष्ट्रीय आवश्यकता है। पूंजीवादी व्यवस्था में शक्ति का इतना अपव्यय होता है कि उसका कोई हिसाब नहीं है। देश की साधनों का सबसे अच्छा उपीोग समाजवादी व्यवस्था कायम करने के बाद पहले की अपेक्षा कहीं ज्यादा शक्तिशाली हो गए हैं और उनकी प्रगति की रफ्तार किसी भी पूंजीवादी देश की अपेक्षा तेज है। साहित्य की परम्परा का पूर्ण ज्ञान समाजवादी व्यवस्था में ही सम्भव है। समाजवादी संस्कृति पुरानी संस्कृति से नाता नहीं तोड़ती, वह उसे आत्मसात करके आगे बढ़ती है।
- अभी हमारे निरक्षर निर्धन जनता नए और पुराने साहित्य की महान उपलब्धियों के ज्ञान से वंचित है। जब वह साक्षर होगी, साहित्य पढ़ने का उसे अवकाश होगा, सुविधा होगी, तब व्यास और वाल्मीकि के करोड़ों नए पाठक होंगे। तब मानव संस्कृति की विशद धारा में भारतीय साहित्य की गौरवशाली परम्परा का नवीन योगदान होगा।

7. साहित्य की परंपरा का मूल्यांकन

लेखक परिचय

लेखक - रामविलास शर्मा

जन्म - 10 अक्टूबर 1912 (उन्नाव जिला, उत्तर प्रदेश में)

→ 1932 ई० में लखनऊ विश्विद्यालय से B.A किया था |

→ 1938 - 43 ई० तक लखनऊ विश्वद्यालय में अंग्रेजी के अध्यापक रहे।

→ 1974 ई० में यह रिटायर हो गये। अर्थात सेवावृत

→ 1949-1933 ई० तक रामविलाश शर्मा प्रगतिशील लेखक संघ के महा-मंत्री बने रहे थे।

* प्रमुख रचनाएँ :- निराला की साहित्य साधना, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी आलोचक, भारतेन्दु हरिसचन्द्र, प्रेमचन्द्र और उनका युग, भाषा और समाज भारत की भाषा समस्या, विराम चिन्ह, बड़े भाई,

PDF SARTHI.COM

7. साहित्य की परंपरा का मूल्यांकन

Short answer question

1. (i) साहित्य की परंपरा का ज्ञान किनके लिए सबसे ज्यादा आवश्यक है, और क्यों ?

उत्तर - जो लोग रूढ़ियों को तोड़कर क्रांतिकारी साहित्य की रचना करना चाहते हैं तथा साहित्य में युग-परिवर्तन की आकांक्षा रखते हैं, उनके लिए साहित्य की परंपरा का ज्ञान सबसे ज्यादा आवश्यक है।

(ii) कौन अपने सिद्धांतों को 'ऐतिहासिक भौतिकवाद' के नाम से पुकारते हैं?

उत्तर - जो लोग वर्गहीन शोषणमुक्त समाज की रचना कर समाज में मौलिक परिवर्तन की इच्छा रखते हैं, वे ही अपने सिद्धांतों को 'ऐतिहासिक भौतिकवाद' के नाम से पुकारते हैं।

(iii) 'आलोचना' के लिए क्या महत्त्वपूर्ण होता है ?

उत्तर - 'आलोचना' के लिए साहित्य की परंपरा का ज्ञान महत्त्वपूर्ण होता है।

(iv) साहित्य की धारा को मोड़ने के लिए क्या आवश्यक है ?

उत्तर - साहित्य की धारा को मोड़ने के लिए प्रगतिशील आलोचना का ज्ञान आवश्यक है।

2. 'परंपरा का मूल्यांकन' शीर्षक निबंध का भावार्थ लिखें।

उत्तर - साहित्य का संबंध मनुष्य के संपूर्ण जीवन से है। इसमें चित्रित आदिम भावनाएँ प्राणिमात्र से जोड़ती हैं। साहित्य मात्र विचारधारा नहीं है। इसमें मानवीय इंद्रिय-बोध के साथ उसकी भावनाएँ भी अभिव्यक्त होती हैं।

3. (i) साहित्य की परंपरा का मूल्यांकन करते हुए सबसे पहले हम क्या करते हैं ?

उत्तर - साहित्य की परंपरा का मूल्यांकन करते हुए सबसे पहले हम उस - साहित्य का मूल्य निर्धारण करते हैं जिसमें शोषक वर्ग के विरुद्ध श्रमिक जनता के हितों का चित्रण होता है।

(ii) हम साहित्य की परंपरा का मूल्यांकन करते हुए किस साहित्य पर ध्यान देते हैं ?

PDFSARTHI.COM

उत्तर - हम साहित्य की परंपरा का मूल्यांकन करते हुए उस साहित्य पर ध्यान देते हैं जिसमें शोषित जनता के श्रम को आधार बनाया गया होता है तथा यह देखने की कोशिश करते हैं कि वह साहित्य वर्तमानकाल में जनता के लिए कितना उपयोगी है। और उसका उपयोग किस तरह किया जा सकता है।

(iii) संपत्तिशाली वर्गों की देखरेख में रचे गए साहित्य के संबंध में लेखक रामविलास शर्मा ने क्या कहा है ?

उत्तर - संपत्तिशाली वर्गों की देखरेख में निर्मित साहित्य के संबंध में लेखक रामविलास शर्मा ने कहा है कि वह उनके (संपत्तिशाली वर्ग के) वर्गहितों को प्रतिबिंबित करता है। लेकिन, उसे भी यह परखकर देखना चाहिए कि यह अभ्युदयशील वर्ग का साहित्य है या ह्रासमान वर्ग का ।

(iv) जहाँ पूँजीवाद का यथेष्ट विकास हो गया है, लेखक ने वहाँ कैसी संभावना का उल्लेख किया है ? पुराने साहित्य में किसकी संभावना कम होती है ?

उत्तर - जहाँ पूँजीवाद का यथेष्ट विकास हो गया है, वहाँ यही संभावना रहती है। कि संपत्तिशाली वर्ग और निर्धन वर्ग एक-दूसरे के सामने प्रबल विरोधी बनकर खड़े हों। पुराने साहित्य में वर्गहित के स्पष्ट टकराने की संभावना कम रहती है।

4. (i) साहित्य के निर्माण में किनकी भूमिका निर्णायक होती है? प्रतिभाशाली मनुष्यों की अद्वितीय उपलब्धियों के बाद कुछ नया और उल्लेखनीय करने की गुंजाइश क्यों बनी रहती है ?

उत्तर - साहित्य के निर्माण में प्रतिभाशाली साहित्यकारों की भूमिका निर्णायक होती है। प्रतिभाशाली मनुष्यों या साहित्यकारों की अद्वितीय उपलब्धियों के बाद भी कुछ नया और उल्लेखनीय करने की गुंजाइश बनी रहती है। इसका मुख्य कारण है भाव का अनंत विस्तार। महान से महान कवि भी किसी विशिष्ट भाव की अभिव्यक्ति अपनी अनुभव-सीमा में ही करते हैं, अतः किसी विशेष भाव या संवेदना की संपूर्ण या समग्र अभिव्यक्ति किसी कवि के वश की बात नहीं है। यह अपूर्णता कला का दोष नहीं है, अपितु यह कला के सौंदर्य की संभावना को व्यक्त करती है। इस संभावना से ही कला में जीवन का संचार होता है। भाव की अनंतता और अनंत विस्तार यदि किसी प्रतिभाशाली साहित्यकार की रचना में प्रस्तुत नहीं होते, तो यह दोष, दोष नहीं कहलाता, अपितु यह रचनात्मक

PDFSARTHI.COM

सहजता को अभिव्यक्त करता है, क्योंकि पूर्णता मानवीय प्रकृति नहीं है, पूर्णता के लिए प्रयत्न करना मानवीय प्रवृत्ति के अंतर्गत आता है।

(ii) साहित्य के निर्माण में प्रतिभा की भूमिका स्वीकार करते हुए लेखक किन खतरों से आगाह करता है ?

उत्तर - साहित्य के निर्माण में प्रतिभा की भूमिका स्वीकार करते हुए लेखक ने हमें आगाह किया है कि यह सोचना कि प्रतिभासंपन्न साहित्यकारों की रचनाओं में सब अच्छा ही होता है, ठीक नहीं है। हम प्रायः यही सोचते हैं कि उनकी श्रेष्ठ कृतियों में दोष नहीं होते। ऐसा सोचना ठीक नहीं है।

(iii) कवि टेनीसन ने वर्जिल पर लिखी अपनी कविता में क्या कहा है ?

उत्तर - कवि टेनीसन ने वर्जिल पर लिखी अपनी कविता में लिखा है कि रोमन साम्राज्य का वैभव समाप्त हो गया, पर वर्जिल के काव्य सागर की ध्वनि तरंगें हमें आज भी सुनाई पड़ती हैं जिनसे हमें असीम आनंद की प्राप्ति होती है।

5. (i) परंपरा का ज्ञान किनके लिए सबसे ज्यादा आवश्यक है, और क्यों ?

उत्तर - जो लोग (ऐसे साहित्यकार) रूढ़ियों के अनुगामी नहीं हैं तथा क्रांतिकारी साहित्य की रचना के माध्यम से युग-परिवर्तन की आकांक्षा रखते हैं, उनके लिए साहित्य की परंपरा का ज्ञान सबसे ज्यादा आवश्यक है।

(ii) परंपराओं से क्या सीखा जा सकता है ?

उत्तर - परंपराओं से धार्मिक सहिष्णुता, सांस्कृतिक समझ, सामाजिक समरसता, सृजन तथा सर्वदा आगे बढ़ने की कला सीखी जा सकती है। हम इनके माध्यम से समाज एवं राष्ट्र के पुनर्गठन की निर्धारक क्षमता को एक स्वस्थ दिशा में ले जाने की कला सीखते हैं।

PDFSARTHI.COM

7. परंपरा का मूल्यांकन

1. निबंध 'परंपरा का मूल्यांकन' के लेखक कौन है?

(A) अमरकांत

(B) रामविलास शर्मा

(C) नलिन विलोचन शर्मा

(D) यतीन्द्र मिश्र

Ans - (B)

2. हिन्दी आलोचना के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर डॉ० रामविलास शर्मा का जन्म कब और कहाँ हुआ?

(A) 1916-बदरघाट, पटन

(B) 1912-उन्नाव, उत्तरप्रदेश

(C) 1925-बलिया, उत्तरप्रदेश

(D) 1941-दुर्ग, छत्तीसगढ़

Ans - (B)

3. परंपरा का मूल्यांकन गद्य की कौन-सी विधा है?

(A) कहानी

(B) निबंध

(C) नाटक

(D) जीवनी

Ans - (B)

4. रामविलास शर्मा का निधन कब हुआ था?

(A) 30 मई, 2000 ई०

PDF SARTHI.COM

(B) 30 मई, 2001 ई०

(C) 30 मई, 2002 ई०

(D) 30 मई, 2003 ई०

Ans - (A)

5. साहित्य की परम्परा का पूर्ण ज्ञान किस व्यवस्था में संभव है?

(A) सामन्तवादी व्यवस्था

(B) पूँजीवादी व्यवस्था

(C) समाजवादी व्यवस्था

(D) उपर्युक्त सभी

Ans - (C)

6. साहित्य के निर्माण में प्रतिभाशाली मनुष्यों भूमिका है।

(A) नगण्य

(B) निर्णायक

(C) नकारात्मक

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans - (B)

7. जातीय अस्मिता की दृष्टि से इतिहास का प्रवाह कैसा है?

(A) विच्छिन्न

(B) अविच्छिन्न

PDF SARTHI.COM

(C) विच्छिन्न और अविच्छिन्न दोनों

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans - (C)

8. परंपरा का ज्ञान किनके लिए आवश्यक है?

(A) जो लकीर के फकीर है

(B) जो उपयोगी साहित्य की रचना न करे

(C) जो लकीर के फकीर न होकर क्रांतिकारी साहित्य की रचना करे

(D) जो उपयोगी साहित्य की रचना न करे

Ans - (C)

9. हिन्दी आलोचना को वैज्ञानिक दृष्टि प्रदान करने का श्रेय किनको प्राप्त है?

(A) रामविलास शर्मा

(B) नलिन विलोचन शर्मा

(C) अमरकांत

(D) यतीन्द्र मिश्र

Ans - (A)

10. हिन्दी में जीवनी साहित्य को एक नया आयाम दिया है?

(A) यतीन्द्र मिश्र

(B) अमरकांत

(C) रामविलास शर्मा

PDF SARTHI.COM

(D) नलिन विलोचन शर्मा

Ans - (C)

11. साहित्य मुनष्य के संपूर्ण जीवन से संबद्ध है। आर्थिक जीवन के अलावा मुनष्य एक प्राणी के रूप में भी अपना जीवन बिताता है। साहित्य में उसकी बहुत-सी आदिम भावनाएँ प्रतिफलित होती हैं जो उसे प्राणी मात्र से जोड़ती है। यह गद्यांश किस पाठ का है?

(A) आविन्यों

(B) मछली

(C) शिक्षा और संस्कृति

(D) परंपरा का मूल्यांकन

Ans - (D)

12. विभाजित बंगाल से विभाजित पंजाब की तुलना कीजिए, तो ज्ञात हो जाएगा कि साहित्य की परंपरा का ज्ञान कहाँ ज्यादा है, कहाँ कम है, और इस न्यूनाधिक ज्ञान के सामाजिक परिणाम क्या होते हैं? उपर्युक्त गद्यांश किस पाठ से लिया गया है?

(A) श्रम विभाजन और जातिप्रथा

(B) विष के दाँत

(C) शिक्षा और संस्कृति

(D) परंपरा का मूल्यांकन

Ans - (D)

13. रामविलास शर्मा के अनुसार भारत की राष्ट्रीय क्षमता का पूर्ण विकास किस व्यवस्था में ही संभव है?

(A) समाजवादी व्यवस्था

PDF SARTHI.COM

(B) मिश्रित अर्थव्यवस्था

(C) पूँजीवादी व्यवस्था

(D) मार्क्सवादी व्यवस्था

Ans - (A)

14. जो लोग साहित्य में युग परिवर्तन करना चाहते हैं, जो लकीर के फकीर नहीं है, जो रूढ़िय तोड़कर क्रांतिकारी साहित्य रचना चाहते हैं, उनके लिए साहित्य की परंपरा का ज्ञान सबसे ज्यादा आवश्यक ह। प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से उद्धृत हैं?

(A) शिक्षा और संस्कृति

(B) परंपरा का मूल्यांकन

(C) नौबतखाने में इबादत

(D) आविन्यों

Ans - (B)

15. किसने सोवियन संघ पर आक्रमण किया?

(A) महारानी विक्टोरिया

(B) हिटलर ने

(C) पुतिन ने

(D) लेनिन ने

Ans - (B)

PDF SARTHI.COM

16. यदि मनुष्य परिस्थितियों का नियामक नहीं है तो परिस्थितियाँ भी मनुष्य की-

(A) नियासक है

(B) नियामक नहीं है

(C) सुरक्षा नहीं है

(D) आवश्यकता नहीं है

Ans - (B)

17. जारशाही कहाँ थी?

(A) रूस में

(B) जापान में

(C) फ्रांस में

(D) चीन में

Ans - (A)

36. "निराला की साहित्य साधना के रचनाकार है?

(A) रघुवीर सहाय

(B) अज्ञेय

(C) जायसी

(D) रामविलास शर्मा

Ans - (D)

19. "साहित्य मनुष्य के संपूर्ण जीवन से संबद्ध है- यह पंक्ति किस पाठ से उद्धत है?

PDF SARTHI.COM

(A) परंपरा का मूल्यांकन

(B) नागरी लिपि

(C) नाखून क्यों बढ़ते हैं

(D) बहादुर

Ans - (A)

20. रामविलास शर्मा को उनकी किस कृति के लिए 'साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया था?

(A) प्रेमचंद और उनका युग

(B) भाषा और समाज

(C) निराला की साहित्य साधना

(D) विराम चिह्न

Ans - (C)

21. सोवियत संघ के लोग हिटलर विरोधी संग्राम को क्या कहते हैं?

(A) महान राष्ट्रीय संग्राम

(B) स्वाधीनता संग्राम

(C) राजनीतिक संग्राम

(D) सामाजिक संग्राम

Ans - (A)

22. किस व्यवस्था के कायम होने पर जातीय अस्मिता खण्डित नहीं होती वरन् और पुष्ट होती है?

(A) समाजवादी व्यवस्था

PDF SARTHI.COM

(B) पूंजीवादी व्यवस्था

(C) मिश्रित व्यवस्था

(D) राजनैतिक व्यवस्था

Ans - (A)

23. भारतीय संस्कृति से किन दो ग्रंथों को अलग कर दें, तो भारतीय साहित्य की आंतरिक एकता टूट जायेगी?

(A) वेद और पुराण

(B) रामायण और महाभारत

(C) हरिजन और यंग इंडिया

(D) रघुवंशम् और अभिज्ञान शाकुंतलम्

Ans - (B)

24. निबंध है -

(A) मछली

(B) परम्परा का मूल्यांकन

(C) बहादुर

(D) भारतमाता

Ans - (B)

25. 'प्रेमचंद और उनका युग' किनकी रचना है-

(A) गुणाकर मुले

(B) यतीन्द्र मिश्र

PDF SARTHI.COM

(C) रामविलास शर्मा

(D) अमरकांत

Ans - (C)

26. भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के महामंत्री रहे-

(A) भीमराव अंबेदकर

(B) रामविलास शर्मा

(C) अमरकांत

(D) यतीन्द्र मिश्र

Ans - (B)

27. अस्मिता का सही अर्थ है -

(A) पहचान (अस्तित्व)

(B) मना करना

(C) एकता

(D) पर्याप्त

Ans - (A)

28. लेखक रामविलास शर्मा के गाँव का क्या नाम था ?

(A) ऊँचगा सानी

(B) ऊँचगाँव सानी

(C) उचकागाँव सैनी

PDF SARTHI.COM

(D) ऊँचागाँव सैनी

Ans - (B)

29.'भौतिकवाद का अर्थ भाग्यवाद नहीं है' - किस निबंध की पंक्ति है?

(A) नागरी लिपि

(B) परंपरा का मूल्यांकन

(C) श्रम विभाजन और जाति प्रथा

(D) नाखून क्यों बढ़ते हैं

Ans - (B)

PDF SARTHI.COM

8. जित - जित मैं निरखत हूँ

पाठ का सारांश

- जन्म मेरो लखनऊ के जफरीन अस्पताल में 1938, 4 फरवरी, शुक्रवार, सुबह 8 बजे : घर में आखिरी सन्तान। तीन बहनों के बाद। छह साल थी उम्र में मैं नवाब साहब को बहुत पसंद आ गया। मैं नवाब साहब के पास जाकर नाचता था।
- वहाँ से फिर निर्मला जी के स्कूल में यहाँ दिल्ली में हिन्दुस्तानी डान्स म्यूजिक में चले गए। यहाँ दो तीन साल काम करते रहे। ये शायद 43 की बात रही होगी।
- जहाँ वे खुद नाचते तो पहले मुझे नचवाते थे और खूब जोरों से जमकर नाचता था। प्रायवेट प्रोग्राम जिनमें बाबू जी जाते थे जौनपुर, मैनपुरी, कानपुर, देहरादून, कलकत्ता, बंबई आदि, इनमें मुझे जरूर रखते थे। पहले इसीलिए कलकत्ते में बहुत मजा आया। उसमें फर्स्ट प्राइज मिलने वाला था। उसमें शम्भू महाराज चाचाजी और बाबू जी दोनों नाचे। पर उसमें फर्स्ट प्राइज मुझे मिला।
- हाँ साढ़े नौ साल की उम्र में बाबू जी मृत्यु हो गई। मुझे तालीम बाबूजी से ही मिला। 500 रुपए देकर मैंने गण्डा बंधवाया। तो शागिर्द मैं बाबू जी का हूँ। उनके मरते ही हम लोगों के बहुत खराब दिन शुरू हो गए। कानपुर में दो ढाई साल रहा। आर्यानगर में 25-25 रुपए की दो ट्यूशन पढ़ाना शुरू किया। 50 रुपए में काम कर किसी तरह पढ़ता रहा मैं। पिताजी की मृत्यु के समय उनके श्राद्ध कर्म करने के लिए पैसे नहीं। दस दिन के अंदर मैंने दो प्रोग्राम किए। 500 रु. इकट्ठे हुए तो दसवाँ और तेरहवीं की गई।
- चौदह साल का था तो संगीत भारती आया। मैंने यहाँ साढ़े चार साल काम किया। संगीत भारती की कमाई से मैंने एक साइकिल खरीदी थी जो मेरे पास आज भी है। और उस साइकिल को मैं नहीं बेचता।
- खैर उसमें से रश्मि जी एक लड़की मिली थी। उन्हें पूरे मन से सिखाया। वो तालीम देखकर जो महाराज के यहाँ की लड़कियाँ अट्रेक्ट हुई। क्योंकि तालीम जरा अच्छी थी मेरी। संगीत भारती के जमाने में कलकत्ते में एक कांफ्रेंस में नाचा हूँ। कलकत्ते की ऑडियन्स ने मेरी बड़ी प्रशंसा की। इतनी की कि तमाम अखबारों में मैं छप गया एकदम। उसके बाद हरिदास स्वामी कांफ्रेंस बंबई ब्रजनारायण ने बुलाया। मेरा प्रोग्राम बहुत अच्छा हुआ। उसके बाद से बम्बई, कलकत्ते, मद्रास आदि जगहों पर मेरा प्रोग्राम होने लगा। विदेश दूर में सबसे पहले रूस गये। उसके बाद जर्मनी, जापान, हांगकांग, लाओस, बर्मा आदि।

PDFSARTHI.COM

- अम्मा को मैं सबसे बड़ा जज मानता हूँ। जब वो नाच देखती तो मैं पूछता था कि मैं कहीं गलत तो नहीं कर रहा हूँ। मतलब बाबूजी वाला ढंग है ना कहीं गड़बड़ी तो नहीं हो रही। तो कहती नहीं बेटा नहीं। उन्हीं की तस्वीर हो।

8. जित - जित मैं निरखत हूँ।

* लेखक परिचय *

लेखक – पंडित बिरजू महाराज

जन्म → 4 फरवरी 1938 ई0 को लखनऊ (सातवीं स्थान)

पिता → आच्छन महाराज

चाचा → शम्भू महाज

→ बिरजू महराज अपना जज अपनी अम्मा को बताते है |

→ बिरजु महाराज के गुरू उनके पिताजी हैं |

8. जित - जित मैं निरखत हूँ

Short answer question

1. (i) लेखक (पंडित बिरजू महाराज) को नृत्य की तालीम किससे मिली ? लेखक अपने को किसका शागिर्द मानता है ?

उत्तर - लेखक (पंडित बिरजू महाराज) को नृत्य की तालीम उनके पिताजी से मिली थी। लेखक अपने को अपने पिताजी का शागिर्द मानता है।

(ii) गंडा बाँधने के पूर्व लेखक के पिताजी ने लेखक के समक्ष कौन-सी शर्त रखी थी ?

PDF SARTHI.COM

उत्तर - गंडा बाँधने के पूर्व लेखक के पिताजी ने लेखक के समक्ष यह शर्त रखी थी कि जब तक वह (लेखक) अपने पिताजी को नजराना नहीं देगा तब तक वे गंडा नहीं बाँधेंगे।

(iii) लेखक के पिताजी ने किन्हें एक साथ गंडा बाँधा था ?

उत्तर - लेखक के पिताजी ने लेखक और जगत कहार को एक साथ गंडा बाँधा था।

(iv) 'गंडा बाँधना' मुहावरे का अर्थ बताएँ ।

(iv) गंडा बाँधने' का अर्थ होता है – दीक्षित करना अथवा शिष्य स्वीकार करना।

2. बिरजू महाराज अपना सबसे बड़ा जज किसे मानते थे ?

उत्तर - बिरजू महाराज अपना सबसे बड़ा जज अपनी माँ को मानते थे। वे बिरजू महाराज का नृत्य बहुत ध्यान से देखती थीं। इसलिए, बिरजू महाराज को अपनी माँ के निर्णय पर पूर्ण विश्वास था।

3. (i) नृत्य की शिक्षा के लिए पहले-पहल बिरजू महाराज किस संस्था से जुड़े और वहाँ किसके संपर्क में आए ?

उत्तर - नृत्य की शिक्षा के लिए पहले-पहल बिरजू महाराज निर्मला जोशीजी की संस्था 'हिंदुस्तानी डांस म्यूजिक अकादमी' दिल्ली से जुड़े। वहाँ वे कपिलाजी, लीला कृपलानी आदि के संपर्क में आए।

(ii) अपने शागिर्दों के बारे में बिरजू महाराज की क्या राय है ?

उत्तर - अपने शागिर्दों के बारे में बिरजू महाराज की राय है कि वे नृत्यकला में निपुणता प्राप्त करने पर पूरा ध्यान नहीं देते। उनमें लगन, संकल्प और साधना का नितांत अभाव है। वे यश और धन अर्जन पर जितना ध्यान देते हैं, उतना कला पर नहीं।

4. लखनऊ और रामपुर से बिरजू महाराज का क्या संबंध है ?

उत्तर - लखनऊ में बिरजू महाराज का तथा रामपुर में उनकी तीनों बहनों का जन्म हुआ था। बचपन में बिरजू महाराज रामपुर (वहाँ के नवाब के आमंत्रण पर) अपने पिता के साथ नाचने जाया करते थे।

5. बिरजू महाराज के गुरु कौन थे? उनका संक्षिप्त परिचय दें।

PDF SARTHI.COM

उत्तर - बिरजू महाराज के गुरु उनके बाबूजी थे। बिरजू महाराज को उन्होंने ही गंडा - बाँधा था। उनकी चार संतानें थीं- तीन लड़कियाँ और एक लड़का। वे निपुण नर्तक थे। उनका संबंध लखनऊ घराने से था ।

6. बिरजू महाराज पुराने और आज के नर्तकों के मध्य कैसा अंतर पाते हैं ?

उत्तर - बिरजू महाराज के अनुसार, पुराने जमाने के नर्तक नृत्यकला के प्रति समर्पित होते थे। जब तक वे इस कला में निपुण नहीं हो जाते थे, तब तक इस कला को धनार्जन का माध्यम नहीं बनाते थे। पर, आज के नर्तक इस कला को ऊपरी तौर पर सीखकर इसे धनार्जन का माध्यम बना लेते हैं। इनका सारा ध्यान जल्द-से-जल्द नाम और पैसा कमाने पर होता है।

7. बिरजू महाराज ने नृत्य की शिक्षा किसे और कब देनी शुरू की ?

उत्तर - बिरजू महाराज 'संगीत भारती' की नौकरी छोड़कर लखनऊ आ गए। वे भारतीय कलाकेंद्र, पूसा रोड में नियुक्त हुए। तब तक वहाँ शंभू महाराज आ चुके थे। वहाँ उन्हें झमेलावाली छोटी क्लास मिली। बड़ी और समझदार लड़कियाँ बड़े महाराज के पास चली जाती थीं। बिरजू महाराज की उम्र तो महज अठारह-बीस साल की थी। बड़े-बुजुर्ग के सामने उनकी क्या हैसियत थी! लेकिन उन्हें रश्मि नाम की एक सयानी लड़की मिली। उन्होंने उस लड़की को मनोयोगपूर्वक नृत्य की शिक्षा दी ।

Long answer question

1. बिरजू महाराज के पिताजी ने रामपुर के नवाब की नौकरी छूटने पर हनुमानजी को प्रसाद क्यों चढ़ाया ?

उत्तर - बिरजू महाराज के पिताजी बाईस वर्षों से रामपुर के नवाब के नौकर थे। वे हनुमानजी से प्रार्थना करते थे कि मेरी नौकरी छूट जाए। नवाब ने एक दिन कहा- "तुम्हारा लड़का नहीं होगा, तो तुम भी नहीं रह सकते।" बिरजू महाराज के पिताजी बिरजू को रामपुर के नवाब के दरबार में नहीं रखना चाहते थे। इस तरह, उनकी नौकरी का छूटना लगभग पक्का हो चुका था। वे बहुत खुश हुए। उन्होंने लोगों में मिठाइयाँ बाँटी और हनुमानजी को प्रसाद चढ़ाया कि जान छूटी।

2. कलकत्ता (कोलकाता) के दर्शकों की प्रशंसा का बिरजू महाराज के नर्तक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा ?

PDFSARTHI.COM

उत्तर - कलकत्ता (कोलकाता) की एक काँफ्रेंस में बिरजू महाराज का नृत्य हुआ। उनका नृत्य देखकर कलकत्ता की दर्शकमंडली बहुत खुश हुई। दर्शकों ने बिरजू महाराज की बहुत प्रशंसा की। दर्शकों की प्रशंसा ने बिरजू महाराज के जीवन की दिशा ही बदल दी। अब वे और मनोयोग से अपने नृत्य पर ध्यान देने लगे। उनके मन में नृत्य के क्षेत्र में उच्चतम शिखर पर जाने की लालसा जाग उठी। वे उसके लिए जी-तोड़ मेहनत (अभ्यास) करने लगे। कलकत्ता में दर्शकों से मिली प्रशंसा बिरजू महाराज के जीवन में एक मोड़ सिद्ध हुई।

3. बिरजू महाराज कौन-कौन से वाद्य बजाते थे ? अपने विवाह के बारे में वे क्या बताते हैं ?

उत्तर - बिरजू महाराज सितार, गिटार, हारमोनियम, बाँसुरी, सरोद और तबला बजाते थे। बिरजू महाराज की माँ ने उनकी शादी महज अठारह साल की उम्र में ही कर दी। बिरजू महाराज अपनी शादी के बारे में कहते हैं कि यह अच्छा नहीं हुआ। कम उम्र में शादी होने से उनका बहुत नुकसान हुआ। उनकी माँ को शायद इसी बात की आशंका थी कि कहीं वे भी बिरजू के पिता की तरह ही बहू का मुँह देखे बिना ही इस दुनिया से न चली जाएँ। शादी में माँ की हड़बड़ी से बिरजू महाराज के कंधों पर एक और बोझ आ गया। उन्हें परिवार चलाने के लिए नौकरी करनी पड़ी। नौकरी ने उनके रियाज में बाधा उत्पन्न की। उनका जीवन असमय ही संघर्षमय हो उठा।

8. जित - जित मैं निरखत हूँ

1. पंडित बिरजू महाराज किस घराने के वंशज थे?

(A) डुमराँव घराना

(B) लखनऊ घराना

(C) बनारस घराना

(D) ग्वालियर घराना

Ans – (B)

2. पंडित बिरजू महाराज लखनऊ घराने की किस पीढ़ी के कलाकार हैं?

PDF SARTHI.COM

(A) छठी पीढ़ी

(B) सातवीं पीढ़ी

(C) नौवीं पीढ़ी

(D) आठवीं पीढ़ी

Ans – (B)

3. पं० बिरजू महाराज का जन्म कहाँ हुआ था?

(A) बनारस

(B) लखनऊ

(C) इलाहाबाद

(D) बक्सर

Ans – (B)

4. पं० बिरजू महाराज का जन्म कब हुआ?

(A) 4 फरवरी, 1938

(B) 4 फरवरी, 1937

(C) 4 फरवरी, 1936

(D) 4 फरवरी, 1935

Ans – (A)

5. 'जित-जित मैं निरखत हूँ' पाठ साहित्य की विधा है -

(A) कहानी

(B) रिपोर्ताज

PDF SARTHI.COM

(C) साक्षात्कार

(D) भाषण

Ans – (C)

6. बिरजू महाराज के गुरु कौन थे ?

(A) उनके पिताजी

(B) चाचा

(C) बड़े भाई

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (A)

7. बिरजू महाराज किस शैली के नर्तक है ?

(A) कुचिपुड़ी

(B) भरतनाट्यम

(C) मोहिनीअट्टम

(D) कथक

Ans – (D)

8. बिरजू महाराज की ख्याति किस रूप में है ?

(A) नर्तक के रूप में

(B) तबला वादक के रूप में

(C) शहनाई वादक के रूप में

PDF SARTHI.COM

(D) संतूर वादक के रूप में

Ans – (A)

9. बिरजू महाराज कौन-सा वाद्य यंत्र बजाते थे?

(A) सितार

(B) गिटार

(C) हरमोनियम

(D) उपर्युक्त सभी

Ans – (D)

10. बिरजू महाराज का संबंध है -

(A) बाँसुरी वादन से

(B) तबला वादन से

(C) कत्थक नृत्य से

(D) संतूर वादन से

Ans – (C)

11. बिरजू महाराज अपना सबसे बड़ा जज किसको मानते थे ?

(A) बाबुजी को

(B) चाचाजी को

(C) अम्मा को

(D) इनमें से कोई नहीं

PDF SARTHI.COM

Ans – (C)

12. नृत्य की शिक्षा के लिए पहले-पहल बिरजू महाराज किस संस्था से जुड़े?

(A) न्यू थियेटर्स कंपनी कोलकाता

(B) हिन्दुस्तानी डान्स म्यूजिक दिल्ली

(C) संगीत भारती कंपनी दिल्ली

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (B)

13. बिरजू महाराज कितना रुपया नजराना देकर अपने गुरु पिता से गण्डा बंधवाया?

(A) 200 रु०

(B) 400 रु०

(C) 500 रु०

(D) 600 रु०

Ans – (C)

14. शागिर्द का अर्थ

(A) गुरु

(B) शिष्य

(C) मित्र

(D) पिता

Ans – (B)

PDF SARTHI.COM

15. पंडित बिरजू महाराज साढ़े नौ साल के थे तभी उनके देहावसान हो गया।

(A) पिता का

(B) माँ का

(C) मामा का

(D) भाई का

Ans – (A)

16. बिरजू महाराज खुद को किसका शागीर्द मानते थे?

(A) पिता का

(B) माँ का

(C) मामा का

(D) भाई का

Ans – (A)

17. बिरजू महाराज को किस उम्र में संगीत नाटक अकादमी अवार्ड मिला था?

(A) 20 वर्ष

(B) 25 वर्ष

(C) 27 वर्ष

(D) 30 वर्ष

Ans – (C)

18. हिन्दुस्तानी डांस म्यूजिक कहाँ है?

PDF SARTHI.COM

(A) कलकत्ता में

(B) मुंबई में

(C) चेन्नई में

(D) दिल्ली में

Ans – (D)

19. बिरजू महाराज के चाचा का नाम क्या था?

(A) शंभु महाराज

(B) गोदई महाराज

(C) श्री महाराज

(D) विष्णु महाराज

Ans – (A)

20. शम्भू महाराज, बिरजू महाराज के कौन थे?

(A) मौसा

(B) भाई

(C) चाचा

(D) पिता

Ans – (C)

21. 'हलकारे' का अर्थ होता है-

(A) कलाकार

PDF SARTHI.COM

(B) संदेशवाहक

(C) हल जोतने वाला

(D) गायक

Ans – (B)

22. 'जित-जित मैं निरखत हूँ' पाठ के केंद्र में है -

(A) विस्मिल्ला खाँ

(B) जाकिर हुसैन

(C) बिरजू महाराज

(D) उपर्युक्त सभी

Ans – (C)

23. लखनऊ घराने के वंशज और सातवीं पीढ़ी के कलाकार थे -

(A) उस्ताद जाकिर हुसैन

(B) उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ

(C) पंडित बिरजू महाराज

(D) पंडित रविशंकर महाराज

Ans – (C)

24. बिरजू महाराज की शादी किस उम्र में हुई थी?

(A) सोलह साल की

(B) अठारह साल की

PDF SARTHI.COM

(C) बीस साल की

(D) बाइस साल की

Ans – (B)

25. बिरजू महाराज कितने साल के थे जब उनके बाबूजी की मृत्यु हुई थी?

(A) आठ साल

(B) नौ साल

(C) साढ़े नौ साल

(D) दस साल

Ans – (C)

26. बिरजू महाराज का अपने बाबूजी के साथ आखिरी प्रोग्राम कहाँ हुआ था?

(A) जौनपुर

(B) कानपुर

(C) मैनपुरी

(D) कलकत्ता

Ans – (C)

27. किनके साथ नाचते हुए बिरजू महाराज को पहल बार प्रथम पुरस्कार मिला?

(A) अपने बाबूजी के साथ

(B) चाचा शम्भु महाराज

(C) उपर्युक्त दोनों

PDF SARTHI.COM

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (C)

28. बिरजू महाराज को लखनऊ से संगीत भारती कौन लाई?

(A) निर्मला जोशी

(B) कपिला जी

(C) लीला कृपलानी

(D) शम्भु महाराज

Ans – (B)

29. बिरजू महाराज की सुयोग्य शिष्या मशहूर नृत्यांगना और रंगकर्म की पत्रिका 'नटरंग' की सम्पादक कौन है?

(A) कपिला जी

(B) निर्मला जोशी

(C) लीला कृपलानी

(D) रश्मि वाजपेयी

Ans – (D)

30. बिरजू महाराज का संबंध है

(A) तबला वादन से

(B) संतूर वादन से

(C) बाँसुरी वादन से

PDF SARTHI.COM

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – (D)

31. 'जित-जित मैं निरखत हूँ ' पाठ के लेखक कौन हैं?

(A) यतीन्द्र मिश्र

(B) महात्मा गाँधी

(C) अमरकांत

(D) पंडित बिरजू महाराज

Ans – (D)

PDF SARTHI.COM

9. आविन्यों

पाठ का सारांश

- लगभग दस बरस पहले पहली बार आविन्यों गया था। दक्षिण फ्रांस में रोन नदी के किनारे बसा एक पुराना शहर है जहाँ कमी कुछ समय के लिए पोप राजधानी थी और अब गर्मियों में फ्रांस ओर यूरोप का एक अत्यन्त प्रसिद्ध और लोकप्रिय रंग-समारोह हर बरस होता है। उस बरस वहाँ भारत केन्द्र में था। पीटर ब्रुक का विवादास्पद 'महाभारत' पहले पहल प्रस्तुत किया जाने वाला था और उन्होंने मुझे निमंत्रण भेजा था।
- रोन नदी के दूसरी ओर आविन्यों का एक हिस्सा है जो लगभग स्वतंत्र है। नाम है वीलनव्व आविन्यों-वहाँ दरअसल फ्रेंच शासकों ने पोप की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए किला बनवाया था। उसी में काथूसियन सम्प्रदाय का एक ईसाई मठ बना ला शत्रूज। चौदहवीं सदी से फ्रेंच क्रांति तक उसका धार्मिक उपयोग होता रहा। अब इसमें एक कलाकेन्द्र स्थापित है। यह केन्द्र इन दिनों रंगमंच और लेखन से जुड़ा हुआ है।
- मेरा प्रवास वहाँ उन्नीस दिन का था, 24 अक्टूबर से 10 नवम्बर 1994 की दोपहर तक। कुल उन्नीस दिनों में पैंतीस कविताएँ और सत्ताईस गद्य रचनाएँ लिखी गई। आविन्यों फ्रांस का एक प्रमुख कलाकेन्द्र रहा है। पिकासो की विख्यात कृति का शीर्षक है 'लमादामोजेल द आविन्यों'
- प्रतीक्षा करते हैं पत्थर
- किसी देवता या काल की नहीं पता नहीं किसकी प्रतीक्षा करते हैं पत्थर-धीरज से रेशा-रेशा झिरते हुए, शिरा-शिरा घिलते हुए, प्रतीक्षारत रहते हैं पत्थर। बिना शब्द कविता लिखते हैं, पत्थर। पता नहीं किसकी प्रतीक्षा करते हैं पत्थर।
- नदी के किनारे भी नदी है ।
- यहाँ पास में ही रोन नदी है। इस तरफ वीलनव्व और दूसरी ओर आविन्यों। तट पर बैठो तो कई बार लगता है कि जल स्थिर है और तट ही बह रहा है। नदी तट पर बैठना भी नदी के साथ बहना है; कई बार नदी स्थिर होती है, हम तट पर बैठे रहते हैं। नदी के पास होना नदी होना है। नदी किसी को अनदेखा नहीं करती, वह सबको भिगोती है, अपने साथ करती है। उसी प्रकार कविता में हम बरबस ही शामिल हो जाते हैं।

PDF SARTHI.COM

9. आविन्यों

* लेखक परिचय *

लेखक → अशोक वाजपेयी

जन्म → 16 जनवरी 1941 ई० को दुर्ग (छत्तीसगढ़)

मूल निवास → मध्य प्रदेश

माता → निर्मला देवी

पिता → परमानन्द वाजपेयी

प्रारम्भिक शिक्षा → गोवरमेंट हायर सकैन्डरी स्कूल से

→ सागर विश्वविद्यालय से B.A किया था|

→ दिल्ली से अंग्रेज़ी में M.A किया था|

→ भारतीय प्रशासनिक सेवा के कई पद पर इन्होंने कार्य किया|

→ महात्मा गाँधी अंतराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपत्ति रहे थे|

रचनाएँ - एक पतंग अनंत तत्पुरुष, कही नही यही, थोड़ी सी जगह आलोचनाएँ (पुस्तक), कुछ पूर्वाग्रह, समय से बाहर, फितघल(पुस्तक)

पुस्तक → तीसरा साक्ष्य, साहित्य विनोद, कल्पना विनोद, कविता का जनपत्र

पत्रिका - संवेद, पहचान, पूर्वाग्रह, बहुवचन, कविता, एशिया

पुरस्कार - साहित्य अकादमी पुरस्कार, दयावती मोदी, कवि शेखर सम्मान फ्रेंच सरकार का ऑफिसर ऑल द अवर्ड क्रॉस (2004 में)

* यह ललति रचना अविन्यो नामक गद्य एवं कविता के सृजनात्मक संग्रह से लिया।

PDFSARTHI.COM

9. अविन्यों

Short answer questions

1. (i) आविन्यों किस लिए प्रसिद्ध है ? पिकासो की विख्यात कृति का शीर्षक क्या है ?

उत्तर - आविन्यों फ्रांस का एक महत्त्वपूर्ण कलाकेंद्र हैं। पिकासो की विख्यात कृति का शीर्षक है- 'ल मादामोजेल द आविन्यों।

(ii) तीन अतियथार्थवादी कवयित्रियाँ कौन जिन्होंने आविन्यों में रहकर लगभग तीस संयुक्त कविताएँ लिखीं ?

उत्तर - तीन अतियथार्थवादी कवयित्रियाँ हैं – आन्द्रे ब्रेताँ, रेने शॉ और पाल एलुआर। इन्होंने आविन्यों में रहकर तीस संयुक्त कविताएँ लिखीं।

(iii) लेखक किसके प्रति कृतज्ञ है ? उसकी गहरी पीड़ा का क्या कारण है ?

उत्तर - लेखक ने ला शत्रूज में जो पाया, उसके प्रति वह कृतज्ञ है। उसने वहाँ जो गँवाया उसके लिए उसके मन में गहरी पीड़ा है।

(iv) ला शत्रूज के निदेशक को किस बात पर अचरज हुआ था ?

उत्तर - तीन अतियथार्थवादी कवयित्रियाँ आविन्यों में साथ रहकर तीस संयुक्त कविताएँ लिखी थीं। ला शत्रूज के निदेशक को इतनी अल्पावधि में इतने काम पर अचरज हुआ था।

(v) हर बरस आविन्यों में कब और कैसा समारोह हुआ करता है ?

उत्तर - आविन्यों में हर बरस गर्मियों में फ्रांस और यूरोप का एक अत्यंत प्रसिद्ध और लोकप्रिय रंग समारोह आयोजित किया जाता है। इस समारोह में नाट्यमंचन के साथ गायन आदि के अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं।

2. (i) नदी और कविता में लेखक क्या समानता पाता है ?

PDF SARTHI.COM

उत्तर - लेखक नदी और कविता में अनेक समानताएँ पाता है। नदी के समान कविता भी हमसे सदियों से जुड़ी हुई है। नदी हर दिन सागर से मिलती रहती है, पर उसमें कभी जल का अभाव नहीं होता। एक ही कविता को पाठक जिंदगी भर पढ़ता है, पर उसका रस कभी नहीं चुकता । नदी की मुख्यधारा में विभिन्न दिशाओं से अनेक धाराएँ मिलती रहती हैं और उसमें विलीन होती रहती हैं। कविता में भी विभिन्न स्रोतों से अनेक बिंबमालाएँ, शब्द भंगिमाएँ, जीवन-छवियाँ और प्रतीतियाँ आकर मिलती रहती हैं और तदाकृत होती रहती हैं।

(ii) निरंतरता क्या करती है ?

उत्तर - नदी और कविता की निरंतरता अमर परंपरा का निर्माण करती है। निरंतरता नदी को सूखने नहीं देती और यह कविता को क्षीण नहीं होने देती। निरंतरता के कारण नदी जलमय बनी रहती है और कविता रसमय।

(iii) किसके पास तटस्थ रह पाना संभव नहीं हो पाता, और क्यों ?

उत्तर - नदी और कविता के पास होकर तटस्थ रहना असंभव है। नदी और कविता अपनी-अपनी रसमय धारा से हमें इस तरह सिंचित करती हैं कि हम उनसे अलग हो ही नहीं सकते। हम यदि अपने खुलेपन के साथ इनके पास होते हैं तो ये अपने- अपने अलौकिक सौंदर्य से हमें अभिभूत कर डालती हैं, उस समय हमारा मन हमारे पास न होकर उनके वश में होता है। नदी की आभा और कविता की चमक हमें तटस्थ नहीं रहने देती, हम इनके सौंदर्य में खो जाते हैं।

3. आविन्यों क्या है और वह कहाँ अवस्थित है ? हर बरस आविन्यों में कब और कैसा समारोह हुआ करता है ?

उत्तर - आविन्यों मध्ययुगीन ईसाई मठ है। यह दक्षिणी फ्रांस में अवस्थित है। आविन्यों फ्रांस का एक प्रमुख कलाकेंद्र रहा है। यहाँ गर्मियों में प्रतिवर्ष फ्रांस और यूरोप का एक अत्यंत प्रसिद्ध और लोकप्रिय रंग-समारोह होता है।

4. (i) लेखक आविन्यों किस सिलसिले में गए थे ? वहाँ उन्होंने क्या देखा-सुना ?

उत्तर - लेखक को आविन्यों के कलाकेंद्र में पीटर ब्रुक द्वारा की जा रही 'महाभारत' की प्रस्तुति में दर्शक की हैसियत से आमंत्रित किया गया था। पत्थरो की एक खदान में, आविन्यों से कुछ किलोमीटर दूर पीटर ब्रुक के विवादास्पद 'महाभारत' का प्रस्तुतीकरण किया गया था। वह प्रस्तुति सच्चे अर्थों में भव्य और महाकाव्यात्मक थी। लेखक ने देखा कि गर्मियों में आविन्यों के अनेक चर्च और पुरातन ऐतिहासिक महत्त्व के स्थान रंगस्थल में बदल जाते हैं।

PDFSARTHI.COM

(ii) ला शत्रूज क्या है और वह कहाँ अवस्थित है ? आजकल उसका क्या उपयोग होता है ?

उत्तर - ला शत्रूज कार्यूसियन संप्रदाय का एक ईसाई मठ है। यह 'वीलनव्व ल आविन्यों' (अर्थात, आविन्यों का नया गाँव) में अवस्थित है जो रोन नदी की दूसरी ओर है और लगभग स्वतंत्र है। आजकल इसका उपयोग एक कलाकेंद्र के रूप में होता है। यह केंद्र आजकल रंगमंच और लेखन से जुड़ा हुआ है। यहाँ नाटककार, अभिनेता, संगीतकार, रंगकर्मी आदि आते हैं और पुराने ईसाई संतों के चैंबर्स में रहकर रचनात्मक लेखन करते हैं।

5. (i) नदी के तट पर बैठे हुए लेखक को क्या अनुभव होता है? नदी के तट पर लेखक को किसकी याद आती है, और क्यों ?

उत्तर - रोन नदी के तट पर बैठे हुए लेखक को अनुभव होता है कि जैसे वह भी नदी का प्रवाह बन गया हो और उसके साथ बह रहा हो। कभी-कभी उसे ऐसा अनुभव होता है जैसे नदी ही स्थिर हो गई है और तट प्रवाहित हो रहा है। नदी के तट पर बैठकर लेखक को लगता है मानो वह भी नदी बन गया हो और नदी की बिरादरी में शामिल हो गया हो।

नदी तट पर बैठे लेखक को 'नदी चेहरा लोगों' की याद आ जाती है (विनोद कुमार शुक्ल की कविता — 'नदी-चेहरा लोगों' के आधार पर)। 'नदी-चेहरा लोग' नदी के सतत प्रवाह का अर्थ अपने संपूर्ण अस्तित्व में समेटे हुए होते हैं, कवि को ऐसे ही लोग याद आ जाते हैं।

(ii) नदी और कविता में लेखक क्या समानता पाता है ?

उत्तर - नदी और कविता, दोनों का मानव जीवन के साथ अविच्छिन्न संबंध है। जैसे नदी में जल का प्रवाह सदा बना रहता है, उसी प्रकार कविता सदा शब्द और अर्थ के प्रवाह से पूर्ण रहती है। नदी और कविता, दोनों ही हमें अभिभूत करती हैं। ये दोनों हमारे चेहरों की चमक हैं। इन दोनों की निरंतरता मानव जीवन को सार्थक करती है।

6. 'प्रतीक्षा करते हैं पत्थर' शीर्षक कविता से आपको क्या सीख मिलती है ?

उत्तर - पत्थरों में धैर्य है, पीड़ा सहने की क्षमता है, अटूट संकल्प है, निर्भयता है और स्वाभिमान है। इन सबके ऊपर है, उनका अपने प्रिय के प्रति समर्पण भाव। रेशा-रेशा झिरते हुए, शिरा-शिरा छिलते तथा मर्मांतक पीड़ा झेलते हुए भी पत्थर अपने प्रिय के प्रति समर्पित हैं। मुसीबतें उनके संकल्प को नहीं तोड़ पातीं, विपरीत

PDFSARTHI.COM

परिस्थितियों में भी वे अविचल हैं, स्वाभिमान और निर्भयता उनके चरित्र के भूषण है। वे अपनी धुन के पक्के हैं। 'प्रतीक्षा करते हैं पत्थर' शीर्षक कविता से हम पत्थर के उपर्युक्त गुण सीखते हैं।

7. लेखक आविन्यों क्या साथ लेकर गए थे और वहाँ कितने दिनों तक रहे ? लेखक की उपलब्धि क्या रही ?

उत्तर - लेखक आविन्यों में उन्नीस दिनों तक रहे। वे वहाँ अपने साथ हिंदी का टाइपराइटर, तीन-चार पुस्तकें और कुछ संगीत के टेप्स ही ले गए थे। यह लेखक के जीवन का पहला अवसर था जब वे सांसारिक उलझनों से एकदम मुक्त थे। वे उस निपट एकांत में अपने में और लेखन में डूबे रहे। लेखक की उपलब्धि यही रही कि उन्होंने उन्नीस दिनों में पैंतीस कविताएँ और सत्ताईस गद्य रचनाएँ लिखीं।

9. आविन्यों

1. ललित रचना 'आविन्यों' के रचनाकार कौन हैं ?

(A) अमरकांत

(B) अशोक वाजपेयी

(C) गुणाकर मुले

(D) विनोद कुमार शुक्ल

Ans – B

2. अशोक वाजपेयी का जन्म कब हुआ था।

(A) 16 जनवरी, 1941 ई० में

PDF SARTHI.COM

(B) 10 मार्च, 1942 ई० में

(C) 19 मई, 1943 ई० में

(D) 15 जून, 1944 ई० में

Ans – A

3. फ्रांस का प्रमुख कला केन्द्र रहा है -

(A) एफिल टावर

(B) आविन्यो

(C) (A) एवं (B) दोनो

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – B

4. 'आविन्यो' किस देश में है ?

(A) रूस

(B) फ्रांस

(C) जर्मनी

PDF SARTHI.COM

(D) स्विट्जरलैंड

Ans – B

5. लेखक अशोक वाजपेयी आविन्यों में कुल कितने दिन रहे?

(A) पन्द्रह दिन

(B) उन्नीस दिन

(C) बीस दिन

(D) बाइस दिन

Ans – B

6. लेखक आविन्यों क्या साथ लेकर गए थे ?

(A) हिन्दी टाइपराइटर

(B) तीन-चार पुस्तकें

(C) कुछ संगीत के टेप्स

(D) उपर्युक्त सभी

Ans – D

PDFSARTHI.COM

7. ला शत्रूज क्या है ?

(A) बौध मठ

(B) ईसाई मठ

(C) विहार मठ

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – B

8. 'ला शत्रूज' का धार्मिक उपयोग कब से कब तक होता रहा ?

(A) ग्यारहवीं सदी से फ्रेंच क्रांति तक

(B) बारहवीं सदी से फ्रेंच क्रांति तक

(C) तेरहवीं सदी से फ्रेंच क्रांति तक

(D) चौदहवीं सदी से फ्रेंच क्रांति तक

Ans – D

9. आविन्यों में उन्नीस दिनों के प्रवास के दौरान लेखक ने कितने गद्य की रचना की ?

PDFSARTHI.COM

(A) 27

(B) 28

(C) 29

(D) 30

Ans – A

10. आविन्यों में रहकर लगभग तीस संयुक्त कविताएँ लिखने वाले अतियथार्थवादी कवित्रयी हैं।

(A) आन्द्रे ब्रेता

(B) रेन शाँ

(C) पाल एलुआर

(D) उपर्युक्त सभी

Ans – D

11. अशोक वाजपेयी की ललित रचना है।

(A) नागरी लिपि

PDF SARTHI.COM

(B) नौबतखाने में इबादत

(C) मछली

(D) आविन्यों

Ans – D

12. कविता नहीं है -

(A) आविन्यों

(B) स्वदेशी

(C) हमारी नींद

(D) भारतमाता

Ans – A

13. रोन नदी के दूसरी ओर आविन्यों का एक और हिस्सा है जो लगभग स्वतंत्र है। नाम है- वीलनव्व ल आविन्यों, अर्थात् आविन्यों का नया गाँव शायद कहना चाहिए नयी बस्ती। इस गद्यांश के लेखक कौन हैं?

(A) रामविलास शर्मा

(B) अशोक वाजपेयी

PDFSARTHI.COM

(C) विनोद कुमार शुक्ल

(D) यतीन्द्र मिश्र

Ans – B

14. 'ल मादामोजेल द आविन्यों' किसकी कृति है ?

(A) लियानार्दो द विंची

(B) पिकासो

(C) रवीन्द्रनाथ टैगोर

(D) विन्सेंट वैन गो

Ans – B

15. आविन्यों, दक्षिण फ्रांस में रोन नदी के किनारे बसा कैसा शहर है?

(A) नया

(B) आधुनिक

(C) पुराना

(D) विकसित

PDF SARTHI.COM

Ans – C

16. महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति कौन थे?

(A) नलिन विलोचन शर्मा

(B) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(C) अशोक वाजपेयी

(D) अमरकांत

Ans – C

17. 'वीलनत्व' क्या है ?

(A) एक शहर

(B) एक छोटा सा गाँव

(C) एक नदी

(D) एक झील

Ans – B

18. 'रोन' नदी के किनारे बसे शहर का नाम है

PDF SARTHI.COM

(A) लंदन

(B) लाहौर

(C) आविन्यों

(D) लखनऊ

Ans – C

19. प्रत्येक वर्ष आविन्यों में कैसा समारोह आयोजित होता है ?

(A) रंग- समारोह

(B) धार्मिक

(C) विश्वकप

(D) राष्ट्रमंडल खेल

Ans – A

20. 'एक पतंग अनंत में किनकी रचना है ?

(A) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(B) विनोद कुमार शुक्ल

PDF SARTHI.COM

(C) यतीन्द्र

(D) अशोक वाजपेयी

Ans – D

21. मिश्र 'रोन नदी' में है।

(A) भारत

(B) फ्रांस

(C) अमेरिका

(D) रूस

Ans – B

22. ला शत्रूज में रहकर लेखक कितने कविताएँ की रचना की ?

(A) 20

(B) 25

(C) 30

PDF SARTHI.COM

(D) 35

Ans – D

23. ला शत्रूज प्रवास में लेखक कितने गद्य रचनाएँ लिखी ?

(A) 20

(B) 25

(C) 27

(D) 35

Ans – C

24. आविन्यों है -

(A) कहानी

(B) कविता

(C) जीवनी

(D) ललित रचना

Ans – D

PDF SARTHI.COM

25. महात्मा गाँधी अंतराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति थे?

(A) शिवपूजन सहाय

(B) नलिन विलोचन शर्मा

(C) अशोक वाजपेयी

(D) यतीन्द्र मिश्र

Ans – C

26. लेखक आविन्यों किस सिलसिले में गए थे ?

(A) भ्रमण कार्यक्रम पर

(B) एकांत में रहने के लिए

(C) तीर्थ यात्रा पर

(D) रंग-समारोह में भाग लेके

Ans – D

27. पीटर ब्रुक का विवादास्पद 'महाभारत' पहले पहल कहाँ प्रस्तुत किया जाने वाला था?

PDFSARTHI.COM

(A) आविन्यों में

(B) जारशाही रूस में

(C) डेसाक जर्मनी

(D) दुर्ग, छत्तीसगढ़

Ans – A

28. "ला शत्रूज को किसने बनवाया था ?

(A) जर्मन शासकों ने

(B) फ्रेंच शासकों ने

(C) चीनी शासकों ने

(D) जापानी शासकों ने

Ans – B

29. कार्थूसियन सम्प्रदाय का एक ईसाई मठ है -

(A) ला शत्रूज

(B) कॉथोलिक चर्च

PDF SARTHI.COM

(C) वीलनप्व

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – A

30. 'जारशाही' कहाँ थी ?

(A) रूस में

(B) जापान में

(C) फ्रांस में

(D) चीन में

Ans – A

31. 'आविन्यों किस नदी पर स्थित है ?

(A) रोन नदी पर

(B) सोन नदी पर

(C) टेम्स नदी पर

(D) कोई नहीं

PDF SARTHI.COM

Ans – A

32. पिकासो की विख्यात कृति का नाम है।

(A) द आविन्यो

(B) द वीलनब्व

(C) मादामोजेल द आविन्यो

(D) द मादामोजेल

Ans – C

PDF SARTHI.COM

10. मछली

पाठ का सारांश

- दौड़ते हुए हम लोग एक पतली गली में घुस गए। इस गली से घर नजदीक पड़ता था। दूसरे रास्तों में बहुत भीड़ थी। बाजार का दिन था। लेकिन बूंदें पड़ने से भीड़ के बिखराव में तेजी आ . गई थी। दौड़ इसलिए रहे थे कि डर लगता था कि मछलियाँ बिना पानी के झोले में ही न मर जाएँ। झोले में तीन मछलियाँ थीं। एक तो उसी वक्त मर गई थी जब पिताजी खरीद रहे थे। वो जिन्दा थीं। झोले में उनकी तड़प के झटके मैं जब तब महसूस करता था। मन ही मन सोच रहा था कि एक मछली पिताजी से जरूर माँग लेंगे। फिर उसे कुंए में डालकर बहुत बड़ी करेंगे। जब मन होगा बाल्टी में निकालकर खेलेंगे। बाद में फिर कुंए में डाल देंगे।
- अब जोर से पानी गिरने लगा था। बरसते पानी में खड़े होकर झोले का मुँह आकाश की तरफ फैलाकर मैंने खोल दिया ताकि आकाश का पानी झोले के अन्दर पड़ी मछलियों पर पड़े। पानी के छींटे पाकर, कहीं आसपास किसी तालाब या नदी का अंदाजकर जोर से मछली उछली। झोला मेरे हाथ से छूटते-छूटते बचा।
- नहानघर के बाल्टी में मैंने झोले की तीनों मछलियाँ उड़ेल दीं। अगर बाल्टी भरी होती तो मछली उछलकर नीचे आ जाती। एक बार एक छोटी सी मछली मेरे हाथ से फिसलकर नहानघर की नाली में घुस गई थी। हाथों से

PDF SARTHI.COM

मैंने और सन्तू ने हटोल टंटोलकर ढूँढा था। जब दिखी नहीं तो हम घर के पीछे जाकर खड़े हो गए थे जहाँ घर की नाली एक बड़ी नाली से मिलती थी। गंदे पानी में मछली दिखी नहीं।

- संतू मछलियों की तरफ प्यार से देखता था। वह मछलियों को छूकर देखना चाहता था। लेकिन डरता भी था। बाल्टी के थोड़ा और पास खिसककर एक मछली को पकड़ते हुए मैंने कहा, “संतू! तू भी छूकर देख ना””नहीं, काटेगी” संतू ने इनकार करते हुए कहा। नीचे दबी हुई मछली को आँखों में मैं अपनी छाया देखना चाहता था। दीदी कहती थी जो मछली मर जाती है उसकी आँखों में झाँकने से अपनी परछाईं नहीं दिखती। “माँ कहाँ है ? उस तरफ मसाला पीस रही है।” मेरा दिल बैठ गया। “चः चः मछली के मसाला होगा” “आज ही बनेगी” दुःख से मैंने कहा।
- “भइया! मछली अभी कट जायेगी।” भोलेपन से संतू ने पूछा। “हाँ” फिर संतू भी उदास हो गया। माँ को घर में मछली, गोश्त खाया करें लेकिन माँ ने सख्ती से मना कर दिया था। और किसी को अच्छा भी नहीं लगता था केवल पिताजी खाते थे।
- भग्गू को जैसे मालूम था कि मछलियाँ नहानघर में हैं। आते ही वह अंगोछे में तीनों मछलियाँ निकाल लाया। कुँए में मछली पालने का उत्साह बुझ-सा गया था। कमरे में जाकर देखा तो सच में दीदी करवट लिए लेटी थी। संतू को मैंने इशारे से बुलाया कि वह भी गीले कपड़े बदल ले। शायद कुछ

PDF SARTHI.COM

आहट हुई होगी। दीदी ने पलटकर हमें देखा। गीले कपड़ों में देखकर दीदी बहुत नाराज हुई। फिर प्यार से समझाया। संतू को दीदी ने खुद अपने हाथों से जाने क्यों बहुत अच्छे-अच्छे कपड़े पहनाए। मैं घर के धोए कपड़े पहिन रहा था तो दीदी ने कहा कि धोबी के धुले कपड़े पहिन लूँ। फिर दीदी ने पेटी से मेरे लिए कपड़े निकाल दिए। संतू के बड़े-बड़े बाल थे इसलिए अभी तक गीले थे। दीदी ने संतू के बालों को टावेल से पोंछकर, उनमें तेल लगाया। वायें हाथ से संतू की ठुड्डी पकड़कर दीदी ने उसके बाल सँवार दिए। जब दीदी संतू के बाल सँवार रही थी तो संतू अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से दीदी को टकटकी बाँधे देख रहा था। सभी कहते थे कि दीदी बहुत सुन्दर है।

- भग्गू मछली काट रहा था संतू एक मछली अंगोछे से उठाकर बाहर की तरफ सरपट भागा। भग्गू भी मछली काटना छोड़कर “अरे! अरे! अरे!” कहता हुआ उसके पीछे-पीछे भागा। मैं वहीं खड़ा रहा, पाटे में राख से पिटी हुई सिर कटी हुई मछली पड़ी थी। बाड़े की तरफ आकर मैंने देखा कि कुंए के पास जमीन पर संतू जानबूझकर पट पड़ा था। दोनों हाथों से मछली को अपने पेट के पास छुपाए हुए था। भग्गू मछली छीनने की कोशिश कर रहा था। शायद उसे डर था कि संतू मछली कुँए में डाल देगा तो पिताजी से उसे डाँट पड़ेगी। मैंने सुना कि अंदर की तरफ पिताजी के जोर-जोर से चिल्लाने की आवाज आ रही थी। संतू सहमा-सहमा चुपचाप खड़ा था।

PDFSARTHI.COM

कीचड़ से उसके साफ अच्छे कपड़े बिल्कुल खराब हो गए थे। बाल जिसे दीदी ने प्यार से सँवारा था उसमें भी मिट्टी लगी थी।

10. मछली

लेखक परिचय

लेखक → विनोद कुमार शुक्ल

जन्म → 1 जनवरी 1937 (राजनाद गाँव छत्तीसगढ़)

पेशा → प्रधानाध्यापक

→ इंद्रा गाँधी कृषि विद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर के रूप मे रहे |

→ 1944 - 46 तक निराला श्रीजनपीठ में अतिथि साहित्यकार भी रहे।

→ इनका पहला कविता संग्रह 'लगभग जयहिन्द' पहचान सीरीज के अंतर्गत 1971 में प्रकाशित हुआ।

* इसकी कविता संग्रह :- वह आदमी गर्म कोर्ट पहनकर चला गया विचार की तरह सबकुछ होना बचा रहेगा, अतिरिक्त नही

उपन्यास → नौकर की कमीज़ खिलेंगे तो देखेंगे दीवार में एक खिड़की रहती थी|

दो कहानी → पेड़ पर कमरा, महाविद्यालय (मछली)

→ नौकर की कमीज उपन्यास पर कर के मणीकौल ने फिल्म बना दिया।

→ पुरस्कार - रखुवीर सहाय स्मृति पुरस्कार 1992 में दयापत्ति कवि शेखर सम्मान मिला साहित्य अकादमी पुस्कार 1990 में

→ बीसवीं सदी के 7वाँ-8वाँ दशक के थे

→ बचपन की स्मृति, मध्यवर्गी परिवार

PDFSARTHI.COM

10. मछली

Short answer questions

1. (i) झोले में मछलियाँ लेकर बच्चे दौड़ते हुए पतली गली में क्यों घुस गए?

उत्तर - झोले में मछलियाँ लेकर बच्चे दौड़ते हुए पतली गली में इसलिए घुस - गए, क्योंकि उस गली से घर नजदीक पड़ता था। बाजार का दिन होने के कारण रास्तों में भीड़ बहुत ज्यादा थी। उन रास्तों से जाने में उन्हें घर पहुँचने में ज्यादा समय लग जाता और झोले की मछलियाँ मर जातीं।

(ii) मछलियों को लेकर लेखक की अभिलाषा क्या थी ?

उत्तर - मछलियों को लेकर लेखक (कहानी का बालक पात्र) की अभिलाषा थी कि वह पिताजी से उनमें से एक मछली माँग लेगा और उसे कुएँ में डालकर बड़ा करेगा।

जब मन होगा, उस मछली को वह बाल्टी से निकाल लेगा और उसके साथ सभी बच्चे मिलकर खेलेंगे। मन बहल जाने के बाद वह उसे फिर कुएँ में डाल देगा।

(iii) बच्चे दौड़ क्यों रहे थे ?

उत्तर - बच्चे दौड़ इसलिए रहे थे कि उन्हें डर लगता था कि पानी के अभाव में मछलियाँ झोले में ही न मर जाएँ।

(iv) संतू मछली लेकर क्यों भागा ?

उत्तर - भग्गू मछली काट रहा था। मछली काटने का उसका ढंग अत्यंत निर्ममतापूर्ण था। (संतू उस ढंग से मर्माहत हो उठा।) कुएँ में डालकर मछली को बड़ा करने के स्वप्न को पूरा करने के लिए संतू मछली को लेकर भागा।

2. (i) मुर्दा-सी पड़ी मछली के साथ लेखक ने क्या किया ?

उत्तर - लेखक ने मुर्दा-सी पड़ी मछली को बालटी से बाहर निकाला। उसे धीरे - से नहानघर के फर्श पर रखा। उसकी पूँछ पकड़कर दो-तीन बार हिलाया। मछली में कोई हरकत नहीं हुई। उसने संतू को मछली की आँखों में झाँककर देखने को कहा कि उसकी आँखों में (मछली की आँखों में) संतू की परछाईं दिखाई पड़ती है कि नहीं।

PDFSARTHI.COM

लेखक ने भी मछली की आँखों में झाँककर यह पता लगाने की कोशिश की कि वह मछली मर गई है या अभी जिंदा है।

(ii) दीदी क्या कहती है ?

उत्तर - दीदी (लेखक की दीदी) कहती है कि मरी हुई मछली की आँखों में आदमी की परछाईं नहीं दिखाई पड़ती।

(iii) संतू कुछ बोलता क्यों नहीं था?

उत्तर - लेखक के कहने पर संतू मछली के कुछ नजदीक आकर उसकी आँख में उत्सुकतापूर्वक झाँकने लगा। वह मछली की आँख में अपनी परछाईं ढूँढ़ रहा था, पर शायद उसे अपनी परछाईं नहीं दिखाई पड़ रही थी । अतः, वह चुपचाप था, कुछ बोलता ही नहीं था ।

(iv) लेखक ने मछली की आँखों में क्या देखा ?

उत्तर - लेखक ने दोनों हाथों से मछली को उठाया। उसने मछली को अपने चेहरे के बिलकुल पास किया और उसकी आँख में झाँककर देखा। उसकी आँख में धुँधली- धुँधली परछाईं दिखाई पड़ी। लेखक समझ नहीं सका कि वह परछाईं उसकी (लेखक की) थी या मछली की आँखों का रंग ही कुछ वैसा हो गया था।

3. (i) लेखक का कुएँ में मछली पालने का उत्साह क्यों वुझ-सा गया था ?

उत्तर - लेखक की अभिलाषा थी कि दो जीवित मछलियों में से एक को कुएँ में डाल दे ताकि वह बड़ी हो सके और उसकी (लेखक की) जब इच्छा हो, उसे , (मछली को) कुएँ से निकालकर उसके साथ खेल सके। पर, जब उसने देखा कि भग्गू नहानघर से मछलियों को काटने के लिए निकाल लाया है, तब उसका (लेखक का) कुएँ में मछली पालने का उत्साह बुझ-सा गया।

(ii) दीदी लेखक और संतू पर नाराज क्यों हुई ? अपनी कल्पना से बताएँ कि दीदी ने प्यार से लेखक और संतू को क्या समझाया होगा।

उत्तर - जब दीदी ने देखा कि लेखक और संतू वर्षा में भींग गए हैं और उन्होंने कपड़े नहीं बदले हैं तब वह उन दोनों पर नाराज हो गई। दीदी ने लेखक और संतू को प्यार से समझाया होगा कि भींगे कपड़े नहीं पहनने चाहिए। भींगे कपड़े पहनने से तबीयत खराब हो जाती है।

PDFSARTHI.COM

(iii) दीदी के संबंध में सबकी धारणा कैसी थी ?

उत्तर - दीदी के संबंध में सबकी धारणा थी कि वह बहुत सुंदर है।

(iv) संतू दीदी को टकटकी बाँधे क्यों देख रहा था ?

उत्तर - दीदी संतू के बाल कंघी से सँवार रही थी और संतू अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से दीदी की सुंदरता देखकर विस्मित-चकित था। वह टकटकी बाँधे अपनी प्यारी बहन (दीदी) की शोभा निरख रहा था। अपनी बहन की शोभा वह निष्पलक नयनों से देख रहा था। दीदी की शोभा निरखकर संत की टकटकी बँध गई थी।

4. (i) दीदी कहाँ थी और क्या कर रही थी ?

उत्तर - दीदी अपने कमरे में थी और अपनी पहनी हुई साड़ी को सिर तक ओढ़े करवट लिए सिसक-सिसककर रो रही थी। रोने के साथ वह बीच-बीच में हिचकी ले रही थी। शायद, परिवार में कुछ ऐसी घटना घटी थी जिसने उसे मर्माहत कर दिया था।

(ii) लेखक को मछली का लहरना क्यों याद आ गया ?

उत्तर - भग्गू नहानघर से तीनों मछलियों को काटने के लिए निकाल लाया। उनमें से एक मछली को कुएँ में डालने के लिए संतू लेकर भाग खड़ा हुआ। एक मछली भग्गू काट चुका था और एक मछली गमछे में पड़ी थी। लेखक ने देखा कि अंगोछे में लिपटी मछली कभी-कभी लहरा उठती है। वह शायद जीवन और मौत से संघर्ष कर रही थी। लेखक ने जब अपनी बहन को सिसकियों के बीच हिचकी लेते हुए देखा तब उसे उसी मछली की, अंगोछे में लिपटी-सी मछली की, याद हो आई। शायद, दीदी भी मछली के समान ही जीवन और मौत से संघर्ष कर रही थी; कोई वेदना थी जिसे वह व्यक्त नहीं कर पा रही थी और घुट-घुट कर मर रही थी।

(iii) वाड़े की तरफ आकर लेखक ने क्या देखा ?

उत्तर - बाड़े की तरफ आकर लेखक ने देखा कि संतू कुएँ के पास जमीन पर पट पड़ा था। उसने अपने दोनों हाथों से मछली को छिपा रखा था और भग्गू उसे छीनने की कोशिश कर रहा था।

(iv) भग्गू को क्या डर था ?

उत्तर - भग्गू को डर था कि यदि संतू ने मछली को कुएँ में डाल दिया तो उसे पिताजी से डाँट पड़ेगी।

PDFSARTHI.COM

1. (i) मछलियाँ लिए घर आने के बाद बच्चों ने क्या किया?

उत्तर - मछलियाँ लिए घर आने के बाद बच्चे नहानघर में घुस गए और अंदर से दरवाजा बंद कर लिया। भरी हुई बालटी का आधा पानी गिराकर उन्होंने उसमें झोले की तीनों मछलियाँ उड़ेल दीं। लेखक (कथावाचक) और संतू दोनों वर्षा में बुरी तरह भींग गए थे। माँ के डर से उन्होंने अपनी-अपनी कमीज उतारी और उन्हें निचोड़ा तथा पैंट को मुट्ठियों से दबाकर निचोड़ा । निचोड़ी गई कमीज को अपनी- अपनी गोद में दबाए वे बाल्टी को घेरकर बैठ गए।

(ii) मछली को छूते हुए संतू क्यों हिचक रहा था ?

उत्तर - संतू मछलियों को बड़े प्यार से देख रहा था। वह मछलियों को छूकर देखना चाहता था, पर उसे डर लगता था। वह मछली को छूते हुए हिचक रहा था कि कहीं मछली उसे काट न ले। अपने बड़े भाई (कथा वाचक / लेखक) के बहुत समझाने- बुझाने पर उसने एक बार हिम्मत बटोरी और सबसे ऊपर वाली मछली को उँगली से छुआ, पर डरकर अपना हाथ खींच लिया। उसकी हिचक अभी दूर नहीं हुई थी। अब भी उसके भीतर डर था, जिसके चलते वह मछली को छू नहीं पा रहा था।

2. मछली के बारे में दीदी ने क्या जानकारी दी थी? संतू क्यों उदास हो गया?

उत्तर - मछली के बारे में दीदी ने जानकारी दी थी कि मरी हुई मछली की आँखों में झाँकने से अपनी परछाई नहीं दिखाई पड़ती।

मछली अभी कट जाएगी, यह जानकर संतू उदास हो गया। वह नहीं चाहता था कि मछली कटे। वह मछली के साथ खेलना चाहता था। मछली के संबंध में उसने तरह-तरह की सुखद कल्पनाएँ की थीं। पर, अब तो मछली कट जाएगी! उसके भीतर एक करुणापूर्ण उदासी घिर आती है।

3. (i) पिताजी किससे नाराज थे, और क्यों ?

उत्तर - पिताजी दीदी और नरेन पर नाराज थे। वे नहीं चाहते थे कि नरेन घर में आए और उससे दीदी का मेल-जोल बढ़े। उन्होंने इसके लिए दीदी को मारा था और नरेन पर अपनी नाराजगी व्यक्त करते हुए भग्गू से कहा था- "भग्गू! अगर नरेन घर में घुसे तो साले के हाथ-पैर तोड़ बाहर फेंक देना। बाद में जो होगा, मैं भुगत लूँगा।"

(ii) अरे-अरे कहता हुआ भग्गू किसके पीछे भागा, और क्यों ?

PDFSARTHI.COM

उत्तर - संतू कुएँ में मछली को डालकर उसे बड़ा करना चाहता था। वह मछली को अपना मित्र बनाना चाहता था। संतू ने गमछे से एक मछली उठाई और उसे लेकर सरपट भाग निकला। 'अरे-अरे' कहता हुआ भग्गू उसके पीछे-पीछे भागा, भग्गू को डर था कि यदि संतू मछली को कुएँ में डाल देगा, तो पिताजी से उसको डॉट पड़ेगी। अतः, संतू को पकड़कर उससे मछली छीन लेने के लिए वह उसके पीछे- पीछे भागा।

(iii) मछली और दीदी में क्या समानता है? स्पष्ट करें।

उत्तर - जिस तरह मछली बेजुबान होती है, अपनी पीड़ा व्यक्त नहीं कर पाती, उसी तरह दीदी भी बेजुबान है। वह अपनी अंतर्व्यथा प्रकंट नहीं कर पाती।

(iv) मछली के प्रति बच्चों में कौन-सी जिज्ञासा थी ?

उत्तर - मछली के प्रति बच्चों में यही जिज्ञासा थी कि जो मछली मर जाती है, उसकी आँखों में झाँकने से अपनी परछाईं दिखती है कि नहीं।

10. मछली

1. मछली किसकी कहानी है ?

(A) रामविलास शर्मा

(B) अशोक वाजपेयी

(C) विनोद कुमार शुक्ल

(D) यतीन्द्र मिश्र

Ans – C

2. विनोद कुमार शुक्ल का जन्म कब हुआ था ?

(A) 18 फरवरी 1916

(B) 10 अक्टूबर 1912

PDF SARTHI.COM

(C) 4 फरवरी 1938

(D) 1 जनवरी 1937

Ans – D

3. विनोद कुमार शुक्ल को साहित्य अकादमी पुरस्कार किस वर्ष मिला ?

(A) 1990

(B) 1992

(C) 1997

(D) 2000

Ans – A

4. लेखक को मछली खाने से किसने मना किया ?

(A) पिता ने

(B) माँ ने

(C) भाई ने

(D) बहन ने

Ans – A

5. लेखक के घर में मछली कौन खाता था ?

(A) लेखक

(B) पिता

(C) माँ

PDF SARTHI.COM

(D) बहन

Ans – B

6. लेखक अपने पिता से क्या माँगना चाहता था ?

(A) खिलौने

(B) किताब

(C) पैसे

(D) मछली

Ans – D

7. लेखक के पिता ने कितनी मछलियाँ खरीदी ?

(A) एक

(B) दो

(C) तीन

(D) चार

Ans – D

8. विनोद कुमार शुक्ल किस कृषि विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर थे ?

(A) संजय गांधी कृषि विश्वविद्यालय

(B) पूसा कृषि विश्वविद्यालय

(C) इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय

(D) राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय

PDF SARTHI.COM

Ans – C

9. 'मछली' कहानी किस संकलन से ली गयी है ?

(A) पेड़ पर कमरा

(B) नौकर की कमीज

(C) महाविद्यालय

(D) विश्वविद्यालय

Ans – C

10. 'मछली' कहानी में किस वर्ग का जीवन वर्णित है ?

(A) निम्न वर्ग का

(B) उच्च वर्ग का

(C) मध्यम वर्ग का

(D) कृषक वर्ग का

Ans – C

11. खरीदे गये मछली में कितनी मछली जिंदा थी ?

(A) एक

(B) दो

(C) तीन

(D) चार

Ans – B

12. अरे - अरे कहता हुआ भग्गु किसके पीछे भागा था ?

PDFSARTHI.COM

Pdf, Notes OR Test Series लेने के लिए हमें WhatsApp करे - 7488296191

(A) संतु

(B) नरेन

(C) दीदी

(D) पिताजी

Ans – A

13. पिताजी किससे नाराज थे ?

(A) संतु

(B) भग्गु

(C) दीदी

(D) नरेन

Ans – D

14. कहानी संग्रह 'महाविद्यालय' से पाठ्य पुस्तक में ली गई कहानी कौन - सी है ?

(A) आविन्यों

(B) बहादुर

(C) नागरीलिपि

(D) मछली

Ans – D

15. संतू किस कहानी का पात्र है ?

(A) नागरीलिपि

PDF SARTHI.COM

(B) मछली

(C) आविन्यों

(D) बहादुर

Ans – B

16. मछली कौन काटता है ?

(A) लेखक

(B) संतु

(C) भग्गू

(D) पिताजी

Ans – C

17. कौन सी कहानी एक छोटे शहर के निम्न मध्यवर्गीय परिवार के भीतर के वातावरण, जीवन यथार्थ और संबंधों को आलोकित करती हुई लिंग भेद की समस्या को भी स्पर्श करती है

(A) मछली

(B) श्रम विभाजन और जाति प्रथा

(C) भारत से हम क्या सीखें

(D) आविन्यों

Ans – A

18. बच्चे कितने मछली को कुएँ में डालकर बहुत बड़ी करना चाहते थे ?

(A) एक

PDF SARTHI.COM

(B) दो

(C) तीन

(D) चार

Ans – A

19. परिवार के किस सदस्य में मछली जैसी समानता दिखाई पड़ी ?

(A) संतु

(B) भग्गू

(C) लेखक

(D) दीदी

Ans – D

20. दीदी से मैंने कहा — "दीदी आज मछली आयी है। तीन है। एक शायद मर गयी है। उन्हें अभी भग्गू काटेगा। इन गद्यांश के लेखक कौन हैं ?

(A) नलिन विलोचन शर्मा

(B) अमरकांत

(C) विनोद कुमार शुक्ल

(D) अशोक वाजपेयी

Ans – C

21. 'महाविद्यालय' नामक कहानी संग्रह किनकी रचना है ?

(A) महात्मा गांधी

PDF SARTHI.COM

(B) अमरकांत

(C) विनोद कुमार शुक्ल

(D) मैक्समूलर

Ans – C

22. मछली लेकर कौन भाग गया था ?

(A) भग्गू

(B) संतू

(C) बंतू

(D) जग्गू

Ans – B

23. 'मछली' शीर्षक कहानी में दीदी के प्रेमी का क्या नाम था ?

(A) संतु

(B) महेन्द्र

(C) भग्गू

(D) नरेन

Ans – A

24. मछली के लिए मसाला कौन पीस रही थी ?

(A) दादी

(B) नानी

PDF SARTHI.COM

(C) दीदी

(D) माँ

Ans – D

25. विनोद कुमार शुक्ल किस कृषि विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर थे ?

(A) संजय गांधी

(B) राजीव गांधी

(C) इंदिरा गांधी

(D) फिरोज गांधी

Ans – C

26. लेखक अपने पिता से मछली क्यों माँगना चाहता था ?

(A) खाने के लिए

(B) खेलने के लिए लिए

(C) कुएँ में पालने के

(D) फेकने के लिए

Ans – C

27. 'मोहरा' नदी शहर से दूर थी -

(A) एक मील

(B) दो मील

(C) तीन मील

PDF SARTHI.COM

(D) चार मील

Ans – C

28. ……. ठंढ से काँप रहा था ?

(A) संतु

(B) भग्गु

(C) नरेन

(D) बहादुर

Ans – A

29. मछली साहित्य की कौन - सी विधा है ?

(A) निबंध

(B) साक्षात्कार

(C) व्यक्तिचित्र

(D) कहानी

Ans – D

30. 'मछली' किस प्रकार की कहानी है ?

(A) मनोवैज्ञानिक

(B) सामाजिक

(C) ऐतिहासिक

(D) सांस्कृतिक

PDF SARTHI.COM

Ans – A

31. संतू मछली लेकर क्यों भागा ?

(A) कुएँ में डालने के लिए

(B) बेचने के लिए

(C) पकाने के लिए

(D) काटने के लिए

Ans – A

PDF SARTHI.COM

11. नौबतखाने में इबादत

पाठ का सारांश

- सन् 1916 से 1922 के आसपास की काशी। पंचगंगा घाट स्थित बालाजी विश्वनाथ मंदिर की ड्योढ़ी। ड्योढ़ी का नौबतखाना और नौबतखाने से निकलनेवाली मंगलध्वनि।।
- अमीरूद्दीन अभी सिर्फ छह साल का है और बड़ा भाई शम्सुद्दीन नौ साल का। अमीरूद्दीन को पता नहीं है कि राग किस चिड़िया को कहते हैं। और ये लोग हैं मामूंजान वगैरह जो बात-बात पर भीमपलासी और मुलतानी कहते रहते हैं। क्या बाजिब मतलब हो सकता है इन शब्दों का इस" लिहाज से अभी उम्र नहीं है अमीरूद्दीन की; जान सके इन भारी शब्दों का बजन कितना होगा।
- अमीरूद्दीन का जन्म डुमराँव, बिहार के एक संगीत प्रेमी परिवार में हुआ है। 5-6 वर्ष डुमराँव में बिताकर वह नाना के घर, ननिहाल काशी में आ गया है। शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के लिए उपयोगी हैं। उनकी अबोध उम्र में अनुभव की स्लेट पर संगीत प्रेरणा की वर्णमाला रसूलनवाई और बजूलनवाई ने उकेरी है। इसे संगीत शास्त्रांतर्गत 'सुषिर-वाद्यों' में गिना जाता है। अरब देश में फूंककर बजाए जाने वाले वाद्य जिसमें नाड़ी नरकट या रीड होती है को 'नय' बोलते हैं। शहनाई को 'शहनाई अर्थात् 'सुषिर वाद्यों में शाह की उपाधि दी गई है।
- शहनाई की इसी मंगलध्वनि के नायक बिस्मिल्ला खाँ साहब अस्सी बरस से सुर माँग रहे हैं। सच्चे सुर की नेमत। अस्सी बरस की पाँचों वक्त वाली नमाज इसी सुर को पाने की प्रार्थना में खर्च हो जाती है। लाखों सजदे इसी एक सच्चे सुर की इबादत में खुदा के आगे झुकते हैं। बिस्मिला खाँ और शहनाई के साथ जिस मुस्लिम पर्व का नाम जुड़ा है, वह मुहर्रम है। आठवीं तारीख उनके लिए खास महत्त्व की है। इस दिन खाँ साहब खड़े होकर शहनाई बजाते हैं व दालमंडी में फातमान के करीब आठ किलोमीटर की दूरी तक पैदल रोते हुए, नौटा बजाते जाते हैं।
- बचपन की दिनों की याद में वे पक्का महाल की कुलसुम हलवाइन की कचौड़ी वाली दुकान व गीताबाली और सुलोचना को ज्यादा याद करते हैं। सुलोचना उनकी पसंदीदा हीरोइन रही थीं।
- अपने मजहब के प्रति अत्यधिक समर्पित उस्ताद बिस्मिला खाँ की श्रद्धा काशी विश्वनाथ जी के प्रति भी अपार है। वे जब भी काशी से बाहर रहते हैं तब विश्वनाथ व बालाजी मंदिर की दिशा की ओर मुँह करके बैठते हैं, थोड़ी देर ही सही, मगर उसी ओर शहनाई का प्याला घुमा दिया जाता है और भीतर की आस्था रीड के माध्यम से बजती है।

PDFSARTHI.COM

- काशी संस्कृति की पाठशाला है। शास्त्रों में आनंदकानन के नाम से प्रतिष्ठित है। काशी में कलाधर हनुमान व नृत्य-विश्वनाथ हैं। काशी में विस्मिल्ला खाँ है। काशी में हजारों सालों का इतिहास है जिसमें पंडित कंठे महाराज हैं, बड़े रामदास जी है, मौजुद्दीन खाँ हैं व इन रसिकों से उपकृत होने वाला अपार जन-समूह है।
- आपकी। अब तो आपको भारतरत्न भी मिल चुका है, यह फटी तहमद न पहना करें। अच्छा नहीं लगता, जब भी कोई आता है आप इसी फटी तहमद में सबसे मिलते हैं।" खाँ साहब मुस्काराए। लाड़ से भरकर बोले "धत। पगली ई भारतरत्न हमको शहनईया' पे मिला है, लगिया पे नाहीं।
- नब्बे वर्ष की भरी-पूरी आयु में 21 अगस्त 2006 को संगीत रसिकों की हार्दिक सभा से हमेशा के लिए विदा हुए खाँ साहब।

11. नौबतखाने में इबादत

* लेखक परिचय *

लेखक परिचय → यतीन्द्र मिश्र परिचय

जन्म → 1977 अयोध्या (उत्तरप्रदेश)

→ लखनऊ विश्वविद्यालय से हिन्दी भाषा और साहित्य में M.A वे रचनाकार के रूप में एक कवि थे।

तीन काव्य संग्रह → यदा - कदा, अयोध्या तथा अन्य डयोढ़ी पर आलाव

→ गिरजादेवी के जीवन और संगीत साधना पर एक पुस्तक गिरजा लिखा है |

→ भारतीय कलाओं पर विमर्श की एक पुस्तक देवी प्रिया लिखा इसमे सोहन भान सिंह से लेखक का बातचीत |

→ विमला देवी फाउंडेशन का संचालन 199 से कर रहे ही → द्विजदेव ग्रंथानली का यह संपादन किया |

पुरस्कार → भूषण अग्रवाल पुस्कार, भारतीय भाषा परिषद युवा पुरस्कार, राजीव ग्रंथि राष्ट्रीय एकता पुरस्कार, हेमते स्मृति कविता पुस्कार, ऋतु राजा पुरस्कार

नई दिल्ली और संजय नई दिल्ली की फिलोसफी पुरस्कार

PDFSARTHI.COM

11. नौबतखाने में इबादत

Short answer question

1. **(i) 'नय' किसे कहते हैं? संगीतशास्त्र के अनुसार, शहनाई किस वाद्ययंत्र में परिगणित होती है? 'सुषिरवाद्य' किन्हें कहते हैं? 'शहनाई' शब्द की व्युत्पत्ति किस प्रकार हुई है ?**

उत्तर - अरब देश के एक वाद्य को जिसे फूँककर बजाया जाता है और जिसमें नाड़ी (नरकट या रीड) होती है, 'नय' नाम से जाना जाता है। संगीतशास्त्र के अनुसार, शहनाई को 'सुषिरवाद्यों' में परिगणित किया जाता है। फूँककर बजाए जानेवाले वाद्य को 'सुषिरवाद्य' कहा जाता है। 'शहनाई' शब्द की व्युत्पत्ति फारसी (शाह) और अरबी (नय) शब्दों के मेल से हुई है। इसका अर्थ हुआ - वह वाद्य जो -फूँककर बजाए जानेवाले (नय) वाद्यों का 'शाह' यानी बादशाह हो।

(ii) शहनाई को 'शाहनेय' क्यों कहा जाता है? तानसेन द्वारा रची बंदिश में किन वाद्यों का वर्णन मिलता है? तानसेन द्वारा रची बंदिश कहाँ प्राप्त होती है?

उत्तर - शहनाई को 'सुषिरवाद्यों' में 'शाह' की उपाधि प्राप्त है, अतः शहनाई को 'शाहनेय' (शाह + नेय) कहा जाता है। तानसेन द्वारा रची बंदिश में शहनाई, मुरली, वंशी, श्रृंगी तथा मुरछंग आदि का वर्णन मिलता है।

(iii) शहनाई का उल्लेख बार-बार कहाँ मिलता है? अवध प्रदेश में शहनाई का प्रयोग किन अवसरों पर किया जाता है ?

उत्तर - अवधी भाषा के पारंपरिक लोकगीतों, जैसे 'चैती' आदि में शहनाई का उल्लेख बार-बार मिलता है। अवध प्रदेश में शहनाई का प्रयोग मांगलिक अवसरों पर किया जाता है।

(iv) दक्षिण भारत में किसे मंगल वाद्य के रूप में जाना जाता है ? शहनाई और 'नागस्वरम्' में क्या समानता है ?

उत्तर - दक्षिण भारत में 'नागस्वरम्' को मंगल वाद्य के रूप में जाना जाता है। शहनाई और 'नागस्वरम्', दोनों मंगल वाद्य हैं। 'नागस्वरम्' की तरह शहनाई भी प्रभाती की मंगल ध्वनि की संपूरक (पूरा करनेवाली) है।

2. **हिरण का वरदान क्या है ? अस्सी बरस से बिस्मिल्ला खाँ क्या सोचते आये हैं?**

PDFSARTHI.COM

उत्तर - हिरण (हिरन) का वरदान है कि एक सुगंधित पदार्थ (कस्तूरी) उसकी नाभि के पास की गाँठ में पैदा होता है। अस्सी बरस से बिस्मिल्ला खाँ यही सोचते आये हैं कि अभी तक उन्हें सात सुरों को साधने में प्रवीणता क्यों नहीं प्राप्त हुई है।

3. (i) काशी संस्कृति की पाठशाला है, कैसे ?

उत्तर - काशी को संस्कृति की पाठशाला कहा गया है। यहाँ रहकर या इससे आत्मीयता साधकर हम सांस्कृतिक गुणों से संपन्न हो सकते हैं। यह धर्म और धार्मिक सद्भाव की नगरी है। यहाँ एकता का मंत्र सर्वदा गुंजित होता रहता है। विभिन्न कलाओं, कलाकारों, विधाओं और साधनाओं की नगरी है काशी। इसीलिए, काशी को संस्कृति की पाठशाला कहा जाता है।

(ii) काशी का जनसमूह किन रसिकों से उपकृत होता आया है?

उत्तर - काशी का जनसमूह अनेक रसिकों से उपकृत होता आया है। कलाधर हनुमान, नृत्यप्रिय शंकर (विश्वनाथ), पंडित कंठे महाराज, विद्याधरी, रामदासजी, बिस्मिल्ला खाँ, मौजुद्दीन खाँ जैसे रसिकों से काशी का जनसमूह हजारों-हजार साल से उपकृत होता आया है।

(iii) काशी नगरी की विशेषता क्या है? यह शास्त्रों में किस नाम से प्रतिष्ठित है?

उत्तर - काशी नगरी विशिष्ट नगरी है। इसकी अलग तहजीब (सभ्यता) और विशिष्ट भाषा है। इसके लोग भी विशिष्ट हैं। इस नगरी के अपने निराले उत्सव हैं और अपने अलग किस्म के गम (दु:ख) हैं। इसका अपना सेहरा-बन्ना है और अपना नौहा (शहनाई) है। अर्थात, यह नगरी हर क्षेत्र में अपूर्व और निराली है। यह शास्त्रों में 'आनंदकानन' के नाम से प्रतिष्ठित है।

(iv) यहाँ किसको अलग करके नहीं देखा जा सकता?

उत्तर - यहाँ संगीत को भक्ति से, भक्ति को किसी भी धर्म के कलाकार से, कजरी को चैती से, विश्वनाथ को विशालाक्षी (पार्वती) से और बिस्मिल्ला खाँ को गंगाद्वार से अलग करके नहीं देखा जा सकता।

4. (i) 'बिस्मिल्ला खाँ' का क्या अर्थ है? 'शहनाई' का तात्पर्य क्या है?

PDFSARTHI.COM

उत्तर - 'बिस्मिल्ला खाँ' का अर्थ है- बिस्मिल्ला खाँ की शहनाई। 'बिस्मिल्ला खाँ' का नाम सुनते ही हमारे जेहन (मस्तिष्क) में शहनाई का बिंब उभर आता है। 'शहनाई' का तात्पर्य है-बिस्मिल्ला खाँ का हाथ। 'शहनाई' शब्द कान में पड़ते ही हमें बिस्मिल्ला खाँ और उनके हाथ की याद हो आती है।

(ii) 'हाथ' का आशय क्या है?

उत्तर - 'हाथ' का आशय केवल इतना ही कि बिस्मिल्ला खाँ की फूँक और उस फूँक से शहनाई से उत्पन्न होनेवाली जादुई आवाज का असर हमारे सिर चढ़कर बोलने लगता है।

(iii) दुनिया के सुबहान अल्लाह कहने पर विस्मिल्ला खाँ का क्या जवाब होता था ?

उत्तर - दुनिया जब बिस्मिल्ला खाँ की शहनाई से निकलनेवाली मधुर आवाज से तृप्त होकर उनकी तारीफ (प्रशंसा) में कहती- 'सुबहान अल्लाह' - धन्य है ईश्वर जिसने आपको ऐसी कला दी है, तब बिस्मिल्ला खाँ का उत्तर होता था कि इसमें मेरा कुछ भी नहीं है, सारी तारीफ (प्रशंसा) तो उस ईश्वर की होनी चाहिए- 'अलहमदुलिल्लाह' ।

(iv) अमीरुद्दीन से फकीर ने क्या कहा? अमीरुद्दीन किसका नाम था ?

उत्तर - अमीरुद्दीन से फकीर ने कहा- 'बजा, बजा', अर्थात तुम शहनाई बजाओ, बजाते रहो शहनाई, सारी दुनिया में तुम्हारा नाम छा जाएगा। बिस्मिल्ला खाँ के बचपन का नाम अमीरुद्दीन था।

Long answer question

5. बिस्मिल्ला खाँ सजदे में किस चीज के लिए गिड़गिड़ाते थे? इससे उनके व्यक्तित्व का कौन-सा पक्ष उद्घाटित होता है?

उत्तर - शहनाई प्रभाती की मंगलध्वनि की संपूरक है। बिस्मिल्ला खाँ लगातार अस्सी बरस से सच्चे सुर का वरदान माँग रहे थे। वे अस्सी बरस से पाँचों वक्त की नमाज में सच्चे सुर के लिए खुदा के आगे झुकते थे और नमाज के बाद सजदे (माथा टेकना) में गिड़गिड़ाकर कहते थे, "मेरे मालिक, एक सुर बक्स दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ।"

PDF SARTHI.COM

Pdf, Notes OR Test Series लेने के लिए हमें WhatsApp करे - 7488296191

इससे बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व का आध्यात्मिक पक्ष उजागर होता है। बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व में ईश्वरभक्ति के साथ संगीत के प्रति अटूट समर्पण है। बिस्मिल्ला खाँ को अल्लाह (मालिक) में पूरा विश्वास है और उन्हें मालूम है कि सच्चे हृदय से कुछ माँगने पर मालिक उसकी पूर्ति अवश्य करता है।

6. **बिस्मिल्ला खाँ का परिचय पाठ के आधार पर दें।**

उत्तर - बिस्मिल्ला खाँ महान शहनाईवादक थे। उनका जन्म डुमराँव, बिहार के एक संगीतप्रेमी परिवार में हुआ था। वे अपनी शहनाई के प्रति सर्वतोभावेन समर्पित थे। अपने मजहब के प्रति समर्पित होने के बाद भी वे काशी विश्वनाथ के प्रति अतिशय श्रद्धा रखते थे। वे अदबपसंद कलाकार थे। वे निश्छलहृदय और उदार मानव थे। वे सामाजिक और मानवीय चेतना से परिपूर्ण थे।

7. **(i) बिस्मिल्ला खाँ जब काशी से बाहर प्रदर्शन करते थे तो क्या करते थे? इससे हमें क्या सीख मिलती है ?**

उत्तर - बिस्मिल्ला खाँ जब काशी से बाहर प्रदर्शन करते थे तब वे विश्वनाथ व बालाजी मंदिर की दिशा की ओर मुँह करके बैठते थे। थोड़ी देर के लिए उनकी शहनाई का प्याला उस दिशा की ओर घुमा दिया जाता था। बिस्मिल्ला खाँ के भीतर की कवि-आस्था संगीतमय होकर बाबा विश्वनाथ और बालाजी के श्रीचरणों में समर्पित होने लगती थी। बिस्मिल्ला खाँ के लिए इस धरती पर कहीं जन्नत (स्वर्ग) है तो वह है शहनाई और काशी में ।

काशी से बाहर बिस्मिल्ला खाँ के उपर्युक्त आस्थापूर्ण आचरण से हमें एक महत्त्वपूर्ण सीख मिलती है। और वह सीख है कि हमें सांप्रदायिक भेदभाव से मुक्त होकर सच्चा इंसान बनना चाहिए। अपने राष्ट्र के प्रति हममें समर्पण का भाव होना चाहिए तथा ईश्वर में हमारी अटूट आस्था होनी चाहिए।

(ii) 'संगीतमय कचौड़ी' का आप क्या अर्थ समझते हैं?

उत्तर - 'संगीतमय कचौड़ी' का शाब्दिक अर्थ हुआ- - वह कचौड़ी जिसमें संगीत - बसा हो। पर शायद, इस तरह की कचौड़ी किसी ने न देखी हो और न चखी हो । इस तरह की कचौड़ी केवल बिस्मिल्ला खाँ ने देखी थी और चखी थी। कुलसुम की देशी घी वाली दुकान में बिस्मिल्ला खाँ की संगीतमय कचौड़ी बनती थी। संगीतमय कचौड़ी इस अर्थ में कि जब कुलसुम कलकलाते घी में कचौड़ी डालती थी, तब उस समय 'छन्न' से उठनेवाली खाली आवाज में उन्हें संगीत के सारे आरोह-अवरोह दिख जाते थे।

(iii) डुमराँव की महत्ता किस कारण से है ?

PDF SARTHI.COM

उत्तर - डुमराँव की महत्ता विश्वविख्यात शहनाईवादक बिस्मिल्ला खाँ के कारण है। इनका जन्म बिहार राज्य के डुमराँव में एक संगीतप्रेमी परिवार में हुआ था।

11. नौबतखाने में इबादत

1. नौबतखाने में इबादत पाठ के केन्द्र में हैं -

(A) बिरजू महाराज

(B) बिस्मिल्ला खाँ

(C) जाकिर हुसैन

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – B

2. कविता नहीं है -

(A) एक वृक्ष की हत्या

(B) लौटकर आऊँगा फिर

(C) नौबतखाने में इबादत

(D) हमारी नींद

Ans – C

PDFSARTHI.COM

3. इबादत का अर्थ है -

(A) उपासना

(B) इठलाना

(C) ईंट

(D) ईख

Ans – A

4. 'सुषिर वाद्यों में शाह' की उपाधि प्राप्त है -

(A) तबला को

(B) बाँसुरी को

(C) ढोलक को

(D) शहनाई को

Ans – D

5. 'बिस्मिल्ला खाँ' का संबंध है -

(A) बाँसुरी से

PDF SARTHI.COM

(B) हारमोनियम से

(C) तबला से

(D) शहनाई से

Ans – D

6. बिस्मिल्ला खाँ की मृत्यु कब हुई ?

(A) 21 अगस्त, 2006

(B) 30 मई, 2000

(C) 12 सितम्बर, 1961

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – A

7. फटा सुर न बख्शे लुंगिया का क्या है, आज फटी तो कल सिल जायेगी। उपर्युक्त कथन किसका है ?

(A) शम्सुद्दीन

PDF SARTHI.COM

(B) अलीबख्श

(C) बिस्मिल्ला खाँ

(D) पैगंबर बख्श

Ans – C

8. संगीत आयोजन की एक प्राचीन एवं अद्भुत परंपरा कहाँ रही है ?

(A) काशी

(B) डुमराँव

(C) लखनऊ

(D) इलाहाबाद

Ans – A

9. शास्त्रों में आनंदकानन के नाम से प्रतिष्ठित है।

(A) डुमराँव

(B) काशी

(C) लखनऊ

PDFSARTHI.COM

(D) इलाहाबाद

Ans – B

10. उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ का जन्म कहाँ हुआ

(A) बदरघाट, पटना

(B) डुमराँव, बिहार

(C) काशी, उत्तरप्रदेश

(D) बलिया उत्तरप्रदेश

Ans – B

11. नौबतखाना का अर्थ है -

(A) प्रवेश द्वार के ऊपर मंगल ध्वनि बजाने का स्थान

(B) पूजाघर

(C) इबादत

(D) शिक्षा

Ans – A

PDF SARTHI.COM

12. उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ को मिला है -

(A) भारतरत्न

(B) संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार

(C) पद्मविभूषण

(D) उपर्युक्त सभी पुरस्कार

Ans – D

13. धत् पगली ई भारत रत्न हमको शहनाईया पे मिला है, लुंगिया पे नाहीं। अपने शिष्या से किसने कहा ?

(A) बिस्मिल्ला खाँ

(B) पैगंबर बख्श

(C) अलीबख्श

(D) शम्सुद्दीन

Ans – A

14. नीवतखाने में इवादत' पाठ में लेखक ने किनका व्यक्तिगत चित्र प्रस्तुत किया है ?

PDF SARTHI.COM

(A) पं० बिरजू महाराज

(B) महात्मा गाँधी

(C) बिस्मिल्ला खाँ

(D) यतीन्द्र मिश्र

Ans – C

15. हिन्दी सिनेमा के जाने-माने गीतकार गुलजार की कविताओं का संपादन यतीन्द्र मिश्र ने किस नाम से किया है ?

(A) चार जुलाहे

(C) गिरिजा

(B) थाती

(D) सहित

Ans – A

16. किस पुस्तक में भरतनाट्यम और ओडिसी की प्रख्यात नृत्यांगना सोनल मान सिंह से यतीन्द्र मिश्र का संवाद संकलित है ?

(A) गिरिजा

PDF SARTHI.COM

(B) देवप्रिया

(C) यदा-कदा

(D) नौबतखाने में इबादत

Ans – B

17. 'नौबतखाने में इबादत' साहित्य की कौन-सी विधा है ?

(A) निबंध

(B) कहानी

(C) व्यक्तिचित्र

(D) साक्षात्कार

Ans – C

18. 'नौबतखाने में इबादत' में किनके जीवन के रुचियाँ, अंतर्मन की बुनावट, संगीत साधना आदि गहरे जीवन नुराग और संवेदना के साथ प्रकट हुए हैं ?

(A) बिस्मिल्ला खाँ

(B) महात्मा गाँधी

PDFSARTHI.COM

(C) प० विरजू महाराज

(D) मैक्समूलर

Ans – A

19. व्यक्ति चित्र है -

(A) जित-जित मैं निरखत हैं

(B) भारत से हम क्या सीखें

(C) नौबतखाने में इबादत

(D) बहादुर

Ans – C

20. प्रसिद्ध शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ का जन्म कब हुआ?

(A) 1912

(C) 1925

(B) 1916

(D) 1938

PDFSARTHI.COM

Ans – B

21. कमरूद्दीन/उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ के बड़े भाई कौन थे ?

(A) अलीवख्श

(B) सादिक हुसैन

(C) सलार हुसैन

(D) शम्सुद्दीन

Ans – D

22. उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ को रियाज के लिए जाना पड़ता था।

(A) संकटमोचन मंदिर

(B) पुराना बालाजी का मंदिर

(C) शिव मंदिर

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans – B

23. 5 - 6 वर्ष डुमराँव में बिताकर कमरूद्दीन कहाँ आ गये थे?

PDFSARTHI.COM

(A) लखनऊ

(B) बनारस

(C) काशी

(D) इलाहाबाद

Ans – C

24. शहनाई बजाने के लिए किसका प्रयोग होता है?

(A) वीणा

(B) संतुर

(C) रीड नरकट

(D) सितार

Ans – C

25. रसूलनाबाई थी-

(A) कवयित्री

(B) कथा वाचिका

PDF SARTHI.COM

(C) गायिका

(D) नर्त्तकी

Ans – C

26. बिस्मिल्ला खाँ के बचपन का नाम था ?

(A) नसरुद्दीन

(B) अमीरुद्दीन

(C) कमरुद्दीन

(D) अमीरुद्दीन

Ans – C

27. ……… का नाम जुड़ा है ?

(A) ईद

(B) बकरीद

(C) मुहर्रम

(D) मिलाद

PDF SARTHI.COM

Ans – C

28. काशी किसकी पाठशाला है ?

(A) संस्कृति की

(B) नृत्य की

(C) नर्त्तन की

(D) वादन की

Ans – A

29. बिस्मिल्ला खाँ के परदादा उस्ताद सलार हुसैन खाँ के निवासी थे?

(A) डुमरॉव

(B) सीतामढ़ी

(C) दरभंगा

(D) पटना

Ans – A

30. 'अमीरुद्दीन' नाम किसका था ?

PDF SARTHI.COM

(A) मिट्ठन मियाँ का

(B) बिस्मिल्ला खाँ का

(C) अलीबख्श का

(D) जमाल शेख का

Ans – B

PDF SARTHI.COM

PDF Sarthi.Com

12. शिक्षा और संस्कृति

• पाठ का सारांश

- अहिंसक प्रतिरोध सबसे बढ़िया शिक्षा है। वह बच्चों को मिलने वाली साधारण उक्षतर-ज्ञान की शिक्षा के बाद नहीं, पहले होनी चाहिए। इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि बच्चे को वह वर्णमाला लिखे और सांसारिक ज्ञान प्राप्त करे उसके पहले यह जानना चाहिए कि आत्मा क्या है, सत्य क्या है, प्रेम क्या है और आत्मा में क्या-क्या शक्तियाँ छुपी हुई हैं।
- मेरी राय में बुद्धि की सच्ची शिक्षा शरीर की स्थूल इन्द्रियों अर्थात् हाथ, पैर, आँख, कान, नाक वगैरह के ठीक-ठीक उपयोग और तालीम के द्वारा ही हो सकता है। आध्यात्मिक शिक्षा से मेरा अभिप्राय हृदय की शिक्षा है। इसलिए मस्तिष्क का ठीक-ठीक और सर्वांगीण विकास तभी हो सकता है, जब साथ-साथ बच्चे की शारीरिक और आध्यात्मिक शक्तियों की भी शिक्षा होती रहे।
- शिक्षा से मेरा अभिप्राय यह है कि बच्चे और मनुष्य के शरीर बुद्धि और आत्मा के सभी उत्तम गुणों को प्रयास किया जाए। पढ़ना-लिखना शिक्षा का अन्त तो है ही नहीं, वह आदि भी नहीं है। मैं चाहता हूँ कि सारी शिक्षा किसी दस्तकारी या उद्योगों के द्वारा दी जाए।
- आपको यह ध्यान में रखना चाहिए कि प्रारंभिक शिक्षा में सफाई, तन्दुरुस्ती, भोजनशास्त्र, अपना काम आप करने और घर पर माता-पिता को मदद देने वगैरह के मूल सिद्धान्त शामिल हों।
- जब भारत को स्वराज्य मिल जाएगा तब शिक्षा का ध्येय होगा? चरित्र-निर्माण। मैं साहस, बल, सदाचार और बड़े लक्ष्य के लिए काम करने में आत्मोत्सर्ग की शक्ति का विकास कराने की कोशिश करूँगा। यह साक्षरता से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है, किताबी ज्ञान तो उस बड़े उद्देश्य का एक साधनमात्र है। यह अच्छी मितव्ययिता होगी यदि हम विद्यार्थियों का एक अलग वर्ग ऐसा रख दें, जिसका काम यह हो कि संसार की भिन्न-भिन्न भाषाओं में से सीखने की उत्तम बातें वह ज्ञान ले और उनके अनुवाद देशी भाषाओं में करके देता रहे। मेरा नम्रतापूर्वक यह कथन जरूर है कि दूसरी संस्कृतियों की समझ और कद्र स्वयं अपनी संस्कृति है। मैं नहीं चाहता कि मेरे घर के चारों ओर दीवारें खड़ी कर दी जायें और मेरी खिड़कियाँ बन्द कर दी जायें। मैं चाहता हूँ कि सब देशों की संस्कृतियों की हवा मेरे घर के चारों ओर अधिक-से-अधिक स्वतंत्रता के साथ बहती रहे। मगर मैं उनमें से किसी के झोंक में उड़ नहीं
- जाऊँगा। लेकिन मैं नहीं चाहता हूँ कि भारतवासी अपनी मातृभाषा को भूल जाए, उसकी उपेक्षा करे, उस पर शर्मिन्दा हो।

PDFSARTHI.COM

12. शिक्षा और संस्कृति

* लेखक परिचय *

लेखक - महात्मा गाँधी

जन्म – 2 Oct 1869 (पोरबंदर,गुजरात)

पिता - करमचंद गाँधी

माता - पुतली बाई

पत्नी - कस्तुरबा गाँधी

→ 4 Dec 1888 में वकालत करने लंदन गये।

→ गाँधीजी 1893 से 1919 ई० तक रहे। वापस 15

→ हथियार - सत्य और अहिंसा

→ स्वराज की मांग, अधुत्तोंदार, स्वदेशी का नारा, ऊँच-नीच जाती धर्म, गुलामी से आजादी इस काम में गाँधी जी काफी सक्रिय थें |

→ रविन्द्र नाथ टैगोर ने सबसे पहले इन्हे महात्मा कहा |

→ पुस्तक - हिन्द स्वाराज, सत्य के साथ, मेरा प्रयोग

→ पत्रिका - हरिजन, यंग इंडिया

→ मृत्यु – 30 jan 1998 में

PDFSARTHI.COM

12. शिक्षा और संस्कृति

Short answer question

1. (i) वर्णमाला का ज्ञान और सांसारिक ज्ञान के पहले बच्चे को क्या जानना चाहिए?

उत्तर - वर्णमाला का ज्ञान और सांसारिक ज्ञान के पहले बच्चे को आत्मा, सत्य और प्रेम के बारे में जानना चाहिए। उसे यह जानना चाहिए कि आत्मा में कैसी-कैसी शक्तियाँ छिपी हुई हैं।

(ii) अहिंसक प्रतिरोध की शिक्षा बच्चों को कब मिलनी चाहिए?

उत्तर - अक्षर ज्ञान के पहले ही बच्चों को अहिंसक प्रतिरोध की शिक्षा मिलनी चाहिए। गाँधीजी सबसे बढ़िया शिक्षा अहिंसक प्रतिरोध को मानते हैं। क्योंकि, यह आत्मा को प्रभावित करता है और चित्त को निर्मल और शुद्ध कर देता है। अहिंसक प्रतिरोध से विपक्ष की शारीरिक क्षति नहीं होती, उसके मन की दुर्भावनाओं और पापपूर्ण अनैतिक आचरणों का नाश होता है।

(iii) गाँधीजी के अनुसार, शिक्षा का जरूरी अंग क्या होना चाहिए?

उत्तर - गाँधीजी के अनुसार, शिक्षा का जरूरी अंग है कि बालक प्रेम से घृणा को तथा सत्य से असत्य को पराजित करने की कला सीखे तथा आत्मबल से हिंसा पर विजय पाए।

(iv) गाँधीजी ने बच्चों को किस ढंग की तालीम देने की भरसक कोशिश की थी ? गाँधीजी के पास कैसा अनुभव था ?

उत्तर - गाँधीजी ने सत्याग्रह - संग्राम के उत्तरार्द्ध में बच्चों को अहिंसक प्रतिरोध की शिक्षा देने की भरपूर कोशिश की थी। उन्होंने टॉल्सटॉय फार्म और फिनिक्स आश्रम में बच्चों को यह शिक्षा देने की भरपूर कोशिश की थी कि जीवन-संग्राम में प्रेम से घृणा को, सत्य से असत्य को तथा अपने कष्ट झेलकर यानी अहिंसा से हिंसा को किस तरह परास्त किया जा सकता है। उन्होंने जीवन-संग्राम में इस सत्य का अनुभव किया था कि प्रेम से घृणा को, सत्य से असत्य को और अहिंसा से हिंसा को परास्त किया जा सकता है।

2. (i) गाँधीजी ने किस प्रकार की शिक्षा देने पर बल दिया है?

PDF SARTHI.COM

उत्तर - गाँधीजी ने उपयोगी दस्तकारी की शिक्षा देने पर बल दिया है।

(ii) महात्मा गाँधी के अनुसार, प्रारंभिक शिक्षा में किन मौलिक सिद्धांतों को सम्मिलित किया जाना चाहिए?

उत्तर - महात्मा गाँधी का मानना है कि प्रारंभिक शिक्षा में सफाई (स्वच्छता), तंदुरुस्ती (स्वास्थ्य), पाकशास्त्र तथा घर पर माता-पिता को मदद देने के मूल सिद्धांत सम्मिलित होने चाहिए। साक्षरता से अधिक महत्त्वपूर्ण है स्वच्छता, स्वावलंबन का ज्ञान, साहस, बल, सदाचार और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आत्मोत्सर्ग की शक्ति का विकास। किताबी ज्ञान स्वधन है, साध्य नहीं ।

3. **(i) इंद्रियों का बुद्धिपूर्वक उपयोग सीखना क्यों जरूरी है?**

उत्तर - गाँधीजी कहते थे कि बच्चे यदि इंद्रियों का बुद्धिपूर्वक उपयोग करना सीख लेते हैं तो उनका बौद्धिक विकास शीघ्रता और उत्तमता के साथ हो सकता है। यदि बच्चों को यह सिखाया जाए कि वे स्थूल इंद्रियों; जैसे – हाथ, पैर, आँख, कान, नाक आदि का ठीक-ठीक उपयोग कैसे करें, तो उनका बौद्धिक शिक्षण सही विधि से हो सकेगा।

(ii) गाँधीजी कताई और धुनाई जैसे ग्रामोद्योगों द्वारा सामाजिक क्रांति कैसे संभव मानते थे ?

उत्तर - गाँधीजी कताई और धुनाई जैसे ग्रामोद्योगों द्वारा सामाजिक क्रांति को संभव मानते थे। उनकी दृष्टि में ऐसे ग्रामोद्योग सामाजिक संरचना में एक महत्त्वपूर्ण बदलाव ला सकते थे, और वह भी बिना किसी संघर्ष और विरोध के । फलतः, गाँवों का दिनानुदिन होनेवाला ह्रास रुक जाएगा। इन ग्रामोद्योगों को बढ़ावा देने से समाज में न्याय-व्यवस्था की नींव पड़ेगी तथा गरीब-अमीर का अप्राकृतिक भेदभाव कमजोर होगा। इनके चलते प्रत्येक व्यक्ति अपना गुजर-बसर अच्छी तरह कर सकेगा और सबके भीतर स्वतंत्रता की भावना का उदय होगा।

4. **गाँधीजी के अनुसार शिक्षा का जरूरी अंग क्या होना चाहिए?**

उत्तर - गाँधीजी के अनुसार, शिक्षा का जरूरी अंग यह होना चाहिए कि बालक जीवन के संग्राम में प्रेम से घृणा को, सत्य से असत्य को और कष्ट सहन से हिंसा को आसानी के साथ जीतना सीखें।

5. **गाँधीजी किस तरह के सामंजस्य को भारत के लिए बेहतर मानते हैं, और क्यों ?**

उत्तर - गाँधीजी प्राकृतिक सामंजस्य को भारत के लिए बेहतर मानते हैं । प्राकृतिक सामंजस्य के कारण विभिन्न संस्कृतियाँ एक-दूसरे को प्रभावित करती हुई एक बृहत्तर संस्कृति का निर्माण करती हैं। इस प्रकार के सामंजस्य में

PDF SARTHI.COM

कोई संस्कृति न तो बड़ी होती है और न छोटी। प्राकृतिक सामंजस्य की स्थिति में सारी संस्कृतियों का अपना- अपना अस्तित्व सुरक्षित रहता है। भारत विभिन्न संस्कृतियों का संगम स्थल है। यदि विभिन्न संस्कृतियों में स्वाभाविक सामंजस्य बना रहता है तो भारत की प्रगति को कोई अवरुद्ध नहीं कर सकता।

6. "मैं चाहता हूँ कि सारी शिक्षा किसी, दस्तकारी या उद्योगों के द्वारा दी जाए।" गाँधीजी के इस कथन का आशय लिखें।

उत्तर - गाँधीजी के विचार में शिक्षा-प्रक्रिया में किसी दस्तकारी या उद्योगों का प्रमुख हाथ होना चाहिए। दस्तकारी या उद्योगों को केंद्र में रखकर उनके माध्यम से दी जानेवाली शिक्षा के दो लाभ हैं— जीवन का अर्थ समझ में आ जाता है तथा जीविकोपार्जन का सहज साधन भी प्राप्त हो जाता है। पहले शिक्षा ग्रहण कर लेना और बाद में जीविकोपार्जन के संबंध में सोचना असंगत शिक्षा-प्रक्रिया है।

12. शिक्षा और संस्कृति

1. 'शिक्षा और संस्कृति किसकी रचना है?

(A) भीमराव अंबेदकर

(B) महात्मा गाँधी

(C) नलिन विलोचन शर्मा

(D) यतीन्द्र मिश्र

Ans – B

2. महात्मा गाँधी के पिता का क्या नाम था ?

PDF SARTHI.COM

(A) धरमचंद गाँधी

(B) मीरचंद गाँधी

(C) हरचंद गाँधी

(D) करमचंद गाँधी

Ans -D

3. राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का जन्म कब हुआ था?

(A) 14 अप्रैल, 1891 ई०.

(B) 2 अक्टूबर, 1869 ई०

(C) 6 दिसम्बर, 1823 ई०

(D) 10 नवम्बर, 1891 ई०

Ans -B

4. गाँधीजी का दक्षिण अफ्रीका प्रवास कब से कब तक था?

(A) 1893 ई० से 1914 ई० तक

(B) 1892 ई० से 1913 ई० तक

(C) 1894 ई० से 1914 ई० तक

(D) 1893 ई० से 1913 ई० तक

Ans -A

5. दक्षिण अफ्रीका से गाँधी जी भारत कब लौटे?

(A) 1914 ई० में

PDFSARTHI.COM

(B) 1915 ई० में

(C) 1918 ई० में

(D) 1916 ई० में

Ans -B

6. गाँधीजी का देहांत कब हुआ?

(A) 30 जनवरी, 1945 ई०

(B) 30 जनवरी, 1947 ई०

(C) 26 जनवरी, 1948 ई०

(D) 30 जनवरी, 1948 ई०

Ans -D

7. 'बापू' कहकर कृतज्ञ राष्ट्र किन्हे याद करता है?

(A) महात्मा गाँधी को

(B) नेहरू को

(C) अंबेदकर को

(D) सुभाषचन्द्र बोस को

Ans -A

8. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अहिंसा दिवस कब मनाया जाता है?

(A) 14 नवम्बर

(B) 14 अप्रैल

PDF SARTHI.COM

(C) 2 अक्टूबर

(D) 14 अगस्त

Ans -C

9. भारत के 'राष्ट्रपिता' किसे कहा जाता है?

(A) महात्मा गाँधी

(B) जवाहरलाल नेहरू

(C) रवीन्द्रनाथ ठाकुर

(D) सुभाषचन्द्र बोस

Ans -A

10. किनके जन्म दिवस को 'अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस' के रूप में मनाया जाता है?

(A) राजेन्द्र प्रसाद

(B) नेहरू

(C) सरदार पटेल

(D) महात्मा गाँधी

Ans -D

11. रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने गाँधीजी को क्या कहा?

(A) महात्मा

(B) बापू

PDF SARTHI.COM

(C) राष्ट्रपिता

(D) मोहन दास

Ans -A

12. अंग्रेजों के खिलाफ अहिंसा का पहला प्रयोग कहाँ हैं |

(A) लंदन

(B) जापान

(C) दक्षिण अफ्रीका

(D) अमेरिका

Ans -C

13. गाँधीजी द्वारा लिखित पुस्तक है-

(A) हिंद स्वराज

(B) सत्यार्थ प्रकाश

(C) भारत की खोज

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans -A

14. शिक्षा से मेरा अभिप्राय यह है कि बच्चे और मनुष्य के शरीर, वुद्धि और आत्मा के सभी उत्तम गुणों को प्रगट किया जाय। पढ़ना लिखना शिक्षा का अंत तो है ही नहीं; वह आदि भी नहीं है। यह कथन किनका है?

(A) सरदार पटेल

(B) महात्मा गाँधी

PDF SARTHI.COM

(C) नेहरू

(D) राजेन्द्र प्रसाद

Ans -B

15. मैं चाहता हूँ कि सारी शिक्षा किसी दस्तकारी या उद्योगों के द्वारा दी जाए। गद्यांश किस पाठ का है और इसके लेखक कौन हैं?

(A) विष के दाँत — नलिन विलोचन शर्मा

(B) श्रम विभाजन और जाति प्रथा — भीमराव अंबेदकर

(C) भारत से हम क्या सीखे — मैक्समूलर

(D) शिक्षा और संस्कृति – महात्मा गाँधी

Ans -D

16. 'यंग इंडिया' पत्रिका का संपादन किनके द्वारा किया गया था?

(A) जवाहरलाल नेहरू

(B) राजेन्द्र प्रसाद

(C) महात्मा गाँधी

(D) अंबेदकर

Ans -C

17. इनमें से किस पत्रिका का संपादन गाँधीजी ने किया था?

(A) हरिजन

(C) मनोरमा

PDF SARTHI.COM

(B) विश्व भारती

(D) आनंद कादंबिनी

Ans -A

18. 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' किनकी रचना है?

(A) जवाहरलाल नेहरू

(B) रवीन्द्रनाथ ठाकुर

(C) महात्मा गाँधी

(D) सरदार पटेल

Ans -C

19. आध्यात्मिक शिक्षा से गाँधीजी का क्या अभिप्राय है?

(A) पुस्तक की शिक्षा

(B) यंत्रों की शिक्षा

(C) बुद्धि की शिक्षा

(D) हृदय की शिक्षा

Ans -D

20. महात्मा गाँधी के अनुसार उदात्त व बढ़िया शिक्षा क्या है?

(A) आध्यात्मिक शिक्षा

(B) यांत्रिक शिक्षा

(C) अहिंसक प्रतिरोध

(D) साक्षरता

PDF SARTHI.COM

Ans -C

21. शिक्षा के माध्यम से जीवन-संग्राम में क्या आसान से जीतना सीखना चाहिए?

(A) प्रेम से घृणा को

(B) सत्य से अहिंसा को

(C) कष्ट-सहन से हिंसा को

(D) उपर्युक्त सभी को

Ans -D

22. महात्मा गाँधी का जन्म कहाँ हुआ था?

(A) चम्पारण बिहार

(B) बदरघाट पटना

(C) पोरबंदर गुजरात

(D) महू मध्यप्रदेश Ans -C

23. वकालत की पढ़ाई के लिए गाँधीजी कहाँ गये थे?

(A) दक्षिण अफ्रीका

(B) लंदन

(C) अमेरिका

(D) जापान

Ans -B

24. अहिंसा और सत्याग्रह किनका सबसे बड़ा हथियार था?

PDF SARTHI.COM

(A) अंबेदकर का

(B) सुभाषचन्द्र बोस का

(C) नेहरू का

(D) गाँधीजी का

Ans -D

25. आध्यात्मिक शिक्षा से गाँधी जी का क्या तात्पर्य है?

(A) हृदय की शिक्षा

(B) व्यावहारिक शिक्षा

(C) तकनीकी शिक्षा

(D) कोई नहीं

Ans -A

26. कौन चाहते थे कि सभी देशों की संस्कृति की हवा उनके घर के पास बहती रहे?

(A) राजेन्द्र प्रसाद

(B) नेहरू

(C) महात्मा गाँधी

(D) सरदार पटेल

Ans -C

27. शेक्सपीयर किस भाषा के कवि है?

(A) जर्मन

PDF SARTHI.COM

(B) संस्कृत

(C) ग्रीक

(D) अंग्रेजी

Ans -D

28. टॉल्स्टॉय कौन थे?

(A) हिन्दी लेखक

(B) अंग्रेजी लेखक

(C) रूसी लेखक

(D) फ्रेंच लेखक

Ans -C

29. "मेरा धर्म कैदखाने का धर्म नहीं है।" किसका कथन है?

(A) नेहरू जी का

(B) महात्मा गाँधी का

(C) रवीन्द्रनाथ ठाकुर का

(D) मदर टेरेसा का

Ans -B

30. निम्न में से गाँधी जी की पुस्तक है-

(A) देवप्रिया

PDF SARTHI.COM

(B) हिन्द स्वराज

(C) यदा-कदा

(D) ड्योढ़ी पर अलाप

Ans -B

31. 'मेरा धर्म कैदखाने का धर्म नहीं है।' यह पंक्ति किस शीर्षक पाठ की है?

(A) नौबतखाने में इबादत

(B) आविन्यों

(C) शिक्षा और संस्कृति

(D) जित-जित मैं निरखत हूँ

Ans -C

PDF SARTHI.COM

13. राम बिनु बिरथे जगि जनमा, जो नर दुख में दुख नहिं मानै

गुरु नानक

कवि → संत गुरुनानक

जन्म → 1469 में लाहौर के तलवंडी ग्राम में हुआ जो वर्तमान में पाकिस्तान में हैं, गुरुनानक जी का जन्मस्थल नानकाना साहब कहलाया|

माता → तृप्ता

पिता → कालू चन्द्र खत्री

पत्नी → सुलक्षणि

कवि के विषय में सीखों के प्रथम गुरु गुरुनानक -: थे | इसके दोहे में जीवन के अनुभवों को कबीर के रचनाओं के समान बुझे गये है गुरुनानक जी की भेट मुगल सम्राट बाबर से हुए थे ||

रचना -: जपुजी, आशादीवार रहिदास सोहिथे

1539 में | कहते इसकी मृत्यु हो गई 'वाह्य गुरु'

राम नाम बिनु बिरथे जगि जनमा

राम नाम बिनु बिरथे जगि जनमा । बिखु खावै बिखु बोलै बिनु नावै निहफलु मटि भ्रमना ।। पुसतक पाठ व्याकरण बखाणें संधिआ करम निकाल करै । बिनु गुरसबद मुकति कहा प्राणी राम नाम बिनु अरुझि मरै ।। डंड कमंडल सिखा सूत धोती तीरथ गवनु अति भ्रमनु करै । रामनाम बिनु सांति न आवै जपि हरि हरि नाम सु पारि परै ।। जटा मुकुट तन भसम लगाई वसन छोड़ि तन नगन भया । जेते जीअ जंत जल थल महीअल जत्र तत्र तू सरब जीआ ।। गुरु परसादि राखिले जन कोउ हरिरस नानक झोलि पीआ ।

PDF SARTHI.COM

अर्थ -: प्रस्तुत कविता राम नाम बिनु बिरथे जगी जन्मा गुरुनानक जी द्वारा रचित हैसमें गुरुनानक इ , नाम के बिना इस संसार में जन्म लेना व्यर्थ हैं, इसके बिना मनुष्य विष खाता -जी कहते है, कि राम | हो और मनुष्य की बानी राम नाम के बिना विष के समान हो जाता है

मनुष्य पुस्तक पढ़ ले व्याकरण का बखान कर ले। और तीनों समय संध्याकाल उपासना कर थे। परंतु गुरु शब्द के बिना मुक्ति नही मिलती और रामनाम के बिना मनुष्य सांसारिक बंधन में उलझकर यह - जाता है।

मुल्य डंडा, कमंडल जनेऊ, धोती धारण कर तीर्थ छात्रा करता है। परंतु राम नाम के बिना शांति कहा मिलती हैसे मुक्ति पा माया-अतः प्राणि को हरिनाम का जप करना चाहिए। जिससे की वह मोह , सके।

मनुष्य जटा मुकुट धारण करता हो तब पर भस्म लगाता है। और कपड़ा छोड़ नग्न हो जाता हो यह सब बाहरी दिखावा ही मनुष्य को रामनाम का जप करना चाहिए। क्योंकि संसार में स्थल पर रहने वाली जितरे भी जीव, जंतु तथा वायु और जलमेंर होवाले पा से जीवित ही जिस पर प्राणी उन्हीं के कृ- पो रखा हो उसी प्रकार तुम भी हरिरस का घोल पीकर संसारिक सुख तथा -हमने हरिरस का चोल मोह माया से मुक्त हो जाओ।

जो नर दुख में दुख नहिं मानै

जो नर दुख में दुख नहिं मानै । सुख सनेह अरु भय नहिं जाके, कंचन माटी जानै ।। नहिं निंदा नहिं अस्तुति जाके, लोभ मोह अभिमाना । हरष सोक तें रहै नियारो, नाहि मान अपमाना ।। आसा मनसा सकल त्यागि कै जग तें रहै निरासा । काम क्रोध जेहि परसे नाहिन तेहिं घट ब्रह्म निवासा ।। गुरु किरपा जेहि नर पै कीन्हीं तिन्ह यह जुगति पिछानी । नानक लीन भयो गोबिंद सो ज्यों पानी सँग पानी ।।

अर्थ -: प्रस्तुत कविता गुरुनानक द्वारा रचित है | इसके माध्यम से "जो नर दुख में दुख नहीं मानै" कवि कहते है कि जो नर दुख में दुख नही मानता हैं, जिसके पास सुख स्नेह और भय नहीहैंजो ,

PDF SARTHI.COM

और अपमान से पड़े -सोच सोना को मिट्टी समझता हैं, जो निन्दा और स्तुति से प्रभावित न हो। तथा –अपमान एक समान हो जो आशा -शोख से अलग रहता हो तथा जिसके लिए मान-हो। जो हर्ष ,वास्था। सच त्यागकर जग से निराश हो, जिसके पास काम क्रोध न हो उसके शरीर में ब्रम्हा का वास होता हैं |

जिस व्यक्ति पर गुरु की कृपा होती हैं वह उस ब्राम्हण को प्रप्ति की युक्ति को पहचान सकता हैं | पानी में पिल जाता -अतः गुरुनानक जी उसी प्रकार गोविंद की भक्ति में लीन हो गए जिस प्रकार पानी है।

गुरुनानक-

–)Objective (-

1. गुरुनानक का जब कब हुआ था ?

Ans - 1469

2. सिख धर्म के संस्थापक कौन थे ?

Ans – गुरुनानक

3. गुरुनानक किस काल के कवि थे ?

Ans - भक्तिकाल

4गुरुनानक किस भक्तिधारा के कवि थे .?

Ans - निर्गुण भक्तिधारा

PDF SARTHI.COM

5. गुरुनानक की भेट किस मुगल शासक से हुई थीं?

Ans – बाबर

6. गुरुनानक के उपदेश्य में मिलती हैं |

Ans – गुरु की महत्ताप की महत्ताब्राम्हण की सर्वशक्तिमत्ता, राम जा ,

7. गुरुनानक की रचनाओं का संग्रह गुरू अर्जुन देव ने जो गुरु ग्रंथ साहिब से प्रसिद्ध कब दिया ?

Ans - 1604 ई

8. नानक के अनुसार गुरु की कृपा कैसे नर पर होता है ?

Ans - जो दुख में दुख नही मानता, जो सुखदुख मे उदासीन रहता-, जो कंचन माटी में भेद नही समझता

9. गुरु अर्जुन देव सिखों के कौन से थे ?

Ans – पाँचवे गुरु

10. नानक की दृष्टि में ब्रम्हा का निवास कहाँ होता है ?

Ans - सच्चे हृदय में

11 गुरुनानक की रथनाओं का संग्रह किसने किया .?

Ans - गुरु अर्जुन देव सिंह

12 ण्ड का विरोध निर्गुन बघु की प्रचार   कियाकिस कवि ने वर्णाश्रम व्यवस्था और कर्मका .?

PDFSARTHI.COM

Ansगुरुनानक ने -

13. गुरुनानक के पद है ?

Ans- प्रेम सेव भक्ति के मधुर गीत

14. किसी रचना का संग्रह गुरु ग्रंथ नाम से प्रसिद्ध हो?

Ans - गुरुनानक

15. हरिरस से कवि का क्या अभिप्राय ही राम नाम का जप

Ans – राम म का जपना -

16. गुरुनानक पंजाबी के साथ | में भी कविता लिखी है --------

Ans – हिन्दी

17. किसके बिना प्रण को मुक्ति नही मिलती है ?

Ans – गुरु ज्ञान के बिना

-Subjective–

1. कवि किसके बिना जगत् मे यह जन्म व्यर्थ मानता है ?

Ans – कवि गुरुनानक देव राम| बिना जगत मे यह जन्म को व्यर्थ मानते है नाम के-

2. वाणी कब विष के समान हो जाती है ?

PDF SARTHI.COM

Ans - जब मनुष्य राम नाम का उच्चारण नहीं करता है, तब उसका वाणी विष के समान हो जाता है- |

3. राम नाम कीर्तन के आगे कवि किन कर्मों की व्यर्थता सिद्ध करता है ?Ans - कवि गुरुनानक के आगे अनेक कर्म जैसेडंडा -, कमंडल, जेनऊ धोती, सिर पर भस्म लगाता तथा हमेशा काम में ही उलझें रहना आदि की व्यर्थता सिद्ध करता है।

4. प्रथम पद के आधार पर बताएँ की कवि ने अपने युग में धर्म कैसे रूप देखे थे-साधना के कैसे -?

Ans - प्रथम पद के आधार पर कवि अपने युग में सभी कर्मों मे राम नाम का गुणगान तथा हरिभजन करने को सर्वोपरी माना है |

5. हरिरस से कवि का क्या अभिप्राय है |

Ans – हरिरस से कवि का अभिप्राय 'राम नाम की भक्ति से है |

6. कवि की दृष्टि में ब्रहा का निवास कहाँ होता है ?

Ans – कवि की दृष्टि से ब्राम्हा का निवास स्थान ऐसे व्यक्ति के हदय में होता हैजो दुख मे दुख , क्रोध से मुक्त हो।-सम्मान समान हो। जो काम-नही मानता हो, जिसके लिए मान

7. गुरु की कृपा से किस युक्ति की पहचान हो पाती है ?

Ans | क्ति कि पहचान हो पाती हैगुरु के कृपा से ब्राम्ह प्राप्ति के यु –

8. व्याख्या करें -:

| क) राम नाम बिना अरुझी मरै)

व्याख्या | मनुष्य राम नाम के जप के बिना सांसारिक मोह माया में उलझकर मर जाता है -:

ख) कंचन मारी जानै)

व्याख्या सोना को भी माटी -:समझना

ग) हर्ष,शोक ते रहै नियारो, नाही मान अपमाना)

व्याख्या | हर्ष, शोक मे भी जो व्यक्ति अलग रहता है -:

घ) नानक लीन भयो गोविंद सो, ज्यों पानी संग पानी)

व्याख्या पानी में मिल जाता है, उसी प्रकार गुरुनानक गोविंद कि भक्ति मे मिल -जिस प्रकार पानी -: | जाते है

PDF SARTHI.COM

14. प्रेम अयनि श्री राधिका

लेखक - रसखान

जन्म → इनके जन्म के बारे में सही सूचना प्राप्त नही है लेकिन कहा जाता है कि दिल्ली के पठान राजवंश में इनका जन्म हुआ।

ग्रंथ → प्रेमवाटिका (1610 ई०), सुजान रसखान

→ दिल्ली से भागकर ब्रजभूमि चले गये।

→ ये कृष्ण भक्ति तथा वैष्णव धर्म के गहन संस्कार थे |

→ ये आलौकिक प्रेम की ओर आकृष्ट होकर भक्त हो गए |

→ ये स्वामी विठलनाथ से परिष्टिमार्ग की दीक्षा ली |

→ सुजान रसखान ग्रंथ में कृष्ण की भक्ति संबंधी रचना है |

→ रसखान ने कृष्ण का लीला गान पदों में नही सवैया में किया है।

→ रसखान सेवैया द्वन्द्व में सिद्ध थे।

→ रसखान का भाषा ब्रजभाषा था |

→ इस कविता में रसखान कृष्ण पर अपना सर्वस्व जीवन न्योछावर करना चाहते है |

* हिन्दी अर्थ व्यख्या :-

PDFSARTHI.COM

प्रेम अयनि श्री राधिका

दोहा → प्रेम अयनि श्री राधिका प्रेम बरन नंदनंद।

प्रेमवाटिका के दोऊ, माली - मालिन द्वन्द्व

अर्थ → प्रस्तुत पंक्ति हमारे गोधूलि पाखंड के प्रेम अयनि श्री राधिका से लिया गया है, जो रसखान द्वारा उद्धित है | कविता के माध्यम से कवि कहते है कि राधा प्रेम की खाजाना है, तथा कृष्ण प्रेम का रूप हैं। ये दोनों संसार रूपी बारिका के माली तथा मालीन है | इनके दया दृष्टि से ही इस संसार के फलरूपी प्राणी जीवित है |

दोहा :- मोहन छबि रसखानि लाखि अब दृग अपने नाहिं।
अँचे आवत धनुस से छूटे सर से जाहिं।

अर्थ :- जब से रसखान को कृष्ण जी के दर्शन हुए है। "तब से उनकी दृष्टि भी अपनी नहिं है | अर्थात उनकी आँखे हमेशा कृष्ण की दर्शन चाहते है | जैसे धनुष से बान घुटकर चला जाता है |

दोहा - भो मन मानिक लै गयो चितचोड़ नंद।

अब बैमन मै का करूँ परी फेट के कंद।

अर्थ :- कवि कहते हैं कि मेरे मन को कृष्ण चुड़ाकर ले गये है | मैं तो अब समस्या से पड़ गया हूँ। कि बिना मन के मैं क्या करूँ |

दोहा :- प्रीतम नन्दकिशोर, जा दिन तें नैननि लग्यौ ।

PDF SARTHI.COM

Pdf, Notes OR Test Series लेने के लिए हमें WhatsApp करे - 7488296191

मन पावन चितचोर पलक ओट नहि कर सकौ |

अर्थ : → कवि अपनी विवशता प्रकट कर रहे है कि जिस "दिन से कृष्ण जी के दर्शन हुए है, तब से वे कवि के मन को चुरा लिये है, अब कवि हमेशा कृष्ण जी के ही रूप का दर्शन चाहते हैं |

करील के कुंजन ऊपर वारौ

सवैया - या लकुटी अरू कामरिया पर राज तिहूँ पुर की तजि डारौं |

आठहुँ सिद्धि नवोनिद्धी को सुख नंद की गाई चराइ बिसारौ |

अर्थ → उपयुक्त सेवैया के माध्यम से कवि कहते है, यदि मुझे कृष्ण जी की छोटी लाठी तथा कंबल मिल जाए। तो मैं संसार की सभी सुखों को छोड़ दूंगा। और यदि मुझे नंद के गाय चराने का अवसर मिल जाए तो मैं आठों सिद्धि और नवोनिद्धी को त्याग दूंगा।

सवैया - रसखानि कबौ इन आँखिन सौं ब्रज के बनलाग तडाग निहारौ

कोटिक रौ कल धौत के धाम करील के कुंजर ऊपर व ग्यै

अर्थ :- कवि का कहना है कि जब से उसने ब्रज के वनों, बगीचा तथा तलाब को देखा है, तब से उन्हें वहाँ के काटेदार पौधे और तिते फलों के पौधे के समझ संसार के कड़ोरो 'सुनहरे महल और इन्द्रधाम भी तुच्छ नजर आते है |

- Objective -

1. कवि करील गुंजन किस पर अर्पन करना चाहते है ?

PDF SARTHI.COM

Ans - कृष्ण पर

2. कवि ने माली-मालिन किसे कहाँ है ?

Ans - राधा - कृष्ण को

3. रसखान के रचनाकाल के समय किसका राज्यकाल था ?

Ans - जहाँगीर का

4. रसखान ने कृष्ण लीला का गान किसमें किया है ?

Ans - सवैयों में

5. रसखान किस पर सैकड़ो इन्द्रलोक को न्योछावर करने की करते है ?

Ans - करील के कुंजने पर

6. रसखान किस विषय में सिद्ध था ?

Ans - सवैया छन्द

7. कवि रसखान कृष्ण की भक्ति संबंधी रचना किस यंत्र पे की है।

Ans - प्रेमवारिका में सुजान रसयान में

8. कवि रसखान ने चितचोड़ किसे कहा है ?

Ans - कृष्ण को

9. कवि रसखान दिल्ली से कहाँ चले गये ?

PDF SARTHI.COM

Ans – ब्रजभूमि

10. कवि रसखान किस भाषा के कवि थे ?

Ans - ब्रजभाषा

11. सम्प्रदायमुक्त कृष्ण भक्ति के कवि है ?

Ans - रसखान

12. किस कवि को गोस्वामी विठ्ठलनाथ ने पृसरिमार्ग की शिक्षा दी ?

Ans – रसखान

Subjective - कविता के साथ

1. कवि ने माली - मालिन किन्हें और क्यों कहा है ?

Ans - कवि रसखान कृष्ण और रधिका को माली - मालिन कहा है क्योंकि कवि के अनुसार जिस प्रकार वाटिका में माली - मालीन का कार्य करके पुष्प की देखभाल करता है, ठीक उसी कार्य को प्रेम वाटिका में कृष्ण – राधिका करते है |

2. द्वितीय दोहे का काव्य-सैंदर्य स्पष्ट करें।

Ans - द्वितीय दोहे के अनुसार कवि कहते है, जब उसने कृष्ण जी की दर्शन किये है | तब से उनकी द्दष्टी अपने नही है, उनकी आँखे हमेशा कृष्ण जी की ही दर्शन चाहते है तथा उनका नयन भी कृष्ण दर्शन ही चाहते है |

PDFSARTHI.COM

3. कृष्ण जी को कवि ने चितचोर क्यों कहा है ?

Ans – कवि रसखान ने कृष्ण को चितचोर कहा है, क्योंकि कवि के अनुसार नंद उनके चित को चुरा लिये है।

4. सवैये में कवि की कैसी आकांक्षा प्रकट होती है असपस्ट करें | स्पष्ट करें |

Ans – सेवैये में कवि की अगले जन्म की अकांक्षा प्रकट होती है। 'कवि कहते है, कि मुझे तीनों लोक के सुख कृष्ण के छोटी लाठी और कंबल पर समझ आते है |

PDF SARTHI.COM

15. अति सुधो सनेह का मार्ग है

लेखक - घनानंद

रीतियुक्त काव्यधारा के भिरमौर कवि है |

जन्म:- 1689 (आसपास) धया नादिर साह के सैनिकों ने "ने 1739 में धनानंद का धया कर दी।

→ मुगल शासक मोहम्मद शाह रंगीले के पदों पर मूल मुंशी बनकर काम करते थे |

→ धनानंद गायक के साथ-साथ श्रेष्ठ कवि भी थे | ये नर्तकी सुजान से प्यार करते थे |

→ विराम के बाद वृदावन जाकर काव्य रचना शुरू किये।

→ 1739 नादिरशाह सैनिक ने दिल्ली पर आक्रमण किया। तो उस समय धनानंद मोहम्मद शाह रंगीले के यहाँ मुशी पर कार्य करते थे। सैनिक इसे घेर लिया और पूछा जर, जर, जर (सोना) कहाँ है | तब धनानंद ने रज, रज, रज बोला तीन मुठ्ठी धूल दे दिया तब धनानंद को मार दिये |

→ धनानंद प्रेमपीर के कवि है |

→ इनकी कविता में प्रेम की पीड़ा, मस्ती और वियोग देखने को मिला है |

ग्रंथ :- सुजानसागर, विरहलीला, रसकेलि बल्ली आदि। इनके सवैये और धनाकारी भी प्रसिद्ध है |

भाषा - ये ब्रजभाषी थे।

दोहा :- अति सूधो स्नेह को मारग है जहाँ नेकु सयमप बॅाक नही।

तहाँ साँचे चलै तज़ि आपनपै झझुकें कपरी जे निसाँक नही |

अर्थ :- प्रेम का मार्ग अत्यंत सरल है | यहाँ थोड़ी सी भी चतुराई नही चलती है, इस मार्ग पर वही चल सकता है | जिनके मन उदार तथा निर्मल अभिमानी, कपरी तथा शोक करने वाला इस मार्ग पर चलने से झिझकता है, अर्थात डरता है।

PDF SARTHI.COM

धनानंद प्यारे सुजान सुनौ यहाँ एक तै दूसरो आँक नही।

तुम कौन धौं पारी पदे है कहौ मन लेहु पै देहू धराक नही |

अर्थ → धनानंद जी कहते है, प्यारी सुजान सुनो यहाँ एक तुमही हो और कोई नही बोलो तुम कौन - सा पाठ पढती हो | मेरे मन हो मेरे मान को ले लेती है पर अपना दर्शन भी नहीं देते हो।

मो० अँसुवाहिनी लै बरसौ -

दोहा :- परका नहि 'देह को धारी फिशै परजन्य जथारथ है दरसौ |

निधि-नीर सुधार की समान करौ सबकी विधि सज्जनता सरसौ|

अर्थ → हे बादल तुम दूसरो के उपकार के लिए अपना शरीर को धारण करता है | समुंद्र से पानी ले जाकर पानी बरसाकर अपनी सज्जनता का परिचय देता है |

दोहा :- धनानंद जीवनदायक है | कुछ मेरियौ पीर हिऐ परसौ |

कबहू वा बिसासी सुजान के आँगन मो अँसुवाहिनी 'लै बरसौ |

अर्थ → हे जीवनदायक मेरी समस्याओं को भी समझो और मेरी आँसुओं को लेकर उस विश्वव्यापी सुजान के आँगन में वर्षा कर दो |

- Objective –

1. प्रेम की पीर के कवि है?

Ans- धनानद

PDFSARTHI.COM

2. मो० अँसुवाहिनी लै बरसौ के कवि है ?

Ans- धनानंद

3. धनानंद की रचना है ?

Ans - सुजान रसखान

4. कवि परजन्य किसे कहा हर

Ans - बादल

5. धर्मानंद कवि ही

Ans - रितीमुक्ति

6. धनानंद के प्रमुख ग्रंथ है ?

Ans- सुजानसागर, विरहलीला, रसकेलि बल्ली |

7. धनानंद की कविता में किसकी गहरी ज्यंजना है ?

Ans - प्रेम की पीड़ा, मस्ती, वियोग

8. कवि के अनुसार परहित के लिए देह कौन धारण करता है ?

Ans - मेघ

9. कुंजन का अर्थ है ?

Ans - कंबल

PDF SARTHI.COM

1. कवि प्रेममार्ग को 'अति सुधो' क्यों कहता है ? इन मार्ग की विशेषता क्या है ?

Ans - क्योंकि प्रेममार्ग पर थोड़ी सी चतुराई और टेढ़ेपन की जरूरत नही है, इस मार्ग पर वही चल सकता है जिसका मन सच्चा हो इस मार्ग की विशेषता यह है, कि यहाँ अभिमानी, कपटी व्यक्ति नहीं चल सकता है, या चलने से डरता है |

2. मन लेहू पै देहू धराक नही से कवि का क्या अभिप्राय है ?

Ans - इससे कवि का अभिप्राय यह है कि कवि सुजान से संबंधित करके कहते है, कि हे सुजान तुम मेरे मन को ले लेती हो पर मुझे छयँक भी नही देते है |

3. द्वितीय छंद किसे संबोधित है और क्यों ?

Ans - द्वितीय छंद में कवि बादल को संबंधित करते हुए। क्योंकि कवि को आशा है कि बादल दूसरे के उपकार के लिए दी |अपनी देह को धारण किये घुमतें है तो उसकी भी समस्या पर ध्यान देंगे |

4. परहित के लिए देह कौन धारण करता है ? स्पस्ट कीजिए |

Ans - बादल परहित के लिए ही अपनी देह धारण करता है, क्योंकि बादल समुद्र के खारे जल को भी मीठा बना देता हो |

5. कवि कहाँ अपने आँसुओं को पहुंचाना चाहता है और क्यों ?

Ans - कवि अपने आँसूओ को सुजाता के आँगन में पहुँचाना चाहता है | ताकि उसे भी पता चले कि कवि वर्तमान में किस समस्या से गुजर रहे है |

PDFSARTHI.COM

6. व्याख्या करें |

(क) यहाँ एक तै दूसरौ आँक नहीं |

Ans - यहाँ एक तुम्ही हो दूसरा कोई नहीं |

PDF SARTHI.COM

16. स्वदेशी

लेखक :- बदरीनरायण चौधरी प्रेमघन

जन्म :- 1855 मिर्जापुर (उत्तरप्रदेश)

→ ये भारतेन्दु युग के कवि है |

निधन → 1922

ये भारतेन्दु हरिषचन्द्र को अपना आदर्श मानते थे।

→ 1874 ई0 में मिर्जापुर मे रसिक समाज का स्थापना किया।

→ 1874 आनंद कांदमनी मासिक पत्रिका तथा नागरी नामक साप्ताहिक पत्रिका का संपादन किया ।

→ साहित्य सम्मेलन के कलकत्ता अधिवेश में सभापति रहे।

→ इसकी रचना प्रेमधन सर्वस्व के नाम से संकलित होती है।

→ प्रेमधन एक नाटकर, कवि, निबंधकार तथा समीक्षक है |

→ प्रसिद्ध नाटक प्रभाग रमाभजन तथा भारत सौभाग्य है |

→ उन्होंनें जीर्णजनपद नामक काव्य की रचना कीया है | जिसमें उन्होंनें ग्रामीण जीवन का यर्थात चित्रण किया है | → इसकी रचना ब्रजभाषा तथा मगधी मे मिलती है | → स्वदेशी पाठ प्रेमधन सर्वस्व से लिया गया है |

→ इसके दोहे में नव जागरण का स्वर मुखरित होता है |

1. सबै विदेशी वस्तु नर, गति रीत रति लख्यात।

भारतीयता कछु न अब भारत मे दरसात|

अर्थ : → भारत में भारतीयता नाम का कुछ नही बचा है |यहाँ के लोगों का स्वभाव , रीति - रिवाज सभी पक्षों में विदेशी वस्तु से लगाव हो गया है |

2. मनुज भारती देखि कोउ, सकत नहीं पहचान ।

PDF SARTHI.COM

मुसल्मान , हिंदू किधौं के है ये क्रिस्तान ।

अर्थ :- देखकर कोई पहचान नही कर सकता है कि यह आदमी भारतीय है क्योंकि मुसलमान, हिन्दू सभी अंग्रेज जैसे लगते है |

3. पढ़ी विद्या प्रदेश की बुद्धि विदेशी पाय।

चाल - चलन परदेश की गई उन्हें अतिभाय -

अर्थ :- विदेशी विद्या पढ़कर और विदेशी बुद्धि पाकर उनको विदेशी चाल चलन बहुत अच्छा लगने लगा है।

4. ठरे, विदेशी ठार सब, बन्यो देश विदेश

सपने हूँ जिनमें न कहुँ भारतीयता लेस |

अर्थ :- विदेशी ठार में बस सजु गये है देश भी विदेश जैसा लगने लगा है सपना में भी भारत के लोगों में भारतीयता नाम की कोई चीज नही बची है।

5. बोलि संकत हिन्दी नहीं अब मिलि हिंदू लोग।

अंग्रेजी भाखान करत सब अंग्रेजी उपयोग |

अर्थ:- अब हिन्दू बोरा भी परस्पर हिंदी में बात नही करते हैं अंग्रेजी बोलना और अंग्रेजी वस्तु का उपयोग कसा ही भारतीय को अच्छा लगता हीं

6. अंग्रेजी वाहान बसन, बसन भेष रीति ओ नीति ।

अंग्रेजी रुचि गृह, संकेत वस्तु देश विपरित |

PDF SARTHI.COM

अर्थ :- अंग्रेजी वाहान अंग्रेजी वस्त्र, अंग्रेजी वेशभूषा, अंग्रेजी रिति - रिवाज, अंग्रेजी विचार अंग्रेजी रुचि आदि सभी चीजें देशी के विपरित विदेशी लोगों को अच्छा लगने लगा है |

7. हिन्दुस्तानी नाम सुनि अब ये सकुधि लाजात |

भारतीय सब वस्तु ही, सौ से हाथ घिनात |

अर्थात :- हिन्दुस्तानी नाम सुनकर ही भारत के लोग लज्जित हो जाते है। भारतीय सभी वस्तु से भारतवासियों को घृणा हो गयी है

8. देस नगर बमक बनो सब अंग्रेजी चाल ।

हारन में देखहु भरा बसे अंग्रेजी माल |

अर्थ :- संपूर्ण देशवासी की वेशभूषा अब शहरी हो गयी है | सारे 'चाल-चलन में अब अंग्रेजीपन आ गया है | ग्रामीण बाजार में अब केवल अंग्रेजी वस्तु हो बिखड़े दिखते है |

जिनसों सम्हल सकत नहिं तन की धोती ढीली–ढीली

धोती देश प्रबंध करि लेंगे वे यह, कैसी खाम ख्याली ।"

अर्थ :- जिन नेताओं के शरीर में भारत की ढिली-ढिली धोती नहीं संभाल में आती है,

वो देश का शासन संभाल लेंगे ये तो उनकी कोरी कलपना जैसी है।

दास वृति की चाह चहूँ दिली चारहूँ 'वरन बढ़ाली

करत खुशामद झूठ प्रशंसा मानहूँ बने डकाली।

PDF SARTHI.COM

अर्थ :- गुलामी कर जीवनयापन करना ब्राहमण क्षेत्रीय शुद्ध-वेश्य चारों वर्णों के लोगों की चाहत हो गई है |अंग्रेजी की खुशामद करने वाले भारतीय वस्तु की झूठी प्रसंशा करने वाला ये भारतीय मानो उफाली बजाने जैसी है |

Objective -

1. स्वेदेशी के रचनाकार कौन है

Ans - बदरीनारायण चौधरी (प्रेमघन)

2. बदरीनारायण प्रेमघन का जन्म कब हुआ था ?

Ans – 1855 ई०

3. प्रेमघन अपना आदर्श किसे मानते है ?

Ans - भारतेन्दु हरिशचन्द्र को

4. आनंद कांदमनी मालिक पत्रिका का संपादन कौंन किये हैं ?

Ans – प्रेमघन

5. प्रेमधन जी कवि के साथ-साथ क्या थे ?

Ans - निबंधकार, नाटककार, कवि, समीक्षक

6. कवि प्रेमघन के अनुसार भारतीय हार बाजार किस समान से भरे है ?

Ans - विदेशी समान

7. कृवि प्रेमघन के अनुसार, भारतीय लोग क्या बनकर खुशामद और झूठी प्रशंसा करते है |

PDFSARTHI.COM

Ans – डफाली

8. बोलि सकत ------- नही। अब मिलि हिन्दी लोग |

Ans - हिन्दी

9. प्रेमघन के अनुसार किस काव्य में ग्रामीण जीवन का यर्थार्थवादी चित्रण है |

Ans – जीर्ण जनपद

10. कवि प्रेमघन द्वारा अधिकांश काव्य रचना किस भाषा में की गई है ?

Ans - ब्रजभाषा और अवधि

11. प्रेमघन के प्रसिद्ध नाटक कौन है ?

Ans - रामागमण

12. स्वदेशी कविता किससे संकलित संकलित

Ans - प्रेमघन सर्वस्व से

- Subjective -

1. कविता के शीर्षक सार्थकता स्पष्ट करें |

Ans. - ' स्वदेशी ' शीर्षक सार्थक है | 'क्योंकि इस कविता में लोगों को स्वदेशी वस्तु से नफरत जैसी हो गई है | लोग स्वदेशी का नाम सुनकर लज्जा अनुभव करत है | इस कविता में स्वदेशी वस्तु से अलग भारतीय को दिखाया गया है |

PDF SARTHI.COM

2. कवि को भारत में, भारतीयता क्यों नहीं दिखाई पड़ती है ?

Ans - क्योंकि भारतीय लोगों के स्वभाव रीति-रिवाज, रहन-सहन, खान-पान, चाल-चलन, वेशभूषा सब विदेशी हो गया है |अब सबको विदेशी लोग ही अच्छा लगने लगा है| यहाँ तक की भारतीय लोग को भारत का नाम से भी घृणा, होने लगा है। इसलिए कवि को भारत मे भारतीयता नही दिखता है |

3. कवि समाज के किस वर्ग की आलोचना करते है और क्यों ?

Ans - कवि समाज के प्रबुद्ध लोग की आलोचना करते है, क्योंकि प्रबुद्ध लोग विदेशी विद्या – पढ़कर, विदेशी बुद्धि पाकर अपने चाल-चलन को भी छोड़ दिया है | उन्हें विदेशी चीजें तथा विदेशी भाषा ही अच्छा लगने लगा है |

4. कवि नगर, बाजार और अर्थव्यवस्था पर क्या टिप्पणी करता है ?

Ans - कवि नगर, बाजार, अर्थव्यवस्था पर टिप्पणी देते हुए कहते है कि सब पर विदेशी हावी हो गया है | बाजार, नगर में केवल विदेशी वस्तु ही बिखड़े दिखाई पड़ते है |

5. नेताओं के बारे में कवि की क्या राय है ?

Ans - स्वदेशी पाठ मे प्रेमघन जी कहते है, जिन नेताओं से भारत की ढीली – ढीली धोती नहीं संभल सकती वो देश को क्या संभालेगें ये तो उनकी कोरी कल्पना है।

6. कवि ने डफाली किसे कहा और क्यों ?

Ans - कवि प्रेमधन जी डफाली उनको कहा है जिसको भारतीय वर्ण व्यवस्था अच्छा लगता है, क्योंकि ये लोग गुलामी करके जीना चाहते है और स्वदेशी वस्तु की झूठी प्रशंसा करते है।

व्याख्या करें :-

PDFSARTHI.COM

(क) मनुज भारती देखि कोउ ; सकत नहीं पहिचान ।

Ans - प्रस्तुत पद्यांश हमारे पाठ पुस्तक गोधूलि भाग -2 के स्वदेशी शीर्षक प्रेमघन द्वारा रचित पाठ से लिया गया है | कवि के अनुसार, भारतीय लोग पर विदेशी विद्या पढ़कर, विदेशी बुद्धि पाकर, विदेशी वेशभाषा , चाल- चलन, विदेशी भाषा हावी हो गया है ' हम भारत के लोगों को देखकर यह नहीं बता सकते है कि ये भारतीय नागरीक है |

(ख) अंग्रेजी रुची गृह सकल वस्तु देश विपरित ।

Ans - प्रस्तुत पद्यांश हमारे पाठ-पुस्तक गोधूली भाग - 2 स्वदेशी शीर्षक प्रेमधन द्वारा रचित पाठ से लिया गया है, इस पाठ मे कवि प्रेमघन जी के अनुसार **अंग्रेजी** वस्तु में हमारी रूचि बढ़ जाने से हमारे घर मे उपयोग होनेवाले सभी वस्तु विदेशी दिखाई पड़ रहे है जो कि भारत के विपरित है |

भाषा की बात :-

(1)निम्नांकित शब्दों से विशेषण बनाएँ -

1. रुचि	रुचिकार
2. देश	देशी
3. नगर	नगरीय
4. प्रबंध	प्रबंधन
5. ख्याल	ख्याली
6. दासता	दास
7. झूठ	झूठा

PDF SARTHI.COM

8. प्रशंसा	प्रशंसनीय

10. कविता से संज्ञा पदों का चुनाव करें। और उनके प्रकार

व्यक्तिवाचक	जातिवाचक	समूहवाचक	द्रववाचक	भावाचक
अंग्रेज	नर			रुचि
अंग्रेजी चाल	मनुज			दासवृत्ति
अंग्रेजी माल	मुसलमान			
	हिन्दू			
	वाहन			
	नगर			

PDF SARTHI.COM

17. भारतमाता

कवि :- सुमित्रानंदन पंत

जन्म – 20 मई 1900, अलमोड़ा जिले के रमणीय स्थल कौसानी मे हुआ।

माता - सरस्वती देवी

पिता – गंगादत्त पंत

प्रारंभिक शिक्षा → आस-पास के स्कूल में

हाईस्कूल की शिक्षा - बनारस से

निधन - 28 दिसंबर 1977 ई० को |

→ जन्म के 6 घंटे के बाद इनकी माँ की मृत्यु हो गयी थी |

→ सके पिता कौसानी री स्टेट मे एकांउटर थे |

→ पंतजी आजीवन इलाहबाद में रहे थे |

→ पंत जी प्राकृति और सौंदर्य के प्रेमी है |

→ पंतजी को सुकुमार कवि भी कहा जाता है | यह छायावादी कवि तथा मानवतावादी विचार के थे |

→ पंतजी अतीताबादी एवं सकीर्णता के घोर विरोधि थे |

प्रमुख रचना – पल्लव उच्चावास ,वीणा, ग्रंथि गुंजन, युगांत 'स्वर्णधुली, स्वर्णकला, युगपथ, चिंदमय आदि

→ चिदंबरा कास्य पर इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला |

*भारतमाता कविता ग्रामिया से लिया गया है |

→ पंतजी नाटक, गया है आलोचना, कहानी, उपन्यास आदि लिखते थे|

PDFSARTHI.COM

→ इस कविता मे पंतजी यथार्थ चित्रण खिचें है |

(i) भारतमाता ग्रामवासिनी

खेतों में फैला है श्यामल

धूल-भरा मैला - सा आँवला

गंगा-यमुना में आँसू जल

मिट्टी की प्रतिमा उदासिनी |

अर्थ :- कवि पंत जी भारतीय ग्रामीणों की दुर्दशा का चित्र प्रस्तुत करते हुए कहते है कि भारत की आत्मा गाँवों में निवास करता है | जहाँ खेत हरे भरे रहते है | गंगा - यमुना के जल उनकी व्यथा के प्रतीक है। सीधा, साधा किसान दयनीय दशा के कारण अपनी दुर्गमय पर आँसु बहा रहे रहे हैं |

(II) दैन्य जड़ित अपलक नत चितवन

अंधेरों मे चिर नीख रोदन

युग - युग के तम से विपन्न मन

अपने घर वह अपने मे प्रवासिनी ।

अर्थ :- गरीबी से चेतन शून्य, जिसकी दृष्टि बिना पलक गिराय हुए झुकी हुई है |जिसके होंठों मे दीर्घकालीन शब्दहीन रोदन हो |युगों के गुलामी रूपी अन्धकार से विषादमय मन वाली है भारतमाता आप अपने घर में ही विदेशी हुई।

(iii) तीस कोटि सन्तान नग्न तन

PDFSARTHI.COM

अर्ध सुधित, शोषित, निरस्त्रजन

मूढ असभ्य ,अथिक्षित निर्धन

नत मस्तक तरु-तल निवासिनी

अर्थ - आपके तील करोड़ संतान जिनके वस्त्रहीन नग्न शरीर है | आधा पेट खाकर रहने वाले है| शोषित, निहत्था, भूखे, असभ्य, अशिक्षित और निर्धन है |इसलिए हे भारत माता आप झुकी मस्तक वाले पेड़ के नीचे निवास करने वाली सद्दथ लग रही है |

(iv) स्वर्ण शस्य पर-पद-तल लुंठित ; धरती-सा सहिष्णु मन कुठित

क्रंदन कंपित अध्य मौन स्मित राहू ग्रसित शरदेन्दू हासिनी।

अर्थ :- हे भारत माता आपकी स्वर्णिम फसल दूसरे के पेड़ के नीच रौंदा जा रहा है धरती की तरह सहनशील, गतिहीन, मनवाली रुलाई से काँपता हुआ मौन मुस्कान के लिए अधरवाली राहु ग्रसित शरद पूर्णिमा की तरह वह हँसी वाली आप दिखती है |

Objective -

1. भारत माता किसकी कविता है ?

Ans - सुमित्रानंदन पंत की

2. सुमित्रानंदन पंत का जन्म कब हुआ।

Ans - 1900

3. पंतजी के पिता का नाम क्या था।

Ans – गंगादत्त पंत की

PDFSARTHI.COM

4. सुमित्रानंदनपंत के माता का नाम क्या था ?

Ans - सरस्वती देवी

5. भारतमाता कविता मे भारत का कैसा प्रस्तुत किया है ?

Ans - यथातथ्य

6. भारत माँ के खेष्ठ मुख की तुलना कवि ने किससे

Ans - छायायुक्त चंद्र से

7. पंतजी प्रख्यात है ?

Ans - छायावादी

8. पांतजी को किस रचना के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला।

Ans – चिंदवारा

9. पंतजी की प्रमुख काव्यकृति क्या है ?

Ans - उच्छवास साम्या, चिंदबाय

10. पंतजी द्वारा रचित कविता भारत माता किस काव्य से संकलित है ?

Ans – ग्राप्या

11. पंतजी के अनुसार भारतमाता है ?

Ans - अपने घर मे प्रवासिनी

PDFSARTHI.COM

12. किस कवि का आरंभिक काव्य प्रकृति और सौंदर्य के प्रेमी कवि की संवेदनशील अभिव्यक्ति से परिपूर्ण है ?

Ans - सुमित्रानंदन पंत

13. जन्म के 6 घंटे के बाद किनकी माता का देहान्त हुआ था ?

Ans - पंत जी

14. प्रकृति सौन्दर्य की कविता के लिए प्रख्यात कवि कौन थे ?

Ans - सुमित्रानंदन पंत

15. कवि पंत जी के अनुसार गंगा यमुना मे क्या प्रवाहित होते है ?

Ans - आँसु जल

16. पंत जी के अनुसार भारतमाता किसकी मूर्ति है ?

Ans - उदास माटी की

17. किस कवि के पिता कौसानी री स्टेट मे एकाउंटर थे । Ans - सुमित्रानंदन पंत के

18. पंत जी मिट्टी की प्रतिमा उदासिनी किसे कहा है ?

Ans - भारतमाता को

- Subjective -

1. भारतमाता अपने ही घर में प्रवासिनी क्यों बनी हुई है ?

PDF SARTHI.COM

Ans - भारतमाता अपने ही घर में प्रवासिनी बनी हुई है क्योंकि भारत के लोगों पर अत्याचार कर रहे है और यह चुपचाप देख रही है जैसे कि कोई मेहमान या प्रवासी किसी दूसरे के घर पर चुपचाप देखती है |

2. कविता में कवि भरतवासियों का कैसा चित्र खींचता है ?

Ans – कवि सुमित्रानन्दन पंत के अनुसार भारत के 30 व्यापक लोग फटे पुराने वस्त्र पहने है | आधा पेट भोजन करते है, वे शोषित, बिना वस्त्र के मुर्ख और असभ्य है | वे अंग्रेजों के सामने नतमस्तक है |और वृक्ष के नीचे निवास करने के लिए मजबूर है |कवि यही चित्र खींचते है |

3. भारतमाता का हास्य भी राहु ग्रासित क्यों दिखाई पड़ती है ?

Ans – भारतमाता का हास्य भी ग्रसित दिखाई पड़ता है, क्योंकि भारतमाता पर उगे स्वर्ण जैसे फसल को भी अंग्रेज के पैरों तले रोंदा जा रहा है |

4. कवि भारतमाता को गीता प्रकाशनी मानकर भी ज्ञान मुद क्यों कहता है ?

Ans - भारत विश्व के सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथों में से एक ग्रंथ गीता को प्रकाशित करने वाला देश है। परंतु वर्तमान यही लोग मुर्ख और असभ्य है, इसलिए कवि भारतमाता को गीता प्रकाशिनी मानकर भी ज्ञानमूद कहा है |

5. कवि कि दृष्टि में आज भारत का तप संयम क्यों सफल है ?

Ans – कवि को आज भारतमाता का तप संयम सफल होता हुआ दिख रहा है ,क्योंकि उसे ऐसा लगता है कि गांधीजी भारतमाता का अहिंसा रूपी दूध पीकर लोगों को अंग्रेज से बचाने आए है |

PDF SARTHI.COM

PDF SARTHI.COM

18. जनतंत्र का जन्म

लेखक → रामधारी सिंह दिनकर (राष्ट्रकवि)

जन्म → 23 Dec 1908

निधन → 23 Apr 1974

माता → मनरूप देवी

पिता → रवि सिंह

प्रारंभिक → गाँव या आस-पास के स्कूल से

→ 1998 मे इन्होंने मोकामा घार पसा रेलवे हाईस्कूल से मैट्रिक तथा 1932 मे पटना कॉलेज से इतिहास में B.A किए |

→ बिहार विश्व विद्यालय में इतिहास के प्रोफेसर तथा भागलपुर विश्वविद्यालय में उपकुल पति के पद रहे है |

→ दिनकर जी कवि के साथ-साथ गद्यकार थे |

→ प्रमुख रचना :- प्रण-भंग, रेनुका, हुंकार, कुरुक्षेत्र, रसपंती, नीलकुसुम, उर्वशी, परशुराम की प्रतिज्ञा -

→ गद्य कृति :- मिट्टी की ओर, अर्धनारीश्वर संस्कृति के चार अध्याय कविता की खोज, दिनकर की डायरी -

→ संस्कृति के चार अध्याय पर साहित्य अकादमी पुरस्कार और उर्वशी पर ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला है |

→ भारत सरकार की ओर से पद्मविभूषण मिला है |

→ ये राजसभा के सांसद रह चुके है |

→ दिनकर जी उत्तर छायावाद के कवि है |

PDF SARTHI.COM

1. कवि की दृष्टि में समय रथ का घर्घर – नाद क्या है ?

Ans - पराधीनता की समाप्ति तथा स्वाधिनता की प्राप्ति कवि की दृष्टि में समय के रथ का घर्घर नाद है | अर्थात जनता का समय आया अपना जनतंत्र कायम करने का |

2. कविता के आरंभ में कवि भारतीय जनता का वर्णन किस रूप में करता है ?

Ans - कविता के आरंभ में कवि भारतीय जनता का वर्णन 'अबोध, मूर्ख, मिट्टी की मुरत के रूप में किया है, जो सबकुछ सहती आ रही है |

3. कवि के अनुसार किन लोगों की दृष्टि में जनता फूल या दुधमुँही बच्ची की तरह है?

Ans - कवि की दृष्टि में राजनायक लोगों के नजर मे जनता दुधमुही बच्ची की तरह है, क्योंकि राजनायक लोग अपनी सिंहासन सजाने के लिए, जनता को दुधमुही बच्ची की तरह जनता को कुछ देकर उनका मन बहलाकर राज्य का उपयोग कर ले |

4. कवि जनता का स्वपन किस तरह खींचता है ?

Ans - कवि जनता का स्वपन का चित्र अजय दो अन्धकार का भी वृक्ष - स्थल चीर डाले, इस प्रकार उमड़ता हुआ खींचा है |

5. विराट जनतंत्र का स्वरूप क्या है ? कवि किनके सिर पर मुकुट धरने की बात करता है और क्यों?

Ans- भारत के विराट जनतंत्र का स्वरूप 33 करोड़ जनता के सिर पर मुकुट रखने की बात करता है, क्योंकि प्रजातंत्र मे प्रजा ही राजा होता है |

6. कवि की दृष्टि में आज के भगवान कौन है और वे कहा मिलेंगें ?

Ans - कवि की दृष्टि में आज के भगवान जनता है और वे सड़को पर पत्थर तोड़ते मिलेंगें | खेतों मे हल जोतते मिलेगें।

PDFSARTHI.COM

Q 1. दिनकर की दृष्टि में समय के रथ का घर्घर-नाद क्या है ? स्पष्ट करें।

उत्तर :- कवि ने सदियों से राजतंत्र से शासित जनता की जागृति को उजागर करते हुए समय के चक्र की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया है। राजसिंहासन पर प्रजा आरूढ़ होने जा रही है। समय की पुकार ही क्रांति की शंखनाद के रूप में रथ का घर्घर-नाद है।

Q 2. कवि की दृष्टि में आज के देवता कौन हैं और वे कहाँ मिलेंगे ?

उत्तर :- कवि ने भारतीय प्रजा, जो खून-पसीना बहाकर देशहित का कार्य करती है, जिसके बल पर देश में सुख-संपदा स्थापित होता है, किसान, मजदूर जो स्वयं आहूत होकर देश को सुखी बनाते हैं, को आज का देवता कहा है।

Q 3. कवि के अनुसार किन लोगों की दृष्टि में जनता फूल या दुध मुँही बच्ची की तरह है और क्यों ? कवि क्या कहकर उनका प्रतिवाद करता है ?

उत्तर :- अंग्रेजी सरकार भी भारत की जनता को अबोध समझकर कुछ प्रलोभन देकर राजसुख में लिप्त है। वह समझती है कि जनता फूल या दुधमुंही बच्ची की तरह है लेकिन इसके प्रतिकार में कवि ने कहा है कि जब भोली लगनेवाली जनता जाग जाती है, जब उसे अपने में निहित शक्ति का आभास हो जाता है तब राजतंत्र हिल उठता है।

Q 4. कवि जनता के स्वप्न का किस तरह चित्र खींचता है ?

उत्तर :- भारत की जनता सदियों से, युगों-युगों से राजा के अधीनस्थ रही है लेकिन कवि ने कहा है कि चिरकाल से अंधकार में रह रही जनता राजतंत्र को उखाड़ फेंकने के स्वप्न देख रही है। राजतंत्र समाप्त होगा और जनतंत्र कायम होगा। राजा नहीं बल्कि प्रजा राज करेगी।

PDF SARTHI.COM

Q 5. कविता का मूल भाव क्या है ? संक्षेप में स्पष्ट कीजिए ? अथवा, 'जनतंत्र का जन्म' शीर्षक कविता का भावार्थ लिखें।

उत्तर :- प्रस्तुत कविता आधुनिक भारत में जनतंत्र के उदय का जयघोष है। सदियों की पराधीनता के बाद स्वतंत्रता-प्राप्ति हुई और भारत में जनतंत्र की प्राण-प्रतिष्ठा हुई । जनतंत्र के ऐतिहासिक और राजनीतिक अभिप्रायों को कविता में उजागर करते हुए कवि यहाँ एक नवीन भारत का शिलान्यास करता है जिसमें जनता ही स्वयं सिंहासन पर आरूढ़ होने का है। इसमें कवि ने जनता निहित शक्ति को उजागर करते हुए जनतंत्र की महत्ता को स्थापित करने पर बल दिया है। राजतंत्र की जड़ को उखाड़ फेंकने की ताकत जनता में है और राजसिंहासन का वास्तविक अधिकारी प्रजा ही है, ऐसा चित्रण किया गया है।

Q 6. कविता के आरंभ में कवि भारतीय जनता का वर्णन किस रूप में करता है ?

उत्तर :- कविता के आरंभ में कवि ने भारतीय जनता की सरल एवं विनीत छवि का वर्णन किया है। कवि ने कहा है कि जनता सहनशील होती है, जाडा-गर्मी सबको सहती है, दु:ख-सुख में एकसमान रहती है। मिट्टी की मूरत की तरह अबोध है । जनता फल की तरह है जिसे जब चाहो, जहाँ जिस रूप में रख दो । जनता अबोध बालक है जिसे छोटे प्रलोभन देकर प्रसन्न किया जा सकता है, अर्थात् भारत की भोली-भाली जनता असहनीय पीड़ा को चुपचाप सहकर भी मूक बनी रहनेवाली है। राजा द्वारा शोषित होने पर भी प्रतिकार नहीं करती है।

Q 7. "देवता मिलेंगे खेतों में खलिहानों में" पंक्ति के माध्यम से कवि किस देवता की बात करते हैं और क्यों ?

उत्तर :- उपरोक्त पंक्ति के माध्यम से कवि जनतारूपी देवता की बात करते हैं, क्योंकि कवि की दृष्टि में कर्म करता हुआ परिश्रमी व्यक्ति ही देवतास्वरूप है। मंदिरों-मठों में तो केवल मूर्तियाँ रहती हैं वास्तविक देवता वे ही हैं जो अपने कर्म तथा परिश्रम से समाज को सुख-समृद्धि उपलब्ध कराते हैं।

Q 8. दिनकर रचित 'जनतंत्र का जन्म' शीर्षक कविता का सारांश लिखें।

PDF SARTHI.COM

उत्तर :- 'जनतंत्र का जन्म' शीर्षक कविता आधुनिक भारत में जनतंत्र के उदय की जयघोष है। समय का रथ सिंहासन की ओर बढ़ता आ रहा है। वह सिंहासनासीन अधिनायक से कहता है कि अब तुम सिंहासन का मोह त्याग दो। इसपर केवल जनता का अधिकार है। उसी जनता का इस सिंहासन पर अधिकार है जो युगों से पद-दलित रही है और जिसने अपने शोषण के विरुद्ध कभी आवाज नहीं उठाई है। वह जनता अब कोई दुधमुंही बच्ची नहीं रही जिसे खिलौनों से बहलाया जा सकें। जनता कोपाकुल होकर जब अपनी भृकुटि चढ़ाती है तो भूचाल आ जाता है। बड़े-बड़े बवंडर उठने लगते हैं। उनके हुँकारों में महलों को उखाड़ फेंकने की ताकत है, उनकी साँसों में ताज को हवा में उड़ा देने का बल है। जनता की राह को रोकने की क्षमता किसी में भी नहीं है। वह अपने साथ काल लिए चलती है। काल पर भी उसका शासन चलता है। सुनो, वह जनता युगों के शोषण के अंधकार को चीरती हुई बड़े वेग के साथ सिंहासन की तरफ आ रही है। संसार का सबसे बड़ा जनतंत्र सिंहासन के पास खड़ा है। उसका हृदय से अभिषेक करो। अब तुम्हारा समय नहीं रहा। अब प्रजा का समय है।

देवता, मंदिरों, राजप्रासादों और तहखानों में निवास नहीं करते। वास्तविक देवता तो खेतों में, खलिहानों में हल चलाते मिलेंगे; कहीं सड़कों पर गिट्टी तोड़ते और फावड़े चलाते मिलेंगे। अब उन्हीं किसानों और मजदूरों की बारी है। अब वे ही राज सिंहासन पर आरूढ़ होंगे। सिंहासन खाली कर देने में तुम्हें कोई आना-कानी नहीं करनी चाहिए।

PDF SARTHI.COM

PDF SARTHI.COM

1. 'जनतंत्र का जन्म' शीर्षक कविता के कवि का क्या नाम है?

(A) रामधारी सिंह दिनकर

(B) अज्ञेय

(C) सुमित्रानंदन पंत

(D) बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन

ANS – (A)

2. राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर का जन्म कब हुआ है?

(A) 18 फरवरी, 1916

(B) 23 सितम्बर, 1908

(C) 18 अक्टूबर, 1916

(D) 18 जुलाई, 1916

Pdf, Notes OR Test Series लेने के लिए हमें WhatsApp करे - 7488296191

ANS – (B)

3. रामधारी सिंह दिनकर का जन्म ..... जिले में हुआ

(A) जमुई

(B) मुजफ्फरपुर

(C) बेगूसराय

(D) सीतामढ़ी

ANS – (C)

4. 'सदियों की ठंडी बुझी राख सुगबुगा उठी, मिट्टी इठलाती हैं। यह पक्ति है- सोने का ताज पहन

(A) दिनकर की

(B) निराला की

(C) महादेवी की

(D) अज्ञेय की

ANS – (A)

5. राष्ट्रकवि दिनकर के पिता थे-

(A) राजा सिंह

(B) रवि सिंह

(C) रामा सिंह

(D) रामाकांत सिंह

ANS – (B)

PDF SARTHI.COM

Pdf, Notes OR Test Series लेने के लिए हमें WhatsApp करे - 7488296191

6. दिनकर को किस कृति के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला था?

(A) संस्कृति के चार अध्याय

(B) रेणुका

(C) उर्वशी

(D) कोई नहीं

ANS – (B)

7. राज्यसभा के सांसद रहे कवि हैं -

(A) सुमित्रानंदन पंत

(B) रामधारी सिंह 'दिनकर'

(C) हजारी प्रसाद 'द्विवेदी'

(D) अज्ञेय

ANS – (B)

8. किस रचना के लिए दिनकर को साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था?

(A) रश्मिरथी

(B) संस्कृति के चार अध्याय

(C) दुकार

(D) अर्धनारीश्वर

ANS – (B)

9. कवि दिनकर किसके लिए सिंहासन खाली करने की बात करते हैं?

PDF SARTHI.COM

(A) राजा के लिए

(B) मंत्री के लिए

(C) जनता के लिए

(D) वीरों के लिए

ANS – (C)

10. कवि दिनकर की दृष्टि में आज के देवता कौन हैं ?

(A) भारतमाता

(B) ईश्वर

(C) अल्लाह

(D) मजदूर, किसान

ANS – (D)

11. दिनकरजी कवि के साथ-साथ थे।

(A) उपन्यासकार

(B) आलोचक

(C) गद्यकार

(D) इनमें से कोई नहीं

ANS – (C)

12. राष्ट्रकवि दिनकर की कौन-सी कविता आधुनिक भारत में जनतंत्र के उदय का जयघोष है?

(A) जनतंत्र का जन्म

PDF SARTHI.COM

(B) स्वदेशी

(C) भारतमाता

(D) लौटकर फिर आऊँगा

ANS – (A)

13. राष्ट्रकवि दिनकर को सम्मानित किया गया था

(A) पद्मविभूषण से

(B) ज्ञानपीठ पुरस्कार से

(C) साहित्य अकादमी

(D) उपर्युक्त सभी

ANS – (D)

14. दिनकरजी किस विश्वविद्यालय में उपकुलपति के पद पर रहे थे?

(A) नालन्दा विश्वविद्यालय

(B) भागलपुर विश्वविद्यालय

(C) मिथिला विश्वविद्यालय

(D) वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय

ANS – (B)

15. सदियों की ठंडी-बुझी राख सुगबुगा उठी

मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है। प्रस्तुत पक्तियाँ किस कविता की हैं?

(A) स्वदेशी

PDF SARTHI.COM

(B) भारतमाता

(C) जनतंत्र के जन्म

(D) मेरे बिना तुम प्रभु

ANS – (C)

16. मिट्टी की अबोध मूरतें कौन हैं?

(A) नेता

(B) जनता

(C) अधिकारी

(D) मंत्री

ANS – (B)

17. कवि दिनकर किनके सिर पर मुकुट धरने की बात करते हैं?

(A) जनता के

(B) भारतमाता के

(C) राजा के

(D) सैनिकों के

ANS – (A)

18. कवि के अनुसार किससे महलों की नींव उखड़ जाती है?

PDF SARTHI.COM

(A) हवा से

(C) हुंकारों से

(B) समय से

(D) बबंडर से

ANS – (C)

19. इनमें से कौन-सी रचना दिनकर जी की नहीं है?

(A) उर्वशी

(B) संस्कृति के चार अध्याय

(C) रश्मिरथी

(D) ग्राम्या

ANS – (D)

20. 'फावड़े और हल' राजदंड बनने को हैं यह पंक्ति किस कविता की है?

(A) जनतंत्र का जन्म

(B) स्वदेशी

(C) हिराशिमा

(D) भारतमाता

ANS – (A)

21. दिनकर को ज्ञानपीठ पुरस्कार किस रचना पर

मिला?

PDF SARTHI.COM

(A) हुकार

(C) इन्द्रगीत

(B) रश्मिरथी

(D) उर्वशी

ANS – (D)

22.आधुनिक भारत में जनतंत्र के उद्‌यघोष है

(A) जनतंत्र का जन्म

(B) भारतमाता

(C) स्वदेशी

(D) लौटकर फिर आऊँगा

ANS – (A)

23. रामधारी सिंह दिनकर हाई स्कूल को शिक्षा किस स्कूल से प्राप्त की थी?

(A) पटना हाई स्कूल

(B) पटना कॉलेजिएट

(C) टी०के० घोष हाई स्कूल

(D) मोकामाधाट रेलवे हाई स्कूल

ANS – (D)

24. 'संस्कृति के चार अध्याय' किनकी रचना है?

(A) रामधारी सिंह 'दिनकर'

PDF SARTHI.COM

(B) प्रेमघन

(C) वीरेन डंगवाल

(D) अज्ञेय

ANS – (A)

25. जनतंत्र का जन्म कविता में कवि भारत की जनता की तुलना किससे करते हैं?

(A) अंग्रेजों से

(C) फूलों से

(B) काँटों से

(D) मुकुट से

ANS – (C)

26. कवि के अनुसार आज के देवता कहाँ मिलेंगे?

(A) मंदिरों में

(B) राजप्रसादों में

(C) तहखानों में

(D) खेतों में, खलिहानों में

ANS – (D)

27. कवि के अनुसार सोने का ताज पहनकर कौन इठला रही है?

(A) देश की जनता

(C) भारतमाता

PDF SARTHI.COM

(B) देश की मिट्टी

(D) देवी-देवता

ANS – (B)

28. राष्ट्रकवि दिनकर जयंती मनाई जाती है?

(A) 23 सितम्बर

(C) 23 नवम्बर

(B) 23 अक्टूबर

(D) 23 दिसम्बर

ANS – (A)

29. राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर प्रमुख कवि हैं-

(A) उत्तर छायावाद के

(B) प्रगतिवाद के

(C) प्रगति

(D) इनमे से कोई नहीं

ANS – (A)

30. रामधारी सिंह दिनकर कहाँ के रहने वाले थे?

(A) उत्तर प्रदेश के

(B) मध्य प्रदेश के

(C) राजस्थान के

PDF SARTHI.COM

(D) बिहार के

ANS – (D)

PDF SARTHI.COM

19. हीरोशिमा

→ लेखक हीरानन्द वात्सयायन ०स –'अज्ञेय'

→ माता व्यंती देवी –

→ पिता हीरानंद शास्त्री –

→ जन्म –7 मार्च ई 1911o ककुशीनगर कसैया (उत्तर प्रदेश)

→ देहांत -4 Apr 1987

→ मैट्रिक –1925

→ इन्टर 1927

→ B.S.C - 1929

→ मूल निवास (कर्तारपुर (पंजाब -

प्रमुख रचनाएँ

काव्यः- भग्नदूत, चिंता, इत्यलम, हरी घास पर छन भर, बावरा अहेरी, आँगन के पार द्वार, सदानीरा आदि।

कहानीः- विपथगा, जयदोल, ये तेरे प्रतिरूप, छोड़ा हुआ रास्ता, लौटती पगडंडियाँ आदि।

उपन्यासः- शेखरः एक जीवनी, नदी के द्विप, अपने अजनबी। यात्रा साहित्यः- अरे यायावर रहेगा याद, एक बूँद सहसा उछली।

कविता परिचय - प्रस्तुत कविता में आधुनिक सभ्यता की मानवीय विभीषिका का चित्रण किया गया है। यह कविता 'अज्ञेय' की 'सदानीरा' कविता संग्रह से संकलित है।

एक दिन सहसा सुरज निकला अरे क्षितिज पर नहीं, नगर के चौकः धूप बरसी पर अंतरिक्ष से नहीं, फटी मिट्टी से

PDFSARTHI.COM

कवि कहता है कि एक दिन सबेरे प्रकाश दिखाई पड़ा। यह प्रकाश क्षितिज से निकलते सूरज का नहीं, बल्कि शहर के मध्य में अमेरिका द्वारा गिराए गए बम का था। लोग गर्मी से जलने लगे। यह धूप की गर्मी नहीं थी। यह गर्मी बम विस्फोट से उत्सर्जित किरणों की थी। गर्मी फटी धरती की थी।

छायाएँ मानव-जन की दिशाहीन सब ओर पड़ी-वह सुरज नहीं उगा था पूरब में, वह बरसा सहसा बीचो-बीच नगर के : काल-सूर्य के रथ के पहियों के ज्यों अरे टुटकर बिखर गये हो दशों दिशा में।

कवि कहता है कि मनुष्य की छायाएँ दिशाहिन हो गई। प्रकाश छिटने लगा, लेकिन यह प्रकाश सूर्य का नहीं, बल्कि मानव के नृशंसता का था, जिसमें मानवता झुलस रही थी। कवि कहता है कि यह नगर के मध्य में मृत्यु रूपी सूर्य के टुटे हुए अरे का प्रकाश था। अतः बम फटते हि विध्वंसक पदार्थ मौत बनकर दशों दिशाओं में नाचने लगे।

कुछ छन का वह उदय-अस्त केवल एक प्रज्वलित छन की दृश्य सोख लेने वाली दो पहरी फिर ? छायाएँ मानव-जन की नहीं मिटी लंबी हो-हो कर : मानव ही सब भाप हो गये। छायाएँ तो अभी लिखी हैं। झुलसे हुए पत्थरों पर उजड़ी सड़कों की गच पर।

कवि कहता है कि बम गिरने के बाद कुछ छन में ही विनाशलीला का दृश्य मन्द पड़ने लगा। दोपहर तक सारी लीला खत्म हो गई तथा मानव शरीर भाप बनकर वातावरण में मिल गया, परन्तु यह दुर्घटना आज भी झुलसे हुए पत्थरों और उजड़ी हुई सडकों पर के रूप में निशानी है।

मानव का रचा हुआ सुरज मानव को भाप बनाकर सोख गया। पत्थर पर लिखी हुई यह जली हुई छाया मानव की साखी है।

मानव के द्वारा बनाया गया बम मानव को ही भाप में बदलकर मिटा दिया। पत्थर पर लिखी हुई वह जलती छाया अर्थात् विकृत रूप मानव के नृशंसता का गवाह है।

कविता के साथ

PDFSARTHI.COM

1.कविता के प्रथम अनुच्छेद में निकलनेवाला सूरज क्या है ? वह कैसे निकलता है ?

Ans - कविता के प्रथम अनुच्छेद में निकलनेवाला सूरज आण्विक प्रचण्ड बम का गोला था। जो क्षितिज से न निकलड़कर धरती फारकर निकलता है |

2. छात्राएँ दिशाहीन सब ओर क्यों पड़ती है। स्पष्ट करें |

Ans निशचित दिशा सूर्य के उगने से जो भी बिम्ब प्रतिबिम्ब या छाया का निर्माण होता था | वह - में होता था। लेकिन बम विस्फोट के कारण जो छाया वह दिशाहीन था। बम विस्फोट के कारण क्षत- |विक्षत लाभ छाया स्वरूप में चारो दिशा में फैल गया

3. प्रज्वलित क्षण की दोपहरी से कवि का आशय स्पष्ट करें।

Ans हिरोशिमा में -, जब बम का प्रचार हुआ तो इस धमाके से तेज प्रकाश निकला और चारों दिशा में फैल गया। हिरोशिमा के लोगों को लगा कि धीरधीरे आनेवाला दोपहर आज क्षण में उपस्थित हो - गया। बम से प्रज्वलित अग्नि एक क्षण के लिए दोपहर का दृश्य प्रस्तुत कर दिया। वह दोपहर उसी | समय गायब भी गया

4. मनुष्य की छायाँ कहाँ और क्यों पड़ी हुई है ?

Ans – मनुष्य की छाया हीरोशिमा की धरती पर चारों ओर से दिशाहीन होकर पडी हुई है जहाँ | तहाँ घर के दीवार पर मनुष्य की छाया मिलती है | टूटी फूटी सड़कों से लेकर पत्थरों पर छात्राएँ प्राप्त | णु बम के कारण पड़ी हुई हैहोती है। ये छायाँ हिरोशिमा पर अमेरिका द्वारा गिराये गए परमा

5. हिरोशिमा में मनुष्य की साखी के रूप में क्या पड़ी हुई है ?

Ans- आज भी हिरोशिमा में साखी के रूप में जहाँ वहाँ-'जले हुए पत्थर और दीवारे पड़ी हुई हैं। और पत्थरों पर दूरी फूटी सड़को पर, घर के दीवारों पर बाथ के निशान साथी के रूप में ह

PDFSARTHI.COM

6. व्याख्या करें :

क) एक दिन सहसा। सूरज निकला)

Ans -प्रस्तुत पंक्ति हमारे पाठ पुस्तक गोधूलि भाग -2 के काव्यखंड के हिरोशिमा पाठ से लिया गया है। इस पंक्ति के अनुसार कवि कहते हैद्वितीय विश्व युद्ध मे अमेरिका द्वारा हीरोशिमा पर गिरा , | बम पहला सूरज के समान था

जिसकी किरणें से लाखों मानव भाप बनकर उड़ गये चारों तरफ तबाही का मंजर था जसका प्रभाव | | आज भी देखने को मिलता है

सुर्य के रथ के । पहियों के ज्यों अरे टूट कर बिखर गये हो। दसों दिशा में -ख) काल)

Ans बीच गिड़ा तब -के बीचो इस पंक्ति के माध्यम से कवि कहते है, कि जब परमाणु बम शहर - सूर्य की किरणें हर दिशा में पड़नेलगी। यह सुरज नगर के चौक पर दिशाहीन रूप में हुआ था अत: | बीच अचानक बरसने लगा मानो सूर्य के रथ के पहिये टूटकर चारों दिशा में -यह नगर के बीचों | बिखड़ गए हो

? गया ग) मानव का रचा हुआ सुरज मानव को भाप बनाकर सोख)

Ans पंक्ति के माध्यम से कवि कहते है, आज के वैज् -ञानिक युग में लोग वैसे काम किये है। जिसमें उसको आराम, सुरक्षा एवं आर्थिक समपन्नता मिले। इसी सुरक्षा के लिए आदमी अस्त्र शस्त्र – नव की विकसित को का निर्माण करना शुरू किया। अत: द्वितीय विश्वयुद्ध में परमाणु का प्रयोग मा लाखों -दर्शाता है जो अपनी सुरक्षा हेतु लोगों की जान बड़े आसानी से ले सकता है |

PDFSARTHI.COM

Q 1. हीरोशिमा में मनुष्य की साखी के रूप में क्या है ?

उत्तर :- आज भी हिरोशिमा में साक्षी के रूप में अर्थात् प्रमाण के रूप में जहाँ-तहाँ जले हुए पत्थर, दीवारें पड़ी हुई हैं। यहाँ तक कि पत्थरों पर, टूटी-फूटी सड़कों पर, घर की दीवारों पर लाश के निशान छाया के रूप में साक्षी हैं।

Q 2. कविता के प्रथम अनुच्छेद में निकलने वाला सूरज क्या है? वह कैसे निकलता है ?

उत्तर :- कविता के प्रथम अनुच्छेद में निकलने वाला सूरज आण्विक बम का प्रचण्ड गोला है। ऐसा प्रतीत होता है कि वह क्षितिज से न निकलकर धरती फाड़कर निकलता है।

Q 3. मनुष्य की छायाएँ कहाँ और क्यों पड़ी हुई हैं ?

उत्तर :- मनुष्य की छायाएँ हिरोशिमा की धरती पर सब ओर दिशाहीन होकर पड़ी हुई हैं। जहाँ-तहाँ घर की दीवारों पर मनुष्य छायाएँ मिलती हैं। टूटी-फूटी सड़कों से लेकर पत्थरों पर छायाएँ प्राप्त होती हैं।

Q 4. प्रज्वलित क्षण की दोपहरी से कवि का आशय क्या है ?

उत्तर :- हिरोशिमा में जब बम का प्रहार हुआ तो प्रचण्ड गोलों से तेज प्रकास निकला और वह चतुर्दिक फैल गया । इस अप्रत्याशित प्रहार से हिरोशिमा के लोग हतप्रभ रह गये । उन्हें ऐसा लगा कि धीरे-धीरे आनेवाला दोपहर आज एक क्षण में ही उपस्थित हो गया ।

Q 5. छायाएँ दिशाहीन सब ओर क्यों पड़ती हैं ? स्पष्ट करें।

PDFSARTHI.COM

उत्तर :- सूर्य के उगने से जो भी बिम्ब-प्रतिबिम्ब या छाया का निर्माण होता है वे सभी निश्चित दिशा में लेकिन बम-विस्फोट से निकले हुए प्रकाश से जो छायाएँ बनती हैं वे दिशाहीन होती हैं। क्योंकि, आण्विक शक्ति से निकले हुए प्रकाश सम्पूर्ण दिशाओं में पड़ता है। उसका कोई निश्चित दिशा नहीं है। बम के प्रहार से मरने वालों की क्षत-विक्षत लाशें विभिन्न दिशाओं में जहाँ-तहाँ पड़ी हुई हैं। ये लाशें छाया-स्वरूप हैं, परन्तु चतुर्दिक फैली होने के कारण दिशाहीन छाया कही गयी है।

Q 6. अज्ञेय रचित 'हिरोशिमा' शीर्षक कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर :- द्वितीय विश्वयुद्ध में 6 अगस्त 1945 को अमेरिका के एक बमवर्षक विमान से जापान के हिरोशिमा नगर पर अणुबम गिराया गया। इससे जान-माल की अपार क्षति हुई। 'हिरोशिमा' शीर्षक कविता की पृष्ठभूमि यही है। कवि कहता है कि नगर के चौक पर एक दिन सहसा सूरज निकला। यह सूरज प्रकृति का सूरज नहीं था, मानव निर्मित अणुबम के विस्फोट से उत्पन्न सूरज था। इस सूरज की धूप आकाश से नहीं, अपितु मिट्टी के फटने से चारों ओर बरसी। प्रकृति का सूरज तो पूरब में उगता है, पर मानव निर्मित यह सूरज नगर के बीच सहसा उदित हुआ। इस अणुबम रूपी सूरज कके उदित होने से मानव-जन की छायाएँ दिशाहीन सब ओर पड़ी। काल-सूर्य के रथ के पहियों के अरे जैसे टूटकर चारों ओर बिखर गए हों। यह मानव निर्मित सूर्य कुछ ही क्षणों के अपने उदय-अस्त से सारी मानवता को विध्वस्त कर गया। इस सूर्य का उदित होना, दोपहरी की प्रचंड गर्मी का आक्रमण और फिर सूर्य का अस्त हो जानाकुछ ही क्षणों में घटित हो गई। उस सूर्य के उदित होते ये सारी स्थितियाँ-जन वाष्प बनकर इस दुनिया से दूर चले गए। आज भी उनकी छायाएँ झुलसे हुए -ही सारे मानव जन विनष्ट-पत्थरों और उजड़ी हुई सड़कों की गच पर पड़ी हुई हैं। सारे मानव हो गए। उनकी पत्थरों पर पड़ी हुई छायाएँ उनकी साक्षी हैं। साक्षी हैं छायाएँ कि कभी यहाँ भी इनसान रहते थे। साक्षी हैं ये छायाएँ कि इनसान इतना निर्दय हो सकता है कि इनसान को मिटाने में उसे थोड़ी भी हिचक नहीं होती।

PDFSARTHI.COM

यह कविता भौतिकवादी और साम्राज्यवादी मानव की दृष्टि के विरोध में एक तीखा व्यंग्य लेकर उपस्थित होती है। यह कविता युद्ध और शांति की समस्या से मुठभेड़ करती है और हमारे भीतर यथार्थ चित्रण से करुणा का स्रोत प्रवाहित करती है। यह अज्ञेय की सफलतम रचनाओं में एक है।

Q 7: आज के युग में इस कविता की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- यह स्पष्ट है कि 'अज्ञेय' प्रयोगवादी कविता का महान प्रवर्तक हैं। इनकी कविता यथार्थ की धरातल पर एक ऐसा अमिट चित्र छोड़ता है, जो माननीय संवेदनाओं को झकझोर देता है। 'हिरोशिमा' नामक कविता वर्तमान की प्रासंगिकता पर पूर्ण रूप से आधारित है। यह कविता आधुनिक संभ्यता की दुर्दान्त मानवीय विभीषिका का चित्रण करने वाली एक अनिवार्य प्रासंगिक चेतावनी भी है। यदि मानव प्रकृति से खिलवाड़ करना बाज नहीं आया तो प्रकृति ऐसी विनाशलीला खडा करेगा, जहाँ मानवीय बुद्धि की परिपक्वता छिन्न-भिन्न होकर बिखर जायेगी । हीरोशिमा में बम विस्फोट का परिणाम इतना भयावह होगा इसकी कल्पना शायद उस दुर्दान्त मानव को भी नहीं होगा जिसने इसका प्रयोग किया। अत: यह कविता केवल अतीत की भीषणतम मानवीय दुर्घटना का ही साक्ष्य नहीं है बल्कि आण्विक आयुधों की होड़ में फंसी आज की वैश्विक राजनीति से उपजते संकट की आशंकाओं से भी जुड़ी हुई है।

Q 8. "काल-सूर्य के रथ के / पहियों के ज्यों अरे टूट कर / बिखर गये हों / दसों दिशा में' की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक हिन्दी साहित्य के महान प्रयोगवादीकवि अज्ञेय के द्वारा लिखित 'हिरोशिमा' नामक शीर्षक से उद्धत है । प्रस्तुत अंश

PDF SARTHI.COM

में यह कहा जा रहा है कि हिरोशिमा में बम का विस्फोट होना एक नहीं अनेक सूर्य के शक्ति के बराबर ज्वाला उगला था। इस व्याख्येय अंश में कहा जा रहा है कि हिरोशिमा में आण्विक आयुध का प्रयोग इतिहास का अमिट काला कलंक है । आण्विक विस्फोट की स्थिति ठीक उसी प्रकार लग रही थी जैसे महाकालरूपी सूर्य के रथ का पहिया टूटकर दसों दिशाओं में बिखर गया है। जहाँ-तहाँ पड़ी हुई लाशें सूर्यरूपी महाकाल के टूटी हुई पहियों के रूप में मानवीय संवेदनाओं को झकझोर दिया था ।

Q 9. "एक दिन सहसा/सूरज निकला' की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :- प्रस्तुत पद्यांश हिन्दी प्रयोगवादी विचारधारा के महान प्रवर्तक कवि अज्ञेय द्वारा लिखित 'हिरोशिमा' नामक शीर्षक से अवतरित है। प्रस्तुत अंश में हिरोशिमा में हुए बम विस्फोट के बाद दुष्परिणाम का जो अंश उपस्थित हुआ है उसी का मार्मिक चित्रण है। कवि कहना चाहते हैं कि जब हिरोशिमा में आण्विक आयुध का प्रयोग हुआ उस समय प्रकृति के शाश्वत तत्त्व भी कुंठित हो गये । सूरज जैसा ब्रह्माण्ड का शक्ति सम्पन्न तत्त्व भी अपनी प्रचण्डता को झुठला दिया । बम विस्फोट से निकलने वाली ज्वाला प्रकृति के सूरज को भी कई दिनों तक उगने से अवरुद्ध कर दिया। जबकि प्रकृति का सूरज अंतरिक्ष से निकलता है लेकिन बमरूपी सूरज धरती को फोड़कर केवल हिरोशिमा के चौक से निकला । प्रकृति का सूरज़ प्राणदाता के रूप में अवतरित होता है लेकिन आण्विक सूरज प्राण लेने वाला सूरज के रूप में निकला है।

Q 10. 'मानव का रचा हुआ सूरज/मानव को भाप बनाकर सोख गया' की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :- प्रस्तुत पद्यांश हिन्दी साहित्य के प्रयोगवादी कवि तथा बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न कवि 'अज्ञेय' के द्वारा लिखित 'हिरोशिमा' नामक शीर्षक से उद्धृत है । प्रस्तुत अंश में हिरोशिमा पर आण्विक अस्त्र का प्रयोग कितना भयानक रहा, इसी का चित्रण यहाँ किया गया है । प्रस्तुत व्याख्येय अंश में कहा जा रहा है कि मानव जो अपने आपको प्रबुद्ध वर्ग की संज्ञा देता है वही कभी-कभी अपने बनाये गये

PDF SARTHI.COM

जाल में स्वयं उलझकर रह जाता है। प्रकृति पर नियंत्रण करने का होड़ मानव की बचपना स्पष्ट दिखाई पड़ने लगती है । यही स्थिति हिरोशिमा पर बम विस्फोट के बाद देखने को मिली। मानव ने बमरूपी सूरज का निर्माण कर अपने-आपको ब्रह्माण्ड का
नियामक समझ लिया था, लेकिन वह विस्फोट मानव को ही भाप बनाकर सोख – लिया, अर्थात् वही विस्फोट मानव के लिए अभिशाप बन गया।

7. हीरोशिमा

1. उगते हुए सूरज का देश किसे कहा जाता है?

(A) भारत को

(B) श्रीलंका को

(C) भूटान को

(D) जापान को

ANS – (D)

2. 'हिरोशिमा' कविता के कवि हैं-

(A) प्रेमघन

(C) अज्ञेय

(B) पंत

(D) दिनकर

ANS – (C)

3. अज्ञेय एक प्रमुख कवि के साथ-साथ थे-

PDF SARTHI.COM

(A) कथाकार

(C) पत्रकार

(B) विचारक

(D) उपर्युक्त सभी

ANS – (D)

4. अज्ञेय किस काल के प्रमुख कवि हैं?

(A) आदिकाल

(C) रीतिकाल

(B) भक्तिकाल

(D) आधुनिक काल

ANS – (D)

5. अज्ञेय को हिन्दी के साथ-साथ किस भाषा का ज्ञान था?

(A) संस्कृत

(B) अंग्रेजी

(C) फारसी

(D) उपर्युक्त सभी

ANS – (D)

6. 'हिरोशिमा' अज्ञेय के किस काव्य से संकलित है?

(A) सदानीरा

PDF SARTHI.COM

(B) भग्नदूत

(C) चिंता

(D) कितनी नावों में कितनी बार

ANS – (A)

7. 'अज्ञेय' का पूरा नाम है-

(A) सच्चिदानंद 'अज्ञेय'

(B) वात्स्यायन 'अज्ञेय'

(C) हीरानंद 'अज्ञेय'

(D) सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

ANS – (D)

8. अज्ञेय का जन्म कब हुआ?

(A) 1910 ई०

(B) 1911 ई०

(C) 1912 ई०

(D) 1913 ई०

ANS – (B)

9. अज्ञेय का जन्म कहाँ हुआ था?

(A) बदरघाट, पटना

(B) बलिया, उत्तरप्रदेश

PDF SARTHI.COM

(C) अमरावती, महाराष्ट्र

(D) कसेया, कुशीनगर, उत्तरप्रदेश

ANS – (D)

10. अज्ञेय के पिता थे

(A) रवि सिंह

(B) गंगादत्त पंत

(C) डॉ० हीरानंद शास्त्री

(D) कालूचंद खत्री

ANS – (C)

11. अज्ञेय का मूल निवास कहाँ था?

(A) उत्तर प्रदेश

(B) कर्तारपुर पंजाब

(C) महाराष्ट्र

(D) उत्तराखंड

ANS – (B)

12. कवि की दृष्टि में किसका रचा हुआ सूरज मानव को भाप बनाकर सोख गया?

(A) प्रकृति का

(B) ईश्वर का

(C) मानव का

PDF SARTHI.COM

(D) दानव का

ANS – (C)

13. 'हिरोशिमा' कविता किसका चित्रण करती है?

(A) प्राचीन सभ्यता की खुशहाली का

(B) आधुनिक सभ्यता के विकास का

(C) प्राचीन सभ्यता की मानवीय विभीषिका का

(D) आधुनिक सभ्यता की दुर्दात मानवीय विभीषिका का

ANS – (D)

14. दुर्दान्त मानवीय विभीषिका का चित्रण करने वाली कविता है

(A) एक वृक्ष की हत्या

(B) अक्षर ज्ञान

(C) हिरोशिमा

(D) जनतंत्र का जन्म

ANS – (C)

15. 'तार-सप्तक' का संपादन किया

(A) जयशंकर प्रसाद ने

(B) महादेवी वर्मा ने

(C) राम इकबाल सिंह 'राकेश' ने

(D) 'अज्ञेय' ने

PDF SARTHI.COM

Pdf, Notes OR Test Series लेने के लिए हमें WhatsApp करे - 7488296191

ANS – (D)

10. हिन्दी कविता में प्रयोगवाद का सूत्रपात किया-

(A) महादेवी वर्मा ने

(B) राम इकबाल सिंह 'राकेश' ने

(C) दिनकर ने

(D) 'अज्ञेय' ने

ANS – (D)

17. द्वितीय विश्वयुद्ध में परमाणु बम

गिराया गया।

(A) जापान

(C) रूस

(B) फ्रांस

(D) चीन

ANS – (A)

18. अज्ञेय को कौन-सा पुरस्कार मिला था?

(A) साहित्य अकादमी

(B) ज्ञानपीठ

(C) अंतर्राष्ट्रीय स्वर्णमाला

(D) उपर्युक्त सभी

PDF SARTHI.COM

ANS – (D)

19. काव्य संग्रह 'सदानीरा' किनकी रचना है?

(A) अज्ञेय

(B) कुँवर नारायण

(C) वीरेन डंगवाल

(D) अनामिका

ANS – (A)

20. अज्ञेय के अनुसार एक दिन सहसा सूरज कहाँ निकला?

(A) क्षितिज पर

(B) नगर के चौक पर

(C) पूरब में

(D) पश्चिम में

ANS – (B)

21. आधुनिक साहित्य में एक प्रमुख प्रतिभा थे-

(A) स० ही० वात्स्यायन अज्ञेय

(B) रहीम

(C) कबीर

(D) सुमित्रानंदन पंत

ANS – (A)

PDFSARTHI.COM

22. 'अज्ञेय' किस काव्य-धारा के कवि हैं?

(A) छायावाद

(B) प्रयोगवाद

(C) रहस्यवाद

(D) प्रगतिवाद

ANS – (B)

23. हिरोशिमा किस देश में है?

(A) चीन

(C) जापान

(B) फ्रांस

(D) जर्मनी

ANS – (C)

24. 'तार सप्तक' के सम्पादक थे प्रयोगवादी कवि

(A) सूरदास

(B) केशवदास

(C) तुलसीदास

(D) अज्ञेय

ANS – (D)

25. जापान पर परमाणु बम गिराया-

PDF SARTHI.COM

(A) इंग्लैंड ने

(B) अमेरिका ने

(C) चीन ने

(D) रूस ने

ANS – (B)

26. अज्ञेय के पिता डॉ० हीरानंद शास्त्री थे-

(A) प्रख्यात पुरातत्वेत्ता

(B) राजनेता

(C) लेखक

(D) कलाकार

ANS – (A)

27. 'शेखर: एक जीवनी' किनका उपन्यास है?

(A) रामधारी सिंह 'दिनकर'

(B) आचार्य हजारी प्रसाद 'द्विवेदी'

(C) अज्ञेय

(D) कुँवर नारायण

ANS – (C)

28. इनमें कौन-सा काव्य संग्रह अज्ञेय का है?

(A) ग्राम्या

PDFSARTHI.COM

(B) जीर्ण जनपद

(C) सदानीरा

(D) इन दिनों

ANS – (C)

29. मानव का रचा हुआ सूरज मानव को भाप बना कर सोख गया। प्रस्तुत पंक्तियाँ किस कविता की है?

(A) एक वृक्ष की हत्या

(B) हिरोशिमा

(C) जनतंत्र का जन्म

(D) हमारी नींद

ANS – (B)

30. एक दिन सहसा सूरज निकला अरे क्षितिज पर नहीं, नगर के चौक,

प्रस्तुत काव्यांश किस कविता की है?

(A) अक्षर ज्ञान

(B) हमारी नींद

(C) लौटकर आऊँगा

(D) हिरोशिमा

ANS – (D)

31. 'नदी के द्वीप' किस कवि की रचना है?

(A) रामधारी सिंह दिनकर

PDF SARTHI.COM

(B) सुमित्रानंदन पंत

(C) कुंवर नारायण

(D) सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन '

ANS – (D)

PDF SARTHI.COM

20. एक वृक्ष की हत्या

एक वृक्ष की हत्या कवि परिचय कुँवर नारायण का जन्म 19 सितंबर 1927 ई० में लखनऊ, उत्तर प्रदेश में हुआ था। कुँवर। नारायण ने कविता लिखने की शुरुआत सन् 1950 के आस-पास की। उन्होंने कविता के अलावा चिंतनपरक लेख, कहानियाँ और सिनेमा तथा अन्य कलाओं पर समीक्षाएँ भी लिखीं हैं, किंतु कविता उनके सृजन-कर्म में हमेशा मुख्य रही । उनको प्रमुख रचनाएँ हैं - 'चक्रव्यूह', 'परिवेश: हम तुम', 'अपने सामने', 'कोई दूसरा नहीं', 'इन दिनों' (काव्य संग्रह); 'आत्मजयी' (प्रबंधकाव्य): 'आकारों के आस-पास' (कहानी संग्रह); 'आज और आज से पहले' (समीक्षा) : 'मेर साक्षात्कार' (साक्षात्कार) आदि। कुँवर नारायण जी को अनके पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हो चुके हैं जो इस प्रकार हैं - 'साहित्य अकादमी पुरस्कार', 'कुमारन आशान पुरस्कार', 'व्यास सम्मान', 'प्रेमचंद पुरस्कार', 'लोहिया सम्मान', 'कबीर सम्मान' आदि ।

कुँवर नारायण पूरी तरह नगर संवेदना के कवि हैं। विवरण उनके यहाँ नहीं के बराबर है, पर वैयक्तिक और सामाजिक ऊहापोह का तनाव पूरी व्यंजकता के साथ प्रकट होता है। आज का समय और उसकी यांत्रिकता जिस तरह हर सजीव के अस्तित्व को मिटाकर उसे अपने लपेटे में ले लेना चाहती है, कुँवर नारायण की कविता वहीं से आकार ग्रहण करती है और मनुष्यंता और सजीवता के पक्ष में संभावनाओं के द्वार खोलती है। नयी कविता के दौर में, जब प्रबंधकाव्य का स्थान लंबी कविताएँ लेने लगी, तब कुँवर नारायण ने 'आत्मजयी' जैसा प्रबंधकाव्य रचकर भरपूर प्रतिष्ठा प्राप्त की। उनकी कविताओं में व्यर्थ का उलझाव, अखबारी सतहीपन और वैचारिक धुंध के बजाय संयम, परिष्कार और साफ-सुथरापन है। भाषा और विषय की विविधता उनकी कविताओं के विशेष गुण माने जाते हैं। उनमें यथार्थ का खुरदुरापन भी मिलता है और उसक सहज सौंदर्य भी।

तुरंत काटे गए एक वृक्ष के बहाने पर्यावरण, मनुष्य और सभ्यता के विनाश की अंतर्व्यथा को अभिव्यक्त करती यह कविता आज के समय की अपरिहार्य चिंताओं और संवेदनाओं का रचनात्मक अभिलेख है। यह कविता कुँवर नारायण के कविता संग्रह 'इन दिनों से संकलित है।

नई कविता काल के प्रखर कवि कुंवर नारायण नगर संवेदना के कवि हैं। उनकी रचनाओं में वैयक्तिक और सामाजिक उहापोह का तनाव पूरी व्यंजकता के साथ प्रकट होती है। आज का समय और उसकी यांत्रिकता जिस तरह हर सजीव के अस्तित्व को मिटाकर उसने अपने लपेटे में ले लेना चाहती है, कुँवर नारायण की कविता वहीं से आकार ग्रहण करती है और मनुष्यता और सजीवता के पक्ष में संभावनाओं के द्वार खोलती हैं। भाषा और विषय की विविधता उनकी कविताओं के विशेष गुण माने जाते हैं।। प्रस्तुत कविता में कवि तुरंत काटे गये वृक्ष के बहाने पर्यावरण, मनुष्य और सभ्यता के विनाश की अंतर्व्यथा को अभिव्यक्त किया है। कवि के घर के सामने ही वर्षों पुराना एक बड़ा पेड़ था जो काट लिया गया है। कभी यह पेड़ दूसरों को छाया देकर उसकी थकान दूर करता था। उसके घर की रखवाली करता था किन्तु आज वह निर्जीव बन पड़ा है। पुराना होने के कारण उसके छाल धूमिल हो गये थे। उसकी डालियाँ राइफल की तरह तनी हुई रहती थी अक्खड़पन उसके नस-नस में था, धूप, वर्षा, सर्दी, गर्मी में वह सदा चौकन्ना रहता था किन्तु आज वह बेजान हो गया है। दूर से परिचय पूछकर दोस्तों को एक नई ताजगी देकर मन की व्यथा को हरण करने वाला वृक्ष दुश्मनों के द्वारा काट लिया गया। वस्तुतः यहाँ कवि बताना चाहता है कि गाँव, शहर वातावरण को बचाना है तो पहले पेड़ को बचाना चाहिए। वृक्ष हमारे मित्र हैं। मित्र को दुश्मन समझ कर उसका विनाश करना मानव जाति को विनाश करना है।

शब्दार्थ अक्खड़ : विपरीत परिस्थितियों में डटा रहने वाला

PDFSARTHI.COM

बल-बूता : शक्ति-सामर्थ्य

अन्देशा : आशंका

नादिरों : नादिरशाह नामक ऐतिहासिक लुटेरे और आक्रमणकारी की तरह के क्रूर व्यक्ति

Q 1. कवि को वक्ष बूढ़ा चौकीदार क्यों लगता था ?

उत्तर :- कवि एक वृक्ष के बहाने प्राचीन सभ्यता, संस्कृति एवं पर्यावरण की रक्षा की चर्चा की है। वृक्ष मनुष्यता, पर्यावरण एवं सभ्यता की प्रहरी है । यह प्राचीनकाल से मानव के लिए वरदानस्वरूप है, इसका पोषक है, रक्षक है । इन्हीं बातों का चिंतन करते हुए कवि को वृक्ष बूढ़ा चौकीदार लगता था।

Q 2. वृक्ष और कवि में क्या संवाद होता था ?

उत्तर :- कवि जब अपने घर कहीं बाहर से लौटता था तो सबसे पहले उसकी नजर घर के आगे स्थिर खड़ा एक पुराना वृक्ष पर पड़ती । कवि को आभास होता मानो वृक्ष उससे पूछ रहा है कि तुम कौन हो? कवि इसका उत्तर देता-मैं तुम्हारा दोस्त हूँ। इसी संवाद के साथ वह उसके निकट बैठकर भविष्य में आने वाले पर्यावरण संबंधी खतरों का अंदेशा करता है।

Q 3. "एक वृक्ष की हत्या' शीर्षक कविता का भावार्थ लिखें।

उत्तर :- प्रस्तुत कविता में कवि एक पुराने वृक्ष की चर्चा करते हैं। वृक्ष प्रहरी के रूप में कवि के घर के निकट था और वह एक दिन काट दिया जाता है। कवि के चिंतन का मुख्य केन्द्र-बिन्दु कटा हुआ वृक्ष ही है। उसी को आधार मानकर सभ्यता, मनुष्यता एवं पर्यावरण को क्षय होते हुए देखकर आहत होते हैं।

Q 4. घर, शहर और देश के बाद कवि किन चीजों को बचाने की बात करता है और क्यों ?

PDFSARTHI.COM

उत्तर :- घर, शहर और देश के बाद कवि नदियों, हवा, भोजन, जंगल एवं मनुष्य को बचाने की बात करता है क्योंकि नदियाँ, हवा, अन्न, फल, फूल जीवनदायक हैं। इनकी रक्षा नहीं होगी तो मनुष्य के स्वास्थ्य की रक्षा नहीं हो सकती है।

Q 5. "एक वृक्ष की हत्या' कविता का समापन करते हुए कवि अपने किन अंदेशों का जिक्र करता है और क्यों ?

उत्तर :- कवि को अंदेशा है कि आज पर्यावरण, हमारी प्राचीन सभ्यता, मानवता तक के जानी दुश्मन समाज में तैयार हैं। अंदेशा इसलिए करता है क्योंकि आज लोगों की प्रवृत्ति वृक्षों की काटने की हो गई। सभ्यता के विपरीत कार्य करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है, मानवता का ह्रास हो रहा है।

Q 6. "एक वृक्ष की हत्या' कविता में एक रूपक की रचना हुई है। रूपक क्या है और यहाँ उसका क्या स्वरूप है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- रूपक भावाभिव्यक्ति की एक विधा है । इसमें कवि की कल्पना मूर्तरूप में चित्रित होती है। यहाँ वृक्ष की महत्ता को मूर्त रूप देते हुए उसे एक प्रहरी के रूप में दिखाया गया है।

Q 7. 'एक वृक्ष की हत्या' का सारांश अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर :- कवि जब कभी बाहर से आता था तब अपने घर के दरवाजे पर खड़े बढे वृक्ष को देखकर उसे एक आनंदपूर्ण संतोष मिलता था। पर आज जब वह बाहर : से घर आया तब उसे अपने घर के दरवाजे पर नहीं देखकर उसे बड़ा दुःख हुआ। उसे एक रिक्तता और खालीपन का अहसास हुआ। वह बूढ़ा वृक्ष उसके घर के दरवाजे पर हमेशा चौकस-चौकन्ना रहता था। वह वृक्ष उसके घर का पहरेदार था जैसे। पर, वह बूढ़ा चौकीदार वृक्ष किसी के स्वार्थ की बलि चढ़ गया। उसे काट डाला गया। उसकी हत्या हो गई। कवि को पहले से ही आशंका थी कि किसी की निगाहें उस बूढ़े वृक्ष पर लगी हुई हैं, वह अवश्य ही बूढे वृक्ष की हत्या कर देगा और सचमुच, हुआ भी वही। वृक्ष की हत्या कर कवि अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता हुआ कहता कि हमारी असावधानी के चलते ही ऐसा होता है कि कोई प्राणिजगत की रक्षा करनेवाले को ही अपने स्वार्थ के लिए मार डाला है। वृक्ष की हत्या के बाद कवि को आशंका होती है कि कहीं लुटेरे उसके घर को, शहर को और देश को ही लूट न लें। सब जगह लूट मची है। कवि 'लूट' के प्रति सावधान रहने की बात करता है। वह वृक्ष । की हत्या को पर्यावरण की हत्या का एक अंग मानता

PDFSARTHI.COM

है। वह पर्यावरण की चिंताओं से ग्रस्त हो जाता है। वह आत्मसजग होकर घोषणा करता है कि हमें नदियों को नाला होने से, हवा को धुंआ होने से (विषाक्त होने से) और खाद्य पदार्थ को जहर होने से (कीटनाशक दवाओं के छिड़काव और रासायनिक खादों के प्रयोग से खाद्य पदार्थों के जहर होने से) बचाना है। जंगलों के काटने से मरुस्थलों का लगातार विस्तार हो रहा है और भौतिकता के प्रति विशेष आग्रह के कारण सभ्य कहलानेवाला आदमी निरंतर असभ्य होता जा रहा है। कवि इस चिंता से ग्रस्त है। कवि इन तमाम आशंकाओं के बीच अपने कर्मठ होने का परिचय देते हुए कहता है कि हमें इन सारी अव्यवस्थाओं को दूर करने के लिए तैयार हो जाना चाहिए। हमें हर कीमत पर अपने घर, नगर, देश, नदियों, हवा, खाद्य-पदार्थ, जंगल तथा मानव की सुरक्षा करनी है। . तुरंत काटे गए एक वृक्ष के बहाने पर्यावरण, मनुष्य और सभ्यता के विनाश की 'अंतर्व्यथा को यह कविता अभिव्यक्त करती है।

Q 8. कविता की प्रासंगिकता पर विचार करते हुए एक टिप्पणी लिखें।

उत्तर :- आज प्राचीन सभ्यता का ह्रास हो रहा है। पर्यावरण का ख्याल नहीं रखा जा रहा है। वृक्ष एवं जंगल काटे जा रहे हैं। मानवता का गुण नष्ट हो रहा है। पशुता एवं राक्षसत्व का गुण बढ़ रहा है । नदियों का स्वच्छ जल प्रदूषित हो रहा है। ऐसी विषम परिस्थितियों में कवि का इस ओर ध्यान दिलाना प्रासंगिक है। आज के प्रसंग में कवि की कल्पना चरितार्थ हो रही है। कवि का अंदेशा सत्य हो रहा है। हमें वृक्ष, पर्यावरण, मनुष्यता; सभ्यता एवं राष्ट्रीयता के प्रति संवेदनशील होना होगा। इन सबकी रक्षा के लिए गंभीरता से विचार करना होगा ताकि आने वाला समय सुखद हो, धरती पर मानवता स्थापित हो सके, संस्कारक्षम वातावरण का निर्माण किया जा सके।

Q 9. दूर से ही ललकारता, 'कौन ?' मैं जवाब देता, 'दोस्त !' की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :- प्रस्तुत पंक्ति हिन्दी पाठ्य-पुस्तक के कुँवरः नारायण रचित 'एक वृक्ष की हत्या' पाठ से उद्धत है । इसमें कवि ने एक वृक्ष के कटने से आहत होता है और इसपर चिंतन करते हुए पूरे पर्यावरण एवं मानवता पर खतरा की आशंका से आशंकित हो जाता है। इसमें अपनी संवेदना को कवि ने अभिव्यक्त किया है। प्रस्तुत व्याख्येय अंश में कवि कहता है कि जब मैं अपने घर लौटा तो पाया . कि मेरे घर के आगे प्रहरी के रूप में खड़े वृक्ष को काट दिया गया है। उसकी याद करते हुए कवि कहते हैं कि वह घर के सामने अहर्निश खड़ा रहता था मानो वह गृहरक्षक हो । जब मैं बाहर से लौटता था उसे दूर से देखता था और मुझे प्रतीत होता था कि वृक्ष मुझसे पूछ रहा है कि तुम कौन हो ? तब मैं बोल पड़ता था कि मैं तुम्हारा मित्र हूँ। यहाँ वृक्ष और मनुष्य की संगति का बखान है।

PDF SARTHI.COM

Q 10. 'बचाना है जंगल को मरुस्थल हो जाने से/बचाना है-मनुष्य को जंगली हो जाने से' की व्याख्या कीजिए

उत्तर :- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के एक वृक्ष की हत्या' पाठ से उद्धृत है। इसमें कवि भविष्य में आने वाले प्राकृतिक संकट, मानवीयता पर खतरा एवं ह्रास होते सभ्यता की ओर ध्यानाकर्षण कराते हुए भावी आशंका को व्यक्त किया है।

प्रस्तुत व्याख्येय अंश में कवि ने कहा है कि अगर हम इस अंधाधुंध विकास क्रम में विवेक से काम नहीं लेंगे तो वृक्ष कटते रहेंगे और भविष्य में जंगल मरुस्थल का रूप ले लेगा। साथ ही मानवता की सभ्यता की रक्षा के प्रति सचेत नहीं होंगे तो मानव भी जंगल का रूप ले सकता है। मानवीयता पशुता में परिवर्तित हो सकता है। मानव दानवी प्रवृत्ति अपनाता दिख रहा है और इस बढ़ते प्रवृत्ति को रोकना आवश्यक होगा। अर्थात् कवि मानवीयता स्थापित करने हेतु चिंतनशील है, सभ्यता की सुरक्षा हेतु पर्यावरण-संरक्षण के लिए सजग होने की शिक्षा दे रहे हैं।

Q 11. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव सौंदर्य स्पष्ट करे :

"धूप में वारिश में; गर्मी में सर्दी में
हमेशा चौकन्ना; अपनी खाकी वर्दी में"

उत्तर :- कवि ने इन पंक्तियों में एक बूढ़ा वृक्ष को युगों-युगों का प्रहरी मानते हुए सभ्यता-संस्कृति की रक्षा हेतु मानव को जगाने का प्रयास किया है। कवि की कल्पना ने वृक्ष को अभिभावक, चौकीदार, पहरुआ के रूप में चित्रित कर मानवीयता प्रदान किया है। इसमें वृक्ष की चेतनता, कर्तव्यनिष्ठता एवं आत्मीयता दर्शाई गई है।

1. 'एक वृक्ष की हत्या' के कवि हैं-

(A) कुँवर नारायण

(B) वीरेन डंगवाल

(C) अनामिका

(D) जीवनानंद दास

PDF SARTHI.COM

ANS – (A)

2. कुँवर नारायण का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

(A) 7 मार्च, 1911 ई० कुशीनगर उ०प्र०

(B) 19 सितम्बर, 1927 ई० लखनऊ उ०प्र०

(C) 5 अगस्त, 1947 ई० गढ़वाल उत्तरांचल

(D) 17 अगस्त, 1961 ई० मुजफ्फरपुर बिहार

ANS – (B)

3. एक वृक्ष की हत्या में कवि देश को किससे बचाने की बात करता है?

(A) भ्रष्टाचार से

(B) गरीबी से

(C) राजनेता से

(D) देश के दुश्मनों से

ANS – (D)

4. कुँवर नारायण ने बूढ़ा चौकीदार किसे कहा है?

(A) पहाड़

(B) व्यक्ति

(C) वृक्ष

(D) सैनिक

PDF SARTHI.COM

ANS – (C)

5. 'एक वृक्ष की हत्या' कविता में कवि किसे बचाने की बात करता है?

(A) घर

(B) शहर

(C) देश

(D) सभी

ANS – (D)

6. पाठ्य पुस्तक की कौन-सी कविता पर्यावरण, मनुष्य और सभ्यता के विनाश की अंतर्व्यथा को अभिव्यक्त करती है?

(A) हिरोशिमा

(B) एक वृक्ष की हत्या

(C) हमारी नींद

(D) सभी को

ANS – (B)

7. एक वृक्ष की हत्या कविता में कवि ने वृक्ष को किस रूप में व्यक्त किया है?

(D) अक्षर-ज्ञान

(A) बूढ़ा व्यक्ति

(B) बूढ़ा चौकीदार

(C) सिपाही

PDF SARTHI.COM

(D) इनमें से कोई नहीं

ANS – (B)

8. कविता में पेड़ की डाल की तुलना किससे की गई है?

(A) डण्डा से

(B) राइफल से

(C) तीर से

(D) भाला से

ANS – (B)

9. 'एक वृक्ष की हत्या' कविता में कवि शहर को किससे बचाने की बात करता है?

(A) लुटेरों से

(B) देश के दुश्मनों से

(C) नादिरों से

(D) इनमें से कोई नहीं

ANS – (B)

10. 'एक वृक्ष की हत्या' कविता किस काव्य-संग्रह से संकलित है?

(A) दीपशिखा

(B) ग्राम्या

(C) इन दिनों

(D) चिंता

PDF SARTHI.COM

ANS – (C)

11. धूप में बारिश में गर्मी में सर्दी में हमेशा चौकन्ना अपनी खाकी वर्दी में प्रस्तुत पंक्तियाँ किस कविता की है?

(A) लौटकर आऊँगा फिर

(B) मेरे बिना तुम प्रभु

(C) एक वृक्ष की हत्या

(D) हीरोशिमा

ANS – (C)

12. 'एक वृक्ष की हत्या' कविता कुँवर नारायण के किस कविता संग्रह से संकलित है?

(A) चक्रव्यूह

(B) अपने सामने

(C) कोई दूसरा नहीं

(D) इन दिनों

ANS – (D)

13. 'नगर-संवेदना' के कवि हैं-

(A) स० हो० वात्स्यायन अज्ञेय

(B) वीरेन डंगवाल

(C) कुँवर नारायण

(D) सुमित्रानंदन पंत

ANS – (C)

PDF SARTHI.COM

14.'एक वृक्ष की हत्या' शीर्षक पाठ में दूर से कौन ललकारता है?

(A) चोर

(B) डाकू

(C) वृक्ष रूपी चौकीदार

(D) शत्रु

ANS – (C)

15. कुँवर नारायण कवि है-

(A) ग्राम संवेदना के

(B) नगर संवेदना के

(C) ममत्व संवेदना के

(D) पितृत्व संवेदना के लिए

ANS – (B)

16. दूर से ही ललकारता, "कौन?"

मैं जवाब देता, "दोस्त!"

पंक्ति किस पाठ से है?

(A) एक वृक्ष की हत्या

(B) स्वदेशी

(C) भारतमाता

(D) हमारी नींद

PDF SARTHI.COM

ANS – (A)

17. 'आत्मजयी' नामक प्रबंध काव्य किस कवि द्वारा लिखा गया है?

(A) गुरुनानका

(B) वीरेन डंगवाल

(C) कुँवर नारायण

(D) प्रेमघन

ANS – (C)

18. कुँवर नारायण कविता लिखने की शुरुआत कब की?

(A) 1940 के आस-पास

(B) 1942 के आस-पास

(C) 1945 के आस-पास

(D) 1950 के आस-पास

ANS – (D)

19. कवि के अनुसार वृक्ष की सूखी डाली किस तरह थी?

(A) झुरियोंदार

(B) मैलाकुचैला

(C) राइफिल की तरह

(D) चौकीदार की तरह

ANS – (C)

PDFSARTHI.COM

20.कुँवर नारायण द्वारा रचित प्रबंधकाव्य है-

(A) आत्मजयी

(C) चक्रव्यू

(B) मेरे साक्षात्कार

(D) सदानीरा

ANS – (A)

21. कवि के अनुसार वृक्ष रूपी चौकीदार का पगड़ी कैसा है?

(A) मैलाकुचैला

(B) फूलपत्तीदार

(C) रेशमी चमकदार

(D) मलेट्री टोपी

ANS – (B)

PDF SARTHI.COM

PDF SARTHI.COM

21 . हमारी नींद

लेखक- वीरेन डंगवाल

– जन्म- 5 अगस्त, 1947 ई०, टिहरी गढ़वाल जिला के कीर्तिनगर में (उŸ रांचल)

– मृत्यु- 28 सितम्बर, 2015 ई०

- हमारी नींद कवि परिचय प्रमुख समकालीन कवि वीरेन डंगवाल का जन्म 5 अगस्त 1947, ई० में कीर्तिनगर, टिहरी गढ़वाल, उत्तरांचल में हुआ । मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, कानपुर, बरेली, नैनीताल में शुरुआती शिक्षा प्राप्त करने के बाद डंगवाल जी ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम० ए० किया और यहीं से आधुनिक हिंदी कविता के मिथकों और प्रतीकों पर डी० लिट् की उपाधि पायी। वे 1971 ई० से बरेली कॉलेज में अध्यापन करते रहे। डंगवाल जी हिंदी और अंग्रेजी में पत्रकारिता भी करते हैं। उन्होंने इलाहाबाद से प्रकाशित अमृत प्रभात' में कुछ वर्षों तक 'घूमता आईना' शीर्षक. से स्तंभ लेखन भी किया। वे दैनिक 'अमर उजाला' के संपादकीय सलाहकार भी हैं।]

Pdf, Notes OR Test Series लेने के लिए हमें WhatsApp करे - 7488296191

- कविता में यथार्थ को देखने और पहचानने का वीरेन डंगवाल का तरीका बहुत अलग, अनूठा और बुनियादी किस्म का है। सन् 1991 में प्रकाशित उनका पहला कविता संग्रह 'इसी दुनिया में आज भी उतना ही प्रासंगिक और महत्त्वपूर्ण लगता है। उन्होंने कविता में समाज के साथ परण जनों और हाशिये पर स्थित जीवन के जो विलक्षण ब्यौरे और दृश्य रचे हैं, वे कविता में और कविता से बाहर भी बेचैन करने वाले हैं। उन्होंने कविता के मार्फत ऐसी बहुत-सी वस्तुओं और उपस्थितियों के विमर्श का संसार निर्मित किया है जो प्रायः ओझल और अनदेखी थीं। उनकी कविता में जनवादी परिवर्तन की मूल प्रतिज्ञा है और उसकी बुनावट में ठेठ देसी किस्म के, खास और आम, तत्सम और तद्भव, क्लासिक और देशज अनुभवों की संश्लिष्टता है।
- कविता में यथार्थ को देखने और पहचानने का वीरेन डंगवाल का तरीका बहुत अलग, अनूठा और बुनियादी किस्म का है। सन् 1991 में प्रकाशित उनका पहला कविता संग्रह 'इसी दुनिया में आज भी उतना ही प्रासंगिक और महत्त्वपूर्ण लगता है। उन्होंने कविता में समाज के साथ परण जनों और हाशिये पर स्थित जीवन के जो विलक्षण ब्यौरे और दृश्य रचे हैं, वे कविता में और कविता से बाहर भी बेचैन करने वाले हैं। उन्होंने कविता के मार्फत ऐसी बहुत-सी वस्तुओं और उपस्थितियों के विमर्श का संसार निर्मित किया है जो प्रायः ओझल और अनदेखी थीं। उनकी कविता में जनवादी परिवर्तन की मूल प्रतिज्ञा है और उसकी बुनावट में ठेठ देसी किस्म के, खास और आम, तत्सम और तद्भव, क्लासिक और देशज अनुभवों की संश्लिष्टता है।
- कविता में यथार्थ को देखने और पहचानने का वीरेन डंगवाल का तरीका बहुत अलग, अनूठा और बुनियादी किस्म का है। सन् 1991 में प्रकाशित उनका पहला कविता संग्रह 'इसी दुनिया में आज भी उतना ही प्रासंगिक और महत्त्वपूर्ण लगता है। उन्होंने कविता में समाज के साथ परण जनों और हाशिये पर स्थित जीवन के जो विलक्षण ब्यौरे और दृश्य रचे हैं, वे कविता में और कविता से बाहर भी बेचैन करने वाले हैं। उन्होंने कविता के मार्फत ऐसी बहुत-सी वस्तुओं और उपस्थितियों के विमर्श का संसार निर्मित किया है जो प्रायः ओझल और अनदेखी थीं। उनकी कविता में जनवादी परिवर्तन की मूल प्रतिज्ञा है और उसकी बुनावट में ठेठ देसी किस्म के, खास और आम, तत्सम और तद्भव, क्लासिक और देशज अनुभवों की संश्लिष्टता है।
- कविता में यथार्थ को देखने और पहचानने का वीरेन डंगवाल का तरीका बहुत अलग, अनूठा और बुनियादी किस्म का है। सन् 1991 में प्रकाशित उनका पहला कविता संग्रह 'इसी दुनिया में आज भी उतना ही प्रासंगिक और महत्त्वपूर्ण लगता है। उन्होंने कविता में समाज के साथ परण जनों और हाशिये पर स्थित जीवन के जो विलक्षण ब्यौरे और दृश्य रचे हैं, वे कविता में और कविता से बाहर भी बेचैन करने वाले हैं। उन्होंने कविता के मार्फत ऐसी बहुत-सी वस्तुओं और उपस्थितियों के विमर्श का संसार निर्मित किया है जो प्रायः ओझल और अनदेखी थीं। उनकी कविता में जनवादी परिवर्तन की मूल प्रतिज्ञा है और उसकी बुनावट में ठेठ देसी किस्म के, खास और आम, तत्सम और तद्भव, क्लासिक और देशज अनुभवों की संश्लिष्टता है।

PDF SARTHI.COM

- कविता में यथार्थ को देखने और पहचानने का वीरेन डंगवाल का तरीका बहुत अलग, अनूठा और बुनियादी किस्म का है। सन् 1991 में प्रकाशित उनका पहला कविता संग्रह 'इसी दुनिया में आज भी उतना ही प्रासंगिक और महत्त्वपूर्ण लगता है। उन्होंने कविता में समाज के साथ परण जनों और हाशिये पर स्थित जीवन के जो विलक्षण ब्यौरे और दृश्य रचे हैं, वे कविता में और कविता से बाहर भी बेचैन करने वाले हैं। उन्होंने कविता के मार्फत ऐसी बहुत-सी वस्तुओं और उपस्थितियों के विमर्श का संसार निर्मित किया है जो प्रायः ओझल और अनदेखी थीं। उनकी कविता में जनवादी परिवर्तन की मूल प्रतिज्ञा है और उसकी बुनावट में ठेठ देसी किस्म के, खास और आम, तत्सम और तन्द्भव, क्लासिक और देशज अनुभवों की संश्लिष्टता है।
- हमारी नींद Summary in Hindi पाठ का अर्थ नई कविता के यशस्वी कवि हिन्दी साहित्य में अपना अलग पहचान बनानेवाले वीरेन डंगवाल एक चर्चित कवि हैं। इनकी रचनाओं में यथार्थ का बहुत अलग, अनूठा और बुनियादी किस्म का वर्णन मिलता है। उन्होंने अपनी रचनाओं ने समाज के साधरण जनों और हाशिये पर स्थित जीवन को विशेष रूप से स्थान दिया है। उनकी कविता में जनवादी परिवर्तन की मूल प्रतिज्ञा है और उसकी बनावट में ठेठ देशी किस्म के खास और आम, तत्सम और तद्भव, क्लासिक और देशज अनुभवों की संश्लिष्टता है।

कविता के साथ

प्रश्न 1. कविता के प्रथम अनुच्छेद में कवि एक बिप्य की रचना करता है। उसे स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कविता के प्रथम अनुच्छेद में कवि वीरेन डंगवाल ने मानव जीवन एक बिंब उपस्थित किया है। सुविधाभोगी आरामपसंद जीवन नींद रूपी अकर्मण्यता के चादर से अपने आपको ढंककर जब सो जाता है तब भी प्रकृति के वातावरण के एक छोटा बीज अपनी कर्मठता रूपी सींगों से धरती के सतह रूपी संकटों को तोड़ते हुए आगे बढ़ जाता है। यहाँ नींद, अंकुर, कोमल सींग, फूली हुई बीज, छत ये सभी बिम्ब रूप में उपस्थित है।

प्रश्न 2. मक्खी के जीवन-क्रम का कवि द्वारा उल्लेख किये जाने का क्या आशय है?

उत्तर- मक्खी के जीवन-क्रम का कवि द्वारा उल्लेख किये जाने का आशय है निम्न स्तरीय जीवन की संकीर्णता को दर्शाना। सृष्टि में अनेक जीवन-क्रम चलता रहता है। उसका जीवन-क्रम की व्यापकता को लेकर कर्मठता और अकर्मठता का बोध कराता है लेकिन मक्खी के जीवन-क्रम केवल सुविधापयोगी एवं परजीवी-जीवन का बोध कराता है।

PDFSARTHI.COM

प्रश्न 3. कवि गरीब बस्तियों का क्यों उल्लेख करता है ?

उत्तर- कवि गरीब बस्तियों के उल्लेख के माध्यम से कहना चाहता है कि जहाँ के लोग दो जून रोटी के लिए काफी मसक्कत करने के बाद भी तरसते हैं वहाँ पूजा-पाठ, देवी जागरण जैसे महोत्सव कितना सार्थक हो सकता है ? यहाँ कुछ स्वार्थी लोग अपनी उल्लू सीधा करने के लिए गरीब लोगों का उपयोग करते हैं। लेकिन गरीबी से ग्रसित लोग अपने वास्तविक विकास हेतु सचेत नहीं होते हैं।

प्रश्न 4. कवि किन अत्याचारियों का और क्यों जिक्र करता है?

उत्तर- कवि यहाँ उन अत्याचारियों का जिक्र करता है जो हमारी सुविधाभोगी, आराम पसंद जीवन से लाभ उठाते हैं। समाज का एक वर्ग जो ऐशो-आराम की जिंदगी में अपने आपको ढाल लेता है उसी का लाभ अत्याचारी उठाते हैं। हमारी बेपरवाहियों के बाहर विपरीत परिस्थितियों से लगातार लड़ते हुए बढ़ते जाने वाले जीवन नहीं रह पाते हैं और इस अवस्था में अत्याचारी अत्याचार करने के बाह्य और आंतरिक सभी साधन जुटा लेते हैं।

प्रश्न 5. इनकार करना न भूलने वाले कौन हैं? कवि का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- आज भी हमारे समाज में कुछ ऐसे हठधर्मी हैं जो संवैधानिक और वैधानिक स्तर पर 'कई गलतियाँ कर जाते हैं लेकिन अपनी भूलें या गलतियों को स्वीकार नहीं करते हैं। वे साफ तौर पर अपनी भूल को इनकार कर देते हैं। जैसे लगता है कि उनका दलील काफी साफ और मजबूत है।

प्रश्न 6. कविता के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए।

उत्तर- किसी भी कविता का शीर्षक कवितारूपी शरीर का मुख होता है। शीर्षक कविता की सारगर्भिता लिए रहता है। शीर्षक रखने के समय कुछ बातें इस प्रकार होती हैं-शीर्षक, सार्थक लघु और समीचीन होना चाहिए। साथ ही शीर्षक घटना प्रधान, जीवन प्रधान या विषय-वस्तु प्रधान होता है। यहाँ शीर्षक विषय-वस्तु प्रधान हैं। शीर्षक छोटा है और आकर्षक भी है। इसका शीर्षक पूर्ण रूप से केन्द्र में चक्कर लगाता है जहाँ शीर्षक सुनकर ही जानने की इच्छा प्रकट हो जाता है। अतः सब मिलाकर शीर्षक सार्थक है।

प्रश्न 7. 'याने साधन तो सभी जुटा लिए हैं अत्याचारियों ने की व्याख्या कीजिए।

PDFSARTHI.COM

उत्तर- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक हिन्दी साहित्य के हमारी नींद नामक शीर्षक से उधृत है। कवि वीरेन डंगवाल सामाजिक अत्याचारियों के करतूतों का पर्दाफाश किये हैं। आज हमारे समाज में अनेक लोग हैं जो अपनी जिंदगी को आरामतलबी बना लिये हैं। ऐसी जिंदगी समाज और राष्ट्र के लिए खतरनाक परिधि में रहती है और इन्हीं में से कुछ लोग ऐसे हैं जो इनकी विवशता का लाभ उठाने के लिए गलत अंजाम देने में पीछे नहीं हटते हैं। अत्याचारी आंतरिक और बाह्य रूप से अपने स्वार्थपूर्ति के लिए सभी प्रकार के साधन अपनाते हैं।

प्रश्न 8. व्याख्या करें-गरीब बस्तियों में भी धमाके से हुआ देवी जागरण लाउडस्पीकर पर।

उत्तर - प्रस्तुत पद्यांश हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध कवि वीरेन डंगवाल के द्वारा लिखित 'हमारी नींद' से ली गई है। इस अंश में कवि उन लोगों का चित्र खींचा है जो गरीब बस्तियों में जाकर अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए देवी जागरण जैसे महोत्सव का आयोजन करते हैं। कवि कहते हैं कि आज भी हमारे समाज में कुछ ऐसे स्वार्थपरक लोग हैं जिनके हृदय में गरीबों के प्रति हमदर्दी नहीं है। केवल उनसे समय-समय पर झूठे वादे करते हैं। नेता, पूँजीपति एवं अत्याचारी ये सभी गरीबों की आंतरिक व्यथा से खिलवाड़ कर उनकी विवशता से लाभ उठाते हैं।

प्रश्न 9. "हमारी नींद के बावजूद' की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिन्दी पाठ्य-पुस्तक के "हमारी नींद" नामक शीर्षक से उधृत है। इस अंश में हिन्दी काव्यधारा के समसामयिक कवि वीरेन डंगवाल ने वैसे लोगों का चित्रण किया है जो आरामतलबी जीवन पंसद करते हैं। प्रस्तुत अंश में कवि कहते हैं कि जीवन-क्रम कभी रुकता नहीं है। समय-चक्र के समान बिना किसी की प्रतीक्षा किये हुए अनवरत आगे ही बढ़ता जाता है। यदि हमारे समाज के कोई भी व्यक्ति सुविधोपयोगी आराम पसंद जीवन पसंद करते हैं तो भी कहीं एक पक्ष जरूर ऐसा होता है जिसका सिलसिला हमेशा आगे बढ़ते जाता है जो कर्मवाद का संदेश देता है।

प्रश्न 10. 'हमारी नींद' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर- समसामयिक कवि वीरेन डंगवाल ने हमारी नींद' कविता में विभिन्न चित्रों के माध्यम से सुविधाभोगी जीवन और हमारी बेपरवाही के बावजूद बेहतर जिन्दगी के लिए चलने वाले संघर्ष का चित्रण बड़ी स्पष्टता से किया है।

PDFSARTHI.COM

कवि कहता है कि छोटी धरती के नीचे बीज अंकुरा और उस छोटे अंकुर ने अपने ऊपर की धरती को दरकाया और खुली हवा में उसने साँस ली। उसने अपने ऊपर के अवरोध को तोड़ा। पेड़ ने भी अपना कद ऊँचा किया। प्रकृति के इस क्रम के बाद कवि समाज की ओर निहारता है।

मक्खियों की तरह लोग जी रहे हैं और उनकी तरह ही बच्चे उत्पन्न कर रहे हैं। नतीजा है कि जीवन की इस अफरा-तफरी में ही रंगे हो रहे कुछ लोग आगजनी कर रहे हैं, बम फोड़ रहे हैं ताकि अपने लिए सुविधा का सामान जुटा सकें। कुछ की जिन्दगी जाती है तो जाए।

हमें क्या ? दूसरी ओर कुछ गरीब लोग हैं जो अपनी गरीबी को अपना नसीब मान चुके हैं, वे गरीबी से छुटकारा पाने के लिए लड़ने की अपेक्षा अपनी गाढ़ी कमाई में लाउडस्पीकर लगाकर, रात-रात भर देवी के भजन गा रहे हैं वे इस भ्रम में हैं कि देवी-पूजा से उनका जीवन बदल जाएगा।

वस्तुतः वे नींद में हैं। दरअसल भाग्य, पूजा-पाठ समाज के दुश्मनों के बिछाए हुए जाल हैं ताकि ये अत्याचारी आनन्द-सुख भोग सकें। किन्तु जीवन ऐसा है कि उनके लाख चाहने के बाद रुकता नहीं है। उपेक्षाकृत से उस पर कोई असर नहीं पड़ता।

कवि कहता है कि लाख कोशिशों के बावजूद कुछ लोग हैं जो अनाचार के आगे सिर नहीं झुकाते। वे दृढतापूर्वक अनुचित कार्य करने से मना कर देते हैं। उनकी ओर से आँख बन्द कर लेने पर भी वे रुकते नहीं, बढ़ते जाते हैं। यह संघर्ष ही उनकी ताकत है, मानव के विकास की यही कहानी है।

प्रश्न 11. कविता में एक शब्द भी ऐसा नहीं है जिसका अर्थ जानने की कोशिश करनी पड़े। यह कविता की भाषा की शक्ति है या सीमा ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- यह भाषा की शक्ति है जो अपने साधारण अर्थ से सबकुछ समझाने में सफल हो जाती है। सीमा का रूपान्तर नहीं होता है किन्तु भाषा का रूपान्तर कविता की सौष्ठवता को प्रदर्शित करने में समर्थ हो जाती है।

9. हमारी नींद

1. 'हमारी नींद' कविता के कवि हैं-

PDFSARTHI.COM

(A) कुँवर नारायण

(B) वीरेन डंगवाल

(C) अनामिका

(D) रेनर मारिया रिल्के

ANS – (B)

2. वीरेन डंगवाल द्वारा रचित कविता है—

(A) हिरोशिमा

(B) हमारी नींद

(C) अक्षर ज्ञान

(D) लौटकर आऊँगा फिर

ANS – (B)

3. वीरेन डंगवाल का जन्म कब हुआ था?

(A) 19 सितम्बर, 1927 ई०

(B) 17 अगस्त, 1961 ई०

(C) 7 मार्च, 1911 ई०

(D) 5 अगस्त, 1947 ई०

ANS – (D)

4. वीरेन डंगवाल कवि हैं-

(A) छायावादी

PDFSARTHI.COM

(B) प्रगतिवादी

(C) प्रयोगवादी

(D) समकालीन

ANS – (D)

5. 'हमारी नींद' कविता कहाँ से ली गयी है?

(A) इसी दुनिया में से

(B) पहल पुस्तिका से

(C) दुष्चक्र में स्रष्टा से

(D) असादीवार से

ANS – (C)

6. कवि के अनुसार, धमाके के साथ देवी जागरण कहाँ हुआ?

(A) मंदिरों में

(B) नदी तट पर

(C) गरीब बस्तियों में

(D) इनमें से कोई नहीं

ANS – (C)

7. गरीब बस्तियों में क्या हुआ?

(A) कई शिशु पैदा हुए

(B) दंगे, आगजनी और बमबारी

PDF SARTHI.COM

(C) धमाके से देवी जागरण

(D) इनमें से कोई नहीं

ANS – (C)

8. मेरी नींद के दौरान कुछ पेड़। बढ़ गए

(A) अधिक

(B) इंच

(C) वृक्ष

(D) सेंटीमीटर

ANS – (B)

9. 'अमृत प्रभात' पत्रिका कहाँ से प्रकाशित होती है?

(A) लखनऊ

(B) बनारस

(C) इलाहाबाद

(D) मेरठ

ANS – (C)

10. हमारी नींद कविता में किसके जीवन-क्रम पूरा होने की बात की गई है?

(A) मानव

(B) मक्खी

(C) पशु

PDF SARTHI.COM

(D) पक्षी

ANS – (B)

11. वीरेन डंगवाल को किस काव्य संग्रह के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था?

(A) दुष्चक्र में स्रष्टा

(B) इसी दुनिया में

(C) पहल पुस्तिका

(D) अमर उजाला

ANS – (A)

12. सुविधाभोगी आराम पंसद जीवन अथवा हमारी वेपरवाहियों के बाहर विपरीत परिस्थितियों से लगातार लड़ते हुए बढ़ते जानेवाले जीवन का चित्र किस कविता में हुआ है?

(A) स्वदेशी

(B) भारतमाता

(C) हमारी नींद

(D) जनतंत्र का जन्म

ANS – (C)

13. दैनिक 'अमर उजाला' के संपादकीय सलाहकार भी है-

(A) वीरेन डंगवाल

(B) कुँवर नारायण

(C) अनामिका

PDF SARTHI.COM

(D) जीवनानंद दास

ANS – (A)

14. कवि के अनुसार, इनकार करना न भूलने वाले कौन हैं?

(A) शिक्षित लोग

(B) किसान लोग

(C) हठधर्मी लोग

(D) इनमें से कोई नहीं

ANS – (C)

15. वीरेन डंगवाल का पहला कविता संग्रह है-

(A) दुष्चक्र में स्रष्टा

(B) इसी दुनिया में

(C) देशांतर

(D) भग्नदूत

ANS – (B)

16. वीरेन डंगवाल का पहला काव्य संग्रह कब प्रकाशित हुआ?

(A) 1990 ई० में

(B) 1991 ई० में

(C) 1992 ई० में

PDF SARTHI.COM

(D) 1993 ई० में

ANS – (B)

17. गरीब बस्तियों में भी धमाके से हुआ देवी जागरण लाउडस्पीकर पर । प्रस्तुत पंक्ति किस कविता की है?

(A) हिरोशिमा

(B) एक वृक्ष की

(C) हमारी नींद

(D) अक्षर ज्ञान

ANS – (C)

18. समकालीन कवि हैं—-

(A) गुरुनानक

(B) प्रेमघन

(C) सुमित्रानंदन पंत

(D) हमारी नींद

ANS – (D)

19. किस रचना के लिए वीरेन डंगवाल को सहाय स्मृति पुरस्कार मिला था?

(A) दुष्चक्र में भ्रष्य

(B) इसी दुनिया

(C) घूमता आईना

(D) अमृत प्रभात

PDF SARTHI.COM

ANS – (B)

20. 'दुष्चक्र में स्रष्टा' काव्य संग्रह किस कवि क

(A) कुँवर नारायण

(B) अनामिका

(C) वीरेन डंगवाल

(D) जीवनानंद दास

ANS – (C)

21. तुर्की के महाकवि थे

(A) नाजिम हिकमत

(B) अब्दुल मुगनी

(C) सैयद मेहाल अहसन

(D) मो० सल्लाउद्दीन

ANS – (A)

22. 'हमारी नींद' शीर्षक कविता में नींद प्रतीक है?

(A) साहस

(B) उम्मीद

(C) प्रसन्नता

(D) आलस

ANS – (D)

PDFSARTHI.COM

PDF SARTHI.COM

22. अक्षर-ज्ञान

- अक्षर-ज्ञान कवित्री परिचय समकालीन हिंदी कविता में अपनी एक अलग पहचान रखनेवाली कवयित्री अनामिका का जन्म 17 अगस्त 1961 ई० में मुजफ्फरपुर, बिहार में हुआ। उनके पिता श्यामनंदन किशोर हिंदी के गीतकार और बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष थे। अनामिका ने दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम० ए० किया और वहीं से पीएच० डी० की उपाधि पायी। सम्प्रति, वे सत्यवती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में प्राध्यापिका हैं।
- अनामिका कविता और गद्य लेखन में एकसाथ सक्रिय हैं। वे हिंदी और अंग्रेजी दोनों में लिखती - हैं। उनकी रचनाएँ हैं - काव्य संकलन: 'गलत पते की चिट्ठी', 'बीजाक्षर', 'अनुष्टुप' आदि आलोचना : 'पोस्ट-एलिएट पोएट्री', 'स्त्रीत्व का मानचित्र' आदि। संपादन: 'कहती हैं औरतें' '(काव्य संकलन)। अनामिका को राष्ट्रभाषा परिषद् पुरस्कार, भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार, गिरिजा कुमार माथुर पुरस्कार ऋतुराज साहित्यकार सम्मान आदि प्राप्त हो चुके हैं।
- एक कवयित्री और लेखिका के रूप में अनामिका अपने वस्तुपरक समसामयिक बोध और संघर्षशील वंचित जन के प्रति रचनात्मक सहानुभूति के लिए जानी जाती हैं। स्त्री विमर्श में सार्थक हस्तक्षेप करने वाली अनामिका अपनी टिप्पणियों के लिए भी उल्लेखनीय हैं।
- प्रस्तुत कविता समसामयिक कवियों की चुनी गई कविताओं की चर्चित श्रृंखला 'कवि ने कहा' से यहाँ ली गयी है। प्रस्तुत कविता में बच्चों के अक्षर-ज्ञान की प्रारंभिक शिक्षण-प्रक्रिया के कौतुकपूर्ण वर्णन-चित्रण द्वारा कवयित्री गंभीर आशय व्यक्त कर देती हैं।

- अक्षर-ज्ञान पाठ का अर्थ समकालीन हिन्दी कविता में अपनी एक अलग पहचान रखने वाली कवयित्री और लेखिका के रूप में अनामिका अपने वस्तु परक और समसामयिक बोध और संघर्षशील वंचित जन के प्रति रचनात्मक सहानुभूति के लिए जानी जाती है। स्त्री विमर्श में सार्थक हस्तक्षेप करनेवाली अनामिका अपनी टिप्पणियों के लिए भी उल्लेखनीय हैं। प्रस्तुत कविता समसामयिक कवियों की चुनी गई कविताओं की चर्चित श्रृंखला 'कवि ने कहा' से यहाँ ली गयी है। प्रस्तुत कविता में बच्चों के अक्षर ज्ञान की प्रारंभिक शिक्षण-प्रक्रिया का वर्णन किया गया है। बच्चों का अक्षर ज्ञान वैविध्यपूर्ण होता है। उसके मनोभावों को पढ़ना और उसके सहज बोध के द्वारा सीखाना अध्यापक अध्यापिका की शिक्षण कला का प्रदर्शन होता है। बच्चों को पढ़ाने के लिए स्वयं बच्चा बनना पड़ता है। माँ पहली अध्यापिका होती है। जीवन बोध की पहला अक्षर ज्ञान उसी के द्वारा प्राप्त होता है। 'क' लिखाने की प्रक्रिया पूरी भी नहीं होती है कि 'ख" आकर नीचे उत्तर जाती है। 'ग' में बेचैनी दिखती है कि 'घ' घड़ा की तरह लुढ़क जाता है। वस्तुतः कवयित्री माँ और बेटे के माध्यम से अक्षर ज्ञान को सहज बोध को अपने ढंग से प्रस्तुत करना चाहती है। माँ-बेटे अक्षर ज्ञान के लिए अथक परिश्रम करते हैं फिर भी असफलता ही हाथ लगती है। पहली विफलता पर आँसू छलक जाते हैं। ये आँसू ही अक्षर-ज्ञान का पहला अक्षर हैं। सृष्टि की विकास की कथा इसी अक्षर ज्ञान से लिखी हुई है।

Q 1. कवियित्री के अनुसार बेटे को आँसू कब आता है; और क्यों?

उत्तर :- सीखने के क्रम में कठिनाइयों का सामना करते हुए बालक थक जाता है । ‘क’ से लेकर ‘घ’ तक अनवरत सीखते हुए ‘ङ’ सीखने का प्रयास करना कठिन हो जाता है। यहाँ वह पहले-पहल विफल होता है और आँसू आ जाते हैं।

Q 2. कविता में ‘क’ का विवरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- प्रस्तुत कविता में कवयित्री छोटे बालक द्वारा प्रारम्भिक अक्षर-बोध को साकार रूप में चित्रित करते हुए कहती हैं कि ‘क’ को लिखने में अभ्यास-पुस्तिका का चौखट छोटा पड़ जाता है। कर्मपथ भी इसी प्रकार प्रारंभ में फिसलन भरा होता है।

Q 3. खालिस बेचैनी किसकी है ? बेचैनी का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर :- खालिस बेचैनी खरगोश की है । ‘क’ सीखकर ‘ख’ सीखने के कर्मपथ पर अग्रसर होता हआ साधक की जिज्ञासा बढ़ती है और वह आगे बढ़ने को बेचैन हो जाता है । बेचैनी का अभिप्राय है आगे बढ़ने की लालसा, जिज्ञासा एवं कर्म में उत्साह।

Pdf, Notes OR Test Series लेने के लिए हमें WhatsApp करे - 7488296191

Q 4. "अक्षर-ज्ञान" शीर्षक कविता किस तरह एक सांत्वना और आशा जगाती है ? स्पष्ट करें।

उत्तर :- कविता में एक प्रवाह है जो विकासवाद के प्रवाह का बोध कराता है। सांत्वना और आशा सफलता का मूलमंत्र है । अक्षर-ज्ञान की प्रारंभिक शिक्षण-प्रक्रिया अति संघर्षशील होती है। लेकिन अक्षर ज्ञान करवाने वाली ममता की मूर्ति माँ सांत्वना और आशा का बोध कराती है।

Q 5. कविता के अंत में कवयित्री 'शायद' अव्यय का क्यों प्रयोग करती हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- यहाँ कविता के अंत में कवयित्री 'शायद' अव्यय का प्रयोग करके यह स्पष्ट करना चाहती है कि जो अक्षर-ज्ञान में बच्चों को मसक्कत करना पड़ता है वही मसक्कत सृष्टि के विकास में करना पड़ा होगा । शायद सृष्टि का प्रारंभिक क्रम इसी गति से चला होगा।

Q 6. बेटे के लिए 'ङ' क्या है, और क्यों ?

उत्तर :- बेटे के लिए 'ङ' उसको गोद में लेकर बैठने वाली माँ है। माँ स्नेह देती है, वात्सल्य प्रेम देती है। 'ङ' भी 'क' से लेकर 'घ' तक सीखने के क्रम के बाद आता है। वहाँ स्थिरता आ जाती है, साधनाक्रम रुक जाता है । ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कर्मरत बालक माँ की गोद में स्थिर हो जाता है।

Q 7. कविता में तीन उपस्थितियाँ हैं । स्पष्ट करें कि वे कौन-कौन-सी हैं ?

उत्तर :- प्रस्तुत कविता में प्रवेश, बोध और विकास तीन उपस्थितियाँ आयी हैं। अक्षर-ज्ञान की प्रक्रिया सबसे पहले प्रवेश की वातावरण में प्रारंभ हुई है। उसके बाद बोध में कुछ परिपक्वता दिखाई पड़ने लगती है। अंत में विकास क्रम उपस्थित " होता है जहाँ निरंतर आगे बढ़कर अक्षर को मूर्तरूप देने का प्रयास सफल होता है ।
भावना

Q 8. 'कवयित्री अनामिका की 'अक्षर-ज्ञान' शीर्षक कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर :- अबोध बालक हिंदी वर्णमाला के अक्षर पाटी पर (स्लेट पर) साधने चला है। वह 'क' लिखता है, पर उसका 'क' निर्धारित स्थान की सीमा का उल्लंघन कर जाता है, वह चौखटे में नहीं अँटता। उसे बताया गया है कि 'क' से कबूतर होता है। उसका ध्यान 'क' लिखते समय कबूतर पर होता है, उसका 'क' रेखा के इधर-उधर फुदक जाता है। 'ख' के साथ भी यही होता है। वह जानता है-'ख' से खरहा होता है। 'ख' लिखते समय उसका ध्यान 'ख' से ज्यादा खरहा पर होता है। परिणामस्वरूप उसका 'ख' रेखा से उतर जाता है। वह अबोध बालक 'ग' भी ठीक से नहीं लिख पाता। उसका 'ग' टूटे हुए गमले-सा इधर-उधर बिखर जाता है। घड़ा जैसे लुढ़कता है ठीक उसी

Pdf, Notes OR Test Series लेने के लिए हमें WhatsApp करे - 7488296191

तरह उस बालक का 'घ' भी लुढ़कता हुआ-सा दिखता है। रेखाओं के बीच वह 'घ' सही-सही नहीं बैठा पाता। 'ङ' लिखते समय तो वह बहुत परेशान हो जाता है। वह 'ङ' को दो हिस्सों में बाँटता है-'ड' और 'ड' के बगल में लगनेवाला बिंदु (.)। 'ड' उसे माँ की तरह दिखाई पड़ता है और बगल का बिंदु (.) माँ की गोद में बैठे हुए बेटे की तरह। माँ और बेटे को एक साथ साधने में अपने को असमर्थ पाता है। वह 'ङ' लिखने की कोशिश करता है, पर हर बार वह असफल हो जाता है। अपनी विफलता के कारण उसके आँखों में आँसू आ जाते हैं। बालक के उन सजह-निश्छल आँसू की बूंदों पर कवयित्री टिप्पणी करती है कि "पहली विफलता पर छलके ये आँस ही/हैं शायद प्रथमाक्षर/सृष्टि की विकास-कथा के।" सृष्टि की विकास-कथा विफलता पर छलके हुए आँसू के प्रथमाक्षर से ही लिखी गई है शायद !

Q 9. "गमले-सा टूटता हुआ उसका 'ग'/घड़े-सा लुढ़कता हुआ उसका 'घ' " की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :- प्रस्तुत व्याख्येय पंक्तियाँ हमारी हिन्दी पाठ्य पुस्तक के 'अक्षर-ज्ञान' शीर्षक से उद्धृत हैं। प्रस्तुत अंश में हिन्दी साहित्य की समसामयिक कवयित्री अनामिका ने अक्षर-ज्ञान की प्रारंभिक शिक्षण-प्रक्रिया में संघर्षशीलता का मार्मिक वर्णन किया है। कवयित्री कहती हैं कि बच्चों को अक्षर-ज्ञान की प्रारंभिक शिक्षण-प्रक्रिया कौतुकपूर्ण है। एक चित्रमय वातावरण में विफलताओं से जुझते हुए अनवरत प्रयासरत आशान्वित निरंतर आगे बढ़ते हुए बच्चे की कल्पना की गई है । 'ग' को सीखना गमले की तरह नाजुक है जो टूट जाता है। साथ ही 'घ' घडे का प्रतीक है जिसे लिखने का प्रयास किया जाता है लेकिन लुढ़क जाता है। अर्थात् गमले की ध्वनि से बच्चा 'ग' सीखता है और 'घड़े' की ध्वनि से 'घ' सीखता है।

अक्षर-ज्ञान

1. अक्षर ज्ञान कविता के कवि हैं—

(A) जीवनानंद दास

(B) रेनर मारिया रिल्के

(C) अनामिका

(D) अज्ञेय

ANS – (C)

2. कवयित्री अनामिका का जन्म कब और कहाँ हुआ है?

(A) 5 अगस्त, 1947 - गढ़वाल, उत्तराखंड

PDF SARTHI

(B) 19 सितम्बर, 1927 - लखनऊ, उत्तरप्रदेश

(C) 17 अगस्त, 1961 – मुजफ्फरपुर, बिहार

(D) 18 फरवरी, 1916 – बदरघाट, पटना

ANS – (C)

3. सृष्टि की विकास- कथा का प्रथमाक्षर क्या है?

(A) सफलता की पहली मुस्कान

(B) विफलता के परिणामस्वरूप उत्पन्न क्रोध

(C) विफलता पर छलके आँसू

(D) सफलता पर उमड़ा उत्साह

ANS – (C)

4. कवयित्री अनामिका के अनुसार चौखटे में बेटे का क्या नहीं अँटता?

(A) क

(B) च

(C) त

(D) द

ANS – (A)

5. कवयित्री अनामिका ने सृष्टि की विकास-कथा के प्रथमाक्षर किसे माना है?

(A) विफलता पर छलके आँसू को

(B) जहाँ चाह वहाँ राह को

PDF SARTHI.COM

(C) सफलता की सीढ़ी को

(D) आगे बढ़ने की चाहत को

ANS – (A)

6. अनामिका .... हिन्दी कविता में अपनी एक अलग पहचान रखने वाली कवयित्री है।

(A) समकालीन

(B) छायावादी

(C) प्रगतिवादी

(D) प्रयोगवादी

ANS – (A)

7. 'अक्षर-ज्ञान" कविता बच्चों के किस स्तर की शिक्षण प्रक्रिया से संबंधित है?

(A) प्रारंभिक शिक्षण प्रक्रिया

(B) मध्य शिक्षण प्रक्रिया

(C) माध्यमिक शिक्षण प्रक्रिया

(D) उच्च माध्यमिक शिक्षण प्रक्रिया

ANS – (A)

8. कवयित्री अनामिका के अनुसार, सृष्टि की विकास कथा का प्रथमाक्षर क्या है?

(A) क

(B) ख

(C) अनवरत कोशिश

PDFSARTHI.COM

(D) विफलता के आँसू

ANS – (D)

9. कवयित्री अनामिका को कौन-सा पुरस्कार मिला?

(A) राष्ट्रभाषा परिषद् पुरस्कार

(B) भारत भूषण अग्रवाल

(C) गिरिजा कुमार माथुर पुरस्कार

(D) उपर्युक्त सभी

ANS – (D)

10. माँ बेटे सधते नहीं उससे और उन्हें सिख लेने की अनवरत कोशिश में उसके आ जाते हैं आँसू । प्रस्तुत पंक्तियाँ किस कविता की है?

(A) मेरे बिना तुम प्रभु

(B) लौटकर आऊँगा फिर

(C) अक्षर ज्ञान

(D) हमारी नींद

ANS – (C)

11. कवयित्री अनामिका बिहार के किस जिला की है?

(A) दरभंगा

(B) मुजफ्फरपुर

(C) भागलपुर

PDF SARTHI.COM

(D) मोतिहारी

ANS – (B)

12. कवयित्री अनामिका के पिता है-

(A) श्यामनंदन किशोर

(B) हीरानंद शास्त्री

(C) गंगा दत्त

(D) रवि सिंह

ANS – (A)

13. अक्षर-ज्ञान' कविता चुनी गई कविताओं की चर्चित श्रृंखला से ली गई है।

(A) स्त्रीत्व का मानचित्र

(B) गलत पते की चिट्ठी

(C) कवि ने कहा

(D) बीजाक्षर

ANS – (C)

14. "गमले सा टूटता हुआ उसका ग - घड़े-सा लुढ़कता हुआ उसका घ प्रस्तुत पद्यांश के कवि हैं-

(A) जीवनानंद दास

(B) अज्ञेय

(C) कुँवर नारायण

(D) अनामिका

PDF SARTHI.COM

ANS – (D)

15. कवयित्री के अनुसार क्या घड़े-सा लुढ़क जाता है?

(A) तोता

(B) खरगोश

(C) ग

(D) घ

ANS – (D)

16. 'अक्षर ज्ञान' कविता में किस मनोविज्ञान का आधार लिया गया है?

(A) किशोर मनोविज्ञान

(B) स्त्री मनोविज्ञान

(C) बाल मनोविज्ञान

(D) शिशु मनोविज्ञान

ANS – (C)

PDF SARTHI.COM

23. लौटकर आऊंगा फिर

लौटकर आऊँग फिर कवि परिचय बाँग्ला के सर्वाधिक सम्मानित एवं चर्चित कवियों में से एक जीवनानंद दास का जन्म 1899 ई० में हुआ था। रवीन्द्रनाथ के बाद बाँग्ला साहित्य में आधुनिक काव्यांदोलन को जिन लोगों ने योग्य नेतृत्व प्रदान किया था, उनमें सबसे अधिक प्रभावशाली एवं मौलिक कवि जीवनानंद दास ही हैं। इन कवियों के सामने सबसे बड़ी चुनौती के रूप में था रवीन्द्रनाथ का स्वच्छंदतावादी काव्य । स्वच्छंदतावाद से अलग हटकर कविता की नई यथार्थवादी भूमि तलाश करना सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य था। इस कार्य में अग्रणी भूमिका जीवनानंद दास की रही। उन्होंने बंगाल के जीवन में रच-बसकर उसकी जड़ों को पहचाना और उसे अपनी कविता में स्वर दिया। उन्होंने भाषा, भाव एवं दृष्टिकोण में नई शैली, सोचं एवं जीवनदृष्टि को प्रतिष्ठित किया ।

सिर्फ पचपन साल की उम्र में जीवनानंद दास का निधन एक मर्मांतक दुर्घटना में हुआ, सन् 1954 में। तब तक उनके सिर्फ छह काव्य संकलन प्रकाशित हुए थे 'झरा पालक', 'धूसर पांडुलिपि', 'वनलता सेन', 'महापृथिवी': 'सातटि तागर तिमिर' और 'जीवनानंद दासेर श्रेष्ठ कचिता'! उनके अन्य काव्य संकलन 'रूपसी बांग्ला', 'बला अबेला कालबेला', 'मनविहंगम' और 'आलोक पृथिवी' निधन के बाद प्रकाशित हुए। उनके निधन के बाद लगभग एक सौ कहानियाँ और तेरह उपन्यास भी प्रकाशित किए गये ।

PDF SARTHI.COM

वनलता संन' काव्यग्रंथ की 'वनलता सेन' शीर्षक कविता को प्रबुद्ध आलोचकों द्वारा रवींद्रोत्तर युग की श्रेष्ठतम प्रेम कविता की संज्ञा दी गयी है। वस्तुतः यह कविता बहुआयामी भाव-व्यंजना का उत्कृष्ट उदाहरण है। निखिल बंग रवींद्र साहित्य सम्मेलन के द्वारा 'वनलता सेन' को 1952 ई० में श्रेष्ठ काव्यग्रंथ का पुरस्कार दिया गया था।

यहाँ समकालीन हिंदी कवि प्रयाग शक्ल द्वारा भाषांतरित जीवनानंद दास की कविता प्रस्तुत है। यह कवि की अत्यंत लोकप्रिय और बहुप्रचारित कविता है। कविता में कवि का अपनी मातृभूमि तथा परिवेश से उत्कट प्रेम अभिव्यक्त होता है। बंगाल अपने नैसर्गिक सम्मोहन के साथ चुनिंदा चित्रों में सांकेतिक रूप से कविता में विन्यस्त है। इस नश्वर जीवन के बाद भी इसी बंगाल में एक बार फिर आने की लालसा मातृभूमि के प्रति कवि के प्रेम की एक मोहक भंगिमा के रूप में सामने आती है।

लौटकर आऊँग फिर पाठ का अर्थ नई कविता काल के कवि प्रखर कवि जीवनानंद दास हिन्दी साहित्य में अपना एक अलग पहचान बनाये हुए हैं। रवीन्द्रनाथ के बाद बंगला साहित्य में आधुनिक काव्यांदोलन को जिन लोगों ने योग्य नेतृत्व प्रदान किया था उनमें सबसे अधिक प्रभावशाली एवं मौलिक कवि जीवनानंद दास ही है। स्वच्छंदतावाद से अलग हटकर कविता की नई यथार्थवादी भूमि तलाश कर इन्होंने ने एक नया आयाम दिया।

प्रस्तुत कविता में कवि का अपनी मातृभूमि तथा परिवेश से उत्कट प्रेम अभिव्यक्त होता है। नश्वर शरीर त्यागने के बाद भी पुनः मनुष्य रूप में अवतरित होकर बंगाल को ही अपना जन्मभूमि चुनने के पीछे कवि की उत्कृष्टता देखने में बनती है। यदि मनुष्य में नहीं जन्म लूँ तो अबाबील, कौवा, हँस आदि में जन्म लेकर भी बंगाल की धरती पर ही विचरण करूँ। नदी की पानी, कपास के पेड़ों पर सुनाई पड़ने वाली बोली सभी में मेरा ही अंश हो'। नदी के वक्षस्थल पर तैरती हुए नौकाओं की पालों में भी हमारी' उत्कंठा है। संध्याकालीन आकाश में रेंगने वाले पक्षिगणों के बीच हमारी उपस्थिति अनिवार्य होगी। वस्तुतः इस कविता में नश्वर जीवन के बाद भी इसी बंगाल में एक बार फिर आने की लालसा मातृभूमि के प्रति कवि के प्रेम की एक मोहक भंगिमा के रूप, में सामने आती है।

शब्दार्थ

अबाबील : एक प्रसिद्ध काली छोटी चिड़िया जो उजाड़ मकानों में रहती हैं, भांडकी

पेंग : झूले का दोलन

रूपसा : बंगाल की नदी विशेष

PDFSARTHI.COM

सारस : पक्षी विशेष, क्रौंच

Q 1. अगले जन्मों में बंगाल में आने की क्या सिर्फ कवि की इच्छा है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- अगले जन्मों में बंगाल में आने की प्रबल इच्छा तो कवि की है ही। लेकिन, इसकी अपेक्षा जो बंगालप्रेमी हैं, जिन्हें बंगाल की धरती के प्रति आस्था और विश्वास है, कवि उन लोगों का भी प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

Q 2. कविता में आए बिंबों का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- कवि ने प्राकृतिक सौंदर्य के वातावरण में बिम्बों की स्थापना सौंदर्यपूर्ण चित्रमयी शैली में किया है। बंगाल की नवयुवतियों के रूप में अपने पैरों में धुंघरू बाँधने का बिम्ब उपस्थित किया है। हवा का झोंका तथा वृक्षों की डाली को झूला के रूप में प्रदर्शित किया है । आकाश में हंसों का झुण्ड अनुपम सौंदर्य लक्षित करना है।

Q 3. कवि किनके बीच अँधेरे में होने की बात करता है ? आशय स्पष्ट करें।

उत्तर :- संध्याकाल जब ब्रह्मांड में अंधेरा का वातावरण उपस्थित होने लगता है उस समय सारस के झुंड अपने घोंसलों की ओर लौटते हैं तो उनकी सुन्दरता मन को मोह लेती है। यह सुन्दरतम दृश्य कवि को भाता है और इस मनोरम छवि को . वह अगले जन्म में भी देखते रहने की बात कहता है।

Q 4. कविता की चित्रात्मकता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :- प्रस्तुत कविता की भाषाशैली भी चित्रमयी हो गयी है, प्राकृतिक वर्णन में कहीं-कहीं अनायास ही चित्रात्मकता का प्रभाव भी है । खेतों में हरे-भरे लहलहाते धान, कटहल की छाया, हवा के चलने से झूमती हुई वृक्षों की टहनियाँ, झूले के चित्र की रूपरेखा चित्रित है। आकाश में उड़ते हुए उल्लू और संध्याकालीन लौटते हुए सारस के झुंड के चित्र हमारे मन को आकर्षित कर लेते हैं।

PDF SARTHI.COM

Q 5. कवि अगले जीवन में क्या-क्या बनने की संभावना व्यक्त करता है, और क्यों ?

उत्तर :- कवि को अपनी मातृभूमि प्रेम में विह्वल होकर चिड़ियाँ; कौवा, हंस, उल्लू, सारस बनकर पुनः बंगाल की धरती पर अवतरित होना चाहते हैं।

Q 6. कवि किस तरह के बंगाल में एक दिन लौटकर आने की बात करता है ?

उत्तर :- बंगाल के घास के मैदान, कपास के पेड़, वनों में पक्षियों की चहचहाहट एवं सारस की शोभा अनुपम छवि निर्मित करते हैं। बंगाल की इस अनुपम, सुशोभित एवं रमणीय धरती पर कवि पुनर्जन्म लेने की बात करते हैं।

Q 7. 'लौटकर आऊँगा फिर' कविता के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- यहाँ उद्देश्य के आधार पर शीर्षक रखा गया है। कवि की उत्कट इच्छा मातृभूमि पर पुनर्जन्म की है। इससे कवि के हृदय में मातृभूमि के प्रति प्रेम दिखाई पड़ता है। शीर्षक कविता के चतुर्दिक घूमती है। शीर्षक को केन्द्र में रखकर ही ... कविता की रचना हुई है । अतः, इन तथ्यों के आधार पर शीर्षक पूर्ण सार्थक है।

Q 8. 'जीवनानंद दास द्वारा रचित "लौटकर आऊँगा फिर' शीर्षक कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर :- 'लौटक र आऊँगा फिर' शीर्षक कविता राष्ट्रीय चेतना की कविता है जिसमें कवि का अपनी मातृभूमि तथा अपने देश की प्रकृति के प्रति उत्कट-प्रेम अभिव्यक्त हुआ है। कवि अपने नश्वर जीवन के बाद पुन: अपनी मातृभूमि बंगाल में आने की लालसा रखता है। वह मरने के बाद किसी भी रूप में अपनी मातृभूमि से जुड़ना चाहता है। कवि कहता है कि मैं बहती नदी के किनारे फैले धान के खेतोंवाले क्षेत्र, बंगाल में एक दिन अवश्य लौटकर आऊँगा। हो सकता है तब मैं मनुष्य न होऊँ, अबाबील पक्षी होऊँ या कौंवा। उस भोर में मैं बंगाल लौटकर आना चाहता हूँ जो भोर धान की नयी फसल पर कुहारे के पालने पर कटहल की छाया तक उल्लास-भरा पेंगे मारता होगा। हो सकता है कि मैं किसी किशोरी का हंस बनकर पैरों में लाल धुंघरन बाँधे हरी घास की सुगंध से परिपूर्ण वातावरण में दिन-दिन भर पानी में तैरता रहूँ। मुझे बंगाल की नदियाँ बुर लाएँगी, मैं दौड़ा चला आऊँगा; मुझे बंगाल के हरे-भरे मैदान बुलाएँगे, मैं शीघ्र आ जाऊँगा। नदी की संगीतमय चंचल लहरों से धोए गए सजल किनारों

PDFSARTHI.COM

पर आकर मुझे कितनी खुशी होगी।

कवि कहता है कि मैं उसी बंगाल में लौटकर आना चाहता हूँ जहाँ शाम में उल्ल हवा के साथ मौज में उड़ते हैं या कपास के पौधे पर बैठकर मस्ती में बोलते हैं। मैं वहाँ आना चाहता हूँ जहाँ रूपसा के गंदले पानी में फटेपाल सी नाव लिए कोई लड़का जाता है; जहाँ रंगीन। बादलों के बीच सारस अँधेरे में अपने आश्रम की ओर तेजी से उडते जाते हैं। मैं चाहता हूँ कि मैं भी उन सारसों के बीच होऊँ। ऊन सारसों के बीच मुझे कितना आनंद मिलेगा।

Q 9. व्याख्या करें–

"खेत हैं जहाँ धान के, बहती नदी
के किनारे फिर आऊँगा लौट कर
एक दिन – बंगाल में;"

उत्तर :- प्रस्तुत व्याख्येय पंक्तियाँ हमारी हिन्दी पाठ्य-पुस्तक के 'लौटकर आऊँगा फिर' शीर्षक से उद्धत हैं। इस अंश से पता चलता है कि कवि अगले जन्म में भी अपनी मातृभूमि बंगाल में ही जन्म लेना चाहता है।

प्रस्तुत पद्यांश में कवि की मातृभूमि के प्रति प्रेम दिखाई पड़ता है। कवि ने बंगाल के प्राकृतिक सौंदर्य के साथ वहाँ के खेतों में उगने वाली धान की फसलों का मनोहर चित्र खींचा है। कवि' कहता है कि जिस बंगाल के खेतों में लहलहाती हुई धान की फसलें हैं वहाँ मैं फिर लौटकर आना चाहता हूँ। जहाँ कल-कल करती हुई नदी की धारा अनायास ही लोगों को आकर्षित कर लेती है वहाँ ही मैं जन्म लेना चाहता हूँ। यहाँ स्पष्ट है कि कवि अपनी भावना को स्वछंद स्वरूप प्रदान करता है।

Q 10. व्याख्या करें –

"बनकर शायद हंस मैं किसी किशोरी का;
धुंधरू लाल पैरों में;
तैरता रहूँगा बस दिन-दिन भर पानी में
गंध जहाँ होगी ही भरी, घास की।"

उत्तर :- प्रस्तुत अवतरण बांग्ला माहित्य के प्रख्यात कवि जीवनानंद दास द्वारा रचित "लौटकर आऊँगा फिर" कविता । से उद्धृत है। इस अंश में कवि बंगाल की भूमि पर बार-बार जन्म लेने की उत्कट इच्छा को अभिव्यक्त करता है।

PDF SARTHI.COM

यहाँ कवि बंगाल में एक दिन लौटकर आने की बात कहता है। वह अगले जन्म में भी अपनी मातृभूमि बंगाल में ही जन्म लेने का विचार प्रकट करता है। वह

हंस. किशोरी और घुघरू की बिम्ब-शैली में अपने-आपको उपस्थित करना कहता है कि जहाँ की किशोरियाँ पैरों में घुघरू बाँधकर हंस के समान मधा में अपनी नाच से लोगों को आकर्षित करती हैं, वही स्वरूप मैं भी धारण करना चाहता हूँ। यहाँ तक कि बंगाल की नदियों में तैरने के एक अलग आनंद की अनभति मिलती है। यहाँ की क्यारियों में उगने वाली घास की गंध कितनी मनमोहक होती है यह तो बंगप्रांतीय ही समझ सकते हैं । इस प्रकार, कवि पर्ण अपनत्व की भावना में प्रवाहित होकर हार्दिक इच्छा को प्रकट किया गया है।

11. लौटकर आऊंगा फिर

1. 'लौटकर आऊंगा फिर कविता किनकी रचना है?

(A) कुँवर नारायण

(B) अज्ञेय

(C) अनामिका

(D) जीवनानंद दास

ANS – (D)

2. जीवनानंद दास बाँग्ला के किस काल/युग के कवि है?

(A) भारतेन्दु युग

(B) द्विवेदी युग

(C) रवींद्रोत्तर युग

(D) छायावादी युग

PDF SARTHI.COM

ANS – (C)

3. कवि जीवनानंद दास का जन्म कब हुआ था?

(A) 1869 ई०

(B) 1894 ई०

(C) 1899 ई०

(D) 1907 ई०

ANS – (C)

4. जीवनानंद दास की किस कविता को प्रबुद्ध आलोचकों द्वारा रवींद्रोत्तर युग की श्रेष्ठतम प्रेम कविता की संज्ञा दी गई है?

(A) मनविहंगम

(B) वनलता सेन

(C) रूपसी बंग्ला

(D) झरा पालक

ANS – (B)

5. 'लौटकर आऊँगा फिर' कविता किस कवि द्वारा भाषांतरित की गई है?

(A) जीवनानंद दास

(B) विनोद कुमार शुक्ल

(C) प्रयाग शुक्ल

(D) कुँवर नारायण

PDF SARTHI.COM

ANS – (C)

6. बंगला भाषा के सर्वाधिक सम्मानित एवं चर्चित कवियों में से एक है-

(A) वीरेन डंगवाल

(B) कुँवर नारायण

(C) जीवनानंद दास

(D) रेनर मारिया रिल्के

ANS – (C)

7. किस कविता में कवि जीवनानंद दास का अपनी मातृभूमि तथा परिवेश से उत्कट प्रेम अभिव्यक्त होता है।

(A) मेरे बिना तुम प्रभु

(B) लौटकर आऊँगा फिर

(C) हिरोशिमा

(D) अक्षर ज्ञान

ANS – (B)

8. 'कविता लौटकर आऊँगा फिर में कवि कहाँ लौटकर आने की लालसा व्यक्त करते हैं?

(A) बिहार

(B) बंगाल

(C) झारखंड

(D) उड़ीसा

ANS – (B)

PDFSARTHI.COM

9. " खेत है जहाँ धान के बहती नदी के किनारे फिर आऊंगा लौट कर एक दिन बंगाल में।"

उपर्युक्त पद्यांश के कवि कौन हैं?

(A) जीवनानंद दास

(B) प्रेमघन

(C) पंत

(D) दिनकर

ANS – (A)

10. जीवनानंद दास किस भाषा के सर्वाधिक सम्मानित एवं चर्चित कवियों में से एक है?

(A) हिन्दी

(B) संस्कृत

(C) मैथिली

(D) बंगला

ANS – (D)

11. 'वनलता सेन' के कवि हैं-

(A) प्रेमधन

(B) वीरेन डंगवाल

(C) जीवनानंद दास

(D) रेनर मारिया रिल्के

ANS – (C)

PDF SARTHI.COM

12. कवि अगले जीवन में क्या बनने की अभिलाषा व्यक्त करते हैं?

(A) आबावील

(B) कौआ

(C) हंस

(D) उपर्युक्त सभी

ANS – (D)

13. बन कर शायद हंस में किसी किशोरी का घुंघरू लाल पैरों में तैरता रहूँगा बस दिन-दिन भर पानी में गंध जहाँ होगी हरी-भरी घास को प्रस्तुत पंक्ति किस कविता को है?

(A) भारतमाता

(B) स्वदेशी

(C) लौटकर आऊँगा फिर

(D) मेर बिना तुम प्रभु

ANS – (C)

14. लौटकर आऊँगा फिर पाठ से कवि कहाँ लौटने की बात कहते हैं?

(A) बिहार में

(B) असम में

(C) उड़ीसा में

(D) बंगाल में

ANS – (D)

PDF SARTHI.COM

15. लौटकर आऊंगा फिर कविता की हिन्दी रूपांतरण किसने किया?

(A) रामचन्द्र शुक्ल

(B) प्रयाग शुक्ल

(C) यतीन्द्र मिश्र

(D) हजारी प्रसाद द्विवेदी

ANS – (B)

16. निखिल बंग रवींद्र साहित्य सम्मेलन द्वारा 'वनलता सेन को कब श्रेष्ठ काव्यग्रंथ का पुरस्कार दिया गया था?

(A) 1950 ई० में

(B) 1952 ई० में

(C) 1953 ई० में

(D) 1955 ई० में

ANS – (B)

17. जीवनानंद दास के जीवन काल में कितने काव्य संकलन प्रकाशित हुए थे?

(A) पाँच

(B) आठ

(C) छः

(D) दस

ANS – (C)

18. कवि कपास के पेड़ पर किसकी बोली सुनने की बात करता है?

PDF SARTHI.COM

(A) तोते की

(B) कबूतर की

(C) कौवा की

(D) उल्लू की रचना है

ANS – (D)

19. 'झरा पालक' किसकी

(A) जीवनानंद दास

(B) रेनर मारिया रिल्के

(C) अनामिका

(D) कुँवर नारायण

ANS – (A)

20. 'रूपसी बाँग्ला' किसकी रचना है?

(A) अज्ञेय

(B) अनामिका

(C) जीवनानंद दास

(D) दिनकर

ANS – (C)

PDF SARTHI.COM

PDFSARTHI.COM

24. मेरे बिना तुम प्रभु

मेरे बिना तुम प्रभु कवि परिचय रेनर मारिया रिल्के का जन्म 4 दिसंबर 1875 ई० में प्राग, ऑस्ट्रिया (अब जर्मनी) में हुआ था। इनके पिता का नाम जोसेफ रिल्के और माता का नाम सोफिया था। इनकी शिक्षा-दीक्षा अनेक बाधाओं को पार करते हुए हुई। इन्होंने प्राग और म्यूनिख विश्वविद्यालयों में शिक्षा पायी। कला और साहित्य में आरंभ से ही इनकी गहरी अभिरुचि थी। संगीत, सिनेमा आदि अनेक कलाओं में इनकी गहरी पैठ थी। कविता के अतिरिक्त इन्होंने गद्य भी पर्याप्त लिखा । इनका एक उपन्यास 'द नोटबुक ऑफ माल्टे लॉरिड्स ब्रिज' और 'टेल्स ऑफ आलमाइटी' कहानी संग्रह प्रसिद्ध हैं। इनके प्रमुख कविता संकलन हैं 'लाइफ एण्ड सोंग्स', 'लॉरेंस सेक्रिफाइस', 'एडवेन्ट' आदि। इनका निधन 29 दिसंबर 1926 ई० में हुआ।

रिल्के का रचनात्मक अवदान बहुत बड़ा है। इन्होंने आधुनिक यूरोप के साहित्य को अपने गहरे भावबोध तथा संवेदनात्मक भाषा और शिल्प से काफी प्रभावित किया। इनकी काव्य शैली गीतात्मक है और भावबोध में रहस्योन्मुखता है।

प्रसिद्ध हिंदी कविधर्मवीर भारती द्वारा भाषांतरित इस महान जन कवि की कविता यहाँ प्रस्तुत है। यह कविता विश्व कविता के भाषांतरित संकलन 'देशांतर' से ली गयी है। रिल्के का आधुनिक विश्व कविता पर प्रभाव बताया जाता है । रिल्के मर्मी इसाई कवियों जैसी पवित्र आस्था के आस्तिक कवि थे, जिनकी कविता में रहस्यवाद के आधुनिक स्वर सुने जाते हैं। प्रस्तुत कविता इस तथ्य की एक दुर्लभ साखी पेश करती है। बिना भक्त के भगवान भी एकाकी और

Pdf, Notes OR Test Series लेने के लिए हमें WhatsApp करे - 7488296191

निरुपाय हैं। उनकी भगवत्ता भी भक्त की सत्ता पर ही निर्भर करती है। व्यक्ति और विराट सत्य एक-दूसरे पर निर्भर हैं। प्रेम के धरातल पर अत्यंत पावनतापूर्वक यह कविता इस सत्य को अभिव्यक्त करती है।

मेरे बिना तुम प्रभु

पाठ का अर्थ

पाश्चात्य कवियों में रेनर मारिया रिल्के' का नाम आसानी से लिया जा सकता है। इन्होंने आधुनिक यूरोप के साहित्य को अपने गहरे भावबोध तथा संवेदनात्मक भाषा और शिल्प से काफी प्रभावित किया है। इनकी काव्यशैली गीतात्मक है और भावबोध में रहस्योन्मुखता है।

यह कविता विश्व कविता के भाषांतरित संकलन 'देशान्तर' से ली गयी है। रिल्के का आधुनिक विश्व कविता पर प्रभाव बताया जाता है। भक्त और भगवान दोनों एक दूसरे का पूरक हैं। भक्त के बिना भगवान भी एकाकी और निरूपाय हैं। कवि कहना चाहता है कि भगवान की भगवता भी भक्त की सत्ता पर ही निर्भर करती है। भक्त ही ईश्वर की वृत्ति और वेश है। भक्त ही ईश्वर का चरण पादुका है। वस्तुतः यहाँ कवि कहना चाहता है कि व्यक्ति और विराट सत्य एक-दूसरे पर निर्भर है। प्रेम के धरातल पर अत्यन्तं पावनता पूर्वक यह कविता इस सत्य को अभिव्यक्त करती है।

कविता के साथ

1. कवि अपने को जलपात्र और मदिरा क्यों कहता है?

उत्तर-कवि अपने को भगवान का भक्त मानता है। भक्त की महत्ता को स्पष्ट करते हुए कवि भक्त को जलपात्र और मदिरा कहा है क्योंकि जलपात्र में जिस प्रकार जल संग्रहित होकर अपनी अस्मिता प्राप्त करता है, 'जलपात्र के माध्यम से जल का उपभोग किया जा सकता है। जलपात्र जल के सानिध्य को प्राप्त करने में सहायक होता है उसी प्रकार भगवान के लिए भक्त है। इसी तरह मदिरा पान से मन मदमस्त हो जाता है, मदिरा आनंद की अनुभूति कराता है और भगवान भी भक्त से जल मिलते हैं तब प्रसन्न हो जाते हैं, भक्ति रस के निकट आकर इससे आहलादित हो जाते हैं, ऐसा लगता है कि भक्त के बिना रहना मुश्किल हो जाता है। भक्त ही भगवान की -पहचान है। इसलिए कवि अपने को जलपात्र। एवं मदिरा की संजा देते है।

2. आशय स्पष्ट कीजिए- "मैं तुम्हारा वेश हूँ, तुम्हारी वृत्ति हूँ मुझे खोकर तुम अपना अर्थ खो बैठोगे?"

PDFSARTHI.COM

उत्तर- प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने भक्त को भगवान की अस्मिता माना है। भगवान का वास्तविक स्वर भक्त में है। भक्त भगवान का सब कुछ है। भगवान का रुप, वेश, रंग, कार्य सब भक्त में निहित है। भक्त के माध्यम से ही भगवान को जाना जा सकता है, उनके अस्तित्व की अनुभूति किया जा सकता है। कवि कहता है कि हे भगवन मेरा अस्तित्व ही तुम्हारी पहचान है। मैं नहीं रहूँगा तो तुम्हारी पहचान भी नहीं होगी। अर्थात् भक्त से अलग रहकर, भक्त को खोकर भगवान भी अपना अर्थ, अपना मतलब, अपनी पहचान खो देंगे। भक्त के बिना भगवान की कल्पना ही नहीं किया जा सकता।

3. शानदार लबादा किसका गिर जाएगा और क्यों?

उत्तर- कवि के अनुसार भगवत्-महिमा भक्त की आस्था में निहित होता है। भक्त, भगवान का दृढाधार होता है लेकिन जब भक्त रूपी आधार नहीं होगा तो स्वाभाविक है कि भगवान की पहचान भी मिट जाएगी। भगवान का लबादा अथवा चोगा गिर जाएगा। भक्त भगवान का कृपा पात्र होता है, भगवत कृपा दृष्टि भक्त पर पड़ती है। इतना ही नहीं भगवान अपने भक्तों पर गौरवान्वित होते हैं। भक्त की अस्मिता समाप्त होने से भगवान का गौरव भी मिट जाएगा। भक्त ही प्रभु का स्वरूप है।

4. कवि किसको कैसा सुख देता था?

उत्तर-कवि भगवान की कृपा दृष्टि की शय्या है। कवि के नरम कपोलों पर जब भगवान की कृपा दृष्टि विश्राम लेती है, तब भगवान को सुख मिलता है आनंद मिलता है। अर्थात् भक्त भगवान का कृपा पात्र होता है और भक्तरुपी पात्र से भगवान भी सुखी होते हैं। भक्त के द्वारा भगवान हेतु प्रदत्त सुख की चर्चा कवि करते हैं। भक्त की प्रेम वाटिका की सुखद छाया में भगवान को जो सुख मिलता है वही सुख कवि भगवान को देता है।

5. कवि को किस बात की आशंका है? स्पष्ट कीजिएं।

उत्तर-कवि को आशंका है कि जब ईश्वरीय सत्ता की अनुभूति करानेवाला प्रतीक आधार दर्शन है। हम नहीं समझना वा देना चाहिए। या भक्त नहीं होगा तब ईश्वर का पहचान किस रूप में होगा? प्राकृतिक छवि, मानव की हृदय का प्रेम, दया, भगवद् स्वरूप है। भक्ति की रसधारा ईश्वरीय सत्ता या परमानंद का वाहक है। सूर्य की लालिमा या सुनसान पर्वत पर ठंढी चट्टानें भगवान के स्वरूप का दर्शन कराता है। ये सब नहीं होगा तब उस परमात्मा का आश्रय क्या होगा मानव किस रूप में ईश्वर की जान सकेगा इस प्रश्न को लेकर कवि आशंकित है।

6. कविता किसके द्वारा किसे संबोधित है? आप क्या सोचते हैं?

PDFSARTHI.COM

उत्तर-कविता में कवि भक्त के रूप में भगवान को सम्बोधित करता है। इसमें भक्त अपने को भगवान का आश्रय, गृह स्वीकारता है। अपने में भगवान की छवि को देखता है और कहता है कि हे भगवान! मैं भी तुम्हारे लिए उतना ही महत्त्वपूर्ण हूँ जितना तुम मेरे लिए। तुम्हारे अस्तित्व का मैं वाहक हूँ। मैं तुम्हारा पहचान हूँ। मैं नहीं रहूँगा तो तुम्हारी भी कल्पना संभव नहीं है। मैं तुम्हारे लिए हूँ और तुम मेरे लिए। हम दोनों एक-दूसरे के चलते जाने जाते हैं।

कवि के इस विचार की हम पुष्टि करते हैं। हमारे विचार से भक्त ही भगवान का वास्तविक स्वरूप है। ईश्वरीय सत्ता अदृश्य है और उस अदृश्य शक्ति का दर्शन भक्त के माध्यम से संभव हो जाता है। नश्वर जीव की महत्ता कम नहीं है क्योंकि यह ईश्वरीय अंश है और व्यापक ईश्वर का साक्षात् दर्शन है। हमें भक्त और भगवान के इस संबंध को स्वीकारना चाहिए और इस यथार्थ को मानकर अपने को हीन नहीं समझना चाहिए बल्कि इस मानवीय जीवन के महत्त्व को समझते हुए इस बहुमूल्य जीवन को यों ही नहीं गवाँ देना चाहिए। इस अनमोल मानवीय जीवन को ईश्वरीय स्वरुप मानकर परमात्मा के सत्ता को स्थापित करने हेतु क्रियान्वित रहना चाहिए।

7. मनुष्य के नश्वर जीवन की महिमा और गौरव का यह कविता कैसे बखान करती है? स्पष्ट कीजिए

उत्तर-इस कविता में कहा गया है कि मानव के अस्तित्व में ही ईश्वर का अस्तित्व है। मानवीय जीवन में ईश्वरीय अंश होता है। परमात्मा के अदृश्यता को जीवात्मा दृश्य करता है। ईश्वर की झलक जीव के माध्यम से देखी जाती है। इस कविता में जीव को ईश्वर का जलपात्र, मदिरा कहा गया है। साथ ही मनुष्य को भगवान का वेश, वृत्ति, शानदार लबादा कहकर मानव जीवन की महत्ता को बढ़ाया गया है। यह जीवन नश्वर है, लघु है फिर भी गौरवपूर्ण है। इसकी महिमा ईश्वरतुल्य है, क्योंकि मनुष्य ही ईश्वरीय सत्ता का वाहक है। मनुष्य भक्त के स्वरुप में भगवान के गुणों को उजागर करता है और भगवद्-महिमा को स्थापित करता है। यहाँ तक कहा गया है कि मनुष्य रूप में भगवान का भक्त नहीं हो तो भगवान के भी होने की बात की कल्पना नहीं की जा सकती।

8. कविता के आधार पर भक्त और भगवान के बीच के संबंध पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- प्रस्तुत कविता में कहा गया है कि बिना भक्त के भगवान भी एकाकी और निरुपाय है। उनकी भगवत्ता भी भक्त की सत्ता पर ही निर्भर करती है। व्यक्ति और विराट सत्य एक-दूसरे पर निर्भर है। भगवान जल हैं तो भक्त जलपात्र है। भगवान के लिए भक्त मदिरा है। बिना भक्त के भगवान रह ही नहीं सकते। भक्त ही भगवान का सब कुछ हैं और भक्त के लिए भगवान सबकुछ हैं। ब्रह्म को साकार करनेवाला जीव होता है और जीव जब ब्रह्ममय हो

PDF SARTHI.COM

जाता है तब वह परमानंद में डूब जाता है। भक्त के भक्ति को पाकर परमात्मा आनंदित होता है और परमात्मा को प्राप्त करके भक्त परमानंद को प्राप्त करता है। यही अन्योन्याश्रय संबंध भक्त और भगवान में

IMPORTANT OBJECTIVE

1. 'दूर चट्टानों की ठंडी गोद में' किस कवि की पंक्ति है ?

(A) जीवनानंद दास की

(B) अनामिका की

(C) सुमित्रानंदन पंत की

(D) रेनर मारिया रिल्के की

Ans : D

2. 'मेरे बिना तुम प्रभु' किस भाषा से अनुवादित है?

(A) अंग्रेजी

(B) जर्मन

(C) रूसी

(D) फ्रांसीसी

Ans : B

3. 'मेरे बिना तुम प्रभु' किस कवि की रचना है ?

(A) जीवनानंद दास

(B) रवीन्द्रनाथ ठाकुर

(C) रेनर मारिया रिल्के

PDF SARTHI.COM

(D) वीरेन डंगवाल

Ans : C

4. रेनर मारिया रिल्के का जन्म कब हुआ था ?

(A) 1899

(B) 1875

(C) 1961

(D) 1947

Ans : B

5. 'द नोटबुक ऑफ माल्टे लॉरिड्स ब्रिज' किसका उपन्यास है ?

(A) सुमित्रानंदन पंत

(B) भीमराव अम्बेदकर

(C) रेनर मारिया रिल्के

(D) नलिन विलोचन शर्मा

Ans : C

6. किसके बिना प्रभु गृहहीन होंगे ?

(A) पूजा के बिना

(B) मंत्रोच्चारण के बिना

(C) दास के बिना

(D) अवतार के बिना

PDF SARTHI.COM

Ans : C

7. रिल्के की कहानी संग्रह है?

(A) इफ एण्ड साँग्स

(B) टेल्स ऑफ आलमाइटी

(C) लॉरेंस सेक्रिफाइस

(D) एडवेंट

Ans : B

8. रिल्के की कविता 'मेरे बिना तुम प्रभु' है?

(A) भावात्मक रहस्यवाद

(B) भक्ति भावात्मक

(C) हास्यात्मक

(D) इनमें से सभी

Ans : A

9. भगवान की कृपादृष्टि कहाँ विश्राम करती थी?

(A) कवि के भाल पर

(B) कवि के ओठों पर

(C) कवि के नयनों पर

(D) कवि के कपोलों पर

Ans : D

PDFSARTHI.COM

10. कवि किसके स्वादहीन होने की बात करता है?

(A) फल

(B) दूध

(C) मिठाई

(D) मदिरा

Ans : D

11. भक्त रिल्के प्रभु (ईश्वर) से क्या कहता है ?

(A) प्रश्न

(B) सजदा

(C) प्रार्थना

(D) इनमें से सभी

Ans : A

12. रेनर मारिया रिल्के किस भाषा के कवि हैं ?

(A) जर्मन

(B) फ्रेंच

(C) स्पेनिश

(D) ग्रीक

Ans : A

13. पाठ्यपुस्तक में संकलित रिल्के की कविता किस भाव की है ?

PDF SARTHI.COM

(A) श्रृंगार

(B) वीर

(C) भक्ति

(D अद्भुत

Ans : C

14. किसका शानदार लबादा गिर जाएगा ?

(A) प्रभु का

(B) राजा का

(C) देवता का

(D) भक्त का

Ans : A

15. कपोल का अर्थ है?

(A) सिर

(B) ललाट

(C) गाल

(D) चेहरा

Ans : C

16. निर्वासित का अर्थ है?

(A) प्रवास

PDF SARTHI.COM

(C) बेघर

(B) आवास

(D) घर

Ans : C

17. किसके बिना प्रभु गृहहीन होंगे ?

(A) पूजा के बिना

(B) मंत्रोच्चारण के बिना

(C) दास के बिना

(D) अवतार के बिना

Ans : C

18. 'प्रभु के पादुका' की संज्ञा किसे दी गई है ?

(A) खड़ाऊँ को

(B) पद-चिह्न को

(C) दास को

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans : C

19. लहुलुहान कौन भटकेंगे ?

(A) भक्त

(B) भगवान

PDF SARTHI.COM

(C) दानव

(D) भगवान के पैर

Ans : D

20. 'द नोटबुक ऑफ माल्टे लॉरिड्स ब्रिज' किसका उपन्यास है ?

(A) सुमित्रानंदन पंत

(B) भीमराव अम्बेदकर

(C) रेनर मारिया रिल्के

(D) नलिन विलोचन शर्मा

Ans : C

21. कौन अपना अर्थ खो बैठेगा ?

(A) भगवान

(B) भक्त

(C) मानव

(D) दानव

Ans : A

22. 'मेरे बिना तुम प्रभु' कविता किनके द्वारा हिन्दी में रूपांतरित है?

(A) दिनकर

(B) निराला

(C) धर्मवीर भारती

PDF SARTHI.COM

(D) प्रयाग शुक्ल

Ans : C

23. कवि क्या सूखने की बात कहता है ?

(A) पानी

(B) नदी

(C) कपड़ा

(D) मदिरा

Ans : D

24. रेनर मारिया रिल्के की माता का नाम क्या था ?

(A) रत्नावती

(B) निर्मला

(C) सोफिया

(D) तृप्ता

Ans : C

25. रेनर मारिया रिल्के ने किस विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की ?

(A) इलाहाबाद

(B) प्राग और म्यूनिख

(C) लिपजिंग

(D) आगरा

PDF SARTHI.COM

Ans : B

26. रेनर मारिया रिल्के की काव्य शैली कैसी है ?

(A) गद्यात्मक

(B) रचनात्मक

(C) पद्यात्मक

(D) गीतात्मक

Ans : D

27. रेनर मारिया रिल्के का जन्म कब हुआ था ?

(A) 1899

(B) 1875

(C) 1961

(D) 1947

Ans : B

28. रेनर मारिया रिल्के का जन्म कहाँ हुआ था ?

(A) जर्मनी में प्राग

(B) आस्ट्रेलिया

(C) जापान

(D) जर्मनी में डेसाउ

Ans : A

PDFSARTHI.COM

29. रिल्के के पिता का नाम क्या था ?

(A) विल्हेल्म मूलर

(B) गंगादत्त पंत

(C) परमानंद वाजपेयी

(D) जोसेफ रिल्के

Ans : D

PDF SARTHI.COM